भलाई कर बुराई से डर

कज़ाख़ लोक-कथाएँ

अनुवादक – सुधीर कुमार माथुर
डिजाइनकार – आर्गेन बैमिल्बेतोव

КАЗАХСКИЕ НАРОДНЫЕ СКАЗКИ

На языке хинди

सोवियत संघ में मुद्रित

К $\frac{4803000000-521}{031(01)-84}$ 766–82

विषय-सूची

बेदाढ़ी विनोदी अलदार-कोसे के कारनामे

कज़ाख़ लोक-कथाएँ

अद्भुत बाग़

बहुत पहले दो ग़रीब दोस्त थे – असन और हुसेन। असन ज़मीन के छोटे-से टुकड़े पर खेती करता था, हुसेन अपना भेड़ों का छोटा-सा रेवड़ चराता था। वे इसी तरह रूखा-सूखा खाने लायक कमाकर गुज़र-बसर करते थे। दोनों मित्र काफ़ी पहले विधुर हो चुके थे, लेकिन असन की एक रूपवती व स्नेहमयी बेटी थी – उसकी एकमात्र दिलासा, और हुसेन का एक बलवान व आज्ञाकारी बेटा था – उसकी एकमात्र आशा।

एक बार वसन्त में जब असन अपने खेत में बोवाई करने की तैयारी कर रहा था, हुसेन पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा स्तेपी में महामारी फैल गयी और बेचारे की सारी भेड़ें मर गयीं।

हुसेन फूट-फूटकर रोता, अपने बेटे के कंधे पर हाथ रखे अपने मित्र के पास आया और बोला

"असन, मैं तुमसे विदा लेने आया हूँ। मेरी सारी भेड़ें मर गयीं, उनके बिना मेरा भी भूखों मरना निश्चित है।"

यह सुनते ही असन ने बूढ़े गड़रिये को सीने से लगा लिया और बोला

"मेरे दोस्त, मेरा आधा दिल तुम्हारा है, तुम मेरा आधा खेत भी ले लो, इनकार मत करना। चिन्ता मत करो, कुदाल उठाओ और गीत गुनगुनाते हुए काम में जुट जाओ।"

उसी दिन से हुसेन भी किसान हो गया।

ऐसे ही कई बरस बीत गये। एक बार हुसेन जब अपना खेत जोत रहा था, अचानक उसका कुदाल किसी चीज़ से टकरा गया और अजीब-सी खनखनाहट हुई। वह जल्दी-जल्दी मिट्टी हटाने लगा और शीघ्र ही उसे सोने की मुहरों से ठसाठस भरा एक पुराना देग नज़र आ गया।

हुसेन खुशी से फूला न समाता देग उठाकर अपने दोस्त की झोंपड़ी की तरफ़ दौड़ा।

अद्भुत बाग़

बहुत पहले दो गरीब दोस्त थे – असन और हसेन। असन ज़मीन के छोटे-से टुकड़े पर खेती करता था, हसेन अपना भेड़ों का छोटा-सा रेवड़ चराता था। वे इसी तरह रूखा सूखा खाने लायक कमाकर गुज़र-बसर करते थे। दोनों मित्र काफ़ी पहले विधुर हो चुके थे, लेकिन असन की एक रूपवती व स्नेहमयी बेटी थी – उसकी एकमात्र दिलासा और हसेन का एक बलवान व आज्ञाकारी बेटा था – उसकी एकमात्र आशा।

एक बार बसन्त में जब असन अपने खेत में बोवाई करने की तैयारी कर रहा था हसेन पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा स्तेपी में महामारी फैल गयी और बेचारे की सारी भेड़ें मर गयीं।

हसेन फूट-फूटकर रोता, अपने बेटे के कंधे पर हाथ रखे अपने मित्र के पास आया और बोला

"असन, मैं तुमसे विदा लेने आया हूं। मेरी सारी भेड़ें मर गयीं, उनके बिना मेरा भी भूखों मरना निश्चित है।"

यह सुनते ही असन ने बूढ़े गड़रिये को सीने से लगा लिया और बोला

"मेरे दोस्त, मेरा आधा दिल तुम्हारा है, तुम मेरा आधा खेत भी ले लो, इनकार मत करना। चिन्ता मत करो, कुदाल उठाओ और गीत गुनगुनाते हुए काम में जुट जाओ।"

उसी दिन से हसेन भी किसान हो गया।

ऐसे ही कई बरस बीत गये। एक बार हसेन जब अपना खेत जोत रहा था, अचानक उसका कुदाल किसी चीज़ से टकरा गया और अजीब-सी खनखनाहट हुई। वह जल्दी-जल्दी मिट्टी हटाने लगा और शीघ्र ही उसे सोने की मुहरों से ठसाठस भरा एक पुराना देग नज़र आ गया।

हसेन खुशी से फूला न समाता देग उठाकर अपने दोस्त की झोंपड़ी की तरफ़ दौड़ा।

"खुशियां मनाओ, अमन!" वह भागते-भागते चिल्ला रहा था, "खुशियां मनाओ! तुम्हारी किस्मत खुल गयी! मैंने तुम्हारी जमीन में से सोने की मुहरों से भरा देग निकाल लिया है। अब तुम सदा के लिए अभाव से मुक्त हो गये!"

अमन ने सौहार्दपूर्ण मुस्कान से उसका स्वागत कर जवाब दिया:

"मुझे मालूम है तुम कितने निःस्वार्थी हो, हसेन, लेकिन यह सोना तो तुम्हारा ही है, मेरा नहीं। क्योंकि यह खजाना तुम्हें अपनी जमीन में मिला है।"

"मुझे मालूम है तुम कितने उदार हो, अमन," हसेन ने विरोध किया, "पर जमीन बेचकर तुमने मुझे वह सब तो भेंट नहीं किया न, जो उसके गर्भ में छिपा है।"

"नहीं दोस्त," अमन बोला, "धरती में छिपी सम्पदा उसी की होनी चाहिए, जो उसे अपनी जमीन में खोजता है।"

वे इसी तरह काफी देर तक बहस करते रहे और दोनों ही खजाने को लेने से साफ इनकार करते रहे। अन्त में अमन बोला:

"चलो, इस मामले को खतम कर दें, हसेन। तुम्हारे बेटा है, और मेरे–बेटी। वे आपस में एक दूसरे से प्रेम करते हैं। चलो, उन दोनों की शादी कर देते हैं और यह [illegible] दहेज में [illegible] दे देते हैं। खुदा करे हमारे बच्चों को गरीबी की याद भी न रहे।"

जब उन्होंने इस निर्णय के बारे में बच्चों को बताया, तो उनके आनन्द का पारावार न रहा। [illegible] धूमधाम से उनकी शादी कर दी गयी। शादी की दावत रात देर

ज्ञानी नमदे के फटे-पुराने टुकड़े पर बैठा था। उसकी अगल-बगल उसके चार शिष्य दो-दो करके बैठे थे।

"आप किस काम से मेरे पास आये हैं, सज्जनो?" ज्ञानी ने आगन्तुकों से पूछा।

उन्होंने उसे अपनी समस्या के बारे में बताया। उनकी बातें सुनकर ज्ञानी काफी देर तक मौन रहा, और फिर अपने सबसे बड़े शिष्य से पूछा

"बताओ, अगर तुम मेरी जगह होते, तो इन लोगों के विवाद का निबटारा कैसे करते?"

ज्येष्ठ शिष्य ने उत्तर दिया

"मैं तो इन्हें सोना बादशाह को सौंप देने को कहता, क्योंकि वह धरती की सारी सम्पदा का स्वामी है।"

ज्ञानी की भौंहें सिकुड़ गयी। उसने दूसरे शिष्य से पूछा

"और अगर तुम मेरी जगह होते, तो क्या फैसला करते?"

दूसरे शिष्य ने उत्तर दिया

"मैं तो सोना खुद ले लेता, क्योंकि वादी और प्रतिवादी जिस वस्तु को लेने से इनकार करते हैं, वह न्यायानुसार काजी की हो जाती है।"

ज्ञानी की भौंहें और अधिक सिकुड़ गयी, इसके बावजूद – उसने वैसे ही शान्तिपूर्वक तीसरे शिष्य से पूछा

"तुम बताओ हमें, इस समस्या का समाधान तुम कैसे करते?"

"अगर यह सोना किसी का नहीं है और सभी इसे लेने से इनकार करते हैं, तो मैं इसे वापस जमीन में गाड़ देने का आदेश दे देता।"

ज्ञानी बिलकुल उदास हो गया और उसने अपने चौथे व सबसे छोटे शिष्य से पूछा

"और तुम क्या कहते हो, मेरे बच्चे?"

"उस्ताद," छोटे शिष्य ने उत्तर दिया, "आप मुझ पर गुस्सा न हों और मेरे भोलेपन के लिए मुझे क्षमा कर दें, लेकिन मेरी अंतरात्मा ने निर्णय इस प्रकार किया है मैं इस सोने से वीरान स्तेपी में एक विशाल छायादार बाग लगा देता, जिसमें उसमें सारे थके-हारे ग़रीब लोग आराम कर सकें और उसके फलों का मज़ा ले सकें।"

यह सुनते ही ज्ञानी उठ खड़ा हुआ, उसकी आंखें डबडबा आयीं और उसने युवक को गले लगा लिया।

"जो कहते हैं, 'छोटा यदि बुद्धिमान हो, तो उसे वृद्ध की तरह सम्मान दीजिये',– उनका कहना बिलकुल ठीक है। तुम्हारा निर्णय पूर्णतः न्यायसंगत है, मेरे बच्चे! तुम यह सोना लेकर राजधानी चले जाओ, वहाँ उत्तम बीज खरीदो और लौटकर वैसा ही बाग लगाओ, जिसकी चर्चा तुमने की है। ताकि निर्धनों में तुम्हारा और इन उदार व्यक्तियों का नाम सदा अमर रहे, जिन्हें इतनी सम्पदा का बिलकुल भी लालच नहीं हुआ।"

युवक ने फौरन मुहरें चमड़े के थैले में भरी और उसे कंधे पर लादकर सफ़र पर रवाना हो गया।

काफी दिनों तक स्तेपी में भटकने के बाद अन्तत वह राजधानी में सकुशल पहुँच गया। शहर में पहुँचते ही वह फौरन बाजार रवाना हो गया और वहाँ फलों के बीजों के व्यापारियों को खोजने लगा।

वह दोपहर तक दुकानों के आगे रखी अद्भुत वस्तुओं व चटकीले कपड़ों को देखता घूमता रहा। अचानक उसे अपने पीछे से डफली की आवाज और किसी की मर्मभेदी चीखें सुनाई दी। युवक ने मुड़कर देखा बाजार के चौक से आश्चर्यजनक बोझ से लदा कारवाँ गुजर रहा है—ऊँटों पर माल की गाठों के बजाय पहाड़ों, जगलों, स्तेपी तथा रेगिस्तान में रहनेवाले नाना प्रकार के जीवित पक्षी लदे थे। उनके पजे बाधे हुए थे, मुड़े-तुड़े और छितरे हुए पख चिथड़ों की तरह लटक रहे थे, कारवाँ के ऊपर रगबिरगे परों के घन बादल मडरा रहे थे। ऊँटों के हर बार कदम रखने पर चिड़ियों के सिर उनके पहलुओं से टकरा रहे थे और उनकी खुली चोचों से दर्दभरी चीखें निकल रही थी। युवक का हृदय सहानुभूति से द्रवित हो उठा। वह कुतूहलियों की भीड़ को चीरकर कारवाँ के सरदार के पास पहुँचा और उसने सिर नवाकर उससे नम्रतापूर्वक पूछा

'साहब इन सुन्दर पक्षियों को इतने भयानक कष्ट देने का हुक्म आपको किसने दिया है और आप इन्हें लेकर कहाँ जा रहे हैं?'

कारवाँ के सरदार ने उत्तर दिया

'हम खान के महल की ओर जा रहे हैं। ये चिड़िया खान के खाने के लिए हैं। खान इनके बदले में हमें पाँच सौ अशरफियाँ देगा।"

"अगर मैं आपको उससे दुगुना सोना दूँ, तो क्या आप इन चिड़ियों को छोड़ देंगे?" युवक ने पूछा।

कारवाँ के सरदार ने व्यग्यमिश्रित मुस्कान के साथ उसकी ओर दृष्टि डाली और आगे चल दिया।

तब युवक ने कंधे से थैला नीचे पटककर कारवाँ के सरदार के सामने उसका मुँह खोल दिया। कारवाँ का सरदार स्तम्भित होकर रुक गया और यह समझ में आने पर कि उसे कितना धन दिया जा रहा है, उसने ऊँटवानों को पक्षियों को मुक्त करने का आदेश दे दिया।

आज़ादी महसूस करते ही चिड़ियाँ एक साथ आकाश में उड़ गयीं, उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि क्षण भर में दिन रात में बदल गया और उनके पखों के फड़फड़ाने से धरती पर अधड़ आ गया।

युवक काफ़ी देर तक उड़कर दूर जाते पक्षियों को देखता रहा और जब वे आँखों से ओझल हो गये वह चमड़े का खाली थैला उठाकर वापस घर रवाना हो गया। उसका दिल बाग-बाग हो उठा और वह खुशी से कदम बढ़ाता, गीत गाता चलने लगा।

किन्तु ज्यो-ज्यो वह अपने घर के निकट पहुँचता गया, त्यो-त्यो कष्टप्रद चिन्ता उस पर हावी होती गयी और पश्चात्ताप की भावना उसके दिल को कचोटने लगी।

"मुझे अपनी झक मे दूसरे के धन को मनमाने ढग से खर्च करने का अधिकार किसने दिया? क्या खुद मैने ही गरीबो के लिए बाग लगाने का वचन नही दिया था? अब मै उस्ताद को, उन नेक लोगो को क्या जवाब दूँगा, जो मेरे बीज लेकर लौटने का इन्तजार कर रहे है?", युवक सोच-सोचकर दुखी होने लगा। शनै शनै निराशा उस पर पूरी तरह हावी हो गयी और वह जमीन पर गिरकर रोता-बिलखता अपनी मृत्यु की कामना करने लगा। आसुओ व दुख के कारण वह इतना शिथिल हो गया कि अपनी पलको पर नियत्रण खो बैठा और उसे झपकी आ गयी।

और उसे एक सपना दिखाई दिया न जाने कहाँ से एक सुन्दर रगबिरगी चिडिया आकर उसके सीने पर बैठ गयी और अनूठे स्वर मे कूजने लगी

"ओ भले युवक! अपना दुख भूल जाओ! स्वतत्र पक्षी तुम्हे सोना तो नही लौटा सकते, पर तुम्हारी कृपा का प्रतिदान वे किसी न किसी रूप मे करेगे। आखे खोलो, जल्दी से आखे खोलो! "

युवक ने आखे खोली और आश्चर्यचकित रह गया समस्त विस्तृत स्तेपी मे चारो ओर दुनिया भर की चिडियाँ चहक रही थी।

पक्षी अपने पजो से जमीन मे छोटे-छोटे गड्ढे खोद रहे थे और उनमे अपनी चोचो से बीज डालकर फिर पखो से जल्दी-जल्दी मिट्टी भर रहे थे।

युवक किंचित् हिला तो पक्षी तत्क्षण आसमान मे उड गये। और फिर दिन रात मे बदल गया, उनके पखो की फडफडाहट से जमीन पर अधड आ गया जब सब शान्त हो गया, चिड़ियो के खोदे प्रत्येक गड्ढे मे से एकाएक हरे अकुर फूटने लगे, वे उत्तरोत्तर ऊँचे होते गये और थोडी देर बाद भव्य, दमकती पत्तियो व सुनहले फलो से सुसज्जित शाखी वृक्षो मे परिवर्तित हो गये।

शायद हिन्दुस्तान के बादशाह के पास भी इतना घना और लम्बा-चौडा बाग नही होगा। तृण-मणि सरीखी छाल से ढके सेब के भव्य वृक्षो को गिन पाना असम्भव था। सुडौल तनो के बीच-बीच मे अगूर के बडे-बडे गुच्छोवाली अगूर-वाटिकाए, खूबानी के झुरमुट तथा घनी घास व रगबिरगे फूलो से भरे हरे-भरे मैदान दिखाई दे रहे थे। सर्वत्र कलकल करते बहते शीतल जल के नाले थे, जिनके तलो मे हीरे-जवाहरात जडे थे। और वृक्षो की डालो पर युवक को सपने मे दिखाई देनेवाली चिडिया जैसी सुन्दर और मुखर चिडिया निरन्तर फुदक रही थी, कलरव कर रही थी।

युवक ने विस्मय से अगल-बगल देखा, किन्तु उसे किसी तरह विश्वास ही नही आ रहा था कि वह बाग को सपने मे नही देख रहा है। उसने इसकी जाच करने के लिए जोर मे आवाज दी और उसे अपने स्वर की कई गुना प्रवर्द्धित प्रतिध्वनि स्पष्ट सुनाई दी। दृश्य लुप्त नहीं हुआ। तब वह खुशी मे विह्वल हर्षातिरेक मे ज्ञानी के तम्बू-घेर की ओर दौड पडा।

कुछ ही समय में अद्भुत बाग की खबर सारी स्तेपी में फैल गयी। सबसे पहले "इबेत अस्थि"* घुड़सवार अपने तेज कदमवाजों पर बाग की तरफ सरपट लपके। लेकिन वन के पास पहुँचते ही उनके आगे मान ताले लगे लोहे के फाटकोंवाली ऊँची दीवार खड़ी हो गयी। तब वे अपनी-अपनी नक्काशीदार काठियों पर खड़े होकर दीवार के ऊपर से सुनहले सेब तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाने लगे। किन्तु उन में से जिसने भी फलों को स्पर्श किया, अचानक अशक्त हो जमीन पर गिरकर ढेर हो गया। यह देखते ही घुड़सवार घोड़े मोड़कर सरपट अपने-अपने गाव भाग गये।

उनके जाने के बाद हर कोने से निर्धनों की भीड़ आने लगी। उनके निकट आते ही लोहे के फाटकों पर लगे ताले गिर पड़े और वे पूरे खुल गये। बाग पुरुषों, नारियों, बूढ़ों व बालकों से भर गया। वे चटकीले फूलों पर चलते रहे, लेकिन फूल नहीं मुरझाये; वे निर्मल जल के नालों का पानी पीते रहे, पर पानी गदला नहीं हुआ; वे वृक्षों से फल तोड़ते रहे, पर फल कम ही नहीं हो रहे थे। बाग में दिन भर डफलियों की आवाजें, हँसी-मजाक गूंजते रहे।

और जब रात आयी और धरती पर अंधेरा छा गया, सेबों से मन्द प्रकाश फूटने लगा और पक्षी समवेत स्वर में शान्त व मधुर गीत गाने लगे। तब ग़रीब लोग वृक्षों तले सुगंधित घास पर लेट गये और प्रगाढ़ निद्रा की गोद में लीन हो गये। इतना सन्तोष और सुख उन्हें अपने जीवन में पहली बार मिला था।

---

* श्वेत अस्थि (अक-सुएक) – कज़ाख धनी सामन्त।

रूपवती अयस्लू

एक गाव मे तीन सगे भाई रहते थे। वे इतने बलवान और चतुर थे कि उनके सारे समवयस्क उन पर गर्व करते थे, सारी बालाएँ उन्हे प्रशसा की दृष्टि से देखती थी, सारे बुजुर्ग उनकी तारीफ करते थे। भाई बचपन से ही एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे न वे कभी एक दूसरे से दूर जाते थे, न आपस मे झगडते थे और न ही किसी बारे मे बहस करते थे।

एक दिन तीनो भाई उकाब लेकर स्तेपी मे शिकार करने गये।

उन्हे काफी देर तक न कोई पशु नजर आया, न ही कोई पक्षी। वे घोडो को गाव की ओर मोड़ने ही वाले थे कि अचानक देखा. स्तेपी मे एक आग-सी लाल लोमडी जमीन से सटी भागी जा रही है। ऐसे जानवर की खाल के तो बहुत-से पैसे मिलेगे! बडे भाई ने उकाब को ऊपर उछाल दिया, उकाब पख फैलाकर आकाश मे ऊँचाई पर पहुँच गया और वहाँ से गोता मारकर बिजली की तरह लोमडी पर टूट पडा।

बाके नौजवान घोडो को सरपट दौड़ाते, हवा से बाते करते उस स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ उकाब उतरा था और देखकर आश्चर्यचकित रह गये लोमडी वहाँ नही थी, जैसे वह कभी थी ही नही, लेकिन शिला-पट्ट पर पक्षी बैठा है, और वह शिला-पट्ट भी साधारण नही है: किसी ने उस पर अपनी चमत्कारी छेनी से किसी अद्वितीय रूपवती का चित्र तराश रखा है। शिला-पट्ट के किनारे-किनारे बेलबूटेदार अक्षरो मे आलेख खुदा हुआ था "जो मेरा चित्र खोजकर मेरे पास लेकर आयेगा, वही मेरा मालिक और पति हो जाएगा।"

बाके नौजवान अपनी रहस्यमयी खोज के सामने मौन व निश्चल खडे रहे और उनमे से हरेक के हृदय मे उस युवती के प्रति प्रेम का भाव निरन्तर बढता जा रहा था, जो शिला-पट्ट मे उन्हे मानो जीती-जागती देख रही थी।

बडे भाई ने कहा.

"अब हम क्या करे? यह अद्‌भुत शिला-पट्ट तो हम तीनो ने साथ ही ढूढा है।"

मझला भाई बोला

"हम चिट्ठी निकाल लेते हैं रूपवती के पास कौन जाये, इसका फ़ैसला हमारी किस्मत ही करे।"

"भाइयो! हमने शिला-पट्ट साथ ही ढूढ़ा है," छोटे भाई ने कहा, "इसलिए चलो हम साथ ही रूपवती को ढूढ़ने चलें। और यदि हमें उसे अपनी आंखों से देखने का सौभाग्य मिला तो फिर उसे ही हम तीनों में से किसी को अपना पति चुन लेने देंगे।"

तीनों ने यही फ़ैसला किया। उन्होंने शिला-पट्ट उठाया, किन्तु उसके नीचे एक और अद्भुत वस्तु मिली एक चमड़े के थैले में बहुमूल्य खज़ाना था – तीन हज़ार पुरानी अशरफ़ियां। उन्होंने धन बराबर-बराबर बांट लिया और बिना अपने गांव में गये दुलहन की खोज में निकल पड़े।

उन्होंने स्तेपी का कोना-कोना छान मारा उनकी काठियां घिस गयीं, घोड़ों के साज़ चिथड़े-चिथड़े हो गये घोड़े थककर मर गये, किन्तु उन्हें वह बाला कहीं नहीं मिली, जिसका चित्र शिला-पट्ट पर उकेरा हुआ था। अन्त में यात्री खान की राजधानी में पहुंचे। वहां उन्हें शहर के छोर पर एक वृद्धा मिली। युवकों ने उसे शिला-पट्ट दिखाकर पूछा कि क्या वह जानती है कि सुन्दरी जिसका चित्र पत्थर पर अंकित है, किस देश में रहती है।

"मुझे क्यों न पता होगा," स्त्री ने उत्तर दिया। "यह हमारे खान की बेटी है। इसका नाम अयस्लू है। दुनिया में उसके जैसे रूप और गुणोंवाली और कोई लड़की नहीं है।"

लम्बी राह की थकान और कठिनाइयों को भुलाकर तीनों भाई तुरन्त खान के महल की ओर रवाना हो गये। पहरेदारों ने शिला-पट्ट पर लिखा आलेख पढ़कर उन्हें तुरन्त खान की बेटी के कक्ष में जाने दिया।

जीती-जागती आयस्लू को देखकर युवक किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये उसका नाम चन्द्रमा पर ही रखा गया था और खुद वह सूरज की भांति द्युतिमान थी।*

"आप कौन हैं?" अयस्लू ने पूछा। "आपका किस काम से मेरे पास आना हुआ है?"

बड़े भाई ने सबकी ओर से उत्तर दिया

"मालकिन, स्तेपी में शिकार करते समय हमें एक शिला-पट्ट मिला, जिस पर आपका चित्र अंकित था और हम आधी दुनिया पार करके उसे आपके पास लाये हैं। अपना वादा पूरा कीजिये, अयस्लू! हममें से किसी एक को अपना पति चुन लीजिये।"

सुन्दरी बहुमूल्य कालीन से उठी और भाइयों के पास आकर बोली

"बहादुर नौजवानो, मैं अपने वादे से मुकरती नहीं हूं। पर आप तीन हैं और मेरी नज़र में तीनों बराबर हैं, लेकिन आप में से किस को चुनना न्यायपूर्ण होगा? आप में से किस सर्वश्रेष्ठ मानूं? मैं आपके प्रेम की परीक्षा लेना चाहती हूं। मैं आप में से उसी

* कज़ाख भाषा में "अय" का अर्थ – चन्द्रमा होता है और 'स्लू' का – रूपवती।

को अपना पति चुनूगी, जो एक महीने की अवधि मे मुझे दुर्लभ से दुर्लभ उपहार लाकर देगा? क्या आपको यह शर्त मजूर है?"

भाइयो ने उसे झुककर प्रणाम किया और यह जाने बिना फिर यात्रा पर निकल पडे कि खानज़ादी को उनमे से सबसे छोटे से प्रगाढ प्रेम हो गया है। उसका प्रेम इतना महान था कि उस दिन और उस क्षण से वह निस्तेज होने लगी, सूखने लगी, मानो उसे कोई गम्भीर रोग लग गया हो. कुछ दिनो बाद वह खाट से लग गयी और उसने अपने सगे पिता तक को पहचानना बद कर दिया। खान निराशा मे डूब गया। उसने अपनी बेटी का इलाज करनेवाले को एक हजार ऊँट देने का लालच देकर सारी दुनिया से हकीमो और ओझो को बुलवा लिया। महल हकीमो और ओझो से पूरा भर गया, किन्तु खान की रूपवती बेटी का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगडता ही गया।

उस समय तीनो भाई राजधानी से बहुत दूर जा चुके थे। वे एक ही रास्ते पर काफी दिनो तक चलते रहे, फिर उनके रास्ते अलग हो गये और बाके नौजवान तीस दिन बाद उसी स्थान पर मिलने का वादा करके भिन्न-भिन्न दिशाओ मे चल पडे।

बडा भाई बायी ओर मुडा और कुछ समय बाद एक बडे शहर मे पहुँचा। सभी दुकानो मे झाकने के बाद उसे एक दुकान मे सोने के चौखटेवाला अतिसुन्दर कारीगरी का एक दर्पण दिखाई दे गया।

"यह शीशा कितने का है?" युवक ने पूछा।

"शीशा सौ अशरफियो का है, पर इसका रहस्य – पाच सौ का।

"आखिर इसका रहस्य क्या है?"

"यह शीशा ऐसा है कि अगर भोर मे इसमे देखा जाये, तो दुनिया के सारे देश, शहर, गाव और चरागाह नजर आ जायेगे।"

"ऐसी ही चीज की तो जरूरत है मुझे!" युवक ने मन मे कहा। उसने बिना सोचे-विचारे रकम गिन दी और शीशे को अपनी सीने मे छिपाकर पूर्वनिश्चित स्थान की ओर चल दिया।

मझला भाई बीच के रास्ते से सीधा आगे बढता गया। वह भी कुछ समय बाद एक अनजाने नगर मे पहुँचा। बाजार मे, जहा विदेशी व्यापारी माल बेच रहे थे, उसकी नजर एक चमकीले रगो और विचित्र बेलबूटोवाले कालीन पर पड गयी।

"यह कालीन कितने का है?" उसने दुकानदार से पूछा।

"पाच सौ अशरफियो का, और इसका रहस्य भी इतने का ही है।"

"तुम कौन-से रहस्य की बात कर रहे हो?"

"अरे, यह जादुई कालीन है! यह पलक झपकते आदमी को दुनिया मे कही भी पहुँचा सकता है।"

युवक ने विक्रेता को अपने सारे पैसे दे दिए और कालीन को लपेटकर खुशी-खुशी शहर से रवाना हो गया।

छोटा भाई तिराहे पर बायीं ओर मुड़ा। वह भी उस रास्ते से एक विदेशी नगर में पहुँच गया। वह काफी देर तक गलियों में भटकता रहा, सारी दुकानों में झांकता रहा, पर उसे अपनी प्रियतमा के लायक वस्तु कहीं नहीं मिली। लेकिन जब वह पूरी आशा छोड़ चुका था, दुःखी हो गया था, तभी उसकी नज़र एक दुबले बूढ़े की नन्हीं सी छोटी दुकान में एक चमचमाती चीज़ पर पड़ गयी।

'यह क्या है?' नौजवान ने पूछा।

दुकानदार ने उसे हीरे जवाहरात जड़ी सोने की कंघी दी। युवक की आंखें चमक उठीं।

'कंघी की क्या कीमत चाहते हो?'

दुकानदार फटी आवाज़ में हंसा और ईर्ष्यापूर्ण स्वर में बोला

'भाई, यहां से दफा हो जाओ।' ऐसी चीज़ खरीदना तुम्हारे बूते से बाहर है। यह कंघी एक हज़ार अशर्फियों की है और दो हज़ार अशर्फियां है इसके रहस्य की कीमत।"

"आखिर इस कंघी का ऐसा क्या राज़ है, जो तुम उसकी इतनी कीमत लगा रहे हो?"

बूढ़े ने उत्तर दिया

"अगर इस कंघी से किसी बीमार के बालों में कंघी की जाये, तो वह ठीक हो जायेगा, और अगर मुर्दे के बालों मे कंघी की जाये तो वह जी उठेगा।"

"मेरे पास सिर्फ एक हज़ार अशर्फियां है," युवक ने दुःख भरे स्वर में कहा, "मुझ पर दया करो, कंघी मुझे इतने पैसों में बेच दो, क्योंकि मेरी किस्मत इसी में खुलेगी।"

"ठीक है," बूढ़ा मुह बनाकर अस्पष्ट स्वर में बड़बड़ाया, "कंघी एक हज़ार अशर्फियों में ले लो, अगर इसके साथ अपने गोश्त का एक टुकड़ा भी देने को तैयार हो।"

अब युवक समझ गया कि उसके सामने सौदागर नहीं, बल्कि एक दुष्ट नरभक्षी है, लेकिन वह न हिचकिचाया और न ही पीछे हटा। उसने चुपचाप अपनी जेब से सारी रकम उलट दी और फिर मोज़े में से छुरा निकाल, अपने सीने से मांस का टुकड़ा काट, डरावे को रक्तरंजित मूल्य चुका दिया। कंघी उसकी अपनी हो गयी।

ठीक तीस दिन बाद भाई फिर तिराहे पर मिल गये। उन्होंने एक दूसरे को कसकर गले लगा लिया, एक दूसरे की तबीयत पूछी और अपनी-अपनी खरीदी हुई वस्तुओं की तारीफ करने लगे।

"आखिर किसका उपहार अयस्लू को पसद आयेगा?" तीनो मन मे सोच रहे थे। "दर्पण, कालीन और कघी तीनो ही एक से एक बढ़कर है।"

रात बातो मे बीत गयी, सुबह जब शुक्र तारा निकला और पूर्व में प्रभाव की लालिमा छा गयी, भाइयो की यह जानने की इच्छा जाग उठी कि दुनिया मे क्या हो रहा है, और उन्होने शीशे मे देखा।

सारी दुनिया उनकी आखो के आगे घूम गयी और खान की राजधानी भी दिखाई दी। लेकिन यह क्या? महल के आस-पास के रास्ते शोकमग्न भीड से भरे थे। वहाँ किसी को दफ़नाया जा रहा था। मृत को भव्य ताबूत मे कधो पर उठाकर ले जाया जा रहा था, और उसके पीछे-पीछे आसू बहाता और दुख से दोहरा हुआ खान चल रहा था। तीनो भाई सब समझकर सिहर उठे: रूपवती अयस्लू मर गयी।

मझले भाई ने तुरन्त अपना जादुई कालीन बिछा दिया, और तीनो नौजवान एक दूसरे को पकडकर उस पर बैठ गये। कालीन बादलो मे उड चला और पलक झपकते खानजादी के खुले मज़ार के पास जा उतरा। भीड़ एक ओर हट गयी। खान ने डबडबायी आखो से आकाश से अचानक उतरे तीन नौजवानो की ओर देखा, लेकिन समझ न सका कि क्या हो रहा है। उधर छोटा भाई मृत सुन्दरी के पास लपककर पहुँचा और सोने की कघी उसके बालो मे फेरने लगा।

अयस्लू ने एक ठण्डी सास ली, हड़बडाकर उठ खड़ी हुई। वह पहले जैसी ही सुन्दर नहीं, बल्कि उससे भी कही ज्यादा सुन्दर हो गयी थी। खान ने बेटी को सीने से लगा लिया। लोग खुशी के मारे चिल्ला उठे। सब खुशिया मनाते, झूमते-गाते महल की ओर रवाना हो गये।

खान ने उसी दिन एक शानदार दावत दी और उसमे राजधानी के सारे वासियो को अपने प्रिय अतिथियो की तरह आने का निमन्त्रण दिया। बाजार मे जूठन खाकर गुजारा करनेवाले बूढे फ़क़ीर को भी निमन्त्रित किया गया। तीनो भाई सम्मानित स्थान पर बैठे थे और अयस्लू स्वय ही उन्हें खाना व किमिज़* परोस रही थी। तभी बाके नौजवानो ने फिर उससे अपना निर्णय बताने का अनुरोध किया कि वह उनमे से किसे अपना पति चुनना चाहती है।"

अयस्लू दुखी हो उठी, उसकी बरौनियो पर आसू की बूद ढुलक आयी।

"मै आप मे से एक से प्रेम करती हूँ, पर परीक्षा के बाद भी मेरी नज़रो मे आप सभी बराबर है, क्योंकि आपमें से हरेक ने मुझे अद्वितीय उपहार लाकर दिया है।"

उसने अपने पिता से सलाह और नसीहत मागी। खान कुछ सोचकर बोला

"अगर शीशा न होता, जिसे बड़ा भाई खोजकर लाया है, तो आपको, बाके नौजवानो, अयस्लू की मौत का पता नही चल पाता, मझले भाई के खरीदे कालीन के बिना आप जनाज़े मे समय पर नही पहुँच पाते; और छोटे भाई की कघी के बिना आप मेरी बेटी को जिला नही पाते। मै सहर्ष आपको अपना आधा धन देने को तैयार हूँ, पर अयस्लू की शादी किससे करूँ, यह फ़ैसला करना मेरे बस का नही है।"

---

* किमिज़ – घोडी के खमीर उठे दूध से बना पेय।

और ये ये अचानक बूढ़े फकीर की आवाज आयी:

"आशीर्वाद इजाजत हो तो मैं कुछ कहूं?"

खान उस दिन खुश और दयालु था।

"कहो," उसने उसे अनुमति दे दी।

"सारी परिस्थितियों का मूल्यांकन करके मैं मामले का फैसला इस प्रकार करता," फकीर ने कहा, "परन्तु उसी को हो बाग जिसने अपने उद्धार की सबसे महंगी कीमत चुकाई हो।"

खान ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

"ऐसा ही हो!"

"मैंने घोड़े के लिए सौ अशर्फियां चुकाई," बड़े भाई ने कहा।

"मैंने कालीन के लिए एक हजार अशर्फियां चुकाई," मझले भाई ने कहा।

"मैंने भी कंघी के लिए एक हजार अशर्फियां चुकाई और ..."

छोटा भाई बोलता-बोलता चुप हो गया और उसने सिर झुका लिया।

"चुप मत रहो!" खान चीख पड़ा। "सच-सच बताओ!"

तब युवक ने सीने के पल्ले खोल दिये और सबने उसके सीने का गहरा घाव देख लिया।

अयस्तू ने चीख मारकर अपना चेहरा हाथों से ढक लिया। खान ने वीर को गले लगाकर कहा:

"मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ करूंगा! तुम ही मेरे दामाद और उत्तराधिकारी हो जाओगे।"

और मेहमानों की ओर पलटकर उसने सबको सुनाकर एलान किया कि वह दोनों बड़े भाइयों को अपने वज़ीर बना रहा है और बूढ़े फकीर को, जिसने बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह दी, अपना बड़ा काज़ी।

इसके बाद दावत में और जान आ गयी। वह दावत तीस दिन तक चली, चालीस दिन उसकी याद में दावतें होती रहीं और उसे लोग आज तक नहीं भूले हैं।

खान सुलेमान और बायगीज़

खान सुलेमान के महल यो तो बहुमूल्य वस्तुओ से भरे पड़े थे, पर उस के लिए सोने की एक अगूठी सबसे ज्यादा मूल्यवान थी, जिसे वह कभी उगली से नही उतारता था। वह अगूठी जादूई थी जो भी उस अगूठी को पहनता, वही पशु-पक्षियो तथा पौधों की भाषा समझने लगता और सारे प्राणी उसके अधीन हो जाते।

एक बार शिकार करते समय सुलेमान को चेहरा सोते के शीतल जल से ताज़ा करने की इच्छा हुई। लेकिन जब वह अजलि से पानी पीने लगा, उसकी प्रिय अगूठी उगली से खिसक गयी और तेजी से तल की ओर जाने लगी। खान तल से मूल्यवान अगूठी निकालने के लिए सोते मे कूदने ही वाला था कि पानी मे एक भीमकाय मच्छ चमका और वह अगूठी निगलकर, पूछ फटकारकर भवर मे गोता लगा गया।

सुलेमान अगूठी खो बैठने से बहुत दुखी हुआ सोते के किनारे-किनारे चलने लगा। चलता रहा, चलता रहा, अचानक उसने खुद को एक अकेली झोपडी के सामने पाया, जिसके आगे मत्स्य-जाल सूख रहे थे।

रात होने लगी थी। खान झोपडी मे गया। देहली लाघने पर उसे किसी की नकसुरी आवाज़ सुनाई दी

"अहा, हमारी क़िस्मत खुल गयी! अब भर-पेट खाना खायेगे!"

खान को काटो तो खून नही झोपडी के बीचोबीच रक्तपिपासु जालमाउइज़-केम्पीर* खडी थी और अपने बडे-बडे नाखूनोवाले हाथ उसकी ओर बढा रही थी। वह आत्म-रक्षा के लिए शिकारी छुरा निकालने ही लगा था कि तभी दूसरी आवाज़ सुनाई दी – बुलबुल के कूजन जैसी मधुर।

* जालमाउइज़-केम्पीर – चुड़ैल बुढिया।

"आगंतुक को मत छुओ, मां! देखो, यह कितना सुन्दर और रांजसी है! शायद खुद शाह सुलेमान भी इससे ज्यादा सुन्दर नहीं होगा।"

शान आवाज की ओर मुड़ा और उसके दिल का कवल खिल उठा: चूल्हे के आगे कालीन पर इतनी रूपसी कन्या बैठी थी कि उसकी खातिर कोई भी मौत से जूझने को तैयार हो जाता।

जालमाउइज-केम्पीर बोली

"तुम सौभाग्यशाली हो, अजनबी, तुम मेरी बेटी बुलुक को पसन्द आ गये। मुझे तुम पर रहम आ गया। लेकिन यहां से जल्दी से जल्दी चले जाओ। मेरा बुड्ढा बस आने ही वाला है। वह आ गया तो तुम्हें कोई नहीं बचा सकेगा।"

सुलेमान ने उत्तर दिया

"जब तक सूबसूरत बुलुक मेरे साथ हाथ में हाथ डाले नहीं जायेगी, मैं यहाँ से टस से मस भी नहीं होऊँगा।"

तभी सोते में उफान आ गया, धरती गड़गड़ा उठी और झोपड़ी कांप उठी। लगा जैसे तूफान आ गया हो। जालमाउइज-केम्पीर ने जल्दी-जल्दी सारे कोने छान मारे और सन्दूक खोलकर सुलेमान को बुलाया

"सन्दूक में घुस जा, पागल! देर मत कर!"

सन्दूक का ढक्कन बन्द होते ही झोपड़ी में बूढ़ा नरभक्षी-देव झूमता हुआ घुस आया।

"आदमी की गंध आ रही है!" वह अपना दैत्याकार गला फाड़कर दहाड़ा।

उसकी पत्नी उसे गालियां देने लगी

"तेरा दिमाग बिलकुल खराब हो गया, बेवकूफ बुड्ढे! यह तो उस नौजवान की बू है जिसे हमने कल खाया था। और आज तो हमारे यहाँ कोई आया ही नहीं।"

रात बीत गयी। पौ फटते ही देव मछली पकड़ने सोते पर चला गया और शीघ्र ही ढेर सारी मछलियां लेकर लौट आया।

"नाश्ता तैयार करो" उसने पत्नी और पुत्री को आदेश दिया, "मैं फिर शिकार पर जाऊँगा। शायद दिन के खाने के लिए कोई बांका नौजवान या उसका घोड़ा पकड़ में आ जाए।"

वह चला गया। जालमाउइज-केम्पीर ने सुलेमान को सन्दूक से बाहर निकलने दिया और उसे दरवाजे की ओर धकेलने लगी।

"दूर हो जा मेरी आंखों से, बिनबुलाये मेहमान! तेरे मारे मेरी जान पर आ बनी है!"

किन्तु सुलेमान टस से मस नहीं हुआ और केवल सुन्दरी बुलुक को एकटक देखता रहा। जिस ... अनुसार युवती शोरबा मछली साफ कर रही थी। उसने बड़ा मच्छ बाहर

और अचानक चीख मारकर उसके पेट में से सोने की अगूठी निकाल ली। अगूठी उसके हाथ से छूटकर सीधे सुलेमान के पैरों के पास आ गिरी। खान ने उसे उठाकर उगली में पहन लिया। और वह तत्क्षण पूर्ववत् बलवान और बुद्धिमान हो गया।

"मैं खान सुलेमान हूँ!" उसने खुश होकर कहा। "तुम बुलुक मेरी बेगम और दुनिया की मलिका बनना चाहती हो?"

और बुलुक मलिका बन गयी। अब वह रेशमी गद्दो पर सोने लगी, सोने-चादी के थालो मे खाने लगी और मखमल व जरी के कपडे पहनने लगी।

खान ने उसे किसी चीज की कमी नही महसूस होने दी और सारे राज-काज भूलकर केवल पत्नी को किसी तरह खुश रखने की ही सोचने लगा।

एक बार खान ने रूपवती से कहा

"तुम चाहो, बुलुक, तो मै तुम्हारे लिए सोने और हीरे-जवाहरात का महल बना सकता हूँ।"

"मुझे सोने और हीरे-जवाहरात का महल नही चाहिए," बुलुक ने नखरीली अदा के साथ आखें नचाते हुए जवाब दिया। "अगर तुम मुझे प्यार करते हो, मेरे मालिक, तो मेरे लिए चिड़ियों की हड्डियो का महल बना दो।"

सर्वशक्तिमान सुलेमान ने दुनिया भर की चिडियो को तुरत अपने सामने हाजिर होने और मलिका की इच्छानुसार नम्रतापूर्वक मृत्यु दण्ड के लिए तत्पर रहने के लिए आवाज दी।

बिना कूजते, बिना चहचहाते अभागे पक्षियो के झुण्ड के झुण्ड अपने भाग्य के निर्णय की विनम्रतापूर्वक प्रतीक्षा करते सुलेमान के महल मे उडकर आये चमत्कारी अगूठी मे ऐसी शक्ति थी।

बुलुक ने उनकी गिनती करके दुखी स्वर मे खान से कहा

"एक चिडिया ने आपकी अवज्ञा की है, आलीजाह, और आपकी आज्ञानुसार यहाँ उपस्थित नही हुई है। उसका नाम है–बायगीज*।"

सुलेमान आग-बबूला हो उठा। उसने काले कौवे को विश्वासघाती बायगीज को ढूँढकर उसके पास पहुँचाने का आदेश दिया।

कौवा तीन दिन तक उडते रहने के बाद खाली हाथ लौट आया, उसे कही भी दोषी पक्षी का सुराग न मिल सका। तब खान ने वेगवान् बाज को उसे ढूँढने भेजा।

बाज ने बायगीज को पहाड पर एक चट्टान के नीचे देख लिया। अवज्ञाकारी चिडिया चट्टान के नीचे दुबकी हुई थी और उसे न चोंच से बाहर खीचा जा सकता था, न ही पंजो से।

---

* बायगीज–छोटी-सी चिडिया।

बाज उससे बोला

"आदरणीया बायगीज, आप क्या कर रही हैं?"

"सोच रही हूँ।"

"क्या? क्या कहा? मैंने सुना नहीं।"

बायगीज ने चट्टान के बीच से गरदन बाहर निकाली, और बाज उसे पकड़, पंजों में दबोचकर सुलेमान के पास ले गया।

बायगीज गा उठी

बनी जान पर, आई मुसीबत दिल पर मेरे
दुश्मन के पंजे हैं जाने कितने नुकीले!

बाज ने चिड़िया को सुलेमान के कदमों में पटक दिया, लेकिन बायगीज सुलेमान के सामने भी अपना गीत गाती रही

पंख न हों तो हूँ मैं गौरय्या के बराबर
पोर से उंगली के भी छोटा है मेरा सर
मास भी मुझ में, रक्त भी मुझ में कम रत्ती भर
रहेगी भूखी छोटी चील भी मुझ को खाकर।

सुलेमान ने गुस्से में उस पर पैर रखे दिया

"बायगीज, तू क्यों मेरे पहली बार बुलाते ही हाजिर नहीं हुई?"

बायगीज ने उत्तर दिया

"मैं सोच रही थी।"

"किस चीज के बारे में सोच रही थी?"

"मैं सोच रही थी कि धरती पर पहाड़ ज्यादा हैं या घाटियाँ।"

"तू किस निर्णय पर पहुँची?"

"पहाड़ ज्यादा हैं, अगर उन ढेरों को भी पहाड़ मान लिया जाये, जो स्तेपी में छछूँदरों ने लगाये हैं।"

"और किस चीज के बारे में सोच रही थी?"

"मैं यह भी सोच रही थी कि जिन्दा ज्यादा हैं या मरे हुए।"

"तुम्हारे ख़याल से कौन ज्यादा हैं?"

"मरे हुए ज्यादा हैं, अगर सोये हुए लोगों को भी मृत मान लिया जाये।"

"और क्या सोच रही थी?"

"और सोच रही थी कि पुरुष अधिक हैं या स्त्रियां।"

"फिर किस निर्णय पर पहुँची ?"

"स्त्रिया, आलीजाह, पुरुषो से काफी ज्यादा है, अगर उनमे उन भीरुओ को भी शामिल कर लिया जाये, जो अपना बौद्धिक सतुलन खोकर स्त्री की हर सनक पूरी करने को तत्पर हो जाते है।"

बायगीज के इतना कहते ही सुलेमान ने हाथ मे आखे ढक ली और शर्म से लाल हो उठा' खान नन्ही-सी चिडिया का इशारा समझ गया। उसने तुरन्त अपनी सपक्ष प्रजा को अपने-अपने घोसलो मे लौट जाने को कहा, और वे कूजते, चहचहाते उड चले।

इस प्रकार पक्षियो की हड्डियो का महल नही बन पाया। और पक्षियो ने उन्हे अकाल मृत्यु से बचाने के लिए बुद्धिमान बायगीज को सदा के लिए अपना काजी चुन लिया था।

सपना, जो सच हो गया

सरसेम्बाय अनाथ था। न उसका पिता जिन्दा रहा था, न ही माता। उस जीवन दुःख भरा था। उसने एक बाय* की भेड़े चराने की नौकरी कर ली। बाय ने शरद् ऋतु मे एक लगडी भेड देने का प्रलोभन दिया। नन्हा गड़रिया इस पर भी खुश था वह भेडे चराता रहा, बाय की जूठन खाता रहा और शरद् ऋतु के आने की प्रतीक्षा करता रहा।

"पतझड आते ही," वह सोचता रहता, "मुझे लगड़ी भेड मिल जायेगी, तब मुझे भी गोश्त का स्वाद चखने को मिल जायेगा "

एक बार सरसेम्बाय भेडो को एक नयी चरागाह मे हाककर ले जा रहा था। महसा झाडियो मे से एक भेडिया निकल आया और बोला

"भेड़ दो! नही दोगे, तो एक की जगह दस को फाड डालूंगा।"

"मै तुझे भेड़ कैसे दे सकता हूँ, भेडिये? क्योकि यह रेवड़ मेरा नही है। ऐसे काम के लिए बाय मुझे जान से मार डालेगा।"

भेडिया सोच मे पड गया और फिर बोला

"मुझे बहुत तेज भूख लगी है। तुम बाय के पास जाकर उससे मेरे लिए एक भेड़ मागो।"

सरसेम्बाय ने मालिक के पास जाकर उसे पूरा किस्सा सुनाया। बाय ने हिसाब लगाया दस भेडे एक से ज्यादा होती हैं, एक भेड दस से सस्ती पडेगी। उसने गडरिये मे कहा

"भेडिये को एक भेड ले लेने दो, लेकिन बिना चुने। उसकी आखो पर रूमाल बाध देना। जिसे वह दबोच ले, वही उसी की हो।"

सरसेम्बाय ने जैसी आज्ञा मालिक ने दी, वैसा ही किया।

---

* बाय – ज़मीदार।

भेड़िया आखो पर रूमाल बाधे रेवड के बीच घुस गया और उसने एक भेड का गला फाड दिया। लेकिन ठीक ही कहते है: "करम रेख न मिटै, करै कोई लाखो चतुराई।" ऐसा ही हुआ। भेड़िये ने सयोगवश उसी लगडी भेड को फाड डाला, जिसे मालिक ने सरसेम्बाय को देने का वादा किया था। सरसेम्बाय फूट-फूटकर रोने लगा। भेडिये को उस पर दया आ गयी।

"अब कुछ नही किया जा सकता, गडरिये," वह बोला। "शायद तुम्हारे भाग्य मे ऐसा ही बदा था। मै तुम्हारे लिए भेड़ की खाल छोड रहा हूँ। शायद तुम उसे किसी भी अच्छी कीमत पर बेच दो।"

सरसेम्बाय ने भेड की खाल उठा ली और उसे कधे पर आडी डालकर रेवड को आगे हाक ले चला।

सामने से भूरे कदमबाज पर बाय आ रहा था। वह रकाबो पर पैर जमाये खडा होकर भेडो व मेढो को गिनने लगा। उसने देखा – सारा रेवड सही-सलामत है, बस सरसेम्बाय की लगडी भेड गायब है। तभी सरसेम्बाय भी आ पहुँचा। वह रेवड के पीछे-पीछे हाथ मे लाठी थामे चल रहा था और उसकी आखो मे आसू बह रहे थे।

बाय इतने ज़ोर से ठहाका मारकर हस पडा कि उसके तले कदमबाज़ भी लडखडा गया।

"वाह, कैसा गडरिया है मेरा! खूब सभाल की अपनी भेड़ की! अरे, तू तो मेरी भेडो का भी सफाया करवा देगा... दूर हो जा मेरी आखो से! मेरा-तेरा हिसाब साफ हो गया।"

और सरसेम्बाय धीरे-धीरे अपनी लाठी की छाया की दिशा मे स्तेपी मे चला गया।

वह एक दूर के शहर मे जा पहुँचा और उसके बाज़ार मे गया। वह काफी देर तक भीड़ मे भटकता रहा, पर किसी ने भी उससे भेड़ की खाल की कीमत नही पूछी। केवल शाम ढले वह एक आदमी को उसे तीन छोटे सिक्को मे बेच पाया।

"तीन सिक्को की मै तीन रोटियाँ खरीद लूँगा, तीन रोटियाँ तीन दिन के लिए काफी होगी। फिर जो हो सो हो!"

वह रोटी की दुकान की तरफ बढा ही था कि रास्ते मे उसे एक बीमार बूढा भीख मागता मिल गया। सरसेम्बाय ने एक सिक्का उसे दे दिया और दो अपने पास रख लिये। बूढे ने सिर हिलाया और झुककर ज़मीन से मुट्ठी-भर रेत उठाकर लडके की ओर बढाई।

"ले," उसने कहा, "अपनी नेकी के बदले मे इसे रख ले।"

सरसेम्बाय ने सोचा कि फकीर पागल है, लेकिन उसने वृद्ध को ठेस नही पहुँचानी चाही और रेत लेकर अपनी जेब मे डाल ली।

रात आयी। घुप अधेरा छा गया। गरीब गडरिया कहाँ सिर छुपाये? उसने कारवा-

सराय मे रात गुज़ारने की इजाजत मागी। मालिक ने उसे रहने दिया, लेकिन रात गुज़ारने का भाडा मागा, और सरसेम्बाय को एक सिक्का उसे देना पड़ गया।

मालिक ने अपने सारे किरायेदारो को कालीनो और नमदो पर सुला दिया, पर सरसेम्बाय को नगी ज़मीन पर सोने को कहा। भूखे बालक को नीन्द अच्छी नही आयी और उसे ठण्डी सख्त ज़मीन पर बुरे सपने आते रहे।

पौ फटे कारवा-सराय मे शोर होने लगा, लोग अहाते में चलने-फिरने लगे। परदेसी सौदागर सफर की तैयारी मे ऊटो पर माल लादते हुए आपस मे बाते करने लगे।

उनमे से एक कहने लगा

"मैने रात मे एक बहुत सुन्दर सपना देखा। लगा जैसे मै खान की तरह क़ीमती पलग पर लेटा हूँ, मेरे ऊपर उजला सूरज झुका हुआ है और मेरे सीने पर उजला चाद खेल रहा है "

सरसेम्बाय सौदागर के पास जाकर बोला

"मैने अपने सारे जीवन मे कभी कोई सुन्दर सपना नही देखा। अपना सपना मुझे बेच दीजिये, साहब! ताकि यह सपना मेरा हो जाये।"

"सपना बेच दूँ?" व्यापारी हस पडा। "ठीक है। लेकिन इसके बदले में तू मुझे क्या देगा?"

"मेरे पास एक सिक्का है यह लीजिये।"

"ला, इधर ला तेरा सिक्का!" सौदागर चिल्लाया। "सौदा तय हुआ। अब से मेरा [illegible] तेरा हो गया, छोकरे!"

सौदागर और भी ज़ोर से हस पडा, और उसके साथ ही कारवा-सराय मे मौजूद सारे लोग भी हस पडे। नन्हा गडरिया अपनी खरीद पर खुश होकर, उछलता-कूदता अहाते से बाहर भाग गया

तब से सरसेम्बाय ने न जाने कितने रास्ते नापे, न जाने कितने गाव उसके रास्ते मे पड़े। लेकिन उसे न तो कही नौकरी मिली, न कही पनाह और न ही एक प्याला मट्ठा।

जाड़ा शुरू हो चुका था। सरसेम्बाय अंधेरी रात में स्तेपी मे अपनी सासो से उगलियो को गरमाता भटक रहा था। सर्द हवा उसे एक ओर से दूसरी ओर धकेल रही थी, हिम-झंझावात उसे एक ही जगह मे फिरकी की तरह घुमा रहे थे। सरसेम्बाय रो पड़ा और आँसू उसके गालो पर जम गये। वह निढाल होकर बर्फ के ढेर पर बैठ गया और निराशा मे कहने लगा

"[illegible] मे तो बेहतर है [illegible] मार टुकड़े-टुकड़े कर दे!"

उसका इतना कहना था कि उसी क्षण अंधेरे मे से एक बड़ा-सा भेड़िया निकल आया [illegible] आगे [illegible] था।

"आखिर आ ही गया शिकार पकड मे।" भेड़िया [illegible]
खुश होगे!"

"मुझे मार डाल, भेड़िये," लडके ने धीरे मे कहा, "कम-से-कम तेरे बच्चे तो खुश होगे। मेरे लिए तो जीने से मर जाना बेहतर है "

लेकिन भेड़िया अपनी जगह मे टस से मस नही हुआ, बस लडके को एकटक देखता रहा। अन्त मे वह बोला·

"क्या तुम वही सरसेम्बाय है, जिसने मुझे लगडी भेड दी थी? सलाम, मै तुम्हें पहचान गया। डरो मत, मै तुम्हे 'हाथ भी नही लगाऊँगा, बल्कि हो सकता है, जिन्दा रहने मे तुम्हारी मदद करूँ। मेरी पीठ पर सवार हो जाओ और खूब कसकर पकडे रहो!"

सरसेम्बाय उसकी पीठ पर सवार हो गया, और भेडिया उसे धमनेवाली बरफ़ के ढेरो पर से भागता ले चला। घने वन के किनारे तक उसे पहुँचाकर भेडिया बोला

"उधर आग दिखाई दे रही है, सरसेम्बाय? वहाँ अलाव जल रहा है। वहाँ डाकुओ के गिरोह ने पडाव डाला था। अब वे बहुत दूर जा चुके है और जल्दी वापस नही लौटेंगे तुम अलाव के पास जाकर ताप लो। सुबह तक मौसम शायद कुछ गरम हो जाये अलविदा!"

भेडिया चला गया और सरसेम्बाय जल्दी से आग के पास पहुँच गया। उसके बदन मे कुछ गरमी आयी और थोडी ताकत भी—उसने अलाव के पास डाकुओ द्वारा फेकी हुई हड्डियाँ चचोड़ ली थी। वह इतना खुश था कि उसका मन गाने को करने लगा। गरीब को खुश करने के लिए थोडे की ही जरूरत होती है

उजाला होने लगा, अलाव पूरी तरह जलकर बुझ गया। जब कोयले काले पड गये, तो लडके ने हाथ गरम-गरम राख मे घुसेड दिये। कितना अच्छा लग रहा था हाथो को! वह हाथ राख के अन्दर ही अन्दर घुमेड़ता गया और अचानक उसकी उगलियाँ किसी ठोस चीज से टकरा गयी। सरसेम्बाय ने उस चीज को राख मे निकाला और भौचक रह गया सोने की सन्दूकची! बालक का हृदय जोर-जोर से धडकने लगा सन्दूकची मे क्या है?

सरसेम्बाय ने ढक्कन उठाया। उसी क्षण धरती के ऊपर सूरज का किनारा दिखाई दिया और उसकी पहली किरण सीधे सन्दूकची पर गिरी। सरसेम्बाय चीख उठा और असह्य चकाचौंध के कारण उसकी आखे मुद गयी: सन्दूकची हीरो से ठसाठस भरी थी!

गड़रिये ने अपनी खोज सीने से सटा ली और खुशी से फूला न समाता जगल मे भागने लगा।

"बस किसी तरह किसी घर तक पहुँच जाऊँ!" वह सोच रहा था। "अब मै बिना दुख भोगे जीने लगूगा . मेरी दौलत सौ आदमियो के लिए भी काफ़ी रहेगी।"

लेकिन वन उत्तरोत्तर घना होता जा रहा था। सरसेम्बाय को डर लगने लगा और वह अब पछताने लगा कि इतने घने वन मे घुस आया।

"इतने निर्जन घने वन मे मै अपनी दौलत का क्या करूँगा?"

तभी उस वृक्ष के तनों के बीच प्रकाश की झलक दिखाई दे गयी और लड़का वहाँ वनक्षेत्र में पहुँच गया। वनक्षेत्र के बीचोंबीच व कलकलाती जल-धारा के किनारे एक मोटे नमदे से मढ़ा शानदार तम्बू-घर था।

'यहाँ कैसे लोग रहते हैं?" सरसेम्बाय ने सोचा। "कहीं वे असहाय दुखियारे को तंग तो नहीं करने लगेंगे?

सरसेम्बाय ने सोने की सन्दूकची एक बूढ़े बबूल के कोटर में छिपा दी और तम्बू-घर के भीतर गया।

"सलाम!" उसने कहा।

तम्बू-घर में चूल्हा जल रहा था और उसके आगे एक लड़की गहरे सोच में डूबी, सिर झुकाये उकड़ू बैठी हुई थी। आगन्तुक को देखते ही लड़की झट उठ खड़ी हुई और आश्चर्य व भय से उसकी ओर देखने लगी।

"तुम कौन हो लड़के, और यहाँ कैसे आ गये?" उसने अन्त में पूछा।

सरसेम्बाय लड़की को एकटक देख रहा था, पर उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल पा रहा था। उसने ऐसी रूपवती कभी नहीं देखी थी, ऐसी कन्याओं का गुणगान तो केवल अक़ीन* ही अपनी रचनाओं में करते थे। किन्तु स्पष्ट था कि उसे कोई गम्भीर दुख है उसकी आँखें उदास थीं, और चेहरा उतरा हुआ था।

लड़के ने अपने को क़ाबू में करके कहा

"मैं अनाथ हूँ। मेरा नाम सरसेम्बाय है। मैं नौकरी, रहने की ठौर और खाने की तलाश में भटक रहा था कि रास्ता भूलकर तुम्हारे यहाँ आ पहुँचा। पर तुम कौन हो लड़की?"

लड़की उसकी ओर बढ़ी और घबराहट भरे स्वर में बोली·

"मेरा नाम अलतीन-कीज़ है। दुनिया में मुझसे ज्यादा अभागी लड़की शायद ही कोई हो। लेकिन तुम्हें मेरी क्या चिन्ता, सरसेम्बाय? तुम ख़ुद बहुत ख़तरे में हो · अगर तुम्हें इस मनहूस जगह से निकलने का रास्ता मिल जाये, तो यहाँ से भाग जाओ, सिर पर पैर रखकर भागो। तुम्हें मालूम है, तुम्हारा दुर्भाग्य तुम्हें कहाँ ले आया है? यह तम्बू-घर रक्तपिपासु जालमाउइज़-केम्पीर का है। वह किसी भी क्षण घर लौट सकती है। फिर तुम्हारी ख़ैर नहीं .. देर न करो, जान बचाकर भाग जाओ! "

तभी बाहर से शोर, कड़क और क़दमों की आहट सुनाई दी। बालिका का चेहरा और अधिक फक हो गया।'

"मौक़ा निकल गया!" लड़की ने डर के मारे काँपते हुए कहा और सरसेम्बाय का हाथ पकड़कर चूल्हे के पास से खींचकर उसे नमदे से अच्छी तरह ढक दिया।

---

* अक़ीन – लोक कवि।

सरसेम्बाय छिपा रहा, पर वह छोटे-से छेद में से तम्बू-घर में जो कुछ हो रहा था, सब देख रहा था।

दरवाजा भड़ाक से पूरा खुल गया और तम्बू-घर में लाल-लाल होंठोंवाली राक्षसी—गयावह जालमाउइज-केम्पीर घुस आयी। उसकी नाक आंकुड़े जैसी थी, बाल खड़े हुए थे, दांत भेड़िये की तरह निकले हुए थे। उसने अपनी धुंधली नजर तम्बू-घर में चारों ओर दौड़ाई और चूल्हे के आगे उकड़ूं बैठकर अपनी सूखी-सूखी काली उंगलियां ज्वाला की ओर बढ़ाई। वह थोड़ी देर तक ऐसे ही जोर-जोर से हांफती बैठी रही, और अलतीन-कीज उससे कुछ दूरी पर निश्चल खड़ी रही।

ताप लेने के बाद जालमाउइज-केम्पीर गुर्रायी

"अलतीन-कीज, मेरे पास आ।"

डर के मारे थरथर कांपती लड़की ने बुढ़िया की ओर कदम बढ़ाया और रुक गयी, लेकिन उसने उसे अपनी आंकुड़ेनुमा उंगलियों में पकड़कर अपनी ओर खींच लिया।

अलतीन-कीज दर्द के मारे कराह उठी। सरसेम्बाय ने मुट्ठियां भींच लीं और वह बुढ़िया पर टूट पड़ने ही वाला था कि उसी क्षण जालमाउइज-केम्पीर गुस्से में चीखी और लड़की को दूर धकेलकर चिल्लायी

"नालायक! तू क्यों रोजाना पीली पड़ती जा रही है और सूखी जा रही है? क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं तुझे अपने तम्बू-घर में किस लिए रखे हुए हूँ? मुझे बहुत पहले ही तुझे चटकर जाना चाहिए था, पर मैं बराबर टालती आ रही हूँ—इन्तजार कर रही हूँ कि कब तुझे अक्ल आये और तू मुटियाने लग जाये अगर कल मेरे आने तक तू ऐसी ही दुबली रही, तो मैं तुझे इस चूल्हे में जिन्दा भून डालूंगी।"

इतना कहते ही बुढ़िया बिस्तर पर गिरकर खर्राटे भरने लगी। और अलतीन-कीज आग के पास बैठी रात भर रोती रही।

सुबह जालमाउइज-केम्पीर ने लड़की को फिर धमकी दी और बैसाखी उठाकर तम्बू-घर से बाहर चली गयी। बाहर से शोर, कड़क और कदमों की आहट सुनाई दी और फिर सब शान्त हो गया।

सरसेम्बाय नमदा हटाकर निकला और उसने पूछा

"अलतीन-कीज, तुम मुझे बताओ कि तुम इस रक्तपिपासु जालमाउइज-केम्पीर की दासी कैसे बनी?"

और अलतीन-कीज उसे पूरा किस्सा सुनाने लगी

"मैं अपने गांव में अपने मां-बाप के साथ खुश और सन्तुष्ट रह रही थी। एक बार मेरे माता-पिता किसी के घर गये। जाते समय पिता ने मुझ से कहा था 'प्यारी अलतीन-कीज, तुम्हें पूरे दिन अकेले रहना है। समझदारी से काम लेना, घर से बाहर मत निकलना और किसी को अन्दर मत आने देना।' मैं ऊबने लगी और घर से बाहर निकल गयी।

खातिर कभी जान पर खेलने देने को तैयार नहीं होगी। किन्तु गडरिया दृढ और अडिग रहा।

"अगर तुम, अलतीन-कीज, ज़िद करती रही, तो मैं आज ही जालमाउइज़-केम्पीर से जा भिड़ूंगा और तुमसे पहले उसके दांतों का शिकार बन जाऊँगा।"

तब लड़की मान गयी। उन्होंने आपस में कपड़े बदल लिये। अलतीन-कीज नमदे के पीछे छिप गयी, और मरसेम्बाय उसकी जगह चूल्हे के पास बैठ गया।

तभी बाहर से शोर, कड़क और कदमों की आहट आयी और तम्बू-घर में लाल-लाल होंठोंवाली राक्षसी – भयावह जालमाउइज़-केम्पीर घुस आयी।

वह आग में हाथ तापकर गुर्रायी

"अलतीन-कीज, मेरे पास आ।"

मरसेम्बाय बेधड़क बुढ़िया के पास आ गया। उसने उस पर धुंधली नज़रों से सिर से पैर तक देखा और बुदबुदायी

"लगता है तू आज दिन भर में कुछ बड़ी हो गयी है।"

धोखे का सन्देह न करते हुए उसने मरसेम्बाय का बदन टटोला, उसे नोच लिया और हंसती हुई बोली

"अहा, कितनी चालाक लड़की है तू! मैं बहुत पहले ही भाप गयी थी कि तू मुझे बेवकूफ़ बना रही है। तुझे एक बार अच्छी तरह धमकी देने की देर थी कि तू फ़ौरन रास्ते पर आ गयी! ठीक है कुछ दिन और जी ले, थोड़ी चरबी चढ़ा ले"

मरसेम्बाय और अलतीन-कीज के लिए कष्टदायी दिन और खतरनाक रातें बीतने लगीं।

अंततः वसन्त आया। जल-धारा में पानी कलकल करता बहने लगा, चिड़िया चहकने लगीं, फूल खिलने लगे।

मरसेम्बाय अपनी सहेली से बोला

"प्यारी अलतीन-कीज! अब हमें भागने की तैयारी करना चाहिए। मैं देख रहा हूँ कि जालमाउइज़-केम्पीर पहले से ज़्यादा चिड़चिड़ी हो गयी है उसे कहीं हमारे इरादे की भनक तो नहीं पड़ गयी है? बुढ़िया को मेरा पता चल गया, तो मुसीबत आ जायेगी, हम दोनों मारे जायेंगे। मैं कमान बनाकर शिकार करने जाऊँगा, रास्ते में खाने के लिए चिड़ियाँ जमाकर लूंगा और तीन दिन बाद छिपकर लौट आऊँगा, फिर हम भाग जायेंगे।"

"जैसा ठीक समझो, मरसेम्बाय, वैसा ही करो," लड़की ने उत्तर दिया, पर उसकी आंखें डबडबा आयीं। "लेकिन शिकार करते समय होशियार रहना और सही-सलामत लौट आना।"

"रोओ मत, अलतीन-कीज, मेरे बारे में दुखी मत होओ," मरसेम्बाय ने कहा। "और अगर ऊबने लगो, तो नदी के पास जाकर पानी को देखना अगर पानी पर हम

खातिर कभी जान पर खेलने देने को तैयार नही होगी। किन्तु गडरिया दृढ और अडिग रहा।

"अगर तुम, अलतीन-कीज, जिद करती रही, तो मै आज ही जालमाउइज-केम्पीर से जा भिड़ूगा और तुमसे पहले उसके दातो का शिकार बन जाऊँगा।"

तब लडकी मान गयी। उन्होने आपस मे कपडे बदल लिये। अलतीन-कीज नमदे के पीछे छिप गयी, और सरसेम्बाय उसकी जगह चूल्हे के पास बैठ गया।

तभी बाहर से शोर, कडक और कदमो की आहट आयी और तम्बू-घर मे लाल-लाल होठोवाली राक्षसी – भयावह जालमाउइज-केम्पीर घुस आयी।

वह आग से हाथ तापकर गुर्रायी

"अलतीन-कीज, मेरे पास आ।"

सरसेम्बाय बेधडक बुढिया के पास आ गया। उसने उस पर धुधली नजरो से सिर से पैर तक देखा और बुदबुदायी

"लगता है तू आज दिन भर मे कुछ बडी हो गयी है।"

धोखे का सन्देह न करते हुए उसने सरसेम्बाय का बदन टटोला, उसे नोच लिया और हसती हुई बोली

"अहा, कितनी चालाक लडकी है तू। मै बहुत पहले ही भाप गयी थी कि तू मुझे बेवकूफ बना रही है। तुझे एक बार अच्छी तरह धमकी देने की देर थी कि तू फौरन रास्ते पर आ गयी। ठीक है कुछ दिन और जी ले, थोडी चरबी चढा ले"

सरसेम्बाय और अलतीन-कीज के लिए कष्टदायी दिन और खतरनाक राते बीतने लगीं।

अतत वसन्त आया। जल-धारा मे पानी कलकल करता बहने लगा, चिडिया चहकने लगी, फूल खिलने लगे।

सरसेम्बाय अपनी सहेली से बोला ·

"प्यारी अलतीन-कीज! अब हमे भागने की तैयारी करना चाहिए। मै देख रहा हूँ कि जालमाउइज-केम्पीर पहले से ज्यादा चिडचिडी हो गयी है उसे कही हमारे इरादे की भनक तो नही पड गयी है? बुढिया को मेरा पता चल गया, तो मुसीबत आ जायेगी, हम दोनो मारे जायेंगे। मै कमान बनाकर शिकार करने जाऊँगा, रास्ते मे खाने के लिए चिडियाँ जमाकर लूँगा और तीन दिन बाद छिपकर लौट आऊँगा, फिर हम भाग जायेंगे।"

"जैसा ठीक समझो, सरसेम्बाय, वैसा ही करो," लडकी ने उत्तर दिया, पर उसकी आखे डबडबा आयी। "लेकिन शिकार करते समय होशियार रहना और सही-सलामत लौट आना।"

"रोओ मत, अलतीन-कीज, मेरे बारे मे दुखी मत होओ," सरसेम्बाय ने कहा। "और अगर ऊबने लगो, तो नदी के पास जाकर पानी को देखना अगर पानी पर हस

के पर तैर रहे हों, तो समझ लेना कि मैं जिन्दा और स्वस्थ हूँ और तुम्हें वहीं दूर सलाम कहलवा रहा हूँ।"

"बच्चों ने एक दूसरे से विदा ली। अलतीन-कीज़ मित्र को थोड़ी दूर तक छोड़ गयी वहीं जालमाउड़ज़-केम्पीर गायी तम्बू-घर से अचानक न आ धमके।

सरसेम्बाय चश्मे के किनारे-किनारे आगे बढ़ता गया।

पहले दिन उसने तीन हंस मारे और उनके पर नोचकर पानी में डाल दिये। दूसरे दिन उसने फिर तीन हंस मारे और फिर उनके पर पानी में डाल दिये।

तीसरे दिन सरसेम्बाय ने देखा वनपथ में एक हिरन का छौना खड़ा है और उसके ऊपर काले कौवों का झुण्ड ज़ोर-ज़ोर से काव-काव करता मडरा रहा है। कौवे छौने की आंखे निकाल लेना चाहते थे। लड़के को छौने पर दया आ गयी, उसने कौवों को भगा दिया।

बूढ़ा हिरन दौड़ा आया।

"धन्यवाद, सरसेम्बाय," वह बोला। "मैं तुम्हारी नेकी का बदला ज़रूर चुकाऊँगा।"

सरसेम्बाय आगे चला। उसे दर्दभरी "मे-मे" सुनाई दी। उसने गढे में झाककर देखा वहाँ पहाड़ी बकरे का मेमना था। वह निकलने के लिए ज़ोर लगा रहा था, चीख रहा था, पर निकल नही पा रहा था।

बालक को उस पर दया आ गयी और उसने उसे गढे में से निकाल लिया। बूढ़ा पहाड़ी बकरा भागता आया और बोला

"धन्यवाद, सरसेम्बाय। मैं तुम्हारी नेकी का बदला ज़रूर चुकाऊँगा।"

सरसेम्बाय आगे चला। यह कौन ची-ची कर रहा है? देखा घोसले से गिरा उकाब का नीड-शावक था। लड़के को चिड़िया के बच्चे पर दया आ गयी और उसने उसे ज़मीन से उठाकर घोसले मे रख दिया।

बूढ़ा उकाब उड़ता आया।

"धन्यवाद, सरसेम्बाय। मैं तुम्हारी नेकी का बदला ज़रूर चुकाऊँगा।"

इस प्रकार सरसेम्बाय उस दिन किसी जानवर का शिकार न कर सका। शाम होने-वाली थी। तभी लड़के को याद आया कि उसने सुबह से पानी में हंस का एक भी पर नहीं डाला है। उसका दिल विकल होने लगा। अब बेचारी अलतीन-कीज़ नदी के किनारे खड़ी क्या सोच रही होगी? सरसेम्बाय बिना पलटकर देखे वापस भाग चला।

अलतीन-कीज़ उस समय उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, उसकी याद में तड़प रही थी। जालमाउड़ज़-केम्पीर के घर से निकलते ही लड़की भागकर नदी के किनारे जा पहुँचती। लड़की जब देखती कि पानी कलकल करता बह रहा है, उस पर हंस के पर तैर रहे हैं, तो वह मुस्कराने लगती "सरसेम्बाय जिन्दा है।"

तीसरा दिन, उनकी जुदाई का आखिरी दिन आया। अलतीन-कीज़ नदी के किनारे खड़ी एकटक देखती रही, एक घंटा, दो घंटे, तीन घंटे...

पानी तो कलकल करता बह रहा था, पर उस पर हस कम्परा का निशान भी
ही था

लडकी किनारे पर गिर पडी और हाथो से मुह ढककर फूट-फूटकर रोने लगी

"सरसेम्बाय अब इस दुनिया मे नही रहा! दिलेर लड़का जान से मारा गया और
से यह भी मालूम नही पड़ा कि मै उसके लिए हजार बार मरने को तैयार हो जाती, बस
सी तरह वह जिन्दा बच जाये और सुखी रहे .. "

बेचारी रोती-बिलखती रही और यह न देख पायी कि कैसे जालमाउइज-केम्पीर
स्से के मारे कापती उसके पास आ पहुँची। बुढ़िया ने अपनी बन्दिनी के कधो को दबोच
गया और उस को सजा देने के लिए तम्बू-घर मे घसीट ले गयी।

"तेरी चालबाजियो का," वह दहाड़ी, "भेद खुल गया, छोकरी! भागने की सोच
हो थी? अपना हिमायती खोज लिया? अच्छी तरह समझ ले तू मुझसे बचकर कही
हीं जा सकती, और तुझे कोई नहीं बचा सकता। तेरी मौत आ गयी है! मै तुझे अभी
जिन्दा चबाकर खा जाऊगी!"

अचानक दरवाजा भड़भडाया और फटाक से पूरा खुल गया देहली पर सरसेम्बाय
डा था। अलतीन-कीज अपने को छुडाकर उसकी ओर लपकी और उसकी गरदन मे
थ डाल दिये, लेकिन बुढ़िया उसे कसकर पकडे रही, उसे अपने हाथो से नही निकलने
दया उसने।

"ठहर, जालमाउइज-केम्पीर!" लड़का चिल्लाया। "मेरी बात सुन ले। अलतीन-
कीज को छोड़ दे — तुझे छुड़ौती मे कीमती चीज दूँगा।"

"छुड़ौती देगा? वाह रे ढीठ! तू, फटीचर छोकरा, क्या देगा मुझे इसके बदले मे?"

सरसेम्बाय ने पेड के कोटर मे से सोने की सन्दूकची निकालकर बुढ़िया के सामने
सका ढक्कन खोल दिया। बहुमूल्य हीरे-जवाहरात को देखते ही जालमाउइज-केम्पीर लालच
के कारण चीख उठी और उसने लडकी को छोड दिया। उसके गुस्से पर लालच हावी हो
गया।

"ले जा छोकरी को, ले जा! और तेरे हीरे इधर ला!"

सरसेम्बाय आखिर इतना मूर्ख तो था नही जो सन्दूकची बुढ़िया के हाथो मे पकड़ाता।

"ये ले हीरे, बुढ़िया, उठा ले!" लड़का चिल्लाया और हीरे चारो ओर बिखरने
लगा। हीरे तारो की तरह चमकते जमीन पर लुढकने लगे। जालमाउइज-केम्पीर लपककर
उन्हें उठा-उठाकर अपने पल्ले मे डालने लगी, और उधर सरसेम्बाय अलतीन-कीज का
हाथ पकड़कर तम्बू-घर से बाहर भाग निकला।

वे बिना रास्ते पर ध्यान दिये वनपथ से भागते रहे, मुड़कर देखने से डरते जगल
मे भागते रहे। वृक्षो की शाखाएँ उनके बेत की तरह चोटें मारती रहीं, टहनियाँ खरोंचती
रही, ठूठ ... रास्ता रोकते रहे। अलतीन-कीज बिलकुल निढाल हो गयी,

उसके पैर घायल और लहू-लुहान हो गये, वह भागती-भागती अपनी चोटिया सभालती रही, आस्तीन से चेहरे का पसीना पोछती रही।

भागते लडके-लडकी को अचानक अपने पीछे से शोर और कडक सुनाई दिये धरती कापने लगी, पेड गिरने लगे – जालमाउइज-केम्पीर उनका पीछा कर रही थी।

"जल्दी से भागो, अलतीन-कीज़!" सरसेम्बाय ने कहा। "अब हमारी सारी आस केवल हमारे पैरो पर ही है।"

पर अलतीन-कीज़ उससे बोली

"मुझमे अब और ताक़त नही रही, सरसेम्बाय। मेरा सिर चकरा रहा है, मेरे घुटने टूटे जा रहे हैं। आगे तुम अकेले भाग जाओ! जब तक जालमाउइज-केम्पीर मुझे खा पायेगी, तुम दूर पहुँच जाओगे "

"तुम क्या कह रही हो, अलतीन-कीज़? मै तुम्हे कभी छोडकर नही जाऊँगा। तुम मुझे दुनिया मे सबसे ज्यादा प्यारी हो।"

वे फिर भागने लगे। पर जालमाउइज-केम्पीर निरन्तर निकट आती जा रही थी. बुढिया गालिया दे रही थी, धमकी दे रही थी

"मै जरूर तुम्हे पकड लूँगी! हर हालत मे जिन्दा चबा डालूँगी!"

अलतीन-कीज़ गिर पडी, उसे सास बडी मुश्किल से आ रही थी। वह धीरे से फुस-फुसायी

"अलविदा, सरसेम्बाय! मुझे छोड जाओ, अपनी जान बचाओ. मै तो अब नही बच सकूगी "

लडका रो पडा

"अगर मरना है, तो साथ ही मरेगे! "

उसने लडकी को जमीन से उठाकर अपनी पीठ पर बिठा लिया और हाफता हुआ आगे भागा।

तभी अचानक बूढा हिरन जैसे जमीन फाडकर निकल आया और कहने लगा:

"मै तुम्हे नही भूला, सरसेम्बाय। मेरी पीठ पर बैठ जाओ, बच्चो। मेरी गरदन पकडे रहो मनहूस बुढिया मुझे नही पकड सकती।"

बूढे हिरन ने उन्हे पलक झपकते ऊँची पहाडी के पास पहुँचा दिया और बोला

"जालमाउइज-केम्पीर तुम्हे यहा नही ढूँढ पायेगी।"

बच्चे एक दूसरे से चिपटे पहाडी की तलहटी मे बैठ गये, पर वे दम भी न ले पाये थे कि देखा जालमाउइज-केम्पीर धूल के गुबार उडाती, चीखती-चिल्लाती सीधी उन्ही की ओर भागी आ रही है।

सरसेम्बाय झट उठ खडा हुआ और अपनी सखी को अपनी ओट मे कर, हाथ मे नुकीला पत्थर उठाकर जूझने के लिए तैयार हो गया।

तभी अचानक बूढा पहाड़ी बकरा उनके आगे जैसे जमीन फाडकर निकल आया और बोला

"मै तुम्हे भूला नही हूँ, सरसेम्बाय। मेरी पीठ पर बैठ जाओ, बच्चो, और मेरी सीग कसकर पकड लो। मै तुम्हे मुसीबत से बचा लूंगा।"

जालमाउइज़-केम्पीर भागती हुई पहाडी तक पहुँची ही थी कि लडका और लडकी उसकी चोटी पर जा पहुँचे। बुढिया गुस्से से पागल हो उठी, पहाडी को दातो से चबाने लगी, पजो से खोदने लगी। पहाडी हिल उठी, लगा बस जैसे ढहने ही वाली है।

अचानक बूढा उकाब उडकर पहाडी पर आ पहुँचा और बोला

"मै तुम्हे भूला नही हूँ, सरसेम्बाय। बच्चो, जल्दी से मेरे पखो पर बैठ जाओ। तुमने, सरसेम्बाय, मेरे बच्चे को बचाया था और मै तुम लोगो को बचाऊँगा।"

बच्चे उकाब के ऊपर कूदे, उकाब उन्हे बुलन्दी पर ले उडा और उसी क्षण पहाडी ढह गयी,—ढही भी ऐसे कि दुष्ट जालमाउइज़-केम्पीर उसके नीचे दब गयी।

उकाब दिन भर उडता रहा, रात भर उडता रहा। बादलो के नीचे उड़ता रहा बादलो के ऊपर उड़ता रहा। फिर स्तेपी के बीच एक गाव के पास उतर गया।

अलतीन-कीज़ ने जमीन पर कदम रखकर चारो ओर नज़र दौडायी और खुशी के मारे चिल्ला उठी:

"अरे, यह तो मेरा गाव है!"

लड़की की आवाज़ सुनकर उसके पिता और माता घर से बाहर भागे, बेटी की ओर लपके और उसे गले लगाकर चूमने लगे, प्यार करने लगे।

"तुम इतने दिनो तक कहाँ रही, अलतीन-कीज़? तुम पर कैसी मुसीबत टूट पडी थी, बेटी? तुम्हारे उद्धार के लिए हम किसका धन्यवाद करे?"

लडकी ने उन्हे पूरा किस्सा सुनाकर सरसेम्बाय की ओर इशारा किया

"यही है मेरा उद्धारक!"

धूल मे लथपथ, जगह-जगह खरोचे खाया, गदे चिथडे पहने और नगे पाव सरसेम्बाय शर्म के मारे आखे झुकाये खडा था।

अलतीन-कीज़ के माता और पिता उसके हाथो मे हाथ डालकर तम्बू-घर मे ले आये और उसे अच्छे-अच्छे कपडे पहनाकर सम्मानित स्थान पर बिठा दिया।

"हमारे यहाँ बस जाओ, प्यारे सरसेम्बाय, हमेशा हमारे साथ रहो! हम छोटे बच्चे की तरह तुम्हारा लाड-प्यार करेगे और सफेद दाढीवाले बुज़ुर्ग की तरह तुम्हारी इज्ज़त करेगे।"

वर्ष बीतते रहे। सरसेम्बाय गाव मे रहता रहा और कभी अलतीन-कीज़ से जुदा नही हुआ। मेहनत और आराम, दुख और सुख—वे सब बराबर-बराबर बाटते रहे। स्तेपी मे सरसेम्बाय जैसा दिलेर और योग्य बाका लडका कोई नही था, और दुनिया मे

अलतीन-कीज से बढ़कर सुन्दर और स्नेहमयी लड़की कोई नहीं थी। उन्होंने समय आने पर युवावस्था में पदार्पण किया, सयाने हुए, उनका विवाह हो गया और वे पहले से भी अधिक सुखी हो गये। शीघ्र ही उनकी प्रथम सन्तान–पुत्र का जन्म हुआ, जिस पर पिता को गर्व था और जो माँ की खुशी था।

एक बार सरसेम्बाय काम के बाद स्तेपी की सुगंधित घास पर लेटा हुआ था, पास ही में उस पर झुकी अलतीन-कीज बैठी थी, और नन्हा बेटा उसके सीने पर कूद रहा था। सरसेम्बाय अपने को भाग्यशाली अनुभव कर हँसा और खुशी से बोला:

"देखो, मेरा वह अद्भुत सपना सच हो गया, जिसे मैंने बचपन में सौदागर से कारवा-सराय में एक मामूली-से सिक्के से खरीदा था। देखो ज़रा: मैं बेशक़ीमती स्तेप–मेरी मातृभूमि की पवित्र भूमि पर लेटा हुआ हूँ, मेरे ऊपर उजला सूरज–मेरी प्यारी अलतीन-कीज, तुम झुकी हुई हो, और मेरे सीने पर उजला चाद–मेरा प्यारा-प्यारा बेटा, मेरी पहली सन्तान खेल रहा है इस क्षण कौन ऐसा स्थान है, जिसे मुझसे ईर्ष्या न हो!"

अपने कष्ट भरे बचपन को याद करके सरसेम्बाय को एक बार फिर अपने उन चिथड़ो को देखने की इच्छा हुई, जिन्हें पहनकर वह कभी बाय के यहाँ से चला गया था, दुनिया भर में भटकता रहा था और रक्तपिपासु जालमाउइज़-केम्पीर के तम्बू-घर में अपनी अलतीन-कीज से पहली बार मिला था। उसकी पत्नी उसके छुटपन की क़मीज़ निकालकर उसके पास ले आयी। सरसेम्बाय ने उसे हाथो में थामा और सिर हिलाया: वह केवल चिथड़ा भर रह गयी थी पर उसमे जेब साबुत थी और वह खाली नहीं थी: उसमें कुछ था। लेकिन क्या हो सकता है? सरसेम्बाय ने जेब मे हाथ डाला और मुट्ठी भर रेत निकाली। उसे वह भिखारी याद हो आया, जिसे उसने बाज़ार मे छोटा सिक्का दिया था, बूढ़े की वह अजीब भेंट याद आयी, और उसने एक ठण्डी सास लेकर रेत हवा मे उछाल दी। हवा के एक झोके ने हल्के-फुल्के रेत के कणो को स्तेपी मे फैला दिया। और सारी निस्सीम स्तेपी अनगिनत भेड़ो के रेवड़ो, गायो, घोड़ो व ऊटो के झुण्डो से भर गयी. रेत के कण शानदार ऊटों, तेज़ घोड़ो, दुधारू गायो और मोटी-ताज़ी भेड़ो मे बदल गये।

गाव के लोग आकर पूछने लगे

"ये अनगिनत झुण्ड किसके हैं? यह अनदेखी दौलत किसकी है?"

सरसेम्बाय ने जवाब दिया.

"ये अनगिनत रेवड़ मेरे और आपके हैं, यह अनदेखी दौलत आपकी और मेरी है।"

रूपवती मीरजान और सांपों का बादशाह

एक गरीब विधवा थी। उसके एक इकलौती बेटी थी – उनके गांव में सबसे रूपवती। उसका नाम मीरजान था। एक गरम दिन लड़कियां नदी पर नहाने गयीं और मीरजान को भी अपने साथ ले गयीं। पानी में नहाते-नहाते लड़कियां कहने लगीं

"तुम कितनी सुन्दर हो, मीरजान! अगर बादशाह तुम्हें देख ले तो वह कह उठे 'मेरी आंखों के नूर, मीरजान, मैं तुम्हें अपनी सारी दौलत दे दूंगा तुम बस मेरी बन जाओ!'"

मीरजान ने लजाकर आंखें झुका लीं।

"तुम ऐसा मजाक क्यों करती हो, सहेलियो? बादशाह तो मेरी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखेगा। क्योंकि मैं गांव में सबसे गरीब घर की हूं।"

उसका इतना कहना था कि एकाएक नदी में उफान आने लगा और पाताल में से किसी की प्रभावशाली आवाज आयी:

"मेरी आंखों के नूर, मीरजान, मैं तुम्हें अपनी सारी दौलत दे दूंगा तुम बस मेरी बन जाओ!"

भयभीत लड़कियां चीख मारकर किनारे की ओर लपकीं और अपने-अपने कपड़े उठाकर गांव भाग गयीं। मीरजान का उनको ध्यान ही नहीं रहा।

रूपवती ने किनारे पर खड़े-खड़े देखा: उसके कपड़ों पर एक भीमकाय नाग मार कुण्डलियां मारे बैठा है और फन ऊंचा उठाये उसी को एकटक देखे जा रहा है।

"मेरी आंखों के नूर, मीरजान!" नाग बोला। "मैं पानी के देश का बादशाह हूं। तुम्हें अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करता हूं। तुम मुझसे शादी कर लो! मैं तुम्हें अपना बिल्लौरी महल भेंट कर दूंगा। हिचकिचाओ मत! अगर मुझसे शादी करने का वचन दोगी तब ही तुम्हें तुम्हारे कपड़े लौटा दूंगा, वरना इन्हें गड्ढे में ले जाऊंगा। फिर क्या करोगी?"

मीरजान किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी। डर के मारे उसने वचन दे दिया। नाग वहीं

से ऐसे गायब हो गया, जैसे वहाँ था ही नहीं, नदी में केवल हिलोरे आ रही थीं, तरंगें किनारे पर छपाके मार रही थीं। लड़की ने किसी तरह कपड़े पहने और सहेलियों के पीछे-पीछे भागी। तम्बू-घर में घुसकर वह माँ के आगे गिर पड़ी और फूट-फूटकर रोने लगी।

"तुम्हें क्या हो गया, प्यारी बेटी?" विधवा व्यथित हो उठी। "किसी ने तुम्हारे साथ बुरा किया?"

मीरजान ने उसके साथ जो हुआ सब बता दिया और हाथ मलती रही।

"अब मैं क्या करूँ? मैंने वचन दे दिया है। मैं अपने वादे से कैसे मुकर जाऊँ?"

उसकी माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरा, उसे सीने से लगा लिया और तसल्ली दिलाने लगी

"शान्त हो जा, मेरी बच्ची। भयानक सांप को तुमने शायद सपने में देखा होगा। दुनिया में ऐसा होता ही नहीं है। तुम घर पर रहो और कहीं मत जाओ।"

एक सप्ताह बीत गया। मीरजान हंसने-खेलने लगी। माँ उसे तम्बू-घर से बाहर नहीं निकलने देती थी और स्वयं भी उससे दूर नहीं जाती थी।

एक बार बुढ़िया ने दरवाज़े में से बाहर झांककर देखा और सन्न रह गयी।

"हाय मर गये! जहां तक नज़र जाती है, नदी से हमारे तम्बू-घर की तरफ काले-काले सांप ही सांप रेंगते दिखाई दे रहे हैं!"

मीरजान का चेहरा फक हो गया

"वे मुझे ले जाने आ रहे हैं!"

वे दरवाज़ा बन्द कर सारा सामान उससे अड़ा, नमदा ओढ़कर छिप गयीं। डर के मारे वे सांस तक नहीं ले रही थीं।

और सांप थे कि रेंगते-रेंगते बराबर उनके घर के निकट आते जा रहे थे—सारी स्तेपी में तहलका मच गया था। वे तम्बू-घर के पास आये, तो रास्ता बन्द था। वे फुफकारते हुए तम्बू-घर पर टूट पड़े और अन्दर घुसकर बेहोश मीरजान को पकड़कर नदी की ओर ले गये। विधवा बुरी तरह रोती-बिलखती बेटी की ओर हाथ बढ़ाये उनके पीछे भागी—पर उन्हें पकड़ न सकी। सांपों ने पानी में गोता लगाया और उनके साथ ही लड़की भी आंखों से ओझल हो गयी।

दुख के मारे अधमरी-सी बुढ़िया अपने खाली घर लौटी और ज़मीन पर गिरकर विलाप करने लगी

"मेरी बेटी, मेरी प्यारी मीरजान! मेरे करम फोड़ दिये मनहूस सांप ने!"

दुनिया पर दुखिया [illegible] रही, समय गुज़रता रहा। एकाकी विधवा पूर्णतः बूढ़ी हो गयी, उसकी कमर झुक गयी, बाल सफ़ेद हो गये। लेकिन वह बराबर प्रतीक्षा करती रही। अक्सर [illegible] स्तेपी में [illegible] उधर देखती रही, जिधर काले सांप उसकी बेटी को उठा ले गये थे।

एक बार वह दुख में डूबी अपने तम्बू-घर के दरवाजे के पास बैठी थी अचानक देखा रानी की तरह सजी-धजी एक युवा स्त्री, दाये हाथ से लड़के का हाथ थाम गोद में लड़की उठाये, उसकी तरफ चली आ रही है।

बुढ़िया हड़बड़ा उठी।

"मीरजान! मेरी बेटी! तुम्ही हो ना!"

उन्होंने एक-दूसरे का आलिंगन किया एक-दूसरे को चूमा और तम्बू-घर में गयी। बुढ़िया अपनी बेटी को नाती-नातिन को देखती रही पर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"तुम कहाँ से आयी हो, मीरजान?"

"मैं नदी तल के देश से आयी हूँ। मेरा पति वहां का बादशाह है।"

"पानी के नीचे तुम्हारी जिन्दगी सुख से बीत रही है क्या?"

"मुझसे ज्यादा सुखी कोई नहीं होगा। पर मुझे तुम्हारी याद बहुत सता रही थी, और मैं तुम्हें हमारे बच्चों को दिखाना चाहती थी।"

"बेटी क्या तुम सचमुच उस दुष्ट सांप के पास लौट जाओगी? तुम क्या अपनी दुखियारी माँ को फिर छोड़कर चली जाओगी?" विधवा ने पूछा पर मन में कहा "ऐसा कभी नहीं होने दूँगी! अब मैं किसी कीमत पर अपनी मीरजान से नहीं बिछुड़ूँगी।"

"प्यारी माँ, मीरजान ने उत्तर दिया मुझे माफ करना पर मैं तुम्हारे यहां ज्यादा देर नहीं रह सकूँगी। हमें शाम तक नदी तल में अपने महल में पहुँच जाना है। मेरे पति हमारा इन्तजार कर रहे हैं। मैं उन्हें प्यार करती हूँ और उनका आदर करती हूँ। क्योंकि वह केवल धरती पर ही सांप का रूप धरते हैं और अपने देश में – वह बहुत सुन्दर नौजवान है।"

शायद हमारे भाग्य में ऐसा ही बदा था। लेकिन तुम नदी तल के देश का रास्ता फिर कैसे ढूँढोगी?"

"ऐसे। मैं नदी के किनारे जाकर आवाज दूँगी अहमेत! अहमेत! मैं तुम्हारी बीवी हूँ, मेरी आँखों के नूर, ऊपर आकर मुझे ले जाओ! और मेरे पति फौरन मेरे आगे निकलकर हमें महल में ले जायेंगे।

ठीक है, बुढ़िया ने मन में सोचा अब मुझे मालूम हो गया कि क्या करना चाहिए।"

माँ रोने लगी और बेटी को न जाने के लिए मनाने लगी।

"अगर तुम हमेशा के लिए मेरे साथ नहीं रहना चाहती तो अपने घर में कम-से-कम एक रात तो रह लो!"

मीरजान को बूढ़ी माँ पर दया आ गयी और वह उसके यहां एक रात के लिए रुकने को मान गयी। बुढ़िया खुश हो उठी उसमें जैसे फौरन जान आ गयी।

दिन ढलने लगा था। रात आयी, बच्चे सो गये और रूपवती मीरजान भी सो गयी। तब बुढ़िया चुपके से बिस्तर से उठी और अंधेरे में कुल्हाड़ी टटोलकर दबे पाव तम्बू-घर से बाहर निकल गयी।

वह नदी किनारे पहुँचकर कगार पर खड़ी हो गयी और वहाँ से ज़ोर से आवाज़ देने लगी

"अहमेत! अहमेत! मैं तुम्हारी बीवी हूँ! मेरी आँखों के नूर, ऊपर आकर मुझे ले जाओ!"

उसी क्षण साँप पानी में से निकला और किनारे पर फन रखकर प्यार से बोला,

"तुम आख़िर आ गयी, मेरी मीरजान! मैं तो तुम्हारा इन्तज़ार करते-करते थक गया, बच्चों की याद में तड़पता रहा "

बुढ़िया ने देर नही की और कुल्हाड़ी उठाकर साँप का सिर काट दिया... उसका सिर किनारे पर लुढ़क गया। और नदी का पानी ख़ून से लाल हो उठा...

मीरजान सुबह उठी और बच्चों को लेकर माँ से विदा लेने लगी·

"अच्छा, मैं चलती हूँ, एक साल बाद आऊँगी तुम्हारे पास।"

रूपवती नदी के निकट पहुँची – लड़के का हाथ पकड़े, लड़की को गोदी में लिये। पानी के पास रुककर उसने पति को पुकारा.

"अहमेत! अहमेत! मैं तुम्हारी बीवी हूँ! मेरी आँखों के नूर, ऊपर आकर मुझे ले जाओ!"

पति नही निकला। थोड़े देर बाद मीरजान ने फिर आवाज़ दी:

"अहमेत! अहमेत! मैं तुम्हारी बीवी हूँ! मेरी आँखों के नूर, ऊपर आकर मुझे ले जाओ!"

लेकिन नदी तल का बादशाह अथाह पानी में से निकला ही नही। मीरजान का दिल डूबने लगा, उसने नदी पर नज़र डाली, पर नदी तो सारी लाल हो गयी थी...

मीरजान सब समझ गयी, रोने लगी और बच्चों को चूमने लगी:

"तुम्हारे पिता मर गये, बच्चो! उनकी मौत के लिए मैं दोषी हूँ... अब मैं तुम अनाथों का क्या करूँ?"

उसने बच्चों को डबडबायी आँखों से देखा और बोली.

"तुम, बेटी, अबाबील बन जाओ – इस पानी के ऊपर उड़ती रहना! और तुम, बेटे, बुलबुल बनकर भोर को गीत सुनाना! और मैं, तुम्हारी बेघर माँ, कोयल बन जाऊँगी, एक जगह से दूसरी जगह भटकती रहूँगी, पति की याद में तड़पती रहूँगी, दर्दभरी आवाज़ में कूकती रहूँगी!

इतना कहते ही वे तीनों पक्षी बन गये और पंख फड़फड़ाते भिन्न-भिन्न दिशा में उड़ गये।

अपना-अपना भाग्य

दो भाई थे। बड़ा भाई बुद्धिमान और परिश्रमी था, जब कि छोटा – नासमझ, सुस्त और ईर्ष्यालु था। उसका नाम कादिर था। यह कहानी उसी के बारे में है।

कादिर अपने भाई के पास आया और अपना दुखड़ा रोने लगा

"ऐसा क्यों होता है, भैया, कृपा करके ज़रा समझा दो! हम दोनों एक ही वंश और कबीले के हैं, एक ही बाप के बेटे हैं, पर हमारा भाग्य अलग-अलग है। तुम्हें हर काम में सफलता मिलती है, मुझे – किसी काम में नहीं मिलती। तुम्हारी भेड़ें ब्याती हैं, मोटी होती रहती हैं, पर मेरी – एक के बाद एक मरती जा रही है, तुम्हारा घोड़ा घुड़दौड़ में अव्वल आया, जब कि मेरे ने मुझे बीच रास्ते में गिरा दिया, तुम्हारे घर में हमेशा मांस और किमिज़ रहता है, जब कि मुझे घर में पनीला शोरबा भी पेट भर खाने को नहीं मिलता ; तुम्हारी पत्नी स्नेहमयी है, जब कि मेरी तरफ़ कोई लड़की आंख उठाकर भी नहीं देखती ; तुम्हारा बुज़ुर्ग आदर करते हैं, जब कि छोटे-छोटे छोकरे भी बेशर्मी से मेरी खिल्ली उड़ाते हैं .."

बड़ा भाई मुस्कराकर बोला

"इसका कारण यह है कि मेरा भाग्य मेरी सहायता करता है।"

"आखिर वह मेरी मदद क्यों नहीं करता?"

"हर मनुष्य का अपना-अपना भाग्य होता है, कादिर। मेरा भाग्य मेहनती है, और तुम्हारा शायद कहीं किसी कैरागच* के तले सो रहा है।"

"तो ठीक है," कादिर ने सोचा, "मैं अपने भाग्य को ढूंढकर उसे मेरी खातिर काम करने को मजबूर कर दूंगा।"

वह उसी दिन अपने भाग्य की खोज में निकल पड़ा।

---

* कैरागच – एल्म किस्म का सोवियत संघ के दक्षिणी इलाकों में पाया जानेवाला वृक्ष।

वह चलता रहा, चलता रहा और बहुत दूर आ पहुँचा। अचानक एक चट्टान के पीछे से एक शेर निकला और उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। कादिर भयभीत हो उठा, लेकिन भागकर वह जा भी कहाँ सकता था? चारों तरफ नंगी स्तेपी फैली हुई थी। अब क्या होगा?

शेर बोला

तू कौन है?

मैं कादिर हूँ।

कहाँ जा रहा है?

अपने भाग्य को खोजने।

"तो फिर सुन मेरी बात, कादिर," शेर बोला, "जब तू अपने भाग्य को ढूँढ लेगा तो उससे पूछना कि मैं क्या करूँ जिससे मेरे पेट का दर्द ठीक हो जाये। किसी जड़ी-बूटी से फायदा नहीं हो रहा है। मैं परेशान हो गया हूँ, किसी काम का नहीं रहा। मेरा काम करने का वचन देगा, तो तुझे नहीं छुऊँगा, वरना इसी वक्त चबा जाऊँगा।"

कादिर ने कसम खायी कि वह उसको कोई तरकीब बतायेगा या दवा लाकर देगा, और जानवर उसके रास्ते से हट गया।

कादिर आगे चला। उसने देखा, धूप से तपते खेत में एक बूढ़ा, बुढ़िया और अद्वितीय सुन्दरी बैठे फूट-फूटकर रो रहे हैं, जैसे उनका कोई मर गया हो।

कादिर रुक गया।

"आप लोग क्यों रो रहे हैं?"

"हम पर भारी मुसीबत आ गयी है," वृद्ध ने उत्तर दिया। "मैंने तीन साल पहले यह खेत खरीदा था और इसकी कीमत अपना सब कुछ देकर चुकायी थी। हम कमरतोड़ मेहनत करके इस जमीन में खेती करते हैं, जैसे मां बच्चे की सभाल करती है, वैसे हम पौधों की सभाल करते हैं। पर अभी तक एक बार भी फसल नहीं उठा पाये हैं। अंकुर खूब घने निकलते हैं, वसन्त में खेत उमदा फसल की आशा दिलाता हरा-भरा हो जाता है, पर जब गर्मी में, हम कितना भी पानी क्यों न दें, पौधे मुरझाने लगते हैं और जड़ तक सूख जाते हैं। इस प्रकोप का क्या कारण है, कोई नहीं बता पाता है। हम मर जायेंगे, भले आदमी। हमारा भाग्य है ही नहीं।"

कादिर बोला

"हालांकि मेरा भाग्य है, पर वह कहीं किसी घने कैरागच के तले सो रहा है। मैं उसे ढूँढने ही जा रहा हूँ।"

बूढ़ा कादिर की चिरौरी करने लगा

"प्यारे बेटा, तुम्हारा बाल भी बाँका न हो, सफलता तुम्हारे क़दम चूमे! अगर

तुम्हे अपना भाग्य मिल गया, तो कृपा करके, उससे पूछना कि क्या उसे हमारी फसल बरबाद होने का कारण मालूम है? हम हमेशा तुम्हारे आभारी रहेगे।"

क़ादिर ने बूढ़े को जवाब लाकर उसी स्थान पर लौटने का वादा किया और फिर आगे चल पड़ा।

बहुत दिनो बाद कादिर एक बड़े शहर मे पहुँचा, जो, मालूम पडा, ख़ान की राजधानी था। उसके रास्ते मे भीड़ के बीच नजर आने की देर थी कि उस पर सिपाही टूट पडे और उसका गरेबान पकडकर ख़ान के महल मे खीच ले गये। इतनी अप्रत्याशित बात मे कादिर किंकर्तव्यविमूढ रह गया और यह न ज्ञात होने पर कि उसका क्या कसूर है, बुरी से बुरी सज़ा की प्रतीक्षा करने लगा। किन्तु ख़ान ने उसका स्वागत सहृदय मुस्कान और स्नेहपूर्ण शब्दो से किया.

"तुम मेरे मेहमान बनो, परदेसी," ख़ान ने कहा, "और बताओ कि तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?"

कादिर घुटनो पर गिर पड़ा और उसने हकलाते हुए अपनी सारी आपबीती ख़ान को सुना दी।

उसकी बात सुनकर ख़ान ने हुक्म दिया

"उठो और मेरे पास आओ, कादिर। मुझसे डरो मत। मै तुमसे अपने दास की तरह नही, मित्र की तरह बात कर रहा हूँ। मुझे तुमसे एक विनती करनी है। तुम्हे जब अपना भाग्य मिल जाये, तो उससे पूछना कि मै इतने विशाल, समृद्ध और शक्तिशाली देश का ख़ान होते हुए भी अपने सोने के महल मे क्यो ख़ुश नही रह पा रहा हूँ और तडपता रहता हूँ। उत्तर के लिए, वह चाहे जैसा भी क्यो न हो, मै तुम्हे खुले दिल से इनाम दूँगा।"

और कादिर फिर सफर पर निकल पडा। वह तीन वर्ष तक यात्रा करता रहा। अन्त मे वह एक ऊँचे काले पर्वत के पास पहुँचा और देखा एक खडी चट्टान की कगार पर एक शाखी क़ैरागच उगा हुआ है और उसके नीचे मनुष्य से मिलता-जुलना कोई नगा, कई दिनो से नही नहाया प्राणी नगे पैर, बाल बिखेरे गहरी नीन्द मे सो रहा है।

"क्या सचमुच यही मेरा भाग्य है?" क़ादिर ने सोचा और आलसी को जगाने लगा

"उठो, आँखे खोलो, काम का वक्त हो गया है। मेरे भाई का भाग्य तो वहाँ उसके लिए कमरतोड मेहनत कर रहा है। तुम क्या मेरी सेवा नही करना चाहते? आँखे खोलो और जल्दी से उठो!"

वह काफी देर तक चिल्लाता और उनीदे को झँझोडता रहा। अन्त मे भाग्य हिला, उसने अगडाई लेकर सिर उठाया और जँभाइयाँ लेते हुए आँखे मलने लगा।

"क्या तुम हो, क़ादिर? तुम बेकार [illegible] फिर रहे हो दुनिया मे, पैर तोड रहे

हो। ऐसे ही किसी शाखी कैरागच के तले लेटे रहते, तो ज्यादा अच्छा होता, तुम्हे अधिक शान्ति मिलती। भाग्य तो तुम्हारे भाई जैसे बुद्धिमानो और परिश्रमियों की सहायता करता है और तुम्हारे जैसे मूर्खों और कामचोरों के तो वह भी किसी काम का नहीं होता। लेकिन जब तुम मेरे पास आ ही पहुँचे हो, तो बैठो और बताओ कि तुमने यहाँ का रास्ता कैसे खोजा, क्या-क्या देखा, किस-किस से मिले, उनसे क्या-क्या बाते हुईं और तुम्हे मुझसे क्या चाहिए?"

कादिर अपना किस्सा सुनाने लगा, और भाग्य जभाइया लेता हुआ उसकी बातें सुनता रहा। उसकी पूरी बाते सुनकर उसने उसे समझाया कि उसे वापस लौटते समय किस-किस को क्या-क्या उत्तर देना है और फिर बोला:

"तुम्हारे किस्से सुनकर मै इस निर्णय पर पहुँचा हूँ, क़ादिर, कि तुम में बुराइयां बहुत हैं, पर साथ ही कुछ अच्छाइया भी हैं। तुम्हारी अच्छाइयों के लिए ही मैं तुम्हे इनाम देना चाहता हूँ। अब घर जाओ। तुम्हारा भाग्योदय होनेवाला है। हर किसी को ऐसा सुख नही मिलता। लेकिन देखो, कही अपनी नासमझी के कारण मौका मत चूक जाना। अच्छा, जाओ!"

कादिर का भाग्य फिर कैरागच तले पैर पसारकर लेट गया और उसके खर्राटों से सारी घाटी गूजने लगी। कादिर उससे अपना भविष्य भली-भाति मालूम करने के लिए उसे फिर झकझोड़ने लगा, पर वह कहाँ जागनेवाला था—वह पसीने-पसीने हो गया, पर भाग्य किसी तरह जागा ही नही। वह थोडी देर खड़ा रहा और फिर मुड़कर उसी रास्ते पर डग भरने लगा, जिससे आया था।

वह राजधानी में पहुँचकर खान के सामने हाजिर हुआ। खान उसे देख बहुत खुश हुआ, उसने अपने सारे अनुचरो व अगरक्षको को बाहर भेज दिया और अतिथि को अपने पास बिठा लिया

"सुनाओ, क़ादिर!"

और क़ादिर ने कहा

"मेरे भाग्य ने मुझे तुम्हारे दुख का कारण बता दिया। तुम इस देश पर राज कर रहे हो, और सब तुम्हें पुरुष मानकर तुम्हे खान कहकर पुकारते हैं। जब कि वास्तव में तुम स्त्री हो। तुम्हारे लिए यह रहस्य छिपाये रखना मुश्किल होता है और सेना-सचालन करना, शासन चलाना अकेले तुम्हारे बस का काम नही है। तुम कोई योग्य पति चुन लो, फिर सुख से रहने लगोगे।"

"तुम्हारे भाग्य ने बिलकुल सच कहा, कादिर," खान ने लजाते हुए कहा और अपनी बहुमूल्य टोपी उतार दी काली चोटिया रगीन क़ालीन को छूने लगीं, और क़ादिर ने देखा कि उसके सामने पूनम के चाद-सी सुन्दर लड़की खड़ी है।

खानकी युवती शर्म से लाल होकर बोली

"मेरा रहस्य जाननेवाले तुम पहले बाके नौजवान हो। तुम ही मेरे पति और मेरे देश के खान बन जाओ!"

कादिर यह शब्द सुनकर स्तब्ध रह गया और होश मे आने पर सिर और हाथ हिलाने लगा.

"नही, नही, मै खान नही बनना चाहता! मेरे भाग्य का उदय होनेवाला है।" और वह आगे चल दिया।

बूढे, बुढिया और उनकी रूपवती बेटी ने सिर नवाकर उसका हार्दिक स्वागत किया। "हमारे लिए क्या खबर लाये हो, प्यारे कादिर?"

"आपके लिए खबर यह है," कादिर ने उत्तर दिया, "कि पुराने ज़माने मे, जिस जगह आपका खेत है, वहाँ एक धनी आदमी ने विदेशियो की लूट-मार से डरकर सोने से भरे बड़े-बड़े चालीस घडे गाड़ दिये थे। इसी लिए आपकी ज़मीन पर कोई फ़सल नही उगती है। आप सोना खोदकर निकाल लीजिये और आपकी मिट्टी फिर उपजाऊ हो जायेगी, फिर आप इस इलाके मे सबसे ज्यादा धनी हो जायेगे।"

गरीब लोग खुशी से नाच उठे, हसने लगे, रोने लगे और कादिर को सीने से लगाने लगे।

बूढ़ा बोला:

"तुमने हम सबको सुखी कर दिया, कादिर। हमारे साथ रह जाओ। सोना खोदने मे हमारी मदद करो। आधा खज़ाना तुम ले लो और हमारी बेटी से शादी कर लो। तुम मेरे बेटे और दामाद बन जाओ।"

क़ादिर को बूढ़ा और बुढ़िया अच्छे लगे, उनकी बेटी तो उसे और भी ज्यादा पसन्द आयी, फिर भी वह उनके यहाँ रात बिताने को भी नहीं रुका।

"नही," कादिर ने कहा, "मेरे भाग्योदय होनेवाला है।"

और वह आगे चल दिया।

वह चलता रहा, चलता रहा – उसके जूते घिस गये, पाव चूर-चूर हो गये, बडी मुश्किल से सुनसान पगडण्डी पर लगड़ाता हुआ चलता रहा। एक चट्टान देखकर वह उस पर बैठ गया और सोचने लगा:

"मेरी यात्रा का अन्त होनेवाला है, पर मेरा भाग्योदय कब होगा?"

वह बैठकर यह सोचने ही लगा था कि देखा – उसके सामने शेर खड़ा है।

"क्यो, कादिर," शेर बोला, "मेरे लिए सलाह या दवा लाया?"

"दवा तो मैं नही लाया, पर तुम्हारी बीमारी से पिण्ड छुड़ाने का एक तरीका है। तुम दुनिया के सबसे मूर्ख आदमी का दिमाग़ खा लो – फौरन ठीक हो जाओगे।"

"धन्यवाद, क़ादिर। मै अब सर्वत्र ऐसे बेवकूफ को खोजूँगा। क्या तुम इस काम मे

हो। ऐसे ही किसी शाखी कैरागच के तले लेटे रहते, तो ज्यादा अच्छा होता, तुम्हें अधिक शान्ति मिलती। भाग्य तो तुम्हारे भाई जैसे बुद्धिमानों और परिश्रमियों की सहायता करता है और तुम्हारे जैसे मूर्खों और कामचोरों के तो वह भी किसी काम का नहीं होता। लेकिन जब तुम मेरे पास आ ही पहुँचे हो, तो बैठो और बताओ कि तुमने यहाँ का रास्ता कैसे खोजा, क्या-क्या देखा, किस-किस से मिले, उनसे क्या-क्या बातें हुईं और तुम्हें मुझसे क्या चाहिए?"

कादिर अपना किस्सा सुनाने लगा, और भाग्य जभाइया लेता हुआ उसकी बातें सुनता रहा। उसकी पूरी बाते सुनकर उसने उसे समझाया कि उसे वापस लौटते समय किस-किस को क्या-क्या उत्तर देना है और फिर बोला:

"तुम्हारे किस्से सुनकर मै इस निर्णय पर पहुँचा हूँ, कादिर, कि तुम मे बुराइया बहुत हैं, पर साथ ही कुछ अच्छाइया भी हैं। तुम्हारी अच्छाइयो के लिए ही मैं तुम्हें इनाम देना चाहता हूँ। अब घर जाओ। तुम्हारा भाग्योदय होनेवाला है। हर किसी को ऐसा सुख नही मिलता। लेकिन देखो, कही अपनी नासमझी के कारण मौका मत चूक जाना। अच्छा, जाओ!"

कादिर का भाग्य फिर कैरागच तले पैर पसारकर लेट गया और उसके खर्राटों से सारी घाटी गूजने लगी। कादिर उससे अपना भविष्य भली-भाति मालूम करने के लिए उसे फिर झकझोडने लगा, पर वह कहाँ जागनेवाला था – वह पसीने-पसीने हो गया, पर भाग्य किसी तरह जागा ही नही। वह थोडी देर खड़ा रहा और फिर मुड़कर उसी रास्ते पर डग भरने लगा, जिससे आया था।

वह राजधानी मे पहुँचकर खान के सामने हाजिर हुआ। खान उसे देख बहुत खुश हुआ, उसने अपने सारे अनुचरो व अगरक्षको को बाहर भेज दिया और अतिथि को अपने पास बिठा लिया।

"सुनाओ, कादिर!"

और क़ादिर ने कहा

"मेरे भाग्य ने मुझे तुम्हारे दुख का कारण बता दिया। तुम इस देश पर राज कर रहे हो, और सब तुम्हें पुरुष मानकर तुम्हे खान कहकर पुकारते हैं। जब कि वास्तव में तुम स्त्री हो। तुम्हारे लिए यह रहस्य छिपाये रखना मुश्किल होता है और सेना-सचालन करना, शासन चलाना अकेले तुम्हारे बस का काम नही है। तुम कोई योग्य पति चुन लो, फिर सुख से रहने लगोगे।"

"तुम्हारे भाग्य ने बिलकुल सच कहा, कादिर," खान ने लजाते हुए कहा और अपनी बहुमूल्य टोपी उतार दी काली चोटिया रगीन कालीन को छूने लगी, और क़ादिर ने देखा कि उसके सामने पूनम के चाद-सी सुन्दर लड़की खड़ी है।

मानकर्ी युवती शर्म से लाल होकर बोली,

मेरा रहस्य जाननेवाले तुम पहले बाके नौजवान हो। तुम ही मेरे पति और मेरे खान बन जाओ!"

कादिर यह शब्द सुनकर स्तब्ध रह गया और होश मे आने पर सिर और हाथ लगा:

"नहीं, नही, मै खान नही बनना चाहता! मेरे भाग्य का उदय होनेवाला है।"

और वह आगे चल दिया।

बूढे, बुढ़िया और उनकी रूपवती बेटी ने सिर नवाकर उसका हार्दिक स्वागत किया।

"हमारे लिए क्या खबर लाये हो, प्यारे कादिर?"

"आपके लिए खबर यह है," कादिर ने उत्तर दिया, "कि पुराने जमाने मे, जिस आपका खेत है, वहाँ एक धनी आदमी ने विदेशियो की लूट-मार से डरकर सोने रे बड़े-बड़े चालीस घड़े गाड दिये थे। इसी लिए आपकी ज़मीन पर कोई फसल नही ी है। आप सोना खोदकर निकाल लीजिये और आपकी मिट्टी फिर उपजाऊ हो जायेगी, आप इस इलाके मे सबसे ज्यादा धनी हो जायेगे।"

ग़रीब लोग खुशी से नाच उठे, हसने लगे, रोने लगे और कादिर को सीने से लगाने ।

बूढा बोला:

"तुमने हम सबको सुखी कर दिया, कादिर। हमारे साथ रह जाओ। सोना खोदने हमारी मदद करो। आधा खज़ाना तुम ले लो और हमारी बेटी से शादी कर लो। तुम रे बेटे और दामाद बन जाओ।"

कादिर को बूढा और बुढ़िया अच्छे लगे, उनकी बेटी तो उसे और भी ज्यादा मन्द आयी, फिर भी वह उनके यहाँ रात बिताने को भी नही रुका।

"नहीं," कादिर ने कहा, "मेरे भाग्योदय होनेवाला है।"

और वह आगे चल दिया।

वह चलता रहा, चलता रहा – उसके जूते घिस गये, पाव चूर-चूर हो गये, बडी मुश्किल मे सुनसान पगडण्डी पर लगडाता हुआ चलता रहा। एक चट्टान देखकर वह उस पर बैठ गया और सोचने लगा:

"मेरी यात्रा का अन्त होनेवाला है, पर मेरा भाग्योदय कब होगा?"

वह बैठकर यह सोचने ही लगा था कि देखा – उसके सामने शेर खड़ा है।

"क्यो, कादिर," शेर बोला, "मेरे लिए सलाह या दवा लाया?"

"दवा तो मैं नही लाया, पर तुम्हारी बीमारी से पिण्ड छुड़ाने का एक तरीका है। तुम दुनिया के सबसे मूर्ख आदमी का दिमाग खा लो – फौरन ठीक हो जाओगे।"

"धन्यवाद, कादिर। मै अब सर्वत्र ऐसे बेवकूफ को खोजूंगा। क्या तुम इस काम मे

मेरी मदद करोगे? अच्छा, सुनाओ, तुम सफर में कैसे-कैसे लोगों से मिले, उनसे क्या-क्या बाते की। जब तक नहीं सुनाओगे, तुम्हे जाने नहीं दूँगा।"

कोई चारा न रहा। कादिर ने उसे बूढ़े क़ैरागच के तले अपने भाग्य के साथ हुई बातचीत, मानरूपी युवती और बूढे, बुढ़िया व उनकी रूपवती बेटी के बारे में बता दिया।

शेर की आखे चमक उठी, वह दात पीसने लगा और उसकी अयाल खड़ी हो गयी। वह बोला

"कितना मूर्ख है तू, कादिर! सुखी होने का इतना अच्छा मौक़ा तुझे मिला था, पर तूने उसे छोड दिया। तूने राज और सम्मान को ठुकरा दिया, धन और समृद्धि को ठुकरा दिया, तूने दो सुन्दर युवतियो को ठुकरा दिया अगर मै दुनिया के तीन चक्कर लगाऊँ, तो भी मुझे तुमसे ज्यादा मूर्ख किसी हालत मे नही मिलेगा। तेरे दिमाग मे ही मेरा पेट ठीक होगा! "

शेर दौडकर कादिर पर कूदा। कादिर डर के मारे सिर कटे मेढे की तरह जमीन पर गिर पड़ा। और इसी से उसकी जान बच गयी. शेर सीने के बल चट्टान से टकराया और वही ढेर हो गया।

"मेरा भाग्य कितना अच्छा है!" कादिर खुशी से फूला न समाता चिल्लाया। "मेरी मृत्यु निश्चित थी, पर मै जिन्दा बच गया। मेरा भाग्य कितना अच्छा है!"

कादिर जब अपने गाव लौटकर आया, उसे कोई पहचान नही सका चेहरा-मोहरा तो उसका पहले जैसा था, पर स्वभाव बिलकुल दूसरा। मानो बाके नौजवान का दूसरा जन्म हुआ हो, वह बिलकुल नया आदमी बन चुका था। वह हमेशा हसमुख रहने लगा, सबसे नम्रतापूर्वक व्यवहार करने लगा। उसने फिर कभी कोई शिकायत भी नही की और किसी से ईर्ष्या भी नहीं की। अब वह सुबह से शाम तक गीत गाता मेहनत करता रहता। सब उसकी बुद्धिमत्ता और मधुर स्वभाव की प्रशसा करते न अघाते। कादिर की सम्पन्नता दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी, उसका अपना घर बस गया और वह सुख व सम्मान के साथ जीने लगा।

"क्या हाल है कादिर?" उसके मित्र पूछते।

"मै दुनिया भर मे सबसे ज्यादा सुखी हूँ!" कादिर मुस्कराता हुआ उत्तर देता।

अक़्लमंदों की दूर बला

बहुत दिन पहले जिरेंशे-शेशेन नाम का एक ज्ञानी था। उसका ज्ञान समुद्र-सा गहरा
र निस्सीम था, उसके मुख से शब्द बुलबुल के मुंह से गीत जैसे झरते थे। किन्तु अपने
र गुणों के बावजूद जिरेंशे स्तेपी में सबसे ज्यादा गरीब था। जब वह अपनी मिट्टी की
पड़ी में लेटता, तो उसके पैर देहली के बाहर निकले रहते, और खराब मौसम में हवा
र पानी असंख्य छिद्रों में से होकर उसकी झोपड़ी में आते रहते।

एक बार जिरेंशे अपने साथियों के साथ स्तेपी में जा रहा था। दिन ढलने लगा था
ौर घुड़सवार उजाला रहते किसी घर तक पहुँचने के लिए घोड़ों को सरपट दौड़ा रहे
। अचानक उनके रास्ते में एक चौड़ी नदी दिखाई दी। नदी के उस पार गांव था और
स किनारे पर कुछ स्त्रियां बोरियों में उपले इकट्ठा कर रही थीं।

उनके पास पहुँचकर घुड़सवारों ने उनसे दुआ-सलाम की और पूछा कि व नदी कैसे
ार कर सकते हैं।

तब झुण्ड में से एक किशोरी निकलकर आगे आयी जिसे उसकी सखियां काराशाश
के नाम से पुकारती थीं। वह जीर्ण-शीर्ण, पैवंद लगा हुआ कुरता पहन हुई थी पर उसका
मुख अद्वितीय सौन्दर्य से दमक रहा था उसकी आंखें सितारों जैसी थीं मुखड़ा चांद का
सा और बदन – किसी सुघड़ और सुनम्य लता सरीखा।

"दो घाट हैं," लड़की ने कहा। "जो बायें है – पास होते हुए भी दूर है और
जो दायें है – वह दूर होते हुए भी पास है।" उसने उन्हें दो पगडण्डियां दिखा दीं।

केवल जिरेंशे ही युवती के शब्दों का अर्थ समझ सका और उसने घोड़े को दायें
मोड़ लिया।

कुछ समय बाद उसे घाट नज़र आ गया। वहां तल रेतीला था और पानी छिछला।
वह आसानी से घोड़े पर नदी पार कर गया और बड़ी जल्दी गांव में पहुँच गया।

उसके साथियों ने निकटवर्ती घाट चुना और शीघ्र ही प्रस्थान किये। वे नदी के मध्य तक भी नहीं पहुँच पाये थे कि उनके घोड़े बुरी तरह कीचड़ में फंस गये। घुड़सवारों को सबसे गहरे स्थान में घोड़ों से उतरना पड़ा और लगाम थामे पैदल चलकर किनारे तक पहुँचना पड़ा। जब वे तर-बतर होकर ठिठुरते हुए गांव में पहुँचे, अंधेरा छाने लगा था।

जिरेशे ने तुक्कड़वाले तम्बू-घर के आगे अपना घोड़ा रोक दिया। वह गांव का सबसे गरीब तम्बू-घर था, और वह फौरन भांप गया कि वह उसी लड़की के माता-पिता का है, जिसने उन्हें घाट का रास्ता बताया था। वह वहीं अपने साथियों की प्रतीक्षा करने लगा।

बांके नौजवानों से मिलने कारागाश की मां निकली और उसने उन्हें घोड़ों से उतरकर तम्बू-घर में सफ़र की थकान दूर करने को कहा। तम्बू-घर अन्दर से भी उतना ही दरिद्र था जितना कि बाहर से। गृहणी ने अतिथियों के लिए कालीनों के स्थान पर भेड़ की सूखी खालें फैला दीं।

कुछ समय बाद कारागाश उपलों से भरी पूरी बोरी लादे तम्बू-घर में आयी। वसन्त ऋतु थी, और सूर्यास्त से पहले तेज बारिश हो चुकी थी। स्तेपी में सारी स्त्रियां गीले उपले लेकर आयी थीं और उस रात उनके परिवारों को बिना खाये सोना पड़ा था।

केवल कारागाश सूखे उपले लेकर आयी थी। उसने अलाव जलाया, अतिथियों ने तापा और कपड़े सुखा लिये।

"तुमने अपने उपलों को बारिश से कैसे बचा लिया?" आगन्तुकों ने उससे पूछा।

लड़की ने उन्हें बताया कि जब वर्षा शुरू हुई, वह उपलों की बोरी पर लेट गयी और उसे अपने बदन से ढके रखा। उसके कपड़े गीले हो गये, पर कपड़े तो चूल्हे के पास बड़ी आसानी से सुखाये जा सकते हैं। उसके लिए ऐसा करने के सिवा और कोई चारा नहीं था, क्योंकि उसका पिता गडरिया है, रात को भूखा और तर-बतर लौटता और बिना आग के उसको बहुत परेशानी होती। अन्य स्त्रियां वर्षा के समय स्वयं बोरियों के नीचे छिप गयीं, जिससे उनके कपड़े भी भीग गये और उपले भी।

मेहमानों ने उसका जवाब सुना और उसकी बुद्धिमत्ता पर आश्चर्यचकित रह गये। इस बीच उन्हें यह जानने की इच्छा हुई कि उन्हें खाने में क्या खिलाया जायेगा। कारागाश ने उनसे यह कहा

"मेरे पिता गरीब हैं, पर मेहमाननवाज हैं। जब वह बाय का रेवड़ हाककर लायेंगे, तो अगर मिल गया, तो आपके लिए एक भेड़ काटेंगे, और अगर नहीं मिला, तो–दो भेड़ें।"

जिरेशे के अलावा और कोई लड़की की बात का अर्थ न समझ सका, सबने उसे मज़ाक समझा।

कारागाश का पिता आया। अपने तम्बू-घर में अजनबियों को देखकर वह बाय से बिन बुलाये अतिथियों की खातिरदारी करने के लिए भेड़ मांगने भागा।
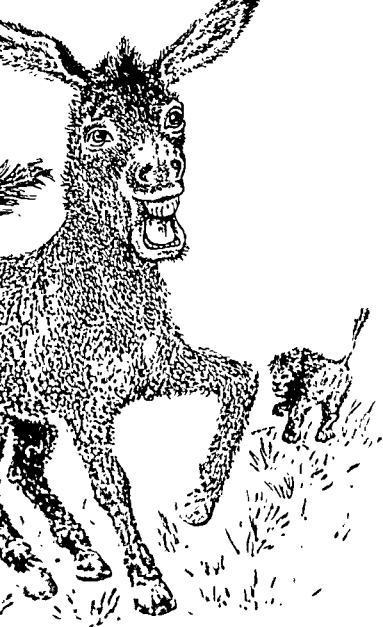
वाय ने उसे बिना कुछ दिये भगा दिया।

तब गडरिये ने अपनी एकमात्र भेड़ काटी, जो शीघ्र ही ब्यानेवाली थी, और उसके से आगतुक बाके नौजवानो के लिए स्वादिष्ट बेसबरमाक* पकाया।

मेहमान तभी जाकर काराशाश के शब्दो का अर्थ समझा।

खाना खाते समय जिरेशे काराशाश के सामने बैठा था। उसकी सुन्दरता और बुद्धिमत्ता मुग्ध होकर उसने, इस बात का सकेत देते हुए कि उसे उससे प्रगाढ प्रेम हो गया है, ना हाथ सीने पर रखा।

काराशाश ने, जो उस पर बराबर नजर रखे हुए थी, उसकी यह हरकत देख ली : अपनी उगलियो से आखो का स्पर्श किया वह इस प्रकार यह कहना चाहती थी कि क की भावना उसकी दृष्टि से छिपी नही रही है।

तब जिरेशे ने, यह पूछने की इच्छा से कि कही उसका पिता उसके महर मे इतने वर तो नही मागेगा, जितने कि उसके सिर पर बाल हैं, अपने बालो पर हाथ फेरा।

काराशाश ने यह सकेत देते हुए कि उसका पिता उसे उतने जानवरो के बदले मे नही देगा, जितने कि भेड़ की खाल पर बाल है, उस भेड की खाल पर हाथ फेरा, र पर वह बैठी थी।

अपनी गरीबी को याद करके जिरेशे ने उदासी से सिर झुका लिया।

युवती को उस पर दया आ गयी। उसने खाल का कोना उलटकर उगलियो से उसकी नी सतह को छुआ। इस प्रकार उसने जिरेशे को समझा दिया कि योग्य वर मिलने उसका पिता उसका विवाह बिना महर के भी कर सकता है।

गडरिया युवक-युवती के मौन वार्तालाप को बराबर देख रहा था। वह समझ गया कि हे एक दूसरे से प्रेम हो गया है, और उसे यह विश्वास हो गया कि जिरेशे उतना ही द्धमान है, जितनी उसकी पुत्री। इसलिए जब जिरेशे ने उसे काराशाश से विवाह ने की इच्छा प्रकट की, तो वह सहर्ष इसके लिए तैयार हो गया।

तीन दिन बाद जिरेशे नव-वधू को लेकर अपने गाव आ गया।

रूपसी व बुद्धिमान काराशाश की ख्याति शीघ्र ही सारी स्तेपी में फैल गयी और त मे खान के महल मे भी पहुँच गयी।

वजीरो की कपटपूर्ण बातें सुनकर कि दुनिया में काराशाश से सुन्दर और बुद्धिमान र कोई औरत नही है, खान को ग़रीब जिरेशे से डाह होने लगी और उसने उससे उसकी नी छीन लेने की ठान ली।

एक बार खान का सन्देशवाहक सरपट घोड़ा दौड़ाता जिरेशे पने खान की ओर से उसे अपनी पत्नी के साथ तुरन्त महल मे हाजिर

* बेसबरमाक – बकरों का मास से बना राष्ट्रीय खाना

उनके पास कोई चारा नहीं रहा और वे दोनो चल पड़े।

खान ने जैसे ही कारागास को देखा, उसने किसी भी क़ीमत पर उसे अपना दास बनाने की ठान ली और जिरेंशे को अपनी सेवा मे रहने की आज्ञा दे दी।

जिरेंशे दिन भर खान के आखे चौंधियानेवाले महल मे टहल बजाता और शाम को थका-हारा अपनी झोपडी मे कारागास के पास लौट आता।

और वहां वह स्वतंत्रता का आनन्द लेता हुआ अपनी प्रिय पत्नी की गोद मे सिर रखकर कहता था

"अपनी झोपडी मे रहने मे कितना सुख है! यह खान के महल से कही लम्बी-चौडी लगती है!"

जब कि उस समय उसके पैर देहली के बाहर निकले हुए थे।

समय बीतता रहा, पर खान किसी न किसी तरह जिरेंशे को मरवाकर कारागास को हथियाने के बारे मे तरकीबे बराबर सोचता रहा। उसने कई बार जिरेंशे को खतरनाक और मुश्किल काम सौंपे, पर वह हर बार बडी जल्दी और चतुराई से उन्हे कर देता था और उसे मौत की सजा देने का कोई बहाना न मिल रहा था।

एक बार ऐसा हुआ कि खान अपने अंगरक्षको के साथ स्तेपी मे गुजर रहा था। हवा चल रही थी। स्तेपी मे पोतिकनी-पोल्चे* लुढ़क रहा था। खान ने जिरेंशे से कहा,

"इस पोतिकनी-पोल्चे का पीछा करके उससे पूछो कि वह कहां से कहां तक लुढ़क रहा है। खबरदार रहना, अगर तुम उसका जवाब न लाये, तो तुम्हारा सिर अलग कर दिया जायेगा।"

जिरेंशे पोतिकनी-पोल्चे के पीछे भागा, उसने उसके पास पहुंच उसे बरछी से बेध दिया और थोडी देर रुकने के बाद वापस लौट आया।

खान ने पूछा

"क्या पोतिकनी-पोल्चे ने क्या कहा?"

जिरेंशे ने उत्तर दिया

"[illegible] पोतिकनी-पोल्चे ने आपको सलाम कहलवाया है और मुझसे यह कहा है [illegible] कहां से कहां तक लुढ़कता रहता हूं—हवा को मालूम रहता है, कहां रुकता हूं—[illegible] का [illegible] रहता है। यह हर किसी को मालूम है। इतना साफ है कि या तो तुम बेवकूफ हो [illegible] जो मुझसे ऐसा सवाल पूछ रहे हो, या वह बेवकूफ है, जिसने तुम्हें मुझसे यह पूछने भेजा है।"

---

* पोतिकनी-पोल्चे – स्तेपी मे उगनेवाली एक प्रकार की घास-फूस, जो हवा के साथ लुढ़कती रहती है।

खान आग-बबूला हो उठा, पर खून का घूट पीकर रह गया और कुछ नही बोला, न जिरेशे से वह मन ही मन और अधिक द्वेष रखने लगा।

दूसरी बार खान ने जिरेशे को हुक्म दिया कि वह उसके सामने हाजिर हो, पर तब दिन होना चाहिए, न रात, वह न पैदल हो, न घोड़े पर सवार, न महल के अदर आये ही महल के बाहर रहे, ऐसा न करने पर उसने उसे मौत की सजा देने की धमकी दी।

आरम्भ मे जिरेशे उदास हो गया, किन्तु बाद मे उसने काराशाश के साथ सलाह विरा किया और उन दोनो ने इस कठिन समस्या का समाधान खोज लिया।

जिरेशे खान के सामने भोर मे बकरे पर सवार होकर पहुँचा और ठीक दरवाजे की खट पर रुक गया।

खान की चालबाजी फिर बेकार रही। तब उसने एक नयी चाल चली।

जब पतझड आयी, उसने जिरेशे को अपने पास बुलवाया और उसे चालीस मेढे पकर बोला,

"मैं तुम्हे ये चालीस मेढ़े दे रहा हूँ, तुम्हें सारे जाडे इनकी सभाल करनी है। लेकिन याद रखो, अगर वसन्त तक इन्होने भेडो की तरह बच्चे नही दिये, तो मै तुम्हारा सिर टवा दूँगा।"

जिरेशे मेढे हाकता हुआ बहुत उदास घर लौटा।

"आपको क्या हुआ?" काराशाश ने उससे पूछा। "आप इतने उदास क्यो हैं?"

जिरेशे ने खान की मूर्खतापूर्ण आज्ञा के बारे मे उसे बता दिया।

"प्रियतम," काराशाश कह उठी, "इतनी मामूली-सी बात के लिए उदास होने की क्या जरूरत है! सर्दी आने तक सारे मेढ़ो को काटकर खा डालते हैं, जब वसन्त आयेगा, खुद देख लेना, सब अपने-आप ठीक हो जायेगा।"

और जिरेशे ने वैसा ही किया, जैसा काराशाश ने कहा।

वसन्त आया।

एक दिन खान के कासिद ने जिरेशे की झोपडी का दरवाजा खटखटाया और एलान किया कि उसके पीछे-पीछे खुद खान घोडे पर आ रहा है वह जानना चाहता है कि उसके मेढ़े ब्याये या नही।

जिरेशे ने, यह महसूस करके कि अब उसकी मौत निश्चित है, सिर लटका लिया।

पर काराशाश बोली,

"दिल छोटा मत करो, प्रियतम। तुम स्तेपी मे जाकर छिप जाओ और शाम तक नजर मत आओ। मै खुद खान से मिलूंगी।"

जिरेशे स्तेपी मे चला गया, और काराशाश झोपडी मे रुक गयी। कुछ ही देर मे उसे घोडे की टापे और भयावनी आवाज सुनाई दी,

"ऐ, घर मे कौन है! आवाज दो!"

कारादाश खान की आवाज से उसे पहचान गयी। उसने झोपड़ी से निकलकर उसे झुककर सलाम किया।

"तुम्हारा पति कहाँ है? मेरा स्वागत उसने क्यों नही किया?" खान ने गुस्से में कहा।

कारादाश ने उसे नम्रतापूर्वक उत्तर दिया:

"जहापनाह, मेरे अभागे पति पर दया कीजिये· वह आपको खुश करने के लिए घर से बाहर गये है। उन्होने जैसे ही सुना कि आप हमसे मिलने आ रहे हैं, उनका दिल कचोटने लगा, क्योकि हम गरीब हैं और हमारे घर मे बड़े मेहमानों की खातिरदारी के लिए कुछ नही है। इसीलिए मेरे पति जल्दी से अपनी पालतू बटेर का दूध निकालने और उसके दूध से आपके लिए किमिज तैयार करने स्तेपी मे चले गये। आप हमारी झोपड़ी में तशरीफ लाइये, जहापनाह, मेरे पति जल्दी ही लौट आयेंगे और आपकी काफ़ी अच्छी तरह खातिरदारी करेंगे।"

खान गुस्से से पागल हो उठा।

"तू झूठ बोलती है, नालायक औरत!" वह चिल्लाया। "कही बटेरों का भी दूध दोहा जाता है!"

"आप हैरान क्यो होते हैं, हुजूरे आलम?" कारादाश ने ऐसे कहा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। "क्या आपको नही मालूम कि जिस देश में बुद्धिमान शासन करता है, वहाँ इससे बढ़कर भी चमत्कार होते हैं? आपके ही चालीस मेढ़े आजकल ब्यानेवाले नहीं हैं क्या?"

खान समझ गया कि वह मामूली औरत उसका मजाक उड़ा रही है। उसकी समझ में नहीं आया कि वह शर्म के मारे कहाँ मुंह छिपाये और वह फौरन घोड़ा मोड़कर उस पर चाबुक बरसाता हुआ आँखों से ओझल हो गया।

उस दिन के बाद उसने जिरेंशे और कारादाश को कभी परेशान नहीं किया और वे अपने अन्तिम दिनों तक सुख से जीते रहे।

खान जानीबेग का घोड़ा

ख़ान जानीबेग के पास एक नमत्कार घोडा था। उमे घोडा नही तूफान कहना
हए। खान को उस पर बहुत गर्व था और वह उसे दुनिया मे सबसे ज्यादा प्यार करता
। वह तेज घोडा एक बार बीमार हो गया। खान दुखाकुल हो उठा। उसने सारे काम
ब और रग-रलिया छोड दिये न सोता था न खाता था न पीता था। उसकी उस
री की खबर सबको हो गयी
' अगर किसी ने मुझे यह बताने का दुसाहस किया कि मेरा प्यारा घोडा मर गया
तो मै उसके मुह मे कील ठोक दूगा!
दरबारियो मे आतक छा गया। खान के नौकरो की ऊपर की साम ऊपर और नीचे
ी नीचे रह गयी। साईस दिन-रात घोडे के पास रहने लगे। लेकिन घोडा तडखडाकर गिरा
ौर मर गया। अब वे क्या आशा कर सकते थे? सब अपनी मौत का इन्तजार करने लगे।
ति पत्नियो से विदा लेने लगे, माता-पिता – सन्तानो से।
तब बुद्धिमान जिरेन्शे-शेशेन खान के पास गया। खान उन्मादपूर्ण दृष्टि से उसे घूरने
लगा
'तुम मुझसे घोडे के बारे मे बात करना चाहते हो?
"जी, जहापनाह।"
' घोडे को आखिर क्या हुआ है? जवाब दो!
'हुजूरे आलम! आप निश्चिन्त रहे। घोडे को कुछ नही हुआ है। वह बिलकुल
पहले जैसा ही है, बस चारा मुह मे नही लेता है आंखे नही खोलता है न पैर चलाता
है और न ही दुम हिलाता है।
"इसका मतलब है मेरा घोडा मर गया!" खान चिल्लाया।
"सचमुच यही बात है हुजूरे आलम! लेकिन आप इस बात को ध्यान मे रखिये
कि वह निषिद्ध शब्द जिसके लिए आपने प्राण दण्ड देने की धमकी दी थी मेरे नही
आपके मुंह से निकला है। जहां तक मैं सोचता हूँ आप खुद को प्राण दण्ड नही देना चाहेगे।
इस प्रकार बुद्धिमान जिरेन्शे ने अपनी चतुराई की बदौलत खान के कोप से अपने
आप को भी बचा लिया और दूसरो को भी।

लोहार और उसकी पतिव्रता पत्नी

बहुत पुराने जमाने की बात है। एक शहर में एक कुशल लोहार रहता था। उसके हाथ हर ऐसी वस्तु को गढने में सक्षम थे, जिसकी कल्पना मानव मस्तिष्क कर सकता था– केवल लोहार व उसकी पत्नी के लिए भरपेट रोटी कमाने में असमर्थ थे। उस शहर के लोग बहुत गरीब थे और लोहार कहीं काम न मिल पाने के कारण सबसे ज्यादा अभाव से पीडित रहता था। पर वह कभी दिल छोटा नहीं करता था, हमेशा अपने साथियों के साथ हंसी-मजाक करता और गीत गाता रहता था, पर चिन्ताओं के कारण उसका दिल डूबा जा रहा था। वह स्वयं तो हर तरह की मुसीबत झेलने को तैयार था, पर अपनी युवा पत्नी को, जो बहुत सुन्दर थी, जैसी सौ वर्ष में एक बार पैदा होती है, अभाव में तडपते देख उसका दिल दुखता था। अचानक लोहार के दिमाग में कमाई करने के लिए राजधानी जाने का विचार आया, जहां शायद धनी लोगों को उसकी बनाई चीजों की जरूरत हो सकती थी।

पत्नी से विदा लेते हुए उसने कहा

"मेरी जान, मैं तीन बरस के लिए परदेस जा रहा हूँ। क्या फिर मुलाक़ात होने तक तुम मुझे याद रखोगी? मेरे साथ विश्वासघात तो नहीं करोगी?"

रूपवती ने जमीन पर झुककर एक नीला फूल तोड़ा और उसे पति को देते हुए बोली

"प्रिय, यह फूल लो और इसे सभालकर रखो, मैं भी पतिव्रत-धर्म का पालन वैसे ही करती रहूँगी। तुम कहीं भी क्यों न रहो, कैसी भी यात्रा पर क्यों न गये हो, इतना याद रखो. जब तक फूल नहीं मुरझायेगा, तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम भी नहीं मुरझायेगा."

राजधानी में पहुँचकर लोहार रास्ते में एक चायखाने में एक प्याली चाय पीने गया। वहां अनेक ग्राहकों के बीच उसे तीन ठाटदार कपडे पहने आदमी नजर आये, जो कुछ

खा-पी नही रहे थे, मौन बैठे हुए थे, मानो उन्हे कोई दुख साल रहा हो। आगतुक को देखकर वे उसको इस तरह से एकटक घूरने लगे कि लोहार परेशान हो उठा।

"आप मुझे ऐसे क्यो देख रहे हैं, सज्जनो!" लोहार ने बात छेडी। "मैं गरीब हूँ, पर इमानदार आदमी हूँ। राजधानी मे दूर-दराज के इलाके से काम ढूँढने आया हूँ। मै कुशल लोहार हूँ, और मुझे जो काम सौपेगा, कभी नही पछतायेगा कि उसका वास्ता मुझ से पडा।"

तीनो पुरुषो ने एक दूसरे की तरफ देखा और उनमे से सबसे बडे ने लोहार को बुलाकर मित्रतापूर्वक कहा :

"हमारा एक-एक शब्द ध्यानपूर्वक सुनो, लोहार। हम तीनो खान के वजीर है, जिसकी खबर चायखाने के मालिक को नही है और होनी भी नही चाहिए। हम समय काटने या कुतूहलवश नही बल्कि एक महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए बाजारो, कारवा-सरायो, चायखानो और भीड-भाड की अन्य जगहो के चक्कर काट रहे है। खान ने हमे उसके लिए सोने और चादी का महल बनवाने का हुक्म दिया है। उसने अपनी इच्छा पूरी होने पर इनाम देने का वादा किया है और समय पर महल तैयार न करने पर मौत की धमकी दी है। हम बडी उलझन मे फस गये हैं, क्योकि समय बीतता जा रहा है, लेकिन हम सारी राजधानी मे किसी तरह ऐसा कारीगर नही खोज पा रहे हैं, जो इतना कठिन कार्य करने को तैयार हो। अगर तुम काम करके हमारी सहायता न कर सकते, तो क्या कम-से-कम सलाह तो दे सकते हो?"

लोहार का चेहरा खुशी से खिल उठा और वह बोला

"बुद्धिमान वजीरो, खुद किस्मत ने मुझे इस चायखाने की राह दिखाई है। आप मुझे आवश्यक सोना और चाँदी दीजिये, सत्तर मददगार दीजिये और मै आपको निश्चित समय पर ऐसा महल तैयार कर दूँगा, जैसा आज तक किसी खान के पास था ही नही।

लोहार ने उसी दिन काम शुरू कर दिया। भट्ठिया दहकने लगी, हथौडो तले मूल्यवान धातु ठनठनाने लगे और चतुर कामगार बडे कारीगर के निर्देशानुसार काम करते हुए इधर-उधर भागने लगे। नियत समय पर महल बनकर तैयार हो गया। वास्तव मे उससे पहले कभी इतने सुन्दर भवन ने किसी राजधानी की शोभा नही बढाई थी उसकी सुन्दरता की तुलना मे उस सोने और चादी का कुछ मूल्य न था, जिससे उसकी दीवारे और छत बनाई गयी थी।

खान ने जब नया महल देखा, वह बच्चो की तरह आनन्दोल्लास से चिल्ला उठा और उसने तुरन्त अपने वजीरो का वेतन तिगुना कर दिया। फिर वह बोला

"मै धरती पर इस अलौकिक चमत्कार को कर दिखानेवाले कारीगर को देखना चाहता हूँ।"

लोहार और उसकी

बहुत पुराने जमाने की बात है। एक
हाथ हर ऐसी वस्तु को गढ़ने में सक्षम थे, ि
केवल लोहार व उसकी पत्नी के लिए भ
लोग बहुत गरीब थे और लोहार कहीं
से पीडित रहता था। पर वह कभी ि
के साथ हसी-मजाक करता और गीत
दिल डूबा जा रहा था। वह स्वयं तो ह
युवा पत्नी को, जो बहुत सुन्दर थी,
तडपते देख उसका दिल दुखता था।
राजधानी जाने का विचार आया,
जरूरत हो सकती थी।

पत्नी से विदा लेते हुए उस

"मेरी जान, मैं तीन ब
तक तुम मुझे याद रखोगी? मे

रूपवती ने जमीन पर
बोली

"प्रिय, यह फूल
ही करती रहूँगी। तुम क
याद रखो: जब तक फूल

राजधानी में पहुँच
वहाँ

के लगाती रही। फिर उसने गड्ढे में चरखा उतार दिया और दूसरे वज़ीर को उन
न आदेश दिया।
याद रखो, काम ढग से नही किया, तो दोपहर में जई की रोटी नही मिलेगी।
उधर उस समय लोहार ने नीला फूल निकालकर देखा वह पूर्ववत ताज़ा और
था।
ख़ान ने इस बीच दूसरे वज़ीर के लौटने की प्रतीक्षा किये बिना तीसरे वज़ीर को
की पत्नी के पास भेजा।
"अगर तुम तीन सप्ताह में मेरे सामने हाज़िर नही हुए तो तुम और वे दोनों मौत
से नहीं बच सकोगे।
तीसरा वज़ीर खिन्नता और घबराहट में अपने अनिष्ट का पूर्वाभास पाकर सफ़र पर
पड़ा और शीघ्र ही वह भी बिना कोई ख़ुशी हासिल किये उसी गड्ढे में अपने मित्रों
मिला। तीनों जो कुछ हुआ उसके लिए एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे। जब कि
र की पत्नी गड्ढे के ऊपर खड़ी ठहाके लगाती रही।
नये क़ैदी को स्त्री से एक करघा और यह निर्देश मिला
'तुम्हें तीन सप्ताह के अन्दर एक सुन्दर कालीन बनकर देना है। जल्दी से काम
जुट जाओ और आलस मत करो क्योंकि तुम्हें दोपहर में जई की रोटी मिलना तुम्हारे
निर्भर करता है "
उधर एक दिन ख़ान ने लोहार को अपने सामने पेश करने का हुक्म दिया।
'मेरे तीनों वज़ीरों को तुम्हारी पत्नी के पास गये हुए काफ़ी अरसा बीत गया
अभी तक वे लौटकर नही आये है। मुझे सन्देह है कि तुम्हारी पत्नी ने उन्हें अपने
जादू से मार डाला है। अगर ऐसा है तो मैं तुम्हारा और उसका भी सिर कटवा दूँगा।
लेकिन अगर वज़ीरों ने तुम पर झूठा लाछन लगाया है तो उन्हें इससे भी कड़ी सज़ा
मिलेगी। मैं ख़ुद तुम्हारे शहर जा रहा हूँ। तुम्हें मेरे साथ सफ़र पर चलना
होगा।"
कुछ समय बाद ख़ान का भव्य कारवाँ लोहार के शहर में प्रवेश कर रहा था। अपने
घर के निकट पहुँचने पर लोहार ने ख़ान से अपनी पत्नी को इतने सम्मानित अतिथि के
पधारने की ख़बर देने की आज्ञा मांगी।
ख़ान ने सहमति प्रकट की और लोहार अन्दर दाख़िल हो गया।
पति को देखते ही रूपवती उसके सीने से लग गयी और उन्होंने एक मिनट में ही
एक दूसरे को सारी आपबीती सुना दी। इसके बाद लोहार ख़ान को आदरभाव के साथ ससम्मान
अपने घर में ले आया।
स्त्री ने उच्च अतिथि का सिर नवाकर अभिनन्दन किया। वह इतनी आकर्षक थी
उसका व्यवहार इतना आत्मसम्मानपूर्ण था और बात इतनी बुद्धिमत्तापूर्ण थी कि ख़ान का

"यह क्या हुआ?" वज़ीर ने घबराकर पूछा।

लोहार की पत्नी को खटखटाहट का कारण भली-भांति मालूम था: उसने दिन में ही फाटक पर पति का हथौड़ा लटका दिया था, और उस समय रात्रिकालीन हवा उसे हिलाकर लकड़ी से टकरा रही थी। किन्तु स्त्री ने खुद भी बुरी तरह डरने का दिखावा किया और हाथ पर हाथ मार जल्दी से बोली.

"आदरणीय अतिथि, यह ज़रूर मेरा भाई दरवाज़ा खटखटा रहा होगा। वह ज़्यादा देर नहीं रुकेगा। कृपा करके एक मिनट के लिए पासवाले कमरे में छिप जाइये।"

वज़ीर ने देहली लांघी ही थी कि स्त्री ने उसे पीछे से धक्का दे दिया, और वह सिर के बल अंधेरे गड्ढे में गिर गया। ऊपर से लोहार की पत्नी ने ज़ोरदार ठहाका लगाया।

उसी समय शाही महल में हिरासत में बंद लोहार ने नीले फूल को निकालकर देखा फूल ताज़ा और खुशबूदार था, वैसा ही जैसा कि प्रिया से बिछुड़ने के दिन था। और लोहार ने उसे हौले से चूम लिया।

अगले दिन लोहार की पत्नी ने गड्ढे में भेड़ के ऊन का ढेर डाल दिया और अपने क़ैदी को उसे धुनने का आदेश दिया।

"देखो, काम लगन से करना, वरना दोपहर में जई की रोटी नहीं मिलेगी!"

वज़ीर को खाने में जई की रोटी पाते गड्ढे में काम करते कई दिन गुज़र गये, जब कि खान उसका इन्तज़ार करता करता अन्त में ऊब उठा।

एक दिन उसने दूसरे वज़ीर से कहा

'तुम्हारे दोस्त की मेरे सामने आने की हिम्मत नहीं हो रही है, क्योंकि लगता है वह कुछ नहीं कर पाया है। अगर तुम लोगों ने कारीगर की झूठी शिकायत की है, तो तुम्हारी खैर नहीं!'

वज़ीर डर के मारे सन्न रह गया।

'बादशाह' उसने कहा, 'हमने आपको बिलकुल सच्ची बात बतायी है। आप हुक्म दें तो मैं इसे साबित करके दिखा दूँ।'

'जाओ, जाओ

ठीक है!'

कुछ समय बाद उस दूसरे वज़ीर के साथ भी वैसा ही हुआ, जैसा कि पहले वज़ीर के साथ हुआ था। [illegible] करके वह भी गड्ढे में पहुँच गया। गड्ढे में उसकी [illegible] [illegible] रह गयी।

"तुम कौन हो?" दूसरे वज़ीर ने पूछा।

"और तुम कौन हो?" पहले वज़ीर ने उससे पूछा।

[illegible] दूसरे को पहचान [illegible] और [illegible] दूसरे को अपनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लोहार की पत्नी [illegible] [illegible]

ाके लगाती रही। फिर उसने गड्ढे मे चरखा उतार दिया और दूसरे वज़ीर को उन
का आदेश दिया।
याद रखो, काम ढंग से नहीं किया तो दोपहर में जई की रोटी नहीं मिलेगी।
उधर उस समय लोहार ने नीला फूल निकालकर देखा वह पूर्ववत ताजा और
त था।
खान ने इस बीच दूसरे वज़ीर के लौटने की प्रतीक्षा किये बिना तीसरे वज़ीर को
की पत्नी के पास भेजा।
अगर तुम तीन सप्ताह में मेरे सामने हाजिर नहीं हुए तो तुम और वे दोनों तीन
से नहीं बच सकोगे।
तीसरा वज़ीर खिन्नता और घबराहट से अपने अनिष्ट का पूर्वाभास पाकर सफर पर
ल पड़ा और शीघ्र ही वह भी बिना कोई सुर्खी हासिल किये उस गड्ढे में अपने मित्रा
ा मिला। तीनों जो कुछ हुआ उसके लिए एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे। जब कि
ार की पत्नी गड्ढे के ऊपर खड़ी ठहाके लगाती रही।
नये कैदी को स्त्री से एक करघा और यह निर्देश मिला
"तुम्हें तीन सप्ताह के अन्दर एक सुन्दर कालीन बनाकर देना है। जल्दी से काम
जुट जाओ और आलस मत करो क्योंकि तुम्हें दोपहर में जई की रोटी मिलना तुम्हीं
निर्भर करता है "
उधर एक दिन खान ने लोहार को अपने सामने पेश करने का हुक्म दिया।
'मेरे तीनों वज़ीरों को तुम्हारी पत्नी के पास गये हुए काफी अरसा बीत गया
र अभी तक वे लौटकर नहीं आये है। मुझे सन्देह है कि तुम्हारी पत्नी ने उन्हें अपने
ादू से मार डाला है। अगर ऐसा है तो मैं तुम्हारा और उसका भी सिर कटवा दूँगा।
ेकिन अगर वज़ीरों ने तुम पर झूठा लांछन लगाया है तो उन्हें इससे भी कड़ी सजा
मिलेगी। मैं खुद तुम्हारे शहर जा रहा हूँ। तुम्हें मेरे साथ सफर पर चलना
पड़ेगा।"
कुछ समय बाद खान का भव्य कारवां लोहार के शहर में प्रवेश कर रहा था। अपने
घर के निकट पहुँचने पर लोहार ने खान से अपनी पत्नी को इतने सम्मानित अतिथि के
पधारने की खबर देने की आज्ञा मांगी।
खान ने सहमति प्रकट की और लोहार अन्दर दाखिल हो गया।
पति को देखते ही रूपवती उसके सीने से लग गयी और उन्होंने एक मिनट में ही
एक दूसरे को सारी आपबीती सुना दी। इसके बाद लोहार को अंगरक्षकों के साथ ससम्मान
अपने घर में ले आया।
स्त्री ने उच्च अतिथि का सिर नवाकर अभिनन्दन किया। वह इतनी आकर्षक थी
उसका व्यवहार इतना आत्मसम्मानपूर्ण था और बातें इतनी बुद्धिमत्तापूर्ण थी कि खान का

हृदय तुरन्त द्रवीभूत हो उठा और उसने एक साधारण गृहणी का आतिथ्य कृपापूर्वक स्वीकार कर लिया।

खूबसूरत कालीन पर किमिज़ की प्याली लिये बैठे ख़ान ने पूछा:

"ऐ ख़ातून, क्या तुम्हारे पति की अनुपस्थिति में तुम्हारे पास मेरे तीन वज़ीर आये थे?"

"आपकी उम्र दराज़ हो, जहांपनाह! वज़ीरों की जगह तो अपने ख़ान के दरबार में होती है। वे गरीब और अकेली स्त्री के घर में क्यों आए?"

ख़ान चुप हो गया और अपनी व्याकुलता छिपाने के लिए कालीन के पेचीदा बेल-बूटों को ध्यान से देखने लगा।

"तुम्हारे पास यह इतना बढ़िया कालीन कहाँ से आया?"

"जहांपनाह, यह कालीन मेरी नौकरानियों ने बुना है।"

ख़ान की भौंहें सिकुड़ गयी।

"नौकरानियों ने? लेकिन तुम्हारा पति तो मुझसे कहता था कि वह तुम्हें बहुत गरीबी की हालत में छोड़ गया था। नौकरानियाँ रखने के लिए तुम्हारे पास पैसा कहाँ से आया?"

"मेरी नौकरानियां तनख्वाह नहीं मांगती, दिन में जई की एक रोटी के बदले में वे मेरे सारे काम करती है।"

"इस बात पर विश्वास करना असम्भव है," ख़ान की भौंहें तन गयी।

"जहांपनाह, आप अभी अपनी आँखों से मेरी नौकरानियों को देख लेंगे और वे मेरी बात की पुष्टि कर देंगी," स्त्री ने कहा और दरवाज़े के पीछे ओझल हो गयी।

उसने तीनों वज़ीरों को गड्ढे में से निकालकर फुसफुसाकर कहा:

"मुसीबत आ गयी – मेरा पति लौट आया! अगर उसने आपको मेरे घर में देखा, तो आपका काम तमाम हो जायेगा। मैंने आपको आपकी धृष्ठता की सज़ा दी है, पर मैं आपकी मृत्यु नहीं चाहती। यह उस्तरा लीजिये और जल्दी से अपनी दाढ़ी-मूंछ साफ़ कर लीजिये, ये लीजिये मेरे पुराने कपड़े, बिना देर लगाये इन्हें पहन लीजिये, फिर मैं आपको अपनी सहेलियां बताकर घर से बाहर कर दूँगी।"

वज़ीरों ने बिना चूँ किये औरत की बात मान ली। तब उसने उन्हें एक दूसरे का हाथ पकड़ने को कहा और उन्हें उस कमरे में ले आयी, जहाँ ख़ान अपने अंगरक्षकों से घिरा बैठा था।

भयानक शासक को अपने सामने देखते ही वज़ीर स्तब्ध रह गये, जब कि ख़ान हैरानी से उन्हें देर तक देखता रहा और अन्त में बोला

"कितनी अजीब नौकरानियां हैं! क़द और चेहरे से मर्द लगती हैं, पर पहनावे में – औरत! मुझे इनके चेहरे जान-पहचाने लगते हैं। कौन हैं ये ऐयार?"

"यही हैं वे," पत्नी की ओर से लोहार ने कहा, "जिन्होने आपसे मेरी झूठी शिकायत की और मेरी पतिव्रता पत्नी पर लाछन लगाया। तथ्य यही है, मेरे हुजूर।"

वज़ीर फौरन घुटनो के बल गिर पडे और उन्होने अपनी सारी काली करतूते स्वीकार कर ली।

खान आरम्भ मे उनकी बात गुस्से मे सुनता रहा, पर जब वे लोहार के घर मे हुई अपनी दुर्गति के बारे मे बताने लगे, तो उसके होठ फडक उठे, कधे काप उठे, और वह इतने जोर से ठहाका लगाकर हस पडा कि उसकी प्याली की सारी किमिज़ उसके रेशमी चोगे पर ढुल गयी। खान को हसते-हसते आसू आ गये, फिर वह आराम से बैठकर बोला:

"अरसे से मै इतना दिल खोलकर नही हसा था! आज से ये तीनो मूर्ख, जिन्हे इस स्त्री ने धोखा दिया और जिन्हें पहले मै अपने वज़ीर कहता था, मेरे यहा तुच्छ मसखरो का काम करेगे। और तुम, मेरे कुशल कारीगर," उसने लोहार को सम्बोधित किया, "अपनी पतिव्रता पत्नी को लेकर मेरे सम्मानित अतिथि के रूप मे मेरे साथ राजधानी चलोगे, मै तुम्हारी सेवाओ और योग्यता के अनुरूप पुरस्कार दूँगा।"

कई सदिया बीत गयी। खान, बाद मे विदूषक बने वज़ीरो, लोहार तथा उसकी रूपवती पत्नी की अस्थिया कभी की गल चुकी है। किन्तु महान कारीगर द्वारा निर्मित महल आज भी अपने स्थान पर खडा अपने अद्वितीय सौन्दर्य की छटा बिखेर रहा है।

सब नाशवान् है। केवल मनुष्य के चिन्तन की तथा उसके सृजन की कृतिया ही अमर हैं।

विचित्र नाम

एक बाप के तीन बेटे थे–दो बड़े बेटे उसकी पहली पत्नी से थे, और छोटा, जिसका नाम असपन था–दूसरी पत्नी से। असपन यद्यपि भला, बुद्धिमान और विनीत था, फिर भी उसके भाई उसे बचपन से ही प्यार नहीं करते थे। लड़के को अनेक बार व्यर्थ का अपमान, तमाचे और मजाक सहने पड़े थे, चुपचाप रोना पड़ा था, मगर उसने एक बार भी पिता से शिकायत नहीं की, उसने न कभी भाइयों का बुरा किया और न ही कभी चाहा।

दिन बीतते रहे, बच्चे बड़े होते रहे और पिता बूढ़ा होता गया। पिता की मृत्यु के बाद बड़े भाइयों ने उसकी सारी जमा-पूंजी आपस में बांट ली और छोटे भाई को केवल एक पुराना तम्बू-घर और कुछ भेड़े ही दी।

"गायें जब बर्फ के छेद में पानी पीती हैं, बछड़ा बर्फ चाटता रहता है," उन्होंने असपन से हंसते हुए कहा।

लड़के ने न भाइयों से बहस की और न ही उनसे झगड़ा।

"किसी न किसी तरह गुजर कर लूंगा," उसने मन में कहा। "धनी होने से ईमानदार होना बेहतर है"

कुछ समय पश्चात् असपन को एक गरीब लड़की पसन्द आ गयी, उसने उससे विवाह कर लिया और अपनी युवा पत्नी के साथ सुख-चैन से रहने लगा।

एक वर्ष बीत गया। एक बार बड़े भाइयों ने छोटे भाई को अपने पास बुलाया और कहा

"हमें उड़ती खबर मिली है कि खान की राजधानी में सांडों का भाव चढ़ गया है। हम अपनी झुण्ड को वहां बेचने हांककर ले जाना चाहते हैं। जरा रास्ते में सांडों को सम्भालने में हमारी मदद कर दो। अगर सौदा अच्छा रहा, तो हम तुम्हें एक बढ़िया घोड़ा दे देंगे।"

"इनाम के लिए धन्यवाद, भैया," अमपन ने उत्तर दिया, "पर मैं तो बिना किसी इनाम के भी तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ।"

"यह तो बहुत ही अच्छी बात है," भाइयों ने चुपके से एक दूसरे को आंख मारी। "तुम अगर इनाम लेने में इनकार करते हो, तो बहुत ही अच्छी बात है। पिता तुम्हारी बुजदिली के लिए तुम्हारी तारीफ के पुल यों ही थोड़े ही बांधते थे। सफर की तैयारी करो। कल तड़के ही निकल पड़ेंगे।"

सुबह बांका नौजवान अपनी पत्नी से विदा लेने लगा। वह उसके गले लगकर रो पड़ी और बोली:

"तुम्हारी यात्रा सफल रहे, प्रिय! सफलता प्राप्त करके घर लौटो। जब लौटकर आओगे, तो तुम्हारा बेटा, पहली सन्तान, पालने में तुम्हारी बाट जोह रहा होगा।

अमपन को स्तेपी में माडों के साथ काफ़ी भटकना पड़ा, क्योंकि बड़े भाई उसे अपने साथ इसी लिए तो ले गये थे, जिससे कि उन्हें कम-से-कम काम करना पड़े और कम-से-कम परेशानी उठानी पड़े। किन्तु अपनी पत्नी की पहली सन्तान के बारे में कहे शब्द याद करके उसने न थकान की परवाह की, न ही दूरी की और उन सब में सबसे प्रसन्न लगता था।

भाई राजधानी में पहुँचे। उन्होंने बाजार के पास पशुओं के लिए एक बाड़ा किराये पर लिया और रात को वहीं डेरा जमाया। उन्होंने अपने काम निबटाये ही थे कि घोड़ों की टापें सुनाई दीं और बाड़े के बाहर खान के घुड़सवार सिपाहियों की टुकड़ी आ पहुँची।

"ऐ सौदागरो," टुकड़ी के मुखिया ने कहा, "अपने माडों को यहीं छोड़ो और हमारे साथ चलो। खान ने तुम्हें अपने सामने हाजिर होने का हुक्म दिया है।"

बड़े भाई डर के मारे थरथर कांपने लगे, पर छोटे ने उन्हें दिलासा दिलायी

"हमने कोई बुरा काम नहीं किया है और खान हमारा बुरा नहीं करेगा। केवल उसके साथ आदरपूर्वक पेश आना और उसके प्रश्नों का उत्तर सोच-समझकर देना।"

और सचमुच जब भाइयों को महल में लाया गया, खान बहुत कृपापूर्वक उनसे मिला और बिना किसी प्रकार की सख्ती दिखाये बातचीत करने लगा

"हर मौसम में अलग-अलग फसल होती है और हर देश में अपने-अपने रीति-रिवाज होते हैं। हमारे यहां ऐसा दस्तूर है: जो कोई राजधानी में अपना माल बेचने आता है, उसे खान के सामने हाजिर होकर उसकी कही पहेली बुझानी होती है। पहेली बुझानेवाले को पुरस्कार के रूप में व्यापार करने की आज्ञा प्रदान की जाती है और जो नहीं बुझा पाता, उसे हम शहर से निकाल देते हैं। अपनी परीक्षा के लिए तैयार हो जाओ।"

"मर गये!" बड़े भाई फुसफुसाये।

"मुझ पर भरोसा रखो," अमपन ने धीरे से कहा।

"ये तीन पहेलियां सुनो और ज्येष्ठता के अनुसार उन्हें बुझाओ," खान ने आगे कहा। "पहली पहेली है: 'घोड़े से ऊँची, कुत्ते से छोटी' – क्या चीज है? दूसरी 'जिन्दा

से मरा पैदा होता है, मरे से – जिन्दा" – यह क्या होता है? तीसरी है: 'घोंसला एक उकाब चालीस' – यह क्या चीज होती है?"

जब तक बड़े भाई माथे पर बल डाले आंखें भपकाते रहे, छोटा भाई आगे निकल आया

"जहांपनाह, इजाजत हो, तो बताऊं मैं तीनों पहेलियां बुझा चुका हूं।"

"असम्भव!" खान ने आश्चर्य व्यक्त किया।

बांका नौजवान बोला

"'घोड़े से ऊंची, कुत्ते से छोटी' – काठी होती है, हुजूरे आलम। ठीक है ना? 'जिन्दा से मरा पैदा होता है' – यह अण्डा होता है और मरे से जिन्दा' – चिड़िया का बच्चा। 'घोंसला एक – उकाब चालीस' – तीर और तरकश।"

"ठीक कहा!" खान कह उठा। "अगर तुम मेरे तीन और सवालों का जवाब दोगे, तो मैं तुम्हें बहुत कीमती भेंट दूंगा।"

"कहिये, हुजूरे आलम!" असलान ने तत्परता से कहा।

"कौन-सा पत्थर सबसे भारी होता है?" खान ने पूछा।

"वह, जो हमारे सिर पर गिरे, मेरे हुजूर।"

"ठीक! तलवार से तेज कौन-सी चीज होती है?"

"जबान तलवार से तेज होती है।"

"ठीक कहा! ऐसी कौन-सी बात है जिसे दुनिया में कोई नहीं जानता?"

"कोई भी विद्वानों में विद्वान भी नहीं जानता कि अगले क्षण उसके साथ क्या [illegible] है?"

खान ने सराहना की दृष्टि से बांके नौजवान की ओर देखा।

"तुम्हारी बुद्धि काफी तेज है, लड़के। मैं जानना चाहता हूं कि तुम कहां के हो और तुम्हारा नाम क्या है। हो सकता है मुझे आगे तुम्हारी जरूरत पड़े।"

इतना सुनकर खान ने अपने बड़े वजीर को असलान को फौरन अशरफियों की थैली [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

निर्जन स्तेपी में पहुँचने पर बड़े भाई आमदनी का बटवारा करने लगे, तो छोटा भाई बोला:

"भाइयो, आइये ऐसा करें. जो सोना मुझे खान ने दिया, उस में से कुछ मैं आपको दे देता हूँ, जिससे हम तीनों के पास बराबर-बराबर सोना हो जाये।"

बड़े भाइयों ने बिना झिझके उसकी अशरफियां ले लीं, किन्तु असपन की उदारता से उनके लालच की आग बुझी नहीं, बल्कि बढ़ गयी। अब उन्हें खान की थैली में रखी सारी अशरफियां हड़पने की इच्छा होने लगी।

वे जानबूझकर रास्ते में पीछे रहकर साजिश करने लगे:

"चलो, हम असपन को जान से मार देते हैं, लोगों से कहेंगे कि पड़ाव में उसे सांप ने काट लिया। गवाह कोई है ही नहीं, कौन हमारा परदाफाश करेगा?" और वे छुरे निकालकर घोड़ों को एड़ लगाने लगे।

असपन ने जब उन्हें नंगे छुरे लिये आते देखा, तो वह उन लालचियों को उस पर दया करने के लिए मनाने लगा।

"भाइयो," वह बोला, "आप मेरा खून बहाकर क्या करेंगे? धन ले लीजिये, पर मेरी जान बख्श दीजिये। मेरा घर मत उजाड़िये .."

किन्तु दुष्टों ने उसकी विनती का उत्तर हंसी में दिया.

"वाह रे वाह! हम तुझ पर दया करेंगे, तो तू खान के पास जाकर हमारा परदाफाश कर देगा। खान हमें तेरी शिकायत पर मौत की सजा दे देगा, और तुझे हमारी सम्पत्ति मिल जायेगी। नहीं, तू कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो, हमें धोखा नहीं दे सकता।"

छोटा भाई हताश होकर बोला:

"अगर आप लोगों के दिल में ज़रा भी दया नहीं है, तो मुझे मार डालिये। पर कम-से-कम मेरी अन्तिम इच्छा तो पूरी कर दीजिये।"

"तुम क्या चाहते हो?"

"अगर घर लौटने पर आप लोगों को मालूम पड़े कि मेरे बेटा पैदा हुआ है, तो मेरी पत्नी से कह दीजिये कि वह लड़के का नाम 'दुहाई' रखे। यह मेरी अन्तिम इच्छा है."

भाई खिलखिलाकर हंस पड़े:

"अरे, ऐसी इच्छा पूरी करने में हमारा कुछ नहीं जाता। ऐसा ही होगा, हम तेरी इच्छा पूरी करने का वादा करते हैं।"

और उन्होंने अपने सगे भाई पर छुरे चला दिये...

दस वर्ष बीत गये। खान बूढ़ा हो गया, पर अभी हृष्ट-पुष्ट था। लेकिन उसका बड़ा वज़ीर पूर्णतया जराजीर्ण हो चुका था और अपने स्वामी की न सेवा करने योग्य रह गया था, न ही उसे सलाह देने योग्य। तब खान को उस बुद्धिमान नौजवान की याद आयी,

5-70

जिसने उसकी सारी पहेलिया बिना अटके सुलझा दी थी, और उसने उसे अपने दरबार मे लाने तथा बडा वजीर बनाने का फैसला किया।

खान ने घोडो पर काठिया कसने का हुक्म दिया और अपने अनेक अगरक्षको के साथ स्तेपी मे उधर चल पडा, जहाँ उसके अनुमान मे अमपन के खानदान को घूमते रहना चाहिए था। खोज काफी दिनो तक जारी रही। एक दिन घुडसवार किसी गाव के पास पहुँचे और अचानक उन्हे दूर से आती आवाज सुनाई दी:

"दुहाई! दुहाई!"

"मेरे पीछे चलो!" खान ने चाबुक फटकारा। "वहा कोई किसी स्त्री को मता रहा है। जल्दी से उसकी मदद को चलना चाहिए!" और उसने अपने घोडे को पूरे जोर मे एड लगायी।

जब स्त्री के सामने अचानक खान और बहुत से सशस्त्र अश्वारोही आ पहुँचे, तो वह भय के मारे थरथर कापने लगी और उसने हाथो से अपना मुह ढक लिया। खान ने उससे स्नेहपूर्वक पूछा

"क्या हुआ, ऐ औरत? तुम 'दुहाई, दुहाई' क्यो चिल्ला रही थी? तुम्हे किसने सताया?"

होश सभालने पर स्त्री ने उत्तर दिया

"जहापनाह, मुझे किसी ने नही सताया। दुहाई तो मेरे बेटे का नाम है। वह लडको के साथ स्तेपी मे भाग गया है, खाने का समय हो गया है, इसीलिए मै उसे आवाज दे रही थी"

खान को आश्चर्य हुआ

"कितना विचित्र नाम है! मैने पहली बार ऐसा नाम सुना है। तुम्हे और तुम्हारे पति को अपने बेटे का यह नाम रखने की कैसे सूझी?"

स्त्री ने उसे बताया कि कैसे दस वर्ष पूर्व उसका पति अपने दो भाइयो के साथ काम मे राजधानी गया था और लौटते समय रास्ते मे वह साप काटने मे मर गया, पर मरने मे पहले अपने प्रथम बालक का नाम 'दुहाई' रखने की इच्छा व्यक्त की थी।

खान सोच मे पड गया। उसके चेहरे पर व्याकुलता झलकने लगी।

"यह बताओ कि तुम्हारे पति का नाम क्या था? अमपन तो नही था?"

"जी, हा," स्त्री ने उत्तर दिया, "उसका नाम अमपन था।"

सारी बात समझ मे आ गयी!" खान उत्तेजित हो कह उठा। बुद्धिमान और नेक आदमी साप के काटने मे नही, लोगो के द्वेष के कारण मारा गया है। अपने बेटे का नाम 'दुहाई' रखने का वचन देकर उसने अन्तिम क्षण मे अपने भयावह अन्त की खबर भिजवाई थी। अच्छा, अब यह बताओ, औरत, कि हत्यारे भाइयो ने तुम्हे अमपन की अमानत दी भी या नही?"

स्त्री किंकर्त्तव्यविमूढ खड़ी रह गयी

"मुझ मूर्ख को क्षमा करे, जहापनाह, पर मेरी कुछ समझ मे नही आ रहा है कि आप क्या कह रहे हैं। हमारे पास तो न आज कोई फूटी कौडी है, न पहले कभी रही थी। पति के भाइयों ने मुझसे उस एकमात्र पशु को भी छीन लिया, जो हमे ससुर से मिला था।"

खान क्रुद्ध हो उठा।

"हत्यारो को हाज़िर करो!"

भाइयो को उसके सामने लाया गया। वे शीघ्र ही समझ गये कि इनकार करने और झूठ बोलने से उन्हे कोई लाभ न होगा और उन्होने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

खान ने उन्हे उस स्थान पर ले जाकर, जहाँ उन्होने दुष्कर्म किया था, उनके सिर काट देने तथा उनके द्वारा असपन से लूटा गया सारा धन उसकी विधवा को लौटा देने की आज्ञा दी।

उसी समय स्तेपी से दुहाई भागता हुआ आ पहुँचा। वह मा की तरफ लपका ही था कि खान ने उसे अपने पास बुला लिया और उसके गले मे हाथ डालकर पूछा

"तुम्हे पहेलिया बुझाना आता है, दुहाई?"

"आता है," लड़के ने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दिया।

"तो फिर बताओ 'कमद रगबिगी – इधर छुए एक टेकरी, तो उधर दूसरी' – क्या चीज़ है?"

"इन्द्रधनुष!" लडके ने बेधडक जवाब दिया।

खान मुस्कराया और प्रसन्न हो उठा

"शाबाश! तुम बिलकुल पिता जैसे बुद्धिमान हो। तुम मेरे साथ महल मे चलोगे। वहाँ पढोगे और मेरी सेवा करोगे। और बडे हो जाने पर, जब ज्ञान प्राप्त कर लोगे, मै तुम्हे अपना वज़ीर बना दूँगा।"

दुहाई मा से सटते हुए बोला:

"हुज़ूरे आलम, क्या आपके लिए मेरे अलावा नौकरो की कोई कमी है? और क्या हमारे लोगो मे खान के लिए नगे पैरवाले छोकरे से अधिक बुद्धिमान सलाहकार नही मिलेगा? मेरी मा के पास एक ही नौकर, एक ही सलाहकार और एक ही रक्षक है – वह मै हूँ। मुझे अपनी मा के पास ही रहने की इजाज़त दीजिये!"

और खान को बालक का विरोध करने के लिए कुछ नही सूझा।

बुद्धिमान भाई

बहुत दिन हुए एक सदाचारी और ज्ञानी पुरुष रहता था। उसके तीन पुत्र थे। कहते हैं शिकारी का बेटा तीरों के धार चढ़ाता है और दर्जी का बेटा कपड़े काटता है। और विद्वान के पुत्र बचपन से ही अपना सारा समय ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें पढ़ने में बिताते थे। उनमें से बड़ा अभी घोड़े पर चढ़ना भी नहीं सीखा था, पर लोग उन भाइयों के पास न्याय करवाने और सलाह लेने आने लगे।

एक बार उसके पास दो आदमी दो ऊंटनियां और एक ऊंट का बच्चा लेकर आये।

"हमारा मामला ऐसा है," वे कहने लगे, "कि हममें से हरेक के पास एक-एक ऊंटनी है। वे स्तेपी में हमेशा साथ चरती थीं। हाल ही में हम उन्हें लेने गये, तो हमने दो नवजात ऊंट के बच्चे देखे। एक जिन्दा था, दूसरा – मरा हुआ। अब हम यह नहीं जान पा रहे हैं कि ऊंट का बच्चा किसका होना चाहिए और उनमें से कौन-सी ऊंटनी उसकी मां है। वे दोनों ही बच्चे को प्यार करती हैं और दूध पिलाती हैं और वह भी दोनों ऊंटनियों को एक-समान प्यार करता है।"

बड़ा भाई बोला

"ऊंटनियों को नदी किनारे ले जाइये।"

मझला बोला

"ऊंट के बच्चे को डोंगी में दूसरे किनारे पर ले जाइये।" और छोटा भाई बोला

"तब आपके झगड़े का सुद-बसुद फैसला हो जायेगा।"

उन लोगों ने वैसा ही किया, जैसा की सलाह लड़कों ने दी थी।

ऊंट का बच्चा जब किनारे पर अकेला रह गया, तो वह डर के मारे छटपटाने और दर्द भरी आवाज में बलबलाने लगा। ऊंटनियां भी घबराने और जोर-जोर से बलबलाने लगीं। एक ऊंटनी घबरायी हुई किनारे के सहारे-सहारे भागने लगी, जब कि दूसरी पानी में कूद पड़ी और तैरकर बच्चे के पास जाने लगी। तब सब समझ गये कि यही उसकी मां है।

असाधारण बालकों की बुद्धिमत्ता का समाचार बात की बात में सारी नगरी में फैल गया। वृद्ध विद्वान को अपने पुत्रों के कारण हर्ष भी हुआ और उन पर गर्व भी।

वर्ष बीतते रहे। बाप बूढ़ा होता गया, बेटे बड़े होते गये। जब पुत्रों ने युवावस्था में पदार्पण किया, विद्वान ने उनसे कहा

ज्ञान लम्बी उम्रवाले का नहीं, बल्कि दुनिया देखनेवाले का ज्यादा होता है। सोने की सच्ची कीमत कौन जानता है? धनी नहीं, बल्कि सुनार। भोजन के गुणों का ज्ञान किसे होता है? खानेवाले को नहीं, बल्कि उसे पकानेवाले को। सच्चा रास्ता कौन दिखा सकता है? वह नहीं जो उस पर जाने की तैयारी कर रहा है, बल्कि उससे गुजरनेवाला। तुम लोग अपनी पुस्तक छोड़कर सबसे अधिक ज्ञानवर्द्धक पुस्तक – जीवन की पुस्तक पढ़ने के लिए देशाटन पर निकल जाओ।

पिता ने पुत्रों को आशीर्वाद दिया और वे कई वर्षों के लिए अपना घर छोड़कर चल पड़े।

एक बार जब तीनों भाई एक रास्ते से गुजर रहे थे, अपने आस पास नजर डालकर बड़ा भाई बोला

इस रास्ते से थोड़ी देर पहले एक थका-हारा ऊट गुजरा है।

मझला बोला

हां, और उस ऊट की बायीं आख नहीं है।

छोटा बोला

'और उस पर शहद लदा था।

उसी समय उन्हें सामने से एक घबराया और हांफता हुआ आदमी आता दिखाई दिया

"आपने रास्ते में कोई ऊट तो नहीं देखा?" उसने पूछा। "चोर मेरा ऊट चुरा ले गये हैं।"

"तुम्हारे ऊट ने बहुत लम्बा रास्ता तय किया है और वह बहुत थका हुआ है, सच है ना?" बड़े भाई ने पूछा।

"हां," अपरिचित ने जवाब दिया।

"और तुम्हारे ऊट की बायी आख नहीं है ना?" मझले भाई ने पूछा।

"हां, हां!" अपरिचित खुश हो गया।

"वह शहद तो ढोकर नहीं ले जा रहा था?" छोटे भाई ने पूछा।

"हां, हां, शहद! जल्दी से बताइये मेरा ऊट कहां है?"

"यह हम नहीं जानते," भाइयों ने कहा। "हमने उसे देखा नहीं है।"

अपरिचित क्रोधित हो उठा

"तुम लोगों की झूठ बोलने की हिम्मत कैसे हुई कि तुमने ऊट को नहीं देखा, जब

कि तुम्हें ऊँट की सारी पहचान मालूम है? ऊँट जरूर तुम्हीं लोगों ने चुराया है और उसे किसी गुप्त स्थान में छिपा लिया है।"

और उसने इतना शोर मचाया कि उसकी आवाज सारी दूरी पर जा रहे खान के सिपाहियों ने सुन ली। वे पुकार सुनकर सरपट भागे दौड़े आये और उन लोगों को खान के पास ले गये।

खान ने उनसे पूछताछ शुरू की।

"आप लोग कहते हैं कि आपने लापता हुए ऊँट को नहीं देखा," उसने किसान के पुत्रों को सम्बोधित किया। "पर फिर आपने उसके मालिक को उसकी ठीक-ठीक पहचान कैसे बतायी?"

बड़ा भाई बोला

"ऊँट ने लम्बा रास्ता तय किया है, इसका अनुमान मैंने उसके पद-चिन्हों से लगा लिया। थका हुआ जानवर पैर घिसटता चलता है, उसकी खोजें लम्बी होती हैं।"

मझला बोला

"ऊँट की बायीं आँख नहीं है। इसका फैसला मैंने इस आधार पर किया, कि उसने चलते-चलते केवल रास्ते के दायीं ओर की घास ही खायी थी।"

छोटा भाई बोला

"अगर रास्ते पर मक्खियों के झुण्ड के झुण्ड भिनभिना रहे हों, तो यह अन्दाज लगाना मुश्किल थोड़े ही था कि ऊँट पर शहद लदा था।"

खान भाइयों की सूक्ष्म-दृष्टि और उनके प्रश्नों का उत्तर आत्म-सम्मान के साथ देने से आश्चर्यचकित रह गया। लेकिन उसे एक बार और उनकी बुद्धिमत्ता की परीक्षा लेने की इच्छा हुई। उसने नजर बचाकर एक पका हुआ अनार रूमाल में लपेट लिया और उसे भाइयों को दिखाकर पूछा

"मेरे हाथ में क्या है?"

बड़ा भाई बोला.

"यह कोई गोल चीज है।"

मझला बोला

"इसके अलावा बहुत ही स्वादिष्ट है।"

और छोटे ने पूरी तरह समाधान कर दिया

"कहने का मतलब है, यह अनार है, जहाँपनाह।"

खान का चेहरा खिल उठा।

"बिलकुल ठीक!" वह कह उठा। "मैंने पहले कभी इतने सूक्ष्मदर्शी लोगों को नहीं देखा था। आप जवान हैं, पर मेरे दाढ़ीवाले वजीर भी आपकी तुलना में कुछ नहीं हैं। आप मेरे यहाँ तीन दिन रुकिये, आपको बारी-बारी से मेरे लोगों के मुकदमों का फैसला

करना होगा और अगर मुझे आपके निर्णय न्यायपूर्ण लगे, तो मै आपको अपने वज़ीर बना लूंगा।"

यह सुनकर बूढे वज़ीर तीनो युवा विद्वानो से घोर घृणा करने लगे और उन्होने उनके साथ अपनी आय, सत्ता और खान की कृपालुता न बाटने के लिए उन्हे हर काम मे नुकसान पहुँचाने की ठान ली।

पहले दिन न्यायालय की अध्यक्षता बडे भाई ने की। उसके सामने दो आदमी पेश किये गये। उनमे से एक ने कहा:

"मै एक गरीब गड़रिया हूँ। कल तगी के कारण मैने अपनी सबसे बढिया भेड काटी और आज दिन भर बाजार मे मास बेचता रहा। मैने अपनी सारी आमदनी थैली मे रखी थी, पर इस आदमी ने उसे मेरी जेब मे निकाल लिया।"

दूसरा व्यक्ति झल्लाकर उस पर लगाये आरोप से इनकार करने लगा

"गडरिया झूठ बोलता है। मेरे पास रकम की थैली है, पर वह मेरी अपनी थैली है। यह ठग मुझ पर झूठा दोष लगा रहा है और पराया माल हथियाना चाहता है।'

काज़ी ने कहा·

"थैली मुझे दो। हम एक मिनट मे पता लगा लेगे कि थैली किसकी है।"

उसने खान के नौकरो को एक बरतन मे उबलता पानी लाने को कहा और उसमे थैली के सिक्के उलट दिये। पानी पर तत्क्षण चरबी की तह तैर आयी, जैसे उसमे भेड का मास पकाया गया हो। अब कोई सन्देह न रहा कि गडरिये ने सच कहा था। काज़ी न उसे रकम लौटा दी और चोर को हिरासत मे लेने का आदेश दे दिया।

दूसरे दिन मझले भाई ने न्याय किया।

अदालत मे ठसाठस भरे बोरे जैसा एक मोटा बाय किसी फटीचर अभागे को आस्तीन पकडकर घसीट लाया।

बाय कहने लगा:

"इस फटीचर ने मुझसे यह रोना रोकर कि इसका बेटा मर रहा है, मुझसे एक चरक* गोश्त उधार लिया था। इसने कसम खाकर कहा था कि यह कर्ज एक सप्ताह में लौटा देगा, चाहे अपनी पिण्डली का गोश्त काटकर देना पडे। बच्चा काफी दिन हुए मर चुका है, सप्ताह पर सप्ताह बीतते जा रहे हैं, पर यह चालबाज न तो मुझे मास लौटा रहा है और न ही उसकी कीमत।"

काज़ी ने गरीब से पूछा:

"तुमने बाय का उधार क्यों नही चुकाया?"

---

* चरक – पुराना कज़ाख़्री बाट – २५० ग्राम।

"मेरे पास कुछ नही है," गरीब ने डर के मारे थरथर कापते जवाब दिया, "मैं पतभड से पहले बाय का हिसाब साफ नही कर सकूंगा।"

"लेकिन मै पतभड तक इन्तज़ार नही कर सकता!" बाय चीखा।

तब काज़ी बोला, "मै इस मामले का फैसला इस तरह करता हूँ। बाय, तुम छुरा लो और प्रतिवादी की पिण्डली मे एक चरक मास काट लो। ठीक एक चरक! अगर टुकडा रत्ती भर भी कम या ज्यादा हुआ, तो मै तुम पर कोड़े लगवाने का हुक्म दे दूँगा।"

बाय किंकर्तव्यविमूढ हो गया और एकाएक अपने चोग़े के पल्लो मे उलझकर गिरता-पड़ता सिर पर पाव रखकर भाग गया। सब उस पर हसने लगे, और गरीब कृपापूर्ण निर्णय के लिए काज़ी को धन्यवाद देने लगा।

तीसरे दिन छोटे भाई को न्याय करने का अवसर मिला। उसके पास दो जवान आदमी आये। उन दोनो मे से जो कद मे लम्बा और चौडे कधोवाला था, वह वादी था। उसने शिकायत की

"मेरे दोस्त ने मुझसे एक अशरफी छीन ली है।"

प्रतिवादी ने सफाई पेश की

"मैने अशरफी ईमानदारी से मेहनत करके कमाई है। लोगो का बुरा करने का विचार मेरे दिमाग मे कभी आता ही नही है।"

काज़ी ने वादी से पूछा

"क्या कोई गवाह मौजूद था, जब तुम्हारे दोस्त ने तुम पर हमला किया?"

"नही, कोई गवाह नही था।"

"तो फिर," काज़ी ने कहा, "आपका मुकदमा निबटाना मुश्किल होगा। मैं इस पर विचार करे लेता हूँ। और इस बीच आप लोग कुश्ती लडकर मेरा दिल बहलाइये। कुश्ती के विजेता को मै इनाम दूँगा।"

काज़ी सोच-विचार मे डूब गया, और बाके नौजवान एक दूसरे का कमरबद पकड कुश्ती लडने लगे। पन्द्रह मिनट के अन्दर-अन्दर वादी ने प्रतिवादी को तीन बार पछाड दिया।

"बस," काज़ी ने कहा। "सच्चाई जाहिर हो गयी है, और मेरा फैसला तैयार है। मूर्ख से मूर्ख को भी यह स्पष्ट हो गया है कि इन दोनो पहलवानो मे कौन ज्यादा ताकतवर है। सबके सामने वादी ने प्रतिवादी को लगातार तीन बार पछाडा है। इस बात पर कौन विश्वास करेगा कि कमज़ोर ने ताकतवर से पैसा छीना है? नही, प्रतिवादी निर्दोष है, जब कि, ढीठ वादी, तुम्हे झूठी शिकायत और बलप्रयोग के लिए कड़ा दण्ड दिया जाना चाहिए। लेकिन अपने वचनानुसार मै तुम्हे कुश्ती मे कौशल दिखाने के लिए क्षमा-दान देता हूँ। जाओ, आपस मे सुलह कर लो और फिर से दोस्त बनने की कोशिश करो।"

सब लोगो ने तीनो भाइयो के न्यायपूर्ण निर्णयो की सराहना की, और खान भी उनसे सन्तुष्ट हो गया। केवल बूढ़े वज़ीर उनसे डाह करने लगे और नाराज़ हो उठे। वे खान के

खान मरने लगे कि तीनो भाई सदिग्ध बदमाश हैं, अनजाने परदेसियो पर विश्वास करना मूर्खता होगी, उन्हे जरूर दुश्मनो ने भेजा है और वे उसका बुरा करने की योजना बना रहे हैं। लेकिन खान ने चुगलखोरो को डाट दिया और सबके सामने अपनी इच्छा घोषित कर दी.

"मैं तीनो बुद्धिमान युवको को वजीर बना रहा हूँ। दिन मे वे सरकारी काम-काज मे मेरी मदद किया करेंगे, शाम को किस्से सुनाकर मेरा दिल बहलाया करेगे और रात को मेरे सोते समय पहरा दिया करेंगे।"

दिन बीतने लगे। खान का युवको से लगाव निरन्तर बढता गया। वह शाम को घटो उनकी बाते सुनता रहता और विचित्र कहानियो की लोरी सुनता सो जाता था। भाई बारी-बारी से खान की सेवा करते रहे, और वह सब का समान रूप से ध्यान रखता, किन्तु छोटे भाई पर उसकी विशेष कृपा रहती थी। इसीलिए बूढे वजीर युवक से बहुत द्वेष रखने लगे। अतत. उन्होने उसके खिलाफ षड्यत्र रचने की ठानी।

एक दिन जब छोटे भाई की खान के साथ दिन भर रहने की बारी आयी, वजीरो ने चोरी से खान के शयन-कक्ष मे एक विषैला सर्प छोड दिया। उन्हे आशा थी कि खान को साप देखते ही अपने चहेते पर बुरे इरादे का सन्देह हो जायेगा और वह गुस्से से आगबबूला हो उठेगा, और तब उसे तीनो भाइयो को सजा देने के लिए मनाना आसान हो जायेगा।

रात आयी। खान पलग पर लेटा हुआ था और युवा वजीर उसे एक के बाद एक प्राचीन दन्तकथाए सुना रहा था। वह इतने क्रमबद्ध ढग से बोल रहा था कि लगता था जैसे वह अपने सामने कोई अदृश्य पुस्तक रखे हुए हो। जी भर कहानिया सुन लेने के बाद खान आधी रात बाद गहरी नीन्द मे सो गया।

तभी चिराग बुझाने जा रहे युवक को खान के पलग की तरफ रेगता भयावह साप नजर आ गया। उसने बिना विवेक खोये तलवार निकाल ली और साप का सिर काटकर उसका घटा धड पलग के नीचे फेक दिया। वह तलवार म्यान मे रखने ही जा रहा था कि शोर से उद्विग्न खान जाग गया और उसने आखे खोली।

युवा वजीर को अपने सामने नगी तलवार हाथ मे थामे खडा देख वह झट उठ खडा हुआ और चिल्लाने लगा

"बचाओ! मुझे जान से मारना चाहते है!"

अगरक्षक तत्क्षण शयन-कक्ष मे भागे घुस आये और उन्होने युवक को पकडकर सुबह तक के लिए उसे काल-कोठरी मे बद कर दिया।

खान ने सुबह मामले की जाच करने और बदी के भाग्य का फैसला करने के लिए अपने सारे वजीरो की बैठक बुलवाई।

वजीर ज्येष्ठता के अनुसार बोले, पर सभी ने एक ही बात कही उन्होने लम्बाडम्बर

का जाल फैलाते हुए और वाक्-चातुर्य मे एक दूसरे से होड करते हुए युवक पर विश्वासघात, नमकहरामी और अपने शासक की हत्या के प्रयास का आरोप लगाया और अन्त मे उसे निर्मम से निर्मम और कष्टप्रद से कष्टप्रद दण्ड – प्राणदण्ड दिये जाने की माग की। उनकी बाते सुनते समय खान सिर हिलाता रहा तथा साथ ही साथ और अधिक उदास होता गया। वजीर मन-ही-मन खुश हो रहे थे, पर इसे प्रकट नही होने दे रहे थे और उन्हे अपने निर्लज्ज षड्यत्र के सफल होने का पहले से ही पूरा विश्वास था।

किन्तु उधर अभियुक्त के बडे भाई की बोलने की बारी आ गयी।

"जहापनाह," उसने कहा, "मुझे न्यायिक भाषण के स्थान पर एक प्राचीन नीति-कथा सुनाने की आज्ञा दे, जैसा कि मैं और मेरे भाई आपके सिरहाने बैठकर इतनी रातो से करते आये है।"

बहुत पुराने जमाने मे एक पराक्रमी बादशाह था। उसे दुनिया मे सबसे ज्यादा प्यार अपने बोलनेवाले तोते से था, जो सोने के पिजरे मे उसके शयन-कक्ष मे रहता था। बुद्धिमान तोता कठिन परिस्थितियो मे बादशाह को सलाह भी देता था, दुख मे सान्त्वना भी दिलाता था और अवकाश के समय मे उसका मनोरजन भी करता था।

एक बार बादशाह पिजरे के पास आया, तो उसने देखा कि तोते ने पर खडे कर रखे है और वह उदास है।

'तुझे क्या हुआ है, मेरे दोस्त?' बादशाह ने पूछा।

तोता बोला

'मेरे पास दूर देश से मेरे साथी आकर खिडकी पर बैठे थे। वे समाचार लाये कि मेरी बहन का विवाह हो रहा है और वह चाहती है कि मैं शादी मे मौजूद रहूँ। आप मुझे अपने देश हो आने की अनुमति दे दीजिये, बादशाह सलामत! आपकी इस कृपा के बदले मे मैं वहा से आपके लिए एक बहुमूल्य उपहार लेकर आऊँगा।'

'तुम्हे वहा उडकर जाने-आने मे कितने दिन लगेगे?' बादशाह ने पूछा।

'चालीस दिन, बादशाह सलामत। चालीसवे दिन मैं फिर आपके साथ होऊँगा।'

बादशाह ने पिजरे की खिडकी खोल दी, और पक्षी उल्लसित स्वर मे चिल्लाता पख फडफडाता खिडकी मे से आकाश मे उड चला।

उस समय वहा उपस्थित वजीर ने कहा

'मैं किसी भी चीज की शर्त लगाने को तैयार हूँ, हुजूरे आलम, कि चालाक पक्षी ने आपको धोखा दिया है और वह कभी इस पिजरे मे नही लौटेगा।'

दुष्ट लोग अविश्वासी और शकालु होते है, मेरे हुजूर, और वह वजीर दुष्ट आदमी था।

लेकिन चालीस दिन बीतते ही तोता अपने वचनानुसार वापस लौट आया। बादशाह उसके आने पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मजाक मे पूछ लिया:

'मेरे लिए तू कौन-सा उपहार लाया है, मेरे मित्र?'

तोते ने चोंच खोली और बादशाह की हथेली पर एक नन्हा-सा दाना रख दिया।

बादशाह विस्मित हुआ, पर तोते की बुद्धिमत्ता जानने के कारण उसने अपने सफेद दाढ़ीवाले माली को आवाज दी और उसे वह बीज बोने को कहा। एक ही दिन में उस बीज मे एक सुगठित सेब का वृक्ष निकल आया, दो दिन में उसमे फूल निकल आये और तीसरे दिन–वह अनेक सुगंधित फलो से सुशोभित हो उठा।

माली ने सबसे लाल सेब तोडा और उसे बादशाह के पास ले जा रहा था कि उसे रास्ते मे वजीर ने रोक लिया। उसने हाथ मे सेब ले जाने के लिए माली को फटकारा और सोने की थाली लाने को कहा। बूढा चला गया, पर इस बीच वजीर ने फल पर विष मल दिया और माली की लौटने तक प्रतीक्षा करके उसके साथ बादशाह के सामने उपस्थित हुआ। माली ने अद्भुत वृक्ष के बारे में बताया और सेबवाली थाली मेज पर रखकर चला गया। पर वजीर बोला:

'हुजूरे आलम, यह सेब देखने मे तो सुन्दर है, पर सुन्दरता प्राय भ्रामक होती है। मुझे सन्देह है कि सेब विषैला है। आप कारागार मे से किसी हत्यारे को, जिसे प्राण-दण्ड सुनाया गया हो, यहाँ लाने की आज्ञा दीजिये और आपसे पहले उसे सेब का एक टुकडा चख लेने दीजिये।'

बादशाह ने वजीर की सलाह मान ली। जजीरो मे जकडे डाकू को वहाँ लाया गया और उसे सेब का टुकडा खाने को बाध्य किया गया और पल भर में वह व्यक्ति मृत पडा था।

बादशाह क्रोधोन्मत्त हो उठा। वह लपककर पासवाले कमरे मे गया और उसने तोते को पिजरे मे से खीचकर उसकी गरदन मरोड दी।

कुछ समय पश्चात् बादशाह को स्वय यह सेब का वृक्ष देखने की इच्छा हुई। वह बाग मे निकलकर बागबान को आवाज देने लगा। उसके पास एक सुगठित शरीर व सुन्दर चेहरे-वाला युवक भागा आया।

'तुम कौन हो?' बादशाह ने पूछा।

'मैं आपका माली हूँ, जहापनाह।'

'लेकिन मेरा माली तो बिलकुल बुड्ढा था।' बादशाह को आश्चर्य हुआ।

'वह मैं ही हूँ,' सुन्दर युवक ने कहा। 'आपने जब तोते को मार डाला तो मैंने सोचा कि मैं भी आपके कोप से नही बच सकूँगा। तब व्यर्थ के कष्ट न भोगने के लिए मैंने सेब खाकर आत्म-हत्या करने का निर्णय लिया। मैंने एक सेब तोडकर थोडा-सा दात से काटा कि तत्क्षण मेरा यौवन लौट आया।'

आश्चर्यचकित बादशाह ने, जैसे कोई सपना देख रहा हो, अद्भुत वृक्ष के पास जाकर सेब तोडा और खा लिया। उसे अपने सारे शरीर मे अनिर्वचनीय सुख की अनुभूति हुई

और उसने अपने को फिर वैसा ही युवा और वलशाली महसूस किया जैसा कि वह अठारह वर्ष की आयु में था।

तभी उसकी समझ में आया कि उसने वफादार तोते को व्यर्थ मारा था, वह दुख और पश्चाताप के मारे रो पड़ा, पर अब देर हो चुकी थी· शासक प्राण ले तो सकते हैं, पर प्राण लौटाने का सामर्थ्य उनमें नहीं होता।"

बड़ा भाई मौन हो गया। मान गहन चिन्तन में डूबा निश्चल बैठा रहा। फिर उसने मझले भाई को संकेत से बोलने का आदेश दिया। और वह कहने लगा·

"जहांपनाह, मैं भी आपको एक ऐसी ही कथा सुनाना चाहता हूँ। यह घटना भी बहुत दिन पहले घटी थी, पर दूसरे देश में और दूसरे बादशाह के साथ। उस बादशाह को बचपन से ही शिकार का शौक था। वह अपने तेज घोड़े पर स्तेपी में कई दिनों और महीनों तक वन्य पशु-पक्षियों का पीछा किया करता था। बादशाह का एक चहेता उकाब था, जिसका जैसा उकाब न तो उससे पहले किसी शिकारी के पास था और न ही उसके बाद किसी के पास हुआ।

एक बार बादशाह एक हिरन का पीछा करते-करते निर्जन स्तेपी में पहुँच गया। सूरज निर्ममतापूर्वक तप रहा था, कहीं पानी नहीं था, बादशाह को बहुत तेज प्यास लगी थी। अचानक उसे एक चट्टान नजर आ गयी, जिसमें से पतली धारा में एक चश्मा फूट रहा था। बादशाह ने सोने का प्याला निकालकर उसमें पानी भरा और पीना ही चाहा था कि एकाएक उकाब ने झपट्टा मारा और सारा पानी बिखेर दिया।

बादशाह क्रुद्ध हो उठा और उसने उकाब पर चिल्लाकर फिर पानी भरा। किन्तु उकाब ने फिर झपट्टा मार अपने सीने से बादशाह के हाथ से प्याला गिरा दिया। बादशाह ने क्रोध में खाली प्याला उठाकर उकाब के सिर पर दे मारा। उकाब मरकर ढेर हो गया। बादशाह चश्मे के पास गया और भय के मारे जड़वत् रह गया. चट्टान की दरार में से एक विशाल सांप रेंगता बाहर निकल आया। चट्टान से जल की नहीं, घातक विष की धार निकल रही थी। बादशाह उछलकर काठी पर सवार हुआ और वहाँ से सरपट दूर भाग चला। किन्तु उस दिन से वह समझ गया कि सतर्कता उतावली से श्रेष्ठ होती है, कि उच्च-पद साघातिक भूलों से नहीं बचा सकता, कि बुरे और भले में अन्तर बुद्धिमान ही कर सकता है, न कि शक्तिशाली।"

"बहुत हो चुका! चुप हो जा!" बादशाह चिल्लाया और भयानक ढंग से आंखें चमकाता अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ। "तुम दोनों ने अपने भाई के साथ षड्यन्त्र रचाया है, तुम प्रतिशोध से बचने के लिए, उसके और अपने प्राण बचाने की खातिर दुष्ट को निर्दोष सिद्ध करना चाहते हो। तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि मेरे समक्ष वह दोषी नहीं है, बल्कि मैं मूर्ख हूँ और उसके प्रति अन्याय कर रहा हूँ। अगर ऐसा ही है, तो फिर उसने अपने स्वामी के ऊपर तलवार क्यों उठाई?"

"इसका हमें पता नहीं," भाइयों ने उत्तर दिया। "आप उसी से पूछ लीजिये।"

"बंदी को हाजिर करो!" खान ने पहरेदारों को आवाज दी।

और तीनों भाइयों में सबसे छोटे को खान और वज़ीरों के सामने ला खड़ा किया गया। युवक को मर्मान्वेषी दृष्टि से घूरते हुए खान ने पूछा -

"बिना कुछ छिपाये सच-सच बताओ, क्योंकि तुम्हें किसी तरह की चालबाज़ी मृत्यु-दण्ड से नहीं बचा सकती - कल रात को तुमने किस इरादे से मेरे पलंग के पास तलवार निकाली थी?"

"आपको मौत से बचाने के लिए, हुज़ूर," युवक ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

"तुम्हारे अलावा मुझे मौत का खतरा और किस से था?"

"साँप से, जो आपको डसने जा रहा था और जिसे मैंने तलवार से काट दिया।"

"साँप से? तुम झूठ बोल रहे हो! साँप मेरे शयन-कक्ष में आ ही कैसे सकता था?" खान ने विस्मय से पूछा।"

"आपके अत्यधिक अनुभवी वज़ीर, जिन पर आप इतना भरोसा रखते हैं, आपके प्रश्न का उत्तर मुझसे बेहतर ढंग से दे सकते हैं।"

खान लपककर शयन-कक्ष में गया और कुछ समय पश्चात् सिर लटकाये, धीरे-धीरे चलता न्याय-कक्ष में लौट आया। वह डबडबाती आँखों के साथ सबसे छोटे भाई के पास आया और उसे गले लगाकर रुँधे हुए कंठ से बोला -

"मुझे क्षमा कर दो, मेरे विश्वस्त मित्र और उद्धारक! अब मुझे सत्य मालूम हो गया है। अपमान के बदले में जो चाहो, माँग लो, मैं सबके समक्ष सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हें और तुम्हारे भाइयों को कुछ भी देने से इनकार नहीं करूँगा।"

युवक ने कहा:

"हम सबको जाने दीजिये, जहाँपनाह, अपनी सेवा से मुक्त कर दीजिये। हमें अपना देशाटन जारी रखने दीजिये। हमारी यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है, हमने जीवन की पुस्तक, सबसे ज्ञानवर्द्धक पुस्तक अभी आधी भी नहीं पढ़ी है।"

ऐसी प्रार्थना खान के लिए अप्रत्याशित थी। वह फिर क्रुद्ध हो गया, उसका चेहरा तमतमा उठा, पर अब अपना दिया वचन भंग करना असम्भव था।

और तीनों भाई खान को छोड़कर आगे चल दिये।

लकड़हारे की बेटी

किसी जमाने मे एक लकड़हारा रहता था। वह धुए मे काले पडे मिट्टी के झोपडे मे अपनी नौ बरस की लड़की के साथ रहता था। वह बहुत गरीब था सामान के नाम पर उसके पास कुल जमा एक टूटी-फूटी कुल्हाडी थी और जानवरो के नाम पर— एक मरियल लगडा घोडा और बूढ़ा गधा। लेकिन अक्लमदो का कहना है 'धनी का भाग्य उसके पशु-धन पर निर्भर करता है और निर्धन का—उसकी सन्तान पर। और सचमुच लकड़हारा अपनी बेटी को देखकर अपने सारे कष्ट और अभाव भूल जाता था।

बेटी का नाम आईना-कोज था। वह इतनी चाक, बुद्धिमान और विनम्र थी कि ऐसा कोई आदमी नहीं मिलता था, जो उसे पहली नजर मे प्यार न करने लगे। दूर-दूर के तम्बू-घरो के बच्चे आईना-कोज के साथ खेलने आते, दूर-दूर के गावो के बुजुर्ग उससे बाते करने आते।

एक दिन लकड़हारे ने अपने लगडे मरियल घोडे पर लकडी का गट्ठर लादा और बेटी से बोला

"मेरी प्यारी आईना-कोज, मैं बाजार जा रहा हूँ और शाम तक लौट आऊँगा। तुम मेरी गैरहाजिरी मे उदास मत होना। अगर मैं लकड़ी बेच पाया, तो तुम्हारे लिए कुछ लेकर आऊँगा।"

"आपकी इच्छा पूरी हो, अब्बाजान," लडकी ने जवाब दिया, "शुभ यात्रा, जाइये, पर जरा सावधान रहिये। क्योकि लोग यो ही तो नही कहते हैं कि बाजार मनहूस स्थान होता है वहाँ कुछ लोग पैसा बनाते हैं और कुछ—लूटे जाते हैं। जल्दी से लौटकर आइये, मैं खाना बनाकर आपका इन्तजार करती रहूँगी।"

लकडहारे ने लगडे मरियल घोडे को चाबुक मारा और सफर पर रवाना हो गया।

वह बाजार मे पहुँचकर एक तरफ खडा हो गया और ग्राहको की प्रतीक्षा करने लगा। समय बीतता रहा, पर बूढे के पास कोई नही आया।

उस समय बाजार मे एक युवा बाय अपनी काली दाढी और रेशमी चोगे पर इतराता घूम रहा था। उसने फटेहाल बूढे को लकड़िया लिये देखा और उसने उसका मज़ाक उड़ाकर बेवकूफ बनाने की ठान ली।

"ऐ बडे मिया, लकड़ी बेचनी है?" बाय ने पूछा।

"बेचनी है," लकड़हारे ने उत्तर दिया।

"तुम अपने इस गट्ठर की क्या कीमत चाहते हो?"

"एक तगा।"*

"क्या तुम इस कीमत पर लकडिया जिस हालत मे है, उसी हालत मे बेचोगे?"

लकड़हारा ग्राहक की बात का अर्थ नही समझा और इसमे अपना कुछ नुकसान न होता सोचकर बोला:

"बेच दूँगा।"

"ठीक है," बाय ने कहा, "यह लो एक तगा। मरियल घोडे को लेकर मेरे पीछे-पीछे जल्दी से चलो।"

वे जब बाय के अहाते मे पहुँचे, लकड़हारा घर के आगे गट्ठर डालने के लिए रस्सी खोलने लगा। किन्तु तभी बाय ने उसके सीने पर जोर का धक्का मारा और चिल्ला-चिल्लाकर सारा मोहल्ला सिर पर उठा लिया:

"तू यह क्या कर रहा है, बेवकूफ बुड्ढे? कही तू घोडा तो अपने साथ ले जाने की नहीं सोच रहा है? मैंने तो तुझसे लकडिया 'जिस हालत मे थी, उसी हालत मे' खरीदी हैं, यानी घोडा अब मेरा है। तुझे अपनी कीमत मिल चुकी है, इसलिए यहा से दफा हो जा, इसी वक्त!"

लकड़हारा विरोध करने लगा, पर बाय कुछ सुनने को तैयार ही नही हुआ। वह हाथ नचा-नचाकर ज़ोर से चिल्लाने लगा और अन्त मे बूढे का हाथ पकड़कर उसे काज़ी के पास खीच ले गया।

कहते हैं, "दुष्ट मालिक तेज घोडे को भी मरियल कर देता हैं, और दुष्ट काज़ी किसी की अपनी चीज़ भी परायी बना सकता है।" काज़ी ने वादी व प्रतिवादी के दावे सुन, दाढी सहलाकर बाय के रेशमी चोगे पर नज़र डाली और अपने फायदे के लालच मे फैसला सुना दिया: लकड़हारे को अपने माल की पूरी कीमत मिल चुकी है और यदि उसने ग्राहक की शर्तें मानी हैं, तो सारा दोष उसका अपना ही है।

काज़ी का निर्णय सुनने के बाद बाय अपनी काली करतूत पर खुश होकर काफी देर तक ठहाके लगाता रहा, जब कि लकड़हारा बुरी तरह रोता-धोता कमर झुकाये धीरे-धीरे अपने गाव की ओर चल पडा।

---

* तगा - चादी का पुराना सिक्का।

लकड़हारे की बेटी

किसी ज़माने में एक लकड़हारा रहता था। वह धुएँ से काले पड़े मिट्टी के झोपड़े में अपनी नौ बरस की लड़की के साथ रहता था। वह बहुत गरीब था। सामान के नाम पर उसके पास कुल जमा एक टूटी-फूटी कुल्हाड़ी थी और जानवरों के नाम पर — एक मरियल लंगड़ा घोड़ा और बूढ़ा गधा। लेकिन अक्लमंदों का कहना है 'धनी का मान उसके पशु-धन पर निर्भर करता है और निर्धन का — उसकी सन्तान पर।' और सचमुच लकड़हारा अपनी बेटी को देखकर अपने सारे कष्ट और अभाव भूल जाता था।

बेटी का नाम आईना-कीज़ था। वह इतनी नेक, बुद्धिमान और विनम्र थी कि ऐसा कोई आदमी नहीं मिलता था, जो उसे पहली नज़र में प्यार न करने लगे। दूर-दूर के तम्बू-घरों के बच्चे आईना-कीज़ के साथ खेलने आते, दूर-दूर के गाँवों के बुजुर्ग उससे बातें करने आते।

एक दिन लकड़हारे ने अपने लगड़े मरियल घोड़े पर लकड़ी का गट्ठर लादा और बेटी से बोला

"मेरी प्यारी आईना-कीज़, मैं बाजार जा रहा हूँ और शाम तक लौट आऊँगा। तुम मेरी गैरहाज़िरी में उदास मत होना। अगर मैं लकड़ी बेच पाया, तो तुम्हारे लिए कुछ लेकर आऊँगा।"

"आपकी इच्छा पूरी हो, अब्बाजान," लड़की ने जवाब दिया, "शुभ यात्रा, जाइये, पर ज़रा सावधान रहिये। क्योंकि लोग यों ही तो नहीं कहते है कि बाज़ार मनहूस स्थान होता है वहाँ कुछ लोग पैसा बनाते है और कुछ — लूटे जाते हैं। जल्दी से लौटकर आइये, मैं खाना बनाकर आपका इन्तज़ार करती रहूँगी।"

लकड़हारे ने लगड़े मरियल घोड़े को चाबुक मारा और सफ़र पर रवाना हो गया।

वह बाज़ार में पहुँचकर एक तरफ खड़ा हो गया और ग्राहकों की प्रतीक्षा करने लगा। समय बीतता रहा, पर बूढ़े के पास कोई नहीं आया।

गधे की ओर इशारा किया। आईना-क्रीज ने गधा बांधकर क़ीमत मांगी। बाय ने ग्रीस निपोड़कर उसकी ओर दो तंगा बढ़ाये, किन्तु आईना-क्रीज ने उससे कहा

"चचा, तुमने मुझसे लकड़ियां 'जिस हालत में वे थीं, उसी में' ख़रीदी हैं और लकड़ियों के साथ-साथ गधा भी तुम्हें मिल गया, पर तुमने पैसे भी 'जिस हालत में वे हैं, उसी हालत' में देने का वादा किया था। मैं दो तंगों के अलावा तुम्हारा हाथ भी लेना चाहती हूं।"

बाय लड़की के मुंह से ऐसी बात सुनकर पहले तो भौचक्का रह गया, पर फिर उसे गालियां और धमकियां देने लगा, लेकिन आईना-क्रीज उससे दबी नहीं। तब वे न्याय के लिए क़ाज़ी के पास गये।

क़ाज़ी ने उनकी बात सुनी, लेकिन इस बार उसने दाढ़ी पर कितना ही हाथ न फेरा, कितना ही रेशमी चोग़े को न देखा, उसे बाय को बचाने की कोई तरकीब नहीं सूझ सकी। उसने फ़ैसला यह किया: ग्राहक को लड़की को दो तंगा लकड़ियों के देने चाहिए और अपने हाथ की छुड़ौती के तौर पर पचास अशरफ़ियां देनी चाहिए।

बाय ग़ुस्से के मारे भूत होने लगा और लकड़ियां भी, लंगड़ा मरियल घोड़ा भी व गधा भी वापस करने को तैयार था, पर अब पछताये क्या होना था।

आईना-क्रीज को रकम सौंपते हुए वह बोला

"तूने मुझे बेवकूफ़ बना दिया, छोकरी, पर किसी के आगे इस बात की डींग मत हांकना। क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। मैं हर हालत में तुझसे अक्लमंद हूं। इसका यक़ीन करना चाहती है? तो, आ, शर्त लगा ले। हम दोनों क़ाज़ी के सामने अपने-अपने जीवन का एक-एक अद्‌भुत से अद्‌भुत और अविश्वसनीय से अविश्वसनीय क़िस्सा सुनाते हैं। जिसका क़िस्सा बेहतर माना जायेगा, वही जीतेगा। पर यह भी याद रख अगर प्रतिद्वंद्वियों में से किसी ने भी कहानी पर विश्वास नहीं किया और कहानी सुनानेवाले को झूठा कहा, तो वह फ़ौरन हारा हुआ माना जायेगा। तैयार है क़िस्मत आज़माने को? मैं पांच सौ अशरफ़ियां दांव पर लगाता हूं, और तू अपनी पचास अशरफ़ियां दांव पर लगा सकती है .."

"मैं तैयार हूं, चचा," आईना-क्रीज ने उत्तर दिया, "और अपना सिर भी दांव पर लगाती हूं।"

बाय ने क़ाज़ी को आंख मारी और कहानी सुनाने लगा

"एक बार मुझे अपनी जेब में गेहूं के तीन दाने मिले। मैंने उन्हें खिड़की से बाहर फेंक दिया। कुछ ही दिनों में मेरी खिड़की के सामने इतना घना और ऊंचा गेहूं उग आया कि घुड़सवार और घुड़सवार कभी-कभी तो उसमें कई-कई दिनों तक भटकते रहने लगे। एक बार ऐसा हुआ कि मेरे चालीस बढ़िया बकरे गेहूं में घुस गये और गायब हो गये। मैंने उन्हें कितनी ही आवाज़ें दीं, कितना ही ढूंढा, पर बकरों का नाम-निशान भी नहीं

६-३१

पिता के लौटने की प्रतीक्षा में आईना-कीज़ न जाने कितनी बार देगची के नी
लकड़ियां जला चुकी थी। जब वह भारी कदमो से घर में घुसा, लड़की उसकी आ
में आंसू देखकर डर के मारे कांप उठी। उसने भागकर पिता के सीने पर सिर रख दि
और खोद-खोदकर उसके दुख का कारण पूछने लगी। लकड़हारे ने उसे सारी आपबी
सुना दी और लड़की अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण बातो और स्नेहपूर्ण चुम्बनों से पिता को सान्त्व
दिलाने लगी। किन्तु उसे बूढ़े को शान्त करने मे काफी समय लगा।

सुबह लकड़हारा दुख के कारण सख्त बीमार हो गया। आईना-कीज़ पिता के सी
से लगकर बोली

"प्यारे अब्बाजान, आज आपकी तबीयत ठीक नहीं है, आपको बिस्तर से न
उठना चाहिए। मुझे अकेले बाज़ार हो आने दीजिये। शायद मेरी किस्मत आपसे अच्
निकले और मैं लकडिया अच्छी कीमत पर बेच दूँ।"

वृद्ध बेटी को जाने देने के लिए किसी तरह तैयार नही हो रहा था, पर आईना
कीज़ अपनी बात पर अडी रही और अन्तत उसे मना लिया।

"अच्छा, जाओ, आईना-कीज़, अगर तुम्हे इतनी इच्छा हो रही है," बूढ़े ने कहा
"पर इतना जान लो कि तुम्हे वापस अपने सामने देखे बिना मुझे बिलकुल चैन नही आये
गा।"

आईना-कीज़ ने बूढे गधे पर लकडी का गट्ठर लादा और उसे कमची से हाकती हु
शहर रवाना हो गयी।

आईना-कीज़ ने बाजार मे पहुँचकर भीड में काली दाढी और रेशमी चोग़ेवाले बाय
को शीघ्र ही पहचान लिया। बाय घमण्ड से सिर ऊँचा किये बाज़ार मे घूम रहा था, उसने
जैसे ही लकडिया लिये लडकी को देखा, वह कुटिल मुस्कान के साथ सीधा उसी के पास
आया।

"ऐ लडकी! क्या लकडिया बेच रही है?" बाय ने पूछा।

"बेच रही हूँ," आईना-कीज़ ने उत्तर दिया।

"इस गट्ठर का क्या चाहती है?"

"दो तंगा।"

"क्या लकडिया तू जिस हालत मे है उसी हालत में बेचेगी?"

"बेच दूगी, अगर तुम मुझे पैसे 'उसी हालत मे दोगे, जिसमे वे हैं'।"

"ठीक है, ठीक है," बाय ने दाढ़ी ही दाढ़ी मे व्यग्यपूर्वक मुस्कराते हुए जल्दी से
कहा। "गधे को मेरे पीछे-पीछे हाक से चल।"

बाय के घर के आगे आईना-कीज़ ने पूछा·

"चचा, 'तुम्हारे' गधे को कहा बाधू?"

लड़की की नम्रता से आश्चर्यचकित बाय ने बिना कुछ बोले अहाते के बीचोंबीच गड़े

झूठ बोलती है! ले पाच सौ अशरफिया, ले मेरा चोगा भी और फौरन यहाँ से दफा हो जा, वरना कही मैं तेरी गरदन नही मरोड़ दूँ!"

आईना-कीज ने अशरफिया उठाकर चोगे मे बाध ली और सिर पर पाव रखकर पिता के पास भागी।

लकडहारा लडकी को देर करते देख चिन्तित हो उठा और बाजार की ओर चलने लगा था। उसे शीघ्र ही भागती हुई आईना-कीज नजर आ गयी। वह जैसे ही उसके पास पहुँची, उसने बेटी को सीने से चिपटा लिया और आशका के कारण पूछने लगा

"आईना-कीज, मेरी आखो का तारा! तुम इतनी देर कहाँ लग गयी और तुम्हारे साथ हमारा बुड्ढा गधा क्यो नही है?"

आईना-कीज ने उत्तर दिया

"आपके सिर के ऊपर आसमान सदा साफ रहे, अब्बाजान! मैं शहर से सही-सलामत लौट आयी हूँ और गधे को मैंने काली दाढीवाले आदमी को लकडियो समेत 'जिस हालत मे था उसी मे, बेच दिया।"

"मेरी प्यारी बच्ची," लकडहारा दुखी स्वर मे बोला, "उस निर्मम बाय ने तुम्हे भी धोखा दिया ... अब हम कही के नही रहे, और इसके लिए दोषी मैं ही हूँ।"

"प्यारे अब्बाजान," आईना-कीज बोली, "आप इतनी जल्दी दिल छोटा मत कीजिये। क्योकि मुझे लकडियो की बहुत अच्छी कीमत मिली है।"

और उसने पिता की ओर लिपटा हुआ रेशमी चोगा बढाया।

"यह बहुत खूबसूरत और महगा चोगा है," लकडहारा वैसे ही दुखी स्वर मे बोला, "मेरे जैसे मोटे काम मे यह किस काम आयेगा? और बिना घोडे और बूढे गधे के अब हमे शायद भीख मागकर गुजर करनी पडेगी।"

तब आईना-कीज ने बिना कुछ बोले पिता के आगे चोगा खोल दिया और उसमे से चमचमाती अशरफियाँ जमीन पर बिखर गयी। लकडहारा आश्चर्यचकित होकर बेटी को देखता रह गया। उसे इस बात पर विश्वास नही हो रहा था कि यह सारा धन वह सपने मे नही बल्कि वास्तव मे देख रहा है। तभी लडकी ने उसके गले मे हाथ डाल दिये और उसके साथ शहर मे हुई सारी बाते बता दी।

लकडहारा बेटी की बाते सुनते-सुनते कभी हस पडता तो कभी रो पडता। अन्त मे आईना-कीज ने कहा·

"प्यारे अब्बाजान, जिस जगह धनी कपट जमा करके रखता है, गरीब उसी जगह अक्ल जमा करके रखता है। काली दाढीवाले बाय को अपने किये की उचित सजा मिल गयी और उसकी अशरफियों के सहारे आज से हम अपने सारे गाव के साथ सुख-चैन की जिन्दगी बसर करेगे।"

मिला। पतझड़ आयी, गेहूँ पक गया। मेरे मजदूरों ने फसल काट ली, पर उन्हें बकरों की हड्डियां तक नहीं मिलीं। उसके बाद गेहूँ को गाहा गया, पीसा गया: तब तक बकरों को सब भूल ही चुके थे। मैंने एक बार पत्नी से ताजा रोटी पकाने को कहा और खुद किताब पढ़ने बैठ गया। पत्नी ने रोटी तंदूर में से निकालकर मुझे परोसी। मैंने एक टुकड़ा तोड़ा और चबाने लगा। अचानक मेरे मुंह में कोई बकरे की-सी आवाज में मिमियाया – मैंने मुंह खोला – फौरन एक बकरा मेरे मुँह में से निकलकर कूदा, फिर दूसरा, फिर तीसरा – पूरे चालीस बकरे मेरी किताब पर दौड़ने-कूदने लगे। और कितने मुटिया गये थे मेरे बकरे! हर बकरा चार साल के बछड़े जितना था।"

जब बाय चुप हो गया, काज़ी ने भी अविश्वास में सिर हिलाया, पर आईना-कीज की तो भौं भी नहीं फड़की।

"चचा," उसने कहा, "मुझे तो लगता है कि तुम्हारा किस्सा सोलह आने सच है। तुम जैसे अक्लमंद लोगों के साथ तो इससे भी कहीं मजेदार घटनाएँ घटती हैं। अब मेरा किस्सा सुनो।"

और आईना-कीज ने किस्सा सुनाना शुरू कर दिया

"एक बार मैंने अपने गांव के बीचोंबीच कपास का बीज बोया। पता है, फिर क्या हुआ? अगले दिन उस स्थान पर बादलों तक ऊँचा कपास का पौधा निकल आया और उसकी छाया उत्तर से तीन दिनों के सफर की दूरी तक पड़ने लगी। जब कपास पक गयी, मैंने उसे चुना, साफ किया और बेच दिया। बिक्री से मिली रकम से मैंने चालीस नार* खरीदे, उनपर महंगे कपड़े लाद दिये और मेरा बड़ा भाई कारवां लेकर बुखारा रवाना हो गया। भाई चला गया और तीन साल तक उसकी कोई खबर नहीं मिली। कुछ दिन हुए मुझे उसकी खबर मिली कि रास्ते में किसी काली दाढ़ीवाले आदमी ने उसे लूटकर मार दिया। मुझे हत्यारे को ढूंढ़ पाने की कोई आशा नहीं रही थी, पर भाग्य ने मेरा साथ दिया। [illegible] कि हत्यारे तुम ही हो, क्योंकि तुमने मेरे अभागे भाई का रेशमी चोगा पहन रखा है।"

[illegible] ने अपने ये अन्तिम शब्द कहे, काज़ी अपने स्थान पर उछल पड़ा, और [illegible] बैठ गया। अब वह क्या करे? यदि कहे कि लड़का झूठ बोलता है तो [illegible] के अनुसार [illegible] की [illegible] करनी पड़ेगी। यदि कहे कि वह सच कहता है तो इसका [illegible] हुआ [illegible] अपने मारे गये भाई का हरजाना मांगेगा, इसके [illegible] [illegible]

[illegible] और वह [illegible] पड़ा

[illegible] मुंह के बल [illegible] गिर पड़ा। [illegible] झूठ बोलता है [illegible], तू [illegible]

---

* [illegible]

झूठ बोलती है! ले पाच सौ अशरफिया, ले मेरा चोगा भी और फौरन यहाँ से दफा हो जा, वरना कही मैं तेरी गरदन नही मरोड दूँ!"

आईना-कीज ने अशरफिया उठाकर चोगे मे बाध ली और सिर पर पाव रखकर पिता के पास भागी।

लकड़हारा लडकी को देर करते देख चिन्तित हो उठा और बाज़ार की ओर चलने लगा था। उसे शीघ्र ही भागती हुई आईना-कीज नजर आ गयी। वह जैसे ही उसके पास पहुँची, उसने बेटी को सीने से चिपटा लिया और आशका के कारण पूछने लगा

"आईना-कीज, मेरी आखो का तारा! तुम इतनी देर कहाँ लग गयी और तुम्हारे साथ हमारा बुड्ढा गधा क्यो नही है?"

आईना-कीज ने उत्तर दिया

"आपके सिर के ऊपर आसमान सदा साफ रहे, अब्बाजान! मैं शहर से सही-सलामत लौट आयी हूँ और गधे को मैंने काली दाढीवाले आदमी को लकडियो समेत 'जिस हालत मे था उसी मे, बेच दिया।"

"मेरी प्यारी बच्ची," लकड़हारा दुखी स्वर मे बोला, "उस निर्मम बाय ने तुम्हे भी धोखा दिया.. अब हम कही के नही रहे, और इसके लिए दोषी मैं ही हूँ।"

"प्यारे अब्बाजान," आईना-कीज बोली, "आप इतनी जल्दी दिल छोटा मत कीजिये। क्योकि मुझे लकड़ियो की बहुत अच्छी कीमत मिली है।"

और उसने पिता की ओर लिपटा हुआ रेशमी चोगा बढाया।

"यह बहुत खूबसूरत और महगा चोगा है," लकड़हारा वैसे ही दुखी स्वर मे बोला, "मेरे जैसे मोटे काम मे यह किस काम आयेगा? और बिना घोडे और बूढे गधे के अब हमे शायद भीख मागकर गुजर करनी पडेगी।"

तब आईना-कीज ने बिना कुछ बोले पिता के आगे चोगा खोल दिया और उसमे से चमचमाती अशरफियाँ ज़मीन पर बिखर गयी। लकड़हारा आश्चर्यचकित होकर बेटी को देखता रह गया। उसे इस बात पर विश्वास नही हो रहा था कि यह सारा धन वह सपने मे नहीं बल्कि वास्तव मे देख रहा है। तभी लडकी ने उसके गले मे हाथ डाल दिये और उसके साथ शहर मे हुई सारी बाते बता दी।

लकड़हारा बेटी की बाते सुनते-सुनते कभी हस पडता तो कभी रो पड़ता। अन्त मे आईना-कीज ने कहा:

"प्यारे अब्बाजान, जिस जगह धनी कपट जमा करके रखता है, गरीब उसी जगह अक्ल जमा करके रखता है। काली दाढीवाले बाय को अपने किये की उचित सजा मिल गयी और उसकी अशरफिया के सहारे आज से हम अपने सारे गाव के साथ सुख-चैन की जिन्दगी बसर करेंगे।"

नूरजान के बेटे

बहुत दिन पहले नूरजान नाम का एक भला आदमी रहता था। उसने काफी लम्बी
यु पायी और बुढ़ाया जल्दी नही। जब वह पूरे निनानवे वर्ष का हुआ, उसने अपने
नों बेटों को तम्बू-घर मे बुलाया और कहा

"मेरे बच्चो, मेरे प्यारे बेटो, सबित, गबित और सामित! मेरी ज़िन्दगी का दिन
ारे कष्टों और चिन्ताओ, सारे सुख और दुख के साथ ढल चुका है। अब रात होने जा
ही है, आखो के आगे अंधेरा छाने लगा है। अब आराम करने का समय आ गया है।
नीन्द की गोद मे जाने से पहले तुम सबसे विदा लेना चाहता हूं और पिता के नाते आदेश
देना चाहता हूं।"

"हम आपकी बात ध्यान के साथ और आदरपूर्वक सुन रहे हैं, अब्बाजान!" भाइयों
ने कहा।

नूरजान ने आगे कहा

"मेरी मृत्यु के बाद तुम लोग सारे जानवरों और मेरी संचित सम्पत्ति को प्यार से
ईमानदारी से आपस में बांट लेना और घर-गृहस्थी इस तरह चलाना कि तुम्हारे बारे में
न तो सगे बुरा कह या सोच पायें और न ही पराये। यह बात याद रखो कि मेरे रेवड़ में
एक भी मेमना और घोड़ों के झुण्ड में एक भी बछेड़ा ऐसा नहीं है, जिसे मैंने चालाकी या
धोखाधड़ी से हासिल किया हो। पशुओं के झुण्डों को भेड़ियों से बचाकर रखना और अपनी
आत्मा को—झूठ से। मिल-जुलकर रहना और मुसीबत में एक दूसरे का साथ न छोड़ना।
और यदि ऐसा हो कि विपत्ति का पहाड़ तुम सब पर एक साथ टूट पड़े तो उससे छुटकारा
पाने का यह साधन लो," और नूरजान ने कांपते हाथ से अशर्फियों से ठसाठस भरी थैली
[illegible] "लो, मेरे प्यारे बेटो! इसमें निनानवे अशर्फियां हैं, उतनी
ही, जितने बरस मैंने [illegible] के आकाश तले गुजारे हैं। इस रकम को किसी [illegible]

मे छिपाकर रख देना और अपने घर में 'रोटी का आख़िरी टुकडा ख़त्म न होने तक इसे मत छूना। अशरफ़ियो को केवल बुरी से बुरी घड़ी मे ही आपस मे बाटना। मेरे लिए यह रकम मेहनत और पसीने, अभावों और आसुओ का प्रतीक रही है, पर तुम्हारे लिए यह खुशहाली का आधार बने।"

इतना कहकर सफ़ेद दाढीवाले नूरजान ने अन्तिम सास ली और मृत्यु ने उसकी पलके वैसे ही कसकर बद कर दी, जैसे गृहणिया पतझड़ के वर्षा के दिन तम्बू-घर की चिमनी का मुह बद कर देती है।

बेटो ने वृद्ध पिता को पूर्ण सम्मान के साथ दफना दिया, सारी रस्मे अदा की और अपनी क्षति पर फूट-फूटकर रोये। पिता की कब्र पर सबसे छोटा बेटा सबसे ज्यादा फूट-फूटकर रोया और उसी ने सबसे अधिक शोक मनाया। और नूरजान की अन्त्येष्टि मे सारी स्तेपी से आये लोग कहने लगे:

"ऐसे पिता का यश बढे, जिसने नूरजान के बेटो जैसे बेटो को पाल-पोसकर बडा किया। तीनो बेटे योग्य बाके नौजवान हैं, पर सबसे छोटा सबसे अच्छा है।"

चेहलुम की समाप्ति पर भाइयो ने बिना बहस किये, बिना भला-बुरा कहे विरासत को तीन भागो मे बाट लिया, पर यह बात तय करने मे काफी समय लगा कि अशरफ़ियो की थैली को कहाँ छिपाया जाये। तब वे पहाड़ मे काफी ऊचाई पर चढ गये और चट्टानो के बीच एक गुफा खोजकर, उन्होने उसमे अपना धन रखकर उसका मुह पत्थरो से इस प्रकार बद कर दिया कि चालाक से चालाक चोर को भी उस स्थान मे कुछ हाथ लगने की आशा न रहे।

भाइयो ने अपने प्राणो की सौगध खाकर कहा कि उनमे से कोई भी कभी किसी को रहस्य नही बतायेगा और न ही साझे की सम्पत्ति को हाथ लगायेगा। इसके बाद उन्होने एक दूसरे का प्रगाढ़ आलिगन किया और एक-एक करके अलग-अलग रास्तो से नीचे उतर आये।

नूरजान की कब्र घास और फूलो से ढकती गयी, स्तेपी मे कारवा आते-जाते रहे, समय बीतता रहा। आरम्भ मे तीनो भाई इतने हिल-मिलकर रहे कि दूर-दराज के गावो मे माता-पिता अपने बच्चो को उनका उदाहरण देते थे। बाद मे छोटे भाई ने तरह-तरह के निठल्लो और आवाराओ से दोस्ती गाठ ली, शराबखोरी और ऐयाशी करने लगा, अपने सामर्थ्य से बढ़कर दावते देने लगा, घुडदौड़ो मे पैसा गवाने लगा और रेवड को भाग्य भरोसे छोड घोडे पर खरगोशो का शिकार करने जाने लगा।

भाई उसे झिड़किया देते थे.

"तुम्हे क्या हो गया? तुम पिता की सीख भूल गये। समय रहते सभल जाओ, वरना तुम्हारे तन पर फटा कपडा भी नही बचेगा।"

झिडकिया सुनकर खमित केवल हस पडता था

नूरजान के बेटे

बहुत दिन पहले नूरजान नाम का एक भला आदमी रहता था। उसने काफी लम्बी आयु पायी और बुढ़ापा जल्दी नहीं। जब वह पूरे निन्यानबे वर्ष का हुआ, उसने अपने तीनों बेटों को तम्बू-घर में बुलाया और कहा

"मेरे बच्चो, मेरे प्यारे बेटो, सबित, गबित और समित! मेरी ज़िन्दगी का दिन सारे कष्टों और चिन्ताओं, सारे सुख और दुख के साथ ढल चुका है। अब रात होने जा रही है, आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा है। अब आराम करने का समय आ गया है। नीन्द की गोद में जाने से पहले तुम सबसे विदा लेना चाहता हूं और पिता के नाते आदेश देना चाहता हूं।"

"हम आपकी बात ध्यान के साथ और आदरपूर्वक सुन रहे हैं, अब्बाजान!" भाइयों ने कहा।

नूरजान ने आगे कहा

"मेरी मृत्यु के बाद तुम लोग सारे जानवरों और मेरी संचित सम्पत्ति को प्यार व ईमानदारी से आपस में बांट लेना और घर-गृहस्थी इस तरह चलाना कि तुम्हारे बारे में न तो सगे बुरा कह या सोच पायें और न ही पराये। यह बात याद रखो कि मेरे रेवड़ में एक भी मेमना और घोड़ों के झुण्ड में एक भी बछेड़ा ऐसा नहीं है, जिसे मैंने चालाकी या धोखाधड़ी से हासिल किया हो। पशुओं के झुण्डों को भेड़ियों से बचाकर रखना और अपनी आत्मा को – झूठ से। मिल-जुलकर रहना और मुसीबत में एक दूसरे का साथ न छोड़ना। और यदि ऐसा हो कि विपत्ति का पहाड़ तुम सब पर एक साथ टूट पड़े तो उससे छुटकारा पाने का यह साधन लो," और नूरजान ने कांपते हाथ से अशरफियों से ठसाठस भरी चमड़े की थैली बच्चों को दे दी। "लो, मेरे प्यारे बेटो! इसमें निनानवे अशरफियां हैं, उतनी ही, जितने बरस मैंने स्तेपी के आकाश तले गुज़ारे हैं। इस रकम को किसी विश्वस्त स्थान

नूरजान के बेटे

बहुत दिन पहले नूरजान नाम का एक भला आदमी रहता था। उसने काफी लम्बी आयु पायी और बुढ़ाया जल्दी नही। जब वह पूरे निनानवे वर्ष का हुआ, उसने अपने तीनो बेटो को तम्बू-घर मे बुलाया और कहा.

"मेरे बच्चो, मेरे प्यारे बेटो, सबित, गबित और खमित! मेरी जिन्दगी का दिन सारे कष्टो और चिन्ताओ, सारे सुख और दु:ख के साथ ढल चुका है। अब रात होने जा रही है, आखो के आगे अधेरा छाने लगा है। अब आराम करने का समय आ गया है। नीन्द की गोद में जाने से पहले तुम सबसे विदा लेना चाहता हूँ और पिता के नाते आदेश देना चाहता हूँ।"

"हम आपकी बात ध्यान के साथ और आदरपूर्वक सुन रहे हैं, अब्बाजान!" भाइयो ने कहा।

नूरजान ने आगे कहा

"मेरी मृत्यु के बाद तुम लोग सारे जानवरो और मेरी संचित सम्पत्ति को प्यार व ईमानदारी से आपस मे बाट लेना और घर-गृहस्थी इस तरह चलाना कि तुम्हारे बारे में न तो सगे बुरा कह या सोच पायें और न ही पराये। यह बात याद रखो कि मेरे रेवड़ मे एक भी मेमना और घोड़ो के झुण्ड मे एक भी बछेड़ा ऐसा नही है, जिसे मैंने चालाकी या धोखाधड़ी से हासिल किया हो। पशुओ के झुण्डो को भेड़ियों से बचाकर रखना और अपनी आत्मा को—झूठ से। मिल-जुलकर रहना और मुसीबत में एक दूसरे का साथ न छोड़ना। और यदि ऐसा हो कि विपत्ति का पहाड़ तुम सब पर एक साथ टूट पड़े तो उससे छुटकारा पाने का यह साधन लो," और नूरजान ने कापते हाथ से अशरफियो से ठसाठस भरी चमड़े की थैली बच्चो को दे दी। "लो, मेरे प्यारे बेटो! इसमे निनानवे अशरफिया है, उतनी ही, जितने बरस मैंने स्तेपी के आकाश तले गुजारे है। इस रकम को किसी विश्वस्त स्थान

नूरजान के बेटे

बहुत दिन पहले नूरजान नाम का एक भला आदमी रहता था। उसने काफ़ी लम्बी आयु पायी और बुढ़ाया जल्दी नहीं। जब वह पूरे निनानवे वर्ष का हुआ, उसने अपने तीनों बेटों को तम्बू-घर में बुलाया और कहा

"मेरे बच्चो, मेरे प्यारे बेटो, सबित, ग़बित और ख़मित! मेरी ज़िन्दगी का दिन सारे कष्टों और चिन्ताओं, सारे सुख और दुःख के साथ ढल चुका है। अब रात होने जा रही है, आखों के आगे अंधेरा छाने लगा है। अब आराम करने का समय आ गया है। नीन्द की गोद में जाने से पहले तुम सबसे विदा लेना चाहता हूँ और पिता के नाते आदेश देना चाहता हूँ।"

"हम आपकी बात ध्यान के साथ और आदरपूर्वक सुन रहे हैं, अब्बाजान!" भाइयों ने कहा।

नूरजान ने आगे कहा

"मेरी मृत्यु के बाद तुम लोग सारे जानवरों और मेरी संचित सम्पत्ति को प्यार व ईमानदारी से आपस में बाँट लेना और घर-गृहस्थी इस तरह चलाना कि तुम्हारे बारे में न तो सगे बुरा कह या सोच पायें और न ही पराये। यह बात याद रखो कि मेरे रेवड़ में एक भी मेमना और घोड़ों के झुण्ड में एक भी बछेड़ा ऐसा नहीं है, जिसे मैंने चालाकी या धोखाधड़ी से हासिल किया हो। पशुओं के झुण्डों को भेड़ियों से बचाकर रखना और अपनी आत्मा को—झूठ से। मिल-जुलकर रहना और मुसीबत में एक दूसरे का साथ न छोड़ना। और यदि ऐसा हो कि विपत्ति का पहाड़ तुम सब पर एक साथ टूट पड़े तो उससे छुटकारा पाने का यह साधन लो," और नूरजान ने कांपते हाथ से अशर्फ़ियों से ठसाठस भरी चमड़े की थैली बच्चों को दे दी। "लो, मेरे प्यारे बेटो! इसमें निनानवे अशर्फ़ियाँ हैं, उतनी ही, जितने बरस मैंने स्तेपी के आकाश तले गुज़ारे हैं। इस रक़म को किसी विश्वस्त स्थान

मे छिपाकर रख देना और अपने घर मे रोटी का आखिरी टुकडा खत्म न होने तक इसे मत छूना। अशरफियो को केवल बुरी से बुरी घडी मे ही आपस मे बाटना। मेरे लिए यह रकम मेहनत और पसीने, अभावो और आसुओ का प्रतीक रही है, पर तुम्हारे लिए यह खुशहाली का आधार बने।"

इतना कहकर सफेद दाढीवाले नूरजान ने अन्तिम सास ली और मृत्यु ने उसकी पलके वैसे ही कसकर बद कर दी, जैसे गृहणिया पतझड के वर्षा के दिन तम्बू-घर की चिमनी का मुह बद कर देती है।

बेटो ने वृद्ध पिता को पूर्ण सम्मान के साथ दफना दिया, सारी रस्मे अदा की और अपनी क्षति पर फूट-फूटकर रोये। पिता की क़ब्र पर सबसे छोटा बेटा सबसे ज्यादा फूट-फूटकर रोया और उसी ने सबसे अधिक शोक मनाया। और नूरजान की अन्त्येष्टि मे सारी स्तेपी मे आये लोग कहने लगे

"ऐसे पिता का यश बढे, जिसने नूरजान के बेटो जैसे बेटो को पाल-पोसकर बडा किया। तीनो बेटे योग्य बाके नौजवान है, पर सबसे छोटा सबसे अच्छा है।"

चेहलुम की समाप्ति पर भाइयो ने बिना बहस किये, बिना भला-बुरा कहे विरासत ो तीन भागो मे बाट लिया, पर यह बात तय करने मे काफी समय लगा कि अशरफियो ी थैली को कहाँ छिपाया जाये। तब वे पहाड मे काफी ऊचाई पर चढ गये और चट्टानो बीच एक गुफा खोजकर, उन्होंने उसमे अपना धन रखकर उसका मुह पत्थरो से इस ार बद कर दिया कि चालाक से चालाक चोर को भी उस स्थान मे कुछ हाथ लगने आशा न रहे।

भाइयो ने अपने प्राणो की सौगध खाकर कहा कि उनमे से कोई भी कभी किसी को य नही बतायेगा और न ही साझे की सम्पत्ति को हाथ लगायेगा। इसके बाद उन्होंने दूसरे का प्रगाढ आलिगन किया और एक-एक करके अलग-अलग रास्तो मे नीचे उतर

नूरजान की क़ब्र घास और फूलो से ढकती गयी, स्तेपी मे कारवा आते-जाते रहे, बीतता रहा। आरम्भ मे तीनो भाई इतने हिल-मिलकर रहे कि दूर-दराज के गावो -पिता अपने बच्चो को उनका उदाहरण देते थे। बाद मे छोटे भाई ने तरह-तरह के और आवाराओ से दोस्ती गाठ ली, शराबखोरी और ऐयाशी करने लगा, अपने से बढकर दावते देने लगा, घुडदौडो मे पैसा गवाने लगा और रेवड को भाग्य भरोसे ी पर खरगोशो का शिकार करने जाने लगा।

ई उसे झिडकिया देते थे

हे क्या हो गया? तुम पिता की सीख भूल गये। समय रहते सभल जाओ, वरना पर फटा कपडा भी नही बचेगा।"

किया सुनकर खमित केवल हस पड़ता था:

"कोई नही जानता कि उसका कल क्या होगा।"

"यह सच है," बडे भाई कहते थे, "हमारा कल कैसा भी क्यो न हो, हमे यह कहावत याद रखनी चाहिए जब तक जीना, तब तक सीना।"

हुआ वही, जो होना चाहिए था शमित शीघ्र ही तबाह हो गया। वह अपने बचे-खुचे जानवर बेचकर भाइयो के पास पहुँचा और उन्हे बताया कि उसके रेवड को सोते मे लुटेरे भगा ले गये। सबित और गबित ने दुख से सिर हिलाया, पर पिता के मरणासन्न अवस्था मे कहे शब्द याद कर भाई को डाटा नही, बल्कि उसे अपने झुण्डो मे से पर्याप्त सख्या मे पशु दे दिये जिससे वह अपने पैरो पर खडा हो सके और अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके। लेकिन कुछ ही दिन पश्चात् उस इलाके के सारे गडरियो पर अपूर्व विपदा टूट पडी।

कडाके की गर्मी पड रही थी और सारी घास सूख गयी थी। चारे का अभाव हो गया। और शरद् ऋतु मे मूसलधार वर्षा होने लगी, समय से पहले प्रचण्ड हिम-पात होने लगा सारी जमीन बर्फ से ढक गयी। जानवर भूख और बीमारियो से मरने लगे। सारी स्तेपी मे जानवरो की लाशे ही लाशे नजर आने लगी। ऐसा समय आ चुका था, जब भाइयो के पास दफीने मे छिपे धन को बाटने के अलावा और कोई दूसरा चारा नही रहा था।

उन्होने दुर्ग के पास पहुँचकर भारी-भरकम पत्थर हटाये और उसके भीतर झाका [illegible] वैसी रही थी [illegible] किन्तु उसमे रकम कम हो गयी थी। भाइयो ने अधीरता से [illegible] उसे तीन बार गिना पर कोई अन्तर नही पडा। [illegible] नही थी जैसा कि उनके पिता ने कहा था [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"ठहरो, भाइयो, ठहरो!" खमित चिल्लाया। "अभी कुछ देर पहले तुमने मुझे ताना दिया था कि मैं अब्बा की सीख भूल गया हूँ, पर तुम खुद अब क्या कर रहे हो। मेरी बात पूरी सुन लो, और इस मामले को शान्ति से निबटा लेंगे। क्योंकि हम कितना ही क्यों न झगड़े, राज किसी तरह नहीं खुलनेवाला। शायद कोई जिन गुफा में आकर कुछ अशरफियां उठा ले गया। हम अब हानि के कारणों के बारे में अटकलें नहीं लगायेंगे। धन अभी भी कम नहीं बचा है. अब्बा की इच्छानुसार इसे बराबर-बराबर बांट लेते हैं और इस झगड़े को हमेशा के लिए भुला देते हैं।"

भाइयो ने छुरे झुका लिये और सबित हांफता हुआ बोला

"तुम्हारा धन्यवाद, खमित, कि तुमने हमें व्यर्थ के रक्तपात से बचा लिया। सोने के पहाड़ भी मनुष्य के खून के एक बूंद की बराबरी नहीं कर सकते। लेकिन क्या हम आज से शान्ति से रह सकते हैं, जब हमें एक दूसरे पर विश्वास ही नहीं रहा? नहीं, केवल हमारे स्वर्गीय पिता के मित्र, बुद्धिमान बेलतेकेय ही हमारा न्याय कर सकते हैं और हममें मेल करा सकते हैं। चलो, बेलतेकेय से न्याय कराने चलते हैं।"

तीनों भाई पहाड़ से उतरकर घोड़ों पर सवार हो, स्तेपी में सरपट घोड़े दौड़ाते उस स्थान की ओर चल पड़े, जहाँ बेलतेकेय का खानदान जाड़े में पड़ाव डाले हुआ था।

लम्बी से लम्बी और कठिन से कठिन यात्रा भी कहीं न कहीं समाप्त हो ही जाती है। चालीसवें दिन भाई यशस्वी बेलतेकेय के गांव में पहुँच गये। वृद्ध ने अपने मित्र के पुत्रों का हार्दिक स्वागत किया और उन्हें स्वादिष्टतम खाने और किमिज परोसने को कहा।

वृद्ध बोला:

"सुबह तक आराम करो। कल मैं तुम्हारे झगड़े का निबटारा करूँगा।"

रात बीत गयी। सफेद दाढ़ीवाले बेलतेकेय ने तड़के ही अतिथियों को नाश्ता कराया और फिर बोला:

"तुम्हारे झगड़े के बारे में सोचता-सोचता मैं सारी रात नहीं सोया। मुझे विश्वास नहीं होता कि मेरे मित्र नूरजान के बेटों में से कोई चोर हो सकता है। लेकिन तुम्हें अपनी निर्दोषता सिद्ध करनी होगी और इसका केवल एक ही तरीका है। तुम इसी समय अपने पिता की क़ब्र पर जाओ और उसे खोदकर मृत की दाढ़ी के तीन बाल लाकर दो हर आदमी एक-एक बाल लाये, तुम केवल इसी प्रकार मेरे और एक दूसरे के समक्ष अपने को निर्दोष सिद्ध कर सकते हो।"

भाई सोच में पड़ गये। सर्वप्रथम सबित ने मौन भंग किया

"मैं चोर नहीं हूँ। लेकिन, आदरणीय बेलतेकेय, आपने जो कहा है, उसे करने से तो मैं सारा सन्देह और दोष मेरे सिर मढ़ा जाना बेहतर समझूँगा।"

"मैं भी चोर नहीं हूँ," ग़नित बोला, "लेकिन मैं भी, आदरणीय बेलतेकेय, आपका

कहा करने से इनकार करता हूँ, भले ही आप मेरे अब्बा के दोस्त हैं और हम तीनो से उम्र मे दुगुने बडे हैं।

पर समित बोला

"लगता है, मेरे भाई अपना भेद खुलने से डरते हैं। क्या ये दोनों ही मिलकर मुझसे छिपकर गुफा मे नही गये थे? मैं भी चोर नही हूँ, ज्ञानी बेलतेकेय, इसीलिए मैं इसी क्षण पिता की कब्र पर जाने और आपके आदेश का ठीक-ठीक पालन करने को तैयार हूँ। सत्य की जय हो!" और उसने दरवाजे की ओर कदम बढाया।

तभी सफेद दाढ़ीवाले बेलतेकेय ने हथेलिया ऊपर की ओर किये हाथ आगे बढाये और प्रभावशाली स्वर में बोला

"ठहरो, लडके, सफर पर जाने की जल्दबाजी मत करो! सत्य की जय हो चुकी है। धन तुम्ही ने चुराया है, समित, तुम्ही ने और किसी ने नहीं। जो अपने पिता की क़ब्र को नापाक करने को तैयार है, वह सब कुछ कर सकता है, चोरी भी, अपराध भी, नीचतापूर्ण धोखाधडी भी और शपथभग भी। तुम, अभागे, अपने कलक और अपराध का प्रायश्चित कैसे करोगे?"

समित के चेहरे पर हवाइया उडने लगी और वह जडवत् ज्ञानी के सामने खडा रहा। उसने सिर और आखे नीचे झुकाये अपने पर लगाया आरोप सुना और फिर बिना कुछ कहे, हाथो से चेहरा ढककर बाहर भागा और उछलकर घोडे पर सवार हो सरपट निस्सीम हिम मे आखो से ओझल हो गया।

उस दिन से उसे किसी ने न किसी गाव मे देखा, न किसी चरागाह मे और न ही किसी ने अतीत या वर्तमान की चर्चा छेडते समय बातचीत मे उसका नाम लिये जाते सुना।

बडे भाइयो ने डबडबाती आखो से वृद्ध बेलतेकेय को उसके न्यायपूर्ण निर्णय के लिए धन्यवाद दिया और अब्बा का स्वर्ण लेकर अपने परिवारो मे लौट आये। फिर कभी उनमे आपस मे कोई झगड़ा नही हुआ, वे मिलजुलकर पशुओ के झुण्ड चराते-हाक्ते और उनमे वृद्धि करते रहे, बाल-बच्चो और पोते-पोतियो का पालन-पोषण करते रहे और बहुत दिनो तक जिये, जब तक कि उनके जीवन का भी कष्टो व चिन्ताओ, दुख व सुख से भरा अन्तिम दिन न आया।

अदाक़
(दंत-कथा)

खान अबलाय बहुत भयकर, क्रूर और निर्मम था। लोग उसे "कानी-शेर"–रक्तपिपासु–अकारण ही नहीं कहते थे। उसका पेट हमेशा भरा रहता था, पर आखे सदा भूखी रहती थीं, उसकी पीठ कभी बोझ से दबी नहीं थी, पर अपने स्वभाव से वह पत्थर से भी कठोर था, उसके शरीर ने कभी ठण्ड का स्पर्श नही जाना था, पर उसका हृदय बर्फ से भी ज्यादा ठण्डा था। वह मा से बच्चा छीन लेता था, दूल्हो से दूल्हन, घुड-सवार से घोडा, राहगीर से–लाठी, सिर से पोस्तीन की फटी टोपी भी उतार लेता था और नगे सिरवालो का सिर तक धड से अलग कर देता था। उसने जिन्दा और मरे, पास के और दूर के–सब पर असह्य कर लाद दिये थे. चारे पर भी कर मागता था और चारे के अकाल मे भी, अच्छे मौसम के लिए भी और बुरे के लिए भी, ऊट के पावो के निशानो के लिए भी और चूल्हे से उठते धुए के लिए भी। लोग दुख के मारे कहने लगे "न्याय-प्रिय के राज मे सदा वसन्त रहता है, अत्याचारी के राज मे वसन्त झाकता भी नही।"

अबलाय आये दिन अपनी असंख्य सेना लेकर पडोस के देशो पर आक्रमण किया करता था और उसके रक्तपातपूर्ण हमलो के बाद स्तेपी मे कई दिनो तक घास नहीं उगती थी।

जीतकर लौटने के बाद खान अगले आक्रमण तक अपना समय दावतो और भोग-विलास मे बिताता था, घुड़दौड करवाता था, जगली जानवरो का शिकार करता था, प्रतियोगिताए करवाता था और जैसे उसके व्यभिचार-प्रिय मनोरजन की कोई सीमा नहीं होती थी, वैसे ही बदियो और प्रजा पर निर्मम अत्याचार की भी।

एक बार कलमीकी स्तेपी से कीमती माल लूटकर लौटने पर खान ने कोकचेताऊ की चट्टानी पहाड़ी की तलहटी मे, निर्मल जल की झील बोराबाय के किनारे एक मुरम्य स्थान मे पडाव डाला और अपने सैनिको के साथ शत्रु कबीले पर अपने विजय की खुशियां मनाने लगा। दावत के लिए हजारो मोटी-ताजी बछेडिया और दसियो हजार भेडे काटी गयी, किमिज की नदिया बहने लगी। तारीफो के पुल बाधते-बाधते चाटुकार शायरो की जीभे सूज गयीं, प्रशस्ति-गान करते-करते गायको के गले बैठ गये, दोम्बाओ व कोबिजो

के तार वादकों को चालीस बार बदलने पड़े, पर अबलाय था कि नये-नये मनोरंजनों की माग किये जा रहा था और किसी प्रकार सन्तुष्ट होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

राग-रंग जब अपने ज़ोरों पर था, वह एकाएक अपने रंगबिरंगे कालीन पर से उठा और तम्बू-घर में गया, जहाँ औरों के लिए प्रवेश निषिद्ध था, और वहाँ से बसन्त के सुहावने दिन जैसी सुन्दर कलमीकी युवती का हाथ पकड़े बाहर निकला।

सैनिकों की नज़र कमसिन सुन्दरी पर पड़ते ही उनमें हर्षावेश की एक प्रचण्ड लहर व्याप्त हो गयी, उनमें उस पर से नज़रें हटाने की शक्ति ही नहीं रही।

खान ज़ोर से चिल्लाया

"इस लड़की से कौन शादी करना चाहता है? आवाज़ दो!"

भीड़ उमड़ पड़ी, हज़ारों हाथ खान की ओर बढ़ गये, आवाज़ों की शोर से आस-पास के इलाके गूँज उठे, मानो उन्मत्त ऊँटों का झुण्ड बलबला उठा हो।

"मैं! मैं! कलमीक लड़की को मुझे दे दो, खान!" सिपाही चिल्लाने लगे, वे एक दूसरे से ज़ोर से चिल्लाने की कोशिश कर रहे थे।

केवल सीधे-सादे कपड़े पहने एक बाँका नौजवान, जिसकी दृष्टि निर्मल थी और मुख से ओज टपक रहा था, एक ओर मौन खड़ा उदासी से युवती को देखता रहा। वह सबसे युवा सैनिक और गड़रिये का लड़का अदाक था।

खान ने हाथ उठाया और तत्क्षण शान्ति छा गयी।

"एक दुलहन के लिए हद से ज़्यादा दूल्हे हैं!" उसने ठहाका लगाते हुए कहा और बंदिनी की ओर मुड़ा

"तुम ख़ुद अपना पति चुन लो, हम फ़ौरन तुम्हारी शादी कर देंगे।"

युवती का चेहरा पीला पड़ा था, वह उदास थी, किन्तु उसने खान को निःसंकोच दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया

"मैं चाहती हूँ, हुज़ूरे आलम कि मेरा पति वही हो, जो शूरता और बुद्धिमत्ता में सबसे श्रेष्ठ हो।

इसका पता कैसे लगाया जाये?"

"आप, हुज़ूरे आलम, झील के ऊपर की सबसे ऊँची चोटी पर एक सफ़ेद झण्डा लगाने का हुक्म दीजिए। जो कोई एक ही तीर चलाकर डण्डे सहित झण्डे को गिरा देगा, वही सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर माना जायेगा। इसके बाद मैं एक लोक-कथा सुनाऊँगी, और जो उसका अर्थ बतायेगा, वही सबसे बुद्धिमान माना जायेगा।"

"ठीक है," खान ने कहा।

कल्पनातीत ऊँचाई पर सफ़ेद झण्डा फहराने लगा, पर सभी तीरों के बादल के बादल ऊपर उड़े और वर्षा की बूँदों की तरह नीचे चट्टानों पर गिर गये। एक भी तीर निशाने पर नहीं लगा।

खान आगबबूला हो उठा। उसने युवती की चोटी पकड़कर अपने पैरों में गिरा दिया और उस पर हाथ उठाया:

"लौंडी, तूने मुझसे चालबाज़ी करने और मेरे सिपाहियों को नीचा दिखाने की सोची है! तूने उन्हें एक असम्भव काम करने को कहा है। दुनिया में ऐसा कोई वीर नहीं है जिसका तीर इतनी ऊँचाई तक जा सके।"

उसी समय आकाश में किसी की दर्दभरी चीख सुनाई दी। सबने सिर उठाकर देखा एक जंगली बतख डर के मारे सर्र से पहाड़ी पर से उड़कर निकली और उसका पीछा एक रक्तपिपासु उकाब कर रहा था, जो उसे दबोचने ही वाला था। अचानक भीड़ के ऊपर एक तीर सनसनाता हुआ निकला और पलक झपकते उसने सफेद झण्डे को भी गिरा दिया था और ऊपर उठकर उक़ाब की गरदन में जा धसा। हिंस्र पक्षी खून में लथपथ पहाड़ी की ढलान पर लुढ़कता हुआ झील में जा गिरा, जब कि अनाहत बतख आकाश की नीलिमा में ओझल हो गयी।

"तीर किसने चलाया?" आश्चर्यचकित खान ने पूछा।

कोई उत्तर नहीं मिला।

"तीर किसने चलाया?" उसने दुबारा पूछा।

तब सिपाहियों ने एक साथ उत्तर दिया

"अदाक ने!"

"मेरे पास आओ, अदाक, मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ, बहादुर" खान ने कहा।

बांका नौजवान जब उसके पास पहुँचा, तो उसने उसे यह कहते हुए सीने से लगा लिया·

"मैं तुम्हारी तीरदाज़ी की तारीफ करता हूँ। मुझे आज तक मालूम ही नहीं था कि तुम सचमुच मेरे सबसे अधिक शूरवीर सैनिक हो। इस क़ैदिन को ले जाओ। यह तुम्हारी है!"

"मुक़ाबला अभी ख़त्म नहीं हुआ है, हुज़ूरे आलम!" अदाक ने कहा। "रूपवती को अभी एक दंत-कथा सुनाना और बाकी है।"

खान ने कनखीक युवती पर नज़र डाली और युवती अपनी आस्तीन से तिरस्कार के आंसू पोंछकर उठ खड़ी हुई और दंत-कथा सुनाने लगी

"एक बार एक दुष्ट चील एक कबूतरी के घोंसले पर टूट पड़ी। वह उसके बच्चे के टुकड़े-टुकड़े करनेवाली ही थी कि कबूतरी स्तेपी पर चीखती हुई उड़ गयी और तब उसे एक बाज़ मिला। उसके दुःख के बारे में जानकर बाज़ चील पर टूट पड़ा और उसने उसका सिर फोड़ दिया।

'हम तुम्हारा एहसान कैसे चुकायें, हमारे उद्धारक?' कबूतरी ने पूछा।

बाज़ बोला·

'जब तुम्हारी बच्ची बडी हो जाये, उसके पंख मज़बूत हो जायें, तो वह मेरे पास आये, जिससे मैं उसके सीने के गोश्त का एक टुकड़ा चोंच मारकर निकाल लूँ और अपनी भूख मिटा लूँ।'

बहुत से दिन बीत गये। बाज इस घटना को कभी का भूल चुका था, पर बूढ़ी कबूतरी को वह सदा याद रही और वह अपनी बड़ी होती बेटी को देख-देखकर डर के मारे सूखती रही। इस बीच दिन दूनी रात चौगुनी, खिलती कली-सी उसकी बेटी युवावस्था में पक्षियों में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी हो गयी।

उससे एक बहादुर बाज को प्यार हो गया, और वह भी उस से प्यार करने लगी।

'तुम सदा के लिए मेरी हो जाओ!' बाज उसे मनाने लगा।

किन्तु युवा कबूतरी ने उत्तर दिया

'मैं पहले एक बाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाऊँगी।' और उसने प्रियतम को अपने उद्धार के बारे में बता दिया।

'तुम जाओ,' बहादुर बाज ने रोते हुए कहा। 'प्राण जाये, पर वचन न जाये। मैं तुम्हें नही रोकूँगा।'

दूल्हे और दुल्हन ने फूट-फूटकर रोते हुए एक दूसरे से विदा ली और कबूतरी सारी स्तेपी पार कर बाज को खोजने लगी।

रास्ते में एक चील उस पर टूट पडी। वह उसके चोंच मारने ही जा रही थी, पर अपरिचिता की दुःख गाथा सुन उसके हृदय में दया उमड पडी और उसने उसे छोड़ दिया।

फिर उसे तीन उल्लू मिले। लेकिन उन्होंने भी, उसकी बहादुरी के बारे में सुनकर तथा यह जानने पर कि चील ने उस पर दया की, उसे नही छुआ।

आखिर कबूतरी ने दूर इलाके के छोर पर बाज का गाव ढूढ लिया।

'तुम कौन हो?' बाज ने सुन्दरी से पूछा।

उसने उसे गुज़री घटना की याद दिलायी। बाज बोला:

'मैंने तुमसे सुन्दर और शुद्धहृदय पक्षी कभी नही देखा। पर मैंने तो कभी तुम्हारी मा से वचन लेकर मज़ाक किया था। मैंने तुम्हें बचपन में इसलिए थोड़े ही बचाया था कि तुम्हारी जवानी में तुम्हारा बुरा करूँ। तुम चैन से अपने दूल्हे के पास लौट जाओ।'

कबूतरी अपार हर्ष के साथ अपने प्रिय बाज के पास उड चली, पर वह अपने घोंसले से थोडी-सी दूरी पर थी कि एक निर्मम उक़ाब ने उसे पकड़ लिया और उसकी विनती व आहों को अनसुनी कर परदेस ले गया। और कौन जाने उक़ाब के क्रूर पंजों में फसी उस अभागिन चिड़िया पर क्या बीती "

युवती की कहानी पूरी होने तक किसी के मुह से एक शब्द भी नही निकला, न कोई कवच खनका, न झील में किसी लहर ने छपाका मारा, न घास की कोई पत्ती मरमरायी और खान स्वयं भी काफ़ी देर तक मौन बैठा सोचता रहा।

चुका है   तुमने, अदाक, इसे मुकाबले में जीत लिया है। मैं इसे तुम्हें सौंप रहा हूँ और यह शर्त के अनुसार तुम्हारी बीवी बनेगी।"

सैनिकों ने ईर्ष्या से अदाक की ओर मुड़कर देखा और कलमीकी युवती भी कुछ आशा लगाये उसे अनिमेष देखने लगी। किन्तु बाका नौजवान मुस्कराकर बोला:

"आज तक, खान साहब, आप मेरे शौर्य के बारे में कुछ नहीं जानते थे और आपको अनुमान भी नहीं था कि आपके गरीब से गरीब सिपाही के सिर में भी बुद्धि है, पर मेरे दिल को तो आप अभी तक नहीं समझ पाये हैं। जो चीज मेरी है ही नहीं, उसे मैं ले ही कैसे सकता हूँ! क्या मैं उन घिनौने चोरों से भी गया-गुजरा हूँ, जिन्होंने निरीह लोगों को लूटते हुए भी इस युवा दुलहन पर दया की? लेकिन जब आपने इस बंदिनी को मुझे भेंट कर ही दिया है, तो इसके भाग्य का निर्णय करने का अधिकार मुझे है। रूपवती, तुम मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ और उसे सरपट दौड़ाती अपने प्रियतम के पास जाओ, तुम्हारी यात्रा सफल रहे और तुम जीवन भर सुखी रहो!"

ये शब्द सुनकर सैनिक स्तब्ध रह गये। खान अबलाय भी चुप था। लड़की ने अदाक को सिर नवाकर गद्गद कंठ से कहा

"तुम्हारी कृपालुता के लिए, तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद सज्जनों के सिरमौर, अदाक! मैं तुम्हें सच-सच बता दूँ कि अगर तुमने मुझे अपनी पत्नी बनाना चाहा होता, तो मैं बोराबाय झील में कूद पड़ती और उसके बर्फीले तल में अपने जीवन का अन्त कर देती, पर, बाके नौजवान, तुमने मेरा जीवन और मेरी खुशियां मुझे लौटा दी। तुम मेरे मुँहबोले भाई बनो। तुम मेरे साथ चलो और मेरी शादी में सबसे सम्मानित मेहमान बनो!"

तब सारे सैनिक अदाक के कार्य से अभिभूत होकर उसका आलिंगन करने लगे और उन्होंने अदाक को युवती के साथ जाने की इजाजत देने के लिए खान को मना लिया।

अदाक और कलमीकी सुन्दरी तेज घोड़ों पर सवार हो गये और उनकी लगाम ढीली कर स्तेपी में हवा से बातें करते सफर पर निकल पड़े।

चालीस गप्पें

बहुत दिन पहले स्तेपी मे एक लालची और क्रूर खान राज करता था। वह सैनिक अभियानो, दावतो, शिकार और कोलाहलपूर्ण खेलो से ऊब चुका था। तब उसने स्तेपी के कोने-कोने मे अश्रुत-पूर्व मुनादी करवाने के लिए ढिढोरची भेज दिये

"जो कोई खान को बिना कोई सच्ची बात कहे, बिना अटके चालीस गप्पे सुनायेगा, उसे अशरफियो से भरी बोरी इनाम मे दी जायेगी! लेकिन जो भी कहानी सुनाते समय अटका या उसमे एक भी सच्ची बात कही, उसकी खैर नही! खान उसे काल-कोठरी मे बद करवाके भूखो मार देगा!"

कहते है, सोने की खातिर तो साधु भी सच्चे रास्ते से डिग जाता है। शुरू मे खान के डेरे की तरफ आकिनो, किस्साख्वाओ और हाजिरजवाब लोगो की भीड उमड पडी।

किन्तु एक भी गपोडिया खान को खुश नही कर सका और उन सबको एक-सी कष्ट-दायक सजा भुगतनी पडी· हजारो अभागे लोग काल-कोठरियो मे डाल दिये गये। अन्त मे गप्पे सुनाकर खान का मनोरजन करने के इच्छुक लोगो का खात्मा हो गया।

खान अपने शयन-कक्ष मे सुसज्जित पलग पर गहरी उदासी मे डूबा लेटा हुआ था। उसे घेरे खडे वज़ीर डर के मारे हिल-डुल भी नही रहे थे। सोने के थालो मे उसके लिए अत्यन्त स्वादिष्ट व्यजन और पेय लानेवाले नौकर दोहरे झुककर उसके आगे खडे हुए थे।

खान हाथ के इशारे से खाने हटवा देता और समय-समय पर अगल-बगल इस तरह देखता कि मारे डर के सबकी ऊपर की सास ऊपर और नीचे की – नीचे रह जाती।

ठीक उसी समय खान के सजे-धजे तम्बू-घर के सामने भिखारियो का झोला लिये एक हसमुख, चचोडी हुई हड्डी जैसा दुबला-पतला, फटेहाल, नगे पैर लडका आ खडा हुआ।

"जहाँ घूमने की मनाही है, वहाँ क्यो मटरगश्ती कर रहा है?" पहरेदार उस पर बरस पडे। "क्या चाहता है?"

"मैं खान को चालीस गप्पे सुनाने आया हूँ," छोकरे ने तपाक से जवाब दिया।

पहरेदार को लडके पर दया आ गयी।

"भाग जा, बेवकूफ! क्यो मुसीबत मोल लेता है? काल-कोठरिया तेरे बिना भी ख
खच भरी पडी हैं। तू जिन्दगी से ऊब गया है क्या?"

"घुल-घुलकर मरने से तो एक बार मे जान गवा देना बेहतर हैं," फटीचर ने पह
दारो को आख मारकर कहा।

"क्या तुझे खान से बिलकुल भी डर नहीं लगता?" सैनिको ने आश्चर्य व्यक्त किया

"हिम्मते मरदा, मददे खुदा!" लड़के ने मुस्कराकर कहा।

और उसे खान के तम्बू-घर मे पहुँचा दिया गया।

खान ने लडके की फटी टोपी और मैले, बिवाइयाँ फटे पैरो पर नजर डाली औ
उसके होठ गुस्से के मारे फडक उठे।

"तूने चिथडो मे खान की नजरो के सामने आने की हिम्मत कैसे की? मैं तुझे
पिस्सू की तरह नाखून से कुचल दूँगा!"

"आप नाराज न होइये, हुजूरे आलम," नन्हे भिखारी ने खान से नजरे बराबर करके
कहा, "जल्दबाजी का नतीजा अच्छा नही निकलता। इससे तो मेरी गप्पे सुनकर आप
मुझे अशरफियो से भरी बोरी दिलवाने का हुक्म देगे तो कहीं ज्यादा बेहतर होगा।"

खान गुस्से मे तकिये का सहारा लेकर अधलेटा हो गया और भयानक स्वर मे फुफकारा

"अगर ऐसा ही है, तो सुनाओ। मैं सुन रहा हूँ।"

और लडके ने सुनाना आरम्भ कर दिया.

"मेरे जन्म से कोई सात बरस पहले की बात है कि मैं अपने बारहवे पोते का घोड़ो
का झुण्ड चरा रहा था।

एक बार काफी रात गये मैं घोड़ो को पोखर पर ले गया। सूरज पूरी तेजी से चमक
रहा था और इतनी गर्मी थी कि चिड़ियो के पखो से धुआ उठ रहा था और दुमो मे
लपटे। इसलिए मुझे झील का पानी तक जमा देखकर बिलकुल भी अचरज नही हुआ।

मैं लगा कुल्हाडी से बर्फ काटने। पर मेरी कुल्हाड़ी पहली चोट मारते ही टुकडे-
टुकडे हो गयी, पर बर्फ बाल जितनी भी नही फटी। मैं सोचने लगा: अब क्या करूँ? तभी
मेरे दिमाग मे विचार कौधा।

मैंने कधो पर से अपना सिर उतारा, गरदन कसकर पकड ली और लगा माथे से
बर्फ पर चोटे मारने। थोडी देर मे आखिर मैंने बर्फ मे गड्ढा खोद ही लिया। गड्ढा इतना
बडा था कि उसमे कानी उगली बडे आराम से आ सकती थी। उसी गड्ढे मे से मेरे घोडो
के सारे झुण्ड ने, जिसमे एक लाख घोडे थे, भरपेट पानी पिया।

घोडो ने पानी पिया और घास चरते हुए इधर-उधर घूमने लगे। तब मैं झुण्ड की
ओर पीठ करके बैठकर घोडो की गिनती करने लगा, सब सही-सलामत है या नही। मैंने
देखा—एक बछेडा कम है। आखिर वह गया कहाँ?

मे फंदा लगा डण्डा रेत मे गाड़कर उस पर चढ़ गया और अगल-बगल देखने लगा कि वही बछेड़ा तो नज़र नही आ रहा है।

नहीं, कुछ नजर नही आया।

'फिर मैंने डण्डे के ऊपरी सिरे मे छुरा गाड दिया व कुछ और ऊपर चढ़ गया। फिर भी कुछ नजर नहीं आया।

तभी मुझे याद आया कि मुझे बचपन से ही साक्रिच* के बजाय सुइया चबाने की आदत है। मैंने मुह मे से सूई निकालकर छुरे की मूठ मे गाड दी—अब जो हो, सो हो—और उसमे भी ऊपर चढ गया।

न जाने पूरे दिन रेंगता चढ़ता रहा या पूरा महीना, पर जैसे ही मैंने सूई के नाके मे से झांककर देखा, खोया हुआ बछेड़ा मुझे फौरन नज़र आ गया उफनते समुद्र के बीचो-बीच सूई जैसी नुकीली चट्टान निकली हुई थी, बछेड़ा उस चट्टान पर एक सुम पर खड़ा था और चट्टान के चारो ओर, लहरो पर उसका बछेड़ा कूद-फांद रहा था।

मैंने ज्यादा देर सोच-विचार नही किया, डण्डे पर सवार हो गया और छुरे से चप्पू की तरह खेता समुद्र पर तैरने लगा। खेता रहा, खेता रहा, पर फिर भी वही का वही रह गया। तब मैं छुरे की धार पर जा बैठा और डण्डे से समुद्र तल पर धक्का मारकर पलक झपकते चट्टान के पास जा पहुँचा। पर डण्डा तल मे डूब गया, मानो वह लोहे का बना हो।

बिना फंदे के बछेड़े को अब कैसे पकड़ू? मैंने रेत से रस्सी बटी, घोड़े की गरदन मे डाली और उसकी ओर पीठ किये उछलकर काठी पर सवार हो गया, फिर नन्हे बछेड़े को आगे बिठाकर समुद्र पर सरपट दौड़ाता वापस लौटने लगा।

मैंने आधा रास्ता ही पार किया था कि घोड़ा एक लहर से ठोकर खाकर गिर पड़ा और डूबने लगा।

मैं सोचने लगा कि 'करम के बलिया, पकाई खीर हो गया' दलियावाली कहावत सच होने जा रही है। पर मैंने हिम्मत नही छोडी, जल्दी मे सरककर नन्हे बछेड़े पर बैठ गया और बछेड़े को कंधे मे पकड़कर सरपट आगे चल दिया।

मैंने किनारे पर बछेड़े को पेड से बांधा ही था कि अचानक एक खरगोश डाल पर से मेरे पैरो के आगे कूदा। मैं उसके पीछे भागा। खरगोश बाये भागा, मैं—दाये, खरगोश तेज भागा—मैं उससे भी तेज।

भागते-भागते मैंने खरगोश पर तीर चलाया। तीर की नोक सीधी खरगोश की नाक पर लगी और तीर उछलकर वापस मेरे हाथो मे आ गया।

---

* साक्रिच: मोम और चटनी को दूध मे उबालकर तैयार किया गया एक प्रकार का पदार्थ जिसे मध्य एशियावासी प्राय. दांतो को स्वच्छ व मजबूत रखने के लिए चबाते है।

तब मैंने [illegible] को [illegible] किया और [illegible]। [illegible]

को [illegible] और [illegible] में [illegible] गया।

मैंने खरगोश को मार डाला। उसकी चर्बी सुखाई और अलाव जलाने के लिए [illegible] में लकड़ियां इकट्ठी करने लगा।

पर इसी बीच – यह क्या हुआ? – मेरा घोड़ा हिनहिनाया, [illegible] करने लगा और हवा में ऊपर उड़ने लगा।

मैं पहले तो आश्चर्यचकित रह गया, पर मेरी समझ में फौरन आ गया कि मैंने घोड़े को पेड़ से नहीं हंस की गरदन से बांध दिया था।

मैंने [illegible] जमीन पर [illegible] और फिर पर पैर रखकर बेचारे घोड़े का [illegible] भागा। पर [illegible] ऊपर उड़कर बादलों तक जा पहुंचीं – मैं उन्हें देखता रह गया। मालूम पड़ा मैंने [illegible] में [illegible] और [illegible] लिये थे।

हालांकि मेरे पास [illegible] नहीं रहा था, फिर भी मैंने आखिर अलाव सुलगा ही लिया। फिर मैंने [illegible] के नये देग में खरगोश की चर्बी डालकर आग पर रख दिया। देखा – मेरा नया देग चू रहा है, उसकी दीवारों में से चर्बी की मोटी-मोटी धारें बह रही हैं, थोड़ी देर में शायद उसके पेट में कुछ नहीं बचेगा। मुझे चर्बी का छेददार देग से उलटना पड़ा। और बेशक उस देग में से एक भी बूंद चर्बी नहीं टपकी। हां, याद आया, पिछली चर्बी से मैंने इस मशक भर ली थी।

फिर मुझे चर्बी अपने जूता पर मलने की सूझी। चर्बी केवल एक जूते के लिए ही काफी रही, दूसरे के लिए बिलकुल नहीं बची।

रात को सोने के लिए मैं देग के नीचे दुबक गया और ऊंघने लगा। कच्ची नींद में अचानक सुनाई दिया – शोर, हो-हल्ला मचा हुआ है, मार-पिटाई हो रही है! मैं डर के मारे झट से उठ खड़ा हुआ। – ये तो मेरे जूते आपस में लड़ रहे थे। बिना चर्बी मला जूता अपने भाई को दबोचे बड़ी बेरहमी से उसे पीटे जा रहा था :

"ले, लालची, यह ले! अब तुझे मालूम पड़ेगा कि अपना और पराया हड़पना क्या होता है! क्या मेरे लिए तू जरा-सी भी चरबी नहीं छोड़ सकता था?"

मैं लड़ाकों को अलग करने लगा।

"अरे, बस भी करो, झगड़ालुओ! जामे से बाहर हुए जा रहे हो! किसी ने ठीक ही कहा है : मिले दो अक्लमंद, होगा जरूर फायदा, मिले दो बेवकूफ – हो गये दोनों के दोनों बाजार बंद।

उन्हें बड़ी मुश्किल से चुप करा पाया। उन दोनों को मैंने पास में ही रख लिया – एक जूता दायीं बगल में, दूसरा – बायीं बगल में दबा लिया – और फिर सो गया।

सुबह नींद खुलने पर देखा : बिना चरबी मला जूता ग़ायब है, रूठकर चुपचाप भाग गया। मैंने बचा हुआ जूता दोनों पैरों में पहना और भगोड़े का पीछा करने लगा।

दिन भर भागता रहा, पूरे साल भागता रहा—पर दूसरा जूता किसी तरह हाथ नही आया। भागता-भागता किसी गाव मे पहुँच गया। वहा तो भीड ऐसी लगी हुई थी कि अत ही नजर नही आ रहा था। लोगो का ताता बधा हुआ था कोई साड पर आ रहा था, कोई गुबरैले पर, कोई काटा-चूहे पर, कोई साप पर, कोई पहाडी बकरे पर, तो कोई सारस पर।

दावत शुरू हुई।

मैने पूछा :

"दावत किस खुशी मे हो रही है?"

"यह तो," जवाब मिला, "चेहलुम का खाना है, न कि दावत।"

"किस का चेहलुम है?"

"बाय के बेटे का। वह कोई सात बरस पहले चरागाह मे रेवड हाककर ले गया था और तब से लापता है।"

नौकर मेहमानो को गोश्त की रकाबिया परोसने लगे, तभी उनके बीच मुझे नजर आ गया—पूछिये: कौन? —अपना भागा हुआ जूता।

मैं खुशी के मारे चिल्ला उठा, उसने मेरी आवाज़ सुन मुड़कर देखा और स्तब्ध रह गया, रकाबी गिरते-गिरते बची।

शायद इस डर से कि कही उसे भागने के लिए मार न पड जाये, वह मुझे रकाबी के बाद रकाबी परोसने लगा और बराबर कहता रहा

"तुमने मेरे लिए जरा-सी भी खरगोश की चरबी नही छोडी, जब कि तुम्हे कुछ भी देते मेरा दिल नही दुखता है!"

उसने मेरे आगे तम्बू-घर जितना ऊँचा खाने का ढेर लगा दिया।

मैं मन ही मन खुश होने लगा अब मैं अपने हिस्से का भी खा लूँगा और अपने सारे रिश्तेदारो के हिस्से का भी! मैने दोनो हाथो मे गोश्त उठाया और मुह पूरा खोलने की तैयारी कर ही रहा था कि भौचक्का रह गया मेरे मुह की तो बात ही छोडिये, सिर तक नही था,—मैं उसे झील पर, बर्फ मे खोदे गड्ढे के पास छोड आया था "

मैंने जूतो से विनती की

"मेरे लाड़लो, जरा लपककर मेरा सिर ला दो, इनकार मत करो मैं तुम्हारा बदला जरूर चुकाऊँगा।"

जूते मेरा काम करने लपके, और मैं बैठा इन्तजार करता रहा। जब तक मैं इन्तज़ार करता रहा, मेहमानो ने अपने मुहो को जरा देर भी आराम नही करने दिया सारा गोश्त चटकर गये और ऊपर से रकाबिया भी खा गये। मेरे लिए एक टुकडा भी नही बचा। करमहीन खेती करे, बैल मरे या सूखा परै।

मैंने सिर कधो पर जमाया ही था कि बादल घिर आये और आकाश से खरबूजे गिरने

लगे। मैंने एक खरबूजा काटना चाहा, चाकू उसमे घुमेड़ा, पर शायद ताकत जरूरत
ज्यादा लगा दी चाकू खरबूजे के अदर गुम हो गया।

'चाकू ढूढकर रहूँगा, चाहे उसकी खातिर मुझे अपने पेट मे ही क्यो न घुसना पड़े
मैंने कसम खाया।

मैंने कमरबद खोला, उसका एक छोर पकड़ा और सिर के बल खरबूजे मे गोता ल
दिया।

मैंने अथक खोज मे कई दिन बिताये, जूते घिस डाले, पोस्तीन का कोट तार-त
हो गया, पर चाकू मिला ही नही।

अचानक मुझे एक आदमी मिला।

"क्या कर रहे हो?" उसने पूछा।

"चाकू ढूढ रहा हूँ।"

"बेवकूफ हो और बेवकूफ ही रहोगे!" अजनबी चिल्लाया। "दिमाग मे क्या भू
भरा है, जो चाकू ढूढ रहे हो! मैं तो सात साल से यहाँ अपने बकरो का रेवड़ ढूढ रह
हूँ पर अभी तक नही ढूढ पाया हूँ "

मैं फौरन समझ गया कि मेरे सामने वही बाय का बेटा है, जिसके चेहलुम का खान
मैंने हाल ही मे खाया था।

मैंने उससे कहा

"गालिया बकने और बेकार का झगडा मोल लेने से तो बेहतर होगा कि तुम बकरो
पर थूक दो और जल्दी से अपने अभागे मा-बाप के पास लौट जाओ।"

"यानी तुम्हे मेरे बकरो से मेरे मा-बाप ज्यादा प्यारे हैं!" बाय का बेटा गुर्राया
और उसने झट से मेरी दाढी पाचो उगलियों मे दबोच ली।

मुझसे सहा न जा सका। मैं भी उससे उलझ गया, और लडाई छिड़ गयी।

हमारे झगडने मे खरबूजा हिलने लगा और सारी दुनिया मे लुढकने लगा। लुढकता,
लुढकता ऊँचे पहाड की चोटी पर जा चढ़ा और यही उसके दो टुकडे हो गये।

पहाड से बाय का बेटा कहाँ गिरा, मैंने नही देखा, पर मैं सीधा झील के किनारे
पर जा गिरा, जहाँ अपना घोडो का झुण्ड छोड़ गया था। गिरा इतने जोर से कि जमीन
धस गयी! पर मैं सही-सलामत था। न जाने क्यो अचानक मुझे प्यास लगी। शायद उसी
तर गोश्त के कारण, जिसे चेहलुम मे चख भी नही पाया था।

मैंने बर्फ मे खोदे गड्ढे मे सिर डाला और लगा पानी पीने। मैंने सारी झील पी डाली,
पर प्यास बुझी ही नही। मैंने उठने की कोशिश की, पर किसी तरह उठ ही नही पाया।
मुझे फौरन पता नही चला कि मामला क्या है, पर मालूम पडा कि बात बहुत मामूली है
जब तक मैं पानी सुड़कता रहा, मेरी मूछो के ईर्द-गिर्द साठ जगली बतखें और सफर कबूतर
बसकर चिपक गए थे।

"इतनी जगली चिड़ियो का," मैने सोचा, "मैं क्या करूँगा?"

मैंने सारी चिड़िया काख मे दबा ली और बाद मे उनके बदले मे एक सारस ले लिया। और आपको इतना जरूर मालूम होना चाहिए कि हालाकि वह सारस ऊट से भी काफी ऊँचा था, पर कुए का पानी बिना गरदन भुकाये पीता था "

"तब तो ज़रूर वह कुआ बहुत ही उथला होगा!" खान लडके को कम-से-कम कहानी के अन्त मे गड़बड़ाने के इरादे से अचानक चिल्ला उठा।

"हो सकता है, कुआ ज्यादा गहरा नही था, लेकिन उसमे भोर मे फेका हुआ पत्थर केवल रात होते-होते ही पानी तक पहुँच पाता था," लडके ने बिना पलक झपकाये उत्तर दिया।

"इसका मतलब है, तब दिन छोटे होते थे!" खान अपनी बात पर अड गया।

"हाँ, शायद दिन जरूर छोटे होते थे, अगर ऐसे एक दिन मे भेडो के रेवड पूरी स्तेपी एक छोर से दूसरे छोर तक पार कर लेते थे," तुरन्त उत्तर मिला।

खान का चेहरा फक हो गया और वह होठ चबाने लगा। और फटीचर ने कहानी का अन्त इस प्रकार किया·

"हुज़ूरे आलम, मैंने आपकी इच्छानुसार चालीस गप्पे सुना दी है। अब ईमानदारी से मेरा हिसाब चुकता कर दीजिये! और अगर आपको अपने खज़ाने की कोई परवाह नही है, तो मैं चालीस बार और चालीस, चालीस गप्पे सुनाने को तैयार हूँ। क्योकि बात मे से बात वैसे ही निकलती है, जैसे नेकी से नेकी!"

खीज के मारे मुह बनाते हुए खान ने वज़ीरो को सकेत किया और वे बोरी मे अशरफिया भरने लगे। और ज्यो-ज्यो बोरी फूलती गयी, त्यो-त्यो खान पर लालच हावी होता गया।

बोरी लगभग पूरी भरी ही थी कि अचानक गरीब लडके ने अपना गदा हाथ उठाया और फिर बोल उठा।

"खान," उसने कहा, "मैं सोना लेने से इनकार करता हूँ! उसे आपके पास ही रहने दीजिये। इसके बदले मे मेरी केवल एक इच्छा पूरी कर दीजिये आपकी काल-कोठरियो मे जो कैदी सड रहे है, बस उन्हे आज़ाद कर दीजिये।"

फटीचर की बात सुनकर खान मानो पागल हो उठा। वह चीख मारकर बोरी की तरफ ऐसे लपका, जैसे गिद्ध मरे जानवर पर, और बोरी को बाहो मे कसकर उससे चिमट-कर बैठ गया।

वज़ीर फौरन सारी बात समझ गये खान अपना फैसला कर चुका था। और वे चाबिया खनखनाते जल्दी से जेल के ताले खोलने दौड पडे।

सारी काल-कोठरिया शीघ्र ही खाली हो गयीं। गप्पे सुनानेवाला भिखारी बालक भी कही गायब हो गया।

पर खान को किसी भी तरह अशरफियो की बोरी से अलग न किया जा सका। वह तीन दिन बाद मर गया।

दो ठग

बहुत दिन हुए, पुच्छहीन युग* में दो हमोड ठग थे: एक सिर-दरिया की स्तेपी की खाक छाना करता था, दूसरा–सरी-अर्का की स्तेपी की। उनकी चालबाजियों की धूम दूर-दूर तक फैली हुई थी, और वे अनेक बार एक दूसरे के बारे में क़िस्से सुन चुके थे।

अन्तत उन दोनो ने मन-ही-मन कही आमने-सामने मिलकर अपनी-अपनी चालाकी और धूर्त्तता का मुकाबला करने की ठानी।

वे अपने-अपने जूतो पर चरबी चुपडकर और चोगो के पल्ले उडसकर सफर पर निकल पडे। वे चलते रहे, चलते रहे और एक दिन कारवा के रास्ते मे एक ताजा बने मज़ार के पास उनकी भेट हो गयी। उन्होने पुराने मित्रो की तरह एक दूसरे का अभिवादन किया, गले मिले और बातचीत करने लगे।

"कोई खबर है?" सिर-दरियावाले ठग ने पूछा।

"खबर है," सरी-अर्कावाले ठग ने उत्तर दिया। "यह नया मजार देख रहे हो? इसमे हाल ही मे एक नामी बाय को दफनाया गया है। वह बहुत से ढोर व ढेर सारा सोना छोड गया है और सारा माल-असबाब उसके कूढ-मग्ज बेटे को मिला है।"

सिर-दरियावाला ठग बोला

"बाय अपना माल कभी किसी को नही देगा, पर गरीब को भी हाथ पर हाथ धरे नही बैठा रहना चाहिए चलो, बाय के बेटे को झांसा देकर सौ अशरफियाँ निकलवा लेते है, फिर उन्हे आधा-आधा बाट लेगे।"

सरी-अर्कावाले ठग ने उत्तर दिया

"तुम्हारे मुह मे घी-शक्कर। मुझे मजूर है। पर यह किया कैसे जाये?"

---

* पुच्छहीन युग – परी-कथाओ का कल्पित युग, जब पशुओ की पूछ अभी नहीं निकली थी।

चोर-चोर मौसेरे भाई ठहरे। उन्हें सौदा पटाते कभी देर लगती है? उन्होंने साथ बैठकर खाया, पिया, तम्बाकू के दम लगाये और हर दृष्टिकोण से सोच-समझकर फैसला कर लिया।

सिर-दरियावाला ठग मज़ार के अन्दर घुसकर छिप गया। सरी अर्कवाला ठग सिर पर हरा अमामा लपेटकर घुमक्कड़ दरवेश का रूप रखकर मरहूम बाय के गाँव में पहुँच गया।

"मेरे बच्चे," ठग ने बाय के बेटे से कहा, "एक बार तुम्हारे बाप ने मुझसे सौ अशरफ़ियाँ उधार ली थीं और कहा था, 'मैं माँगते ही तुम्हें पूरी रकम लौटा दूँगा। जिन्दा रहा तो खुद लौटा दूँगा, मर गया – तो बेटा चुका देगा।' मुझे अपना पुराना कर्ज़ वापस मिलने की तारीख आ गयी है। तुम अपने अब्बा की इच्छा पूरी करो।"

बाय का बेटा यह खबर सुनकर मुँह बाये खड़ा रह गया। क्योंकि लेवाल के लिए तो छः भी कम होते हैं, पर देवाल के लिए पाँच भी ज्यादा होते हैं। उसने सोचकर कहा:

"तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि तुम धोखा नहीं दे रहे हो?"

ठग ने उलाहना भरे ढंग से गरदन हिलाई और ठण्डी साँस लेकर जवाब दिया:

"अगर तुम्हें मेरे हरे अमामे* पर विश्वास नहीं होता, तो अपने बाप की कब्र पर चलो। शायद वही तुम्हें सच्ची बात बता दे।"

बुरी तरह घबराया हुआ युवा बाय मज़ार के पास पहुँचा और उसने रो-रो के सार काँपते हुए पूछा:

"अब्बा, क्या हरे अमामेवाला दरवेश सच कहता है कि आप उसके सौ अशरफ़ियों के कर्ज़दार हैं?"

तभी मज़ार में छिपा सिर-दरियावाला ठग उसी बनावटी आवाज़ में जवाब देने लगा:

"वह सच कहता है, बिलकुल सच कहता है, मेरे बेटे। इस कर्ज़ के कारण मैं यहाँ घोर कष्ट भुगत रहा हूँ। दरवेश का कर्ज़ फौरन चुका दो, ताकि मेरा मुर्दा हड्डियों को चैन मिले।"

ठण्डे पसीने से तर-बतर बाय का बेटा भागा-भागा घर पहुँचा और उसने बिना कुछ किये ठग को गिनकर सौ अशरफ़ियाँ दे दीं।

सरी-अर्कवाले ठग ने सोना बगल में दबा लिया और सोचने लगा:

'अब मेरा यार जब तक ऊब न जाये, मज़ार में बैठा रहे। मैं तो अकेला ही रक़म से रास्ता ढूँढ लूँगा।'

कई दिन और सप्ताह बीत गये। वह अपने नम्बर पर से लौट आया। उसने सोना चूल्हे के नीचे गाड़ दिया और अपनी पत्नी को सख्त हिदायत दे दी:

---

* हरा अमामा – हाजी प्रायः हरा अमामा बाँधते थे।

"अगर कोई ऐसा-ऐसा आदमी हमारे यहाँ आ धमके, तो उससे कह देना कि मे
अचानक मौत हो गयी और मुझे रिवाज के अनुसार दफना दिया गया है। उसे जल्दी
जल्दी चलता कर देना, पर जब तक वह न खिसके, रोज़ शाम को खड्ड में मेरे लिए खा
लाती रहना। मैं तब तक वहाँ छिपा रहूँगा।"

मिर-दरियावाला ठग अंधेरे मज़ार में बैठा अपने साथी की प्रतीक्षा करता रहा औ
अन्त में समझ गया कि वह उसे चकमा दे गया। वह किसी तरह बाहर निकला और सरी
अर्का की ओर मुंह करके बोला:

"स्तेपी भले ही विशाल सही, पर आदमी भी कम चालाक नहीं होता! तुम मुझ
छिपे नहीं रह सकोगे दोस्त, अगर यह सच है कि चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता
जरा ठहरो, बन्धु, जैसा तुमने बोया है, वैसा ही काटोगे!"

यह कहकर उसने कमरबंद कसा और चालबाज का सुराग लगाने निकल पड़ा। व
चरागाह के बाद चरागाह पार करता महीने भर आगे चलता गया। आखिर उसे भगोड़े
का तम्बू-घर मिल ही गया और उसने दरवाज़ा खोलकर देहलीज़ पर कदम रखा।

अपरिचित को देखते ही सरी-अर्कावाले ठग की पत्नी रोने-बिलखने लगी:

"हाय, मेरे अभागे पति मर गये, उन्हें दफनाये आज तीन दिन हो गये! आप कोई
भी क्यों न हों, परदेसी, मुझे मेरे ग़म के साथ अकेला छोड़ दीजिये!.."

"घाट-घाट का पानी पिये के आगे तुम बेकार ढोंग रच रही हो, मालकिन!" मिर-
दरियावाले ठग ने मन में सोचा, पर प्रकट में आंसू बहाता हुआ बोला:

"खातून, आपने यह खबर सुनाकर मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। मेरा दोस्त
मर गया, हाय! हाय! कैसी मुसीबत टूट पड़ी! मैं मरहूम की याद में दो आंसू बहाये
बिना कैसे जा सकता हूँ! खुदा की कसम, मैं यहाँ चालीस बरस गुज़ार दूँगा, जब तक कि
रो-रोकर मेरी आंखें न फूट जायें।" और वह रोना जारी रखते हुए आराम से सम्मानित
स्थान पर बैठ गया।

दिन पर दिन बीतते रहे, मिर-दरियावाला ठग दोस्त के तम्बू-घर में रहकर उसी
की भेड़ का गोश्त खाकर और किमिज़ पीकर उसे याद करता रहा। उसकी नज़रों से यह
भी छिपा न रह सका कि गृहणी हर रोज़ शाम को भरी पोटली खाने की लेकर कहीं गायब
हो जाती है। एक बार ठग ने दबे पांव उसका पीछा किया और खड्ड के रास्ते का पता लगा
लिया।

कुछ समय बाद पड़ोसियों ने गृहणी को अपने यहाँ बुलाया। वह ठाठदार कपड़े पहनकर
दिन भर के लिए चली गयी और केवल रात को घर लौटी। मिर-दरियावाले
ठग ने समय व्यर्थ नहीं गंवाया। उसने घरवाली के कपड़े पहने, तरह-तरह
के खाने की पोटली बांधी और अंधेरा होने पर खड्ड में उतरकर सरी-अर्कावाले
ठग के पास पहुँच गया।

फैलाने को कहकर स्वयं कफन सिर से पैर तक लपेटकर मुर्दे की तरह लम्बा लेट गि
पत्नी ने सब कुछ इसके कहे अनुसार किया। स्त्री का रोना-बिलखना सुनकर आस-पास
तम्बू-घरों के लोग जमा होने लगे, आपस में बातें करते हुए उसकी मृत्यु पर खेद प्रकट
लगे, फिर झूठे मृत को उठाकर एक सुनसान मज़ार पर ले गये और उसके मातम का
ना खाने बैठे।

उसी समय सरी-अर्कावाला ठग अपने बिना सींग के बछड़े पर बैठा गाँव में आ पहुँ
वह यह पता लगाकर कि किसे दफ़नाने की तैयारी की जा रही है, फ़ौरन सारा मा
भाँप गया "अरे, अरे, यह चाल तो जानी-पहचानी है," लेकिन उसने बुरी तरह
गहरा सदमा पहुँचने का दिखावा किया और रोता हुआ कह उठा

"मेरा दोस्त मर गया, तो मैं भी मर जाऊँगा! मैं उसके बिना सुखी नहीं रह सक
और उसके बिना मेरी ज़िन्दगी में अंधेरा छा गया है। मेरी बस एक ही बिनती है
अपने दोस्त के पास लिटा दीजिये कम-से-कम मरने के बाद तो हम जुदा न होंगे।

इतना कहकर वह ज़मीन पर गिर पड़ा और साँस रोककर मर जाने का ढोंग र
लगा।

और उसी दिन उसे भी अपने मित्र की बगल में दफ़ना दिया गया।
लोग अपने-अपने घर लौट गये और दोनों ठग मज़ार में अकेले रह गये।
"अस्सलाम अलैकुम!" सरी-अर्कावाला ठग धीरे से बोला।
"अलैकुम-अस्सलाम!" सिर-दरियावाले ठग ने वैसे ही धीरे से जवाब दिया।
"बाप की जायदाद का बटवारा करने का वक्त आ गया है ना?" सरी-अर्का[illegible]
[illegible] ने पूछा।

"सचमुच ही आ गया है"

[illegible]

"अरे अंधे गुनाहगारो, मरदूद खूख्वारो! जिंदा लोगो के आसुओ मे तुम्हारा मन नही भरा, तो मुर्दों की मिट्टी भी खराब करने लगे! खुदा के गजब से डरो! कापो! तुम्हारी मौत की घडी आ गयी!"

फिर क्या हुआ! "चोर के पैर नही होते " चोर सारा माल-मता छोडकर एक दूसरे को धकेलते सिर पर पैर रखकर भाग छूटे कुछ दरवाजे से निकल भागे, कुछ माथा मार-मारकर दीवार फांदकर बाहर भागे। पलक झपकते वे मजार से कोसो दूर पहुँच चुके थे।

ठगो ने फौरन कफन उतार फेके, अशरफिया भाइयो की तरह आपस मे बाट ली और अपनी चालबाजियो पर दिल खोलकर हसकर अपने-अपने गाव का रास्ता पकडा एक सिर-दरिया की स्तेपी को रवाना हो गया, दूसरा सरी-अर्का की स्तेपी को।

साहसी गधा

एक गधा बोझा ढोते-ढोते बुरी तरह ऊब गया। एक बार उसने अपने मि
ऊंट से कहा

"ऊंट, ओ ऊंट! मैं तो बोझा ढोते-ढोते ऊब गया हूँ, मेरी सारी पीठ उधेड़ रखी
है! चलो, मालिक को छोड़कर भाग जाते हैं, दोनों मिलकर आज़ादी मे रहेंगे, जो मन
मे आयेगा, करेंगे।"

ऊंट चुप्पी साधे थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर बोला

"हमारा मालिक सचमुच बहुत बुरा है चारा खराब खिलाता है, काम ढेरो करने
को मजबूर करता है। मै तो बड़ी खुशी से भाग जाता, पर भागू कैसे?"

गधे के पास इसका जवाब तैयार था।

"मैंने सब भली-भांति सोच लिया है," कहने लगा, "तुम फिक्र मत करो। कल
मालिक हम पर नमक लादकर शहर ले जायेगा। शुरू मे तो हम उसकी आज्ञानुसार शान्ति
मे चलेंगे, पर चढ़ाई पर चढ़ते ही दोनो ही एक साथ गिर पड़ेगे और दिखावा करेंगे मानो
हम बिलकुल अशक्त हो गये है। मालिक हमे गालिया देने लगेगा, हम पर डण्डे बरसाने
लगेगा, पर हम टस मे मस नही होगे। वह थककर चूर हो जायेगा और मदद लाने घर
चला जायेगा। फिर हमे पूरी आज़ादी मिल जायेगी – कही भी भाग सकते है, बस हमारे
पैर हमे धोखा न दे।"

ऊंट बहुत खुश हुआ

"बहुत अच्छी तरकीब सोची तुमने, बहुत ही अच्छी! हम वैसा ही करेंगे, जैसा
कि तुमने कहा है।"

उन्होंने सुबह होने तक इन्तज़ार किया। सुबह होते ही मालिक ने उन पर नमक की
बोरिया लाद दी और शहर हांक ले चला।

आधे रास्ते तक वे सदा की तरह चलते रहे. ऊंट आगे-आगे, गधा उसके पीछे और दोनो के पीछे मालिक डण्डा लिये। चढाई उन्होने पार की ही थी कि गधा और ऊंट जमीन पर गिर पड़े और पूर्णतया अशक्त होने का और खडे न हो पाने का दिखावा करने लगे।

मालिक लगा उन्हे कोसने :

"अरे आलसियो, अरे कामचोरो! डण्डे की मार पडने से पहले उठ खडे हो जा!"

पर उनके कान पर तो जू भी नही रेगी, पडे रहे, मानो कुछ सुन ही नही रहे हो।

मालिक भडक उठा और लगा उन पर कस-कसकर डण्डे बरसाने।

उसने ऊंट के उनतालीस डण्डे मारे – कोई असर नही हुआ, पर जैसे ही उसने चालीसवी बार मारने के लिए डण्डा उठाया – ऊंट ज़ोर से बलबलाया और झट उठ खडा हुआ।

"यह हुई ना बात," मालिक बोला, "पहले ही खडा हो जाना चाहिए था!" और वह फिर गधे की पिटाई करने लगा।

उसने उस पर चालीस डण्डे बरसाये – गधे ने आह भी नही भरी, पचास डण्डे मारे – गधा हिला भी नही, साठ डण्डे मारे – गधा जैसे पडा था, वैसा ही पडा रह गया।

मालिक ने देखा – हालत खराब है गधा शायद दम तोडनेवाला है, बडी मुसीबत है, पर कोई कर ही क्या सकता है।

उसने गधे का बोझ उतारकर ऊंट पर लाद दिया और आगे चल दिया।

ऊंट बोझ के मारे बडी मुश्किल से चल पा रहा था और गधे को कोसता जा रहा था :

"नासपीटे गधे, तेरे कारण मेरी खाल उधेडी गयी है, मैं दुगुना बोझ ढो रहा हूँ।"

गधा मालिक व ऊंट के दर्रे मे ओझल होने तक इन्तज़ार करता रहा, फिर उठा और सिर पर पैर रखकर भागा।

वह तीन दिन तक भागता रहा, उसने तीन पहाड और तीन घाटिया पार की और अन्त मे एक तेज नदी के किनारे एक खुले मैदान तक पहुँच गया।

गधे को मैदान बहुत पसन्द आया और वह वही रहने लगा। जब कि उस ज़मीन पर अनेक वर्षों से एक खूख्वार शेर राज करता था।

एक बार शेर को अपनी जागीर का दौरा करने की इच्छा हुई। वह सुबह सफर पर निकला और दोपहर मे उसे गधा दिखाई दिया।

गधा बडे मज़े से मैदान मे दुम हिलाता घूमता हुआ घास चर रहा था।

शेर ने सोचा : "यह कौन-सा जानवर है? मैंने ऐसा जानवर कभी नही देखा।"

और गधे की शेर पर नज़र पडते ही सन्न रह गया। "अब तो," वह सोचने लगा, "मैं मारा गया!" और उसने मन-ही-मन ठान ली, "बिना आत्म-रक्षा किये मरने से बेहतर होगा कि मै इस भयानक पशु को अपनी बहादुरी दिखा दू।"

उसने पूछ उठायी, कान हिलाये और गला पूरा फाडकर लगा चीपो-चीपो करने!

शेर की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। वह भागकर सिर पर पैर रखकर भागा। उसने डर के मारे पीछे मुड़कर भी नहीं देखा।

रास्ते में उसे भेड़िया मिला

"आप किस से इतनी बुरी तरह डर गए हैं, महाराज?"

"मैं एक ऐसे जानवर से डर गया जिससे भयावह पशु दुनिया में और कोई नहीं है। उसके कानों के स्थान पर पंख हैं, मुंह अनाज माड़ने जैसा है और जब वह दहाड़ता है तो धरती कांपने लगती है, आकाश फूटता पड़ जाता है।"

"सुनिए, सुनिए," भेड़िया बोला, "आपकी मुठभेड़ कहीं गधे से तो नहीं हुई? यही बात है। ठीक है, कल हम दोनों उसे रस्सा फेंककर बांध लेंगे।"

दूसरे दिन भेड़िया रस्सा ढूंढ लाया। उसने उसका एक छोर शेर की गर्दन पर बांध दिया, दूसरा – अपनी पर, और दोनों खुले मैदान की ओर चल पड़े।

भेड़िया आगे-आगे चल रहा था और शेर – पीछे-पीछे, अकड़ता हुआ।

गधे ने उन्हें दूर ही से देख लिया और उसने फिर अपनी वही चाल चली: पूंछ उठायी, गला फाड़ा और लगा पहले से भी जोर से रेंकने।

शेर ने चिल्लाकर भेड़िये से कहा

"मेरे यार, लगता है तुम मुझे इस भयावह पशु का भोजन बनाने पर तुले हुए हो!" वह पूरी ताकत जुटाकर एक ओर भागा – और भेड़िये का सिर धड़ से अलग हो गया।

शेर भागता हुआ घर पहुँचा, वह बुरी तरह हाफ रहा था।

उसी समय फुर्र से मुटरी उसके पास आ पहुँची। उसने चहचहाकर, बुदबुदाकर शेर से सारा किस्सा मालूम किया और फिर बोली

"जरा ठहरो, मैं अभी मैदान में जाकर देखती हूँ कि वहाँ कौन-सा जानवर घूम रहा है और वह क्या कर रहा है। सारी बात का पता लगाकर तुम्हें सारा ब्योरा बताऊंगी।"

मुटरी मैदान की ओर उड़ चली।

गधे ने उसे दूर से ही देख लिया, जमीन पर लेट गया और टांगें लंबी खींच लीं, मानो मर गया हो।

मुटरी ने नीचे नजर डाली और खुश हो उठी: भयावह पशु की तो टें बोल गयी!

वह सीधी गधे पर उतरी और उसके शरीर पर चहलकदमी करती हुई सोचने लगी कि भीमकाय पशु पर अपनी विजय के बारे में शेर को कौन-सा झूठा किस्सा गढ़कर सुनाये।

अचानक उसे जमीन पर गेहूँ का एक दाना पड़ा नजर आ गया, उसने चोंच से दाने का निशाना बाधा, एक कदम पीछे हटी और सिर के बल गधे के घुटनों के बीच जा गिरी।

तत्क्षण गधे में जान आ गयी। उसने मुटरी को कसकर दबोच लिया और लगा पूंछ से उसे कोड़े मारने। उसने उसे इतना मारा, इतना मारा कि मुटरी के परों के छितरे

बिखर गये। फिर उसके एक ऐसी दुलत्ती झाड़ी कि मुटरी लुढ़कती हुई मैदान के दूसरे छोर पर जा गिरी।

वह वहाँ पड़ी रही, जब होश आया, तो किसी तरह लगडाती-लगडाती, कराहती, काखती वापस उड़ चली।

मुटरी उड़ते-उड़ते दूर से ही शोर से चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी

"भागो यहाँ से, दूर भाग जाओ, जब तक सही-सलामत हो! मनहूस जानवर ने मुझे जीवन भर के लिए अपाहिज कर दिया! देखो, कहीं तुम पर भी ऐसी न गुजरे।"

शेर बिलकुल भीगी बिल्ली बन गया। उसने अपना बोरिया-बिस्तर समेटा और हमेशा-हमेशा के लिए दूसरे देश चला गया।

और साहसी गधा आज भी खुले मैदान में सुख-चैन से रह रहा है।

ग्वर गये। फिर उसके एक ऐसी दुलत्ती झाडी कि मुटरी लुढ़कती हुई मैदान के दूसरे छोर र जा गिरी।

वह वहाँ पडी रही, जब होश आया, तो किसी तरह लगडाती-लगडाती, कराहती, ाशती वापस उड चली।

मुटरी उडते-उड़ते दूर से ही शेर से चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी

"भागो यहाँ से, दूर भाग जाओ, जब तक सही-सलामत हो! मनहूस जानवर ने मुझे जीवन भर के लिए अपाहिज कर दिया! देखो, कही तुम पर भी ऐसी न गुजरे।"

शेर बिलकुल भीगी बिल्ली बन गया। उसने अपना बोरिया-बिस्तर समेटा और हमेशा-हमेशा के लिए दूसरे देश चला गया।

और साहसी गधा आज भी खुले मैदान मे सुख-चैन मे रह रहा है।

तीन मित्र

न जाने यह सच है या झूठ, पर कहते हैं कि बहुत पहले एक बकरी के बच्चे, और बछड़े में दोस्ती हो गयी थी और वे एक दूसरे को भाई की तरह मानते थे।

एक बार बकरी के बच्चे ने बहुत दूर की एक पहाड़ी पर नजर डाली और ब

"भाइयो, तुममे से किसी ने शाम को सूरज को पहाड़ी के पीछे अस्त होते देखा

"मैने देखा है," मेमने ने कहा।

"मैने भी देखा है," बछड़ा बोला।

"तो चलो फिर," बकरी के बच्चे ने सुझाव दिया, "तीनो चलकर देखते हैं सूरज रात भर कहाँ छिपा रहता है।"

और मित्र उसी दिन चुपचाप अपने झुण्ड से भाग गये।

वे स्तेपी मे चलते रहे, चलते रहे। सफर लम्बा था, पर पहाड़ी भी तो बराबर होती जा रही थी। मित्र खुश होने लगे। अचानक उनके रास्ते मे एक नाला पड़ गया। उसे कैसे पार करें? बकरी का बच्चा बोला

"कोई बात नही, फाद लेंगे!"

"मुझे तो डर लगता है," मेमना बोला।

"मुझे भी डर लगता है" बछड़ा बोला।

"वाह रे डरपोको," मेमना हस पड़ा। "मुझे तो किसी चीज का डर नहीं

उसने दौड लगायी और पलक झपकते दूसरे किनारे पर जा पहुँचा।

उसके बाद मेमने ने छलाग लगायी—छलाग उसने जोरदार लगायी, बस पिछले खुर ही पानी मे भीगे।

बछड़ा अपनी जगह पर खड़ा पैर पटकता रहा, पटकता रहा—पर कोई और नहीं था, फिर उसने भी छलाग लगा दी। छलाग लगायी और—छप्प से सीधा पानी डूबते-डूबते बचा। साथियो ने उसके कान पकड़कर उसे बाहर खीच लिया।

बकरी का बच्चा बोला :

"हमने, बछड़े, तुझे मौत से बचाया है। तुझे हमारी भलाई का बदला चुकाना चाहिए। हमें पीठ पर बिठाकर पहाड़ी तक ले चल।"

नटखट मेमना और बकरी का बच्चा बछड़े पर सवार हो गये और हंसी-मज़ाक करते आगे बढ़ने लगे।

कुछ समय बीतने पर बछड़ा दुखी स्वर में रंभाने लगा

"तुम लोग बहुत भारी हो। मैं तुम्हारा ऊंट तो हूं नहीं। आगे जो पत्थर चमक रहा है, बस उसी तक ले जाऊंगा, और फिर बस, वहीं उतर जाना।"

वे लोग पत्थर तक पहुंचे, पर वहां तो पत्थर नहीं – बल्कि एक सफ़ेद थैला ज़मीन पर पड़ा हुआ था। उसमें ठूंस-ठूंसकर कोई चीज़ भरी हुई थी। शायद किसी अनाड़ी का सामान गिर गया था। उन्होंने थैला खोला, उसमें चार जानवरों की खालें निकलीं साह भालू, भेड़िये और लोमड़ी की।

"बहुत अच्छी चीज़ें मिली हैं, काम आयेंगी," बकरी के बच्चे ने कहा।

वे थैला उठाकर आगे चले। अब पहाड़ी बिलकुल पास थी, हाथ आगे बढ़ाकर छुई जा सकती थी। पहाड़ी तले एक सफ़ेद तम्बू-घर लगा था। तम्बू-घर में शोर मचा हुआ था, गाने और डफली की आवाज़ सुनाई दे रही थी। राहियों ने रुककर एक दूसरे की ओर देखा – जो हो, सो हो! – और दरवाज़ा खोल दिया।

देखा तम्बू-घर में दावत चल रही है। चित्तीदार साह किमिज़ पी रहा है, मोटा भालू हलवा खा रहा था, भूरा भेड़िया बाउरसक* सटक रहा है, भूरी लोमड़ी दोम्बा** बजाकर गा रही है

> दोम्बा बजाता है टुन-टुन शान में
> आज सब के दोस्त बन जाएँगे हम।
> दुश्मनी पर कल उतर आएँगे हम
> हाथ धोना होगा सब को जान से।

तीनों दोस्त तम्बू-घर में घुसे और देहलीज़ पर जड़वत् खड़े रह गये उनकी फ़ौरन समझ में आ गया कि वे मुसीबत में फंस गये हैं। और हिंस्र जंतुओं ने जैसे ही बिनबुलाये

---

* बाउरसक – गुंधी मैदा के टुकड़ों को चर्बी में तलकर बनाया जानेवाला एक कज़ाख़ी व्यंजन।

** दोम्बा – एक प्रकार का तारवाला कज़ाख़ी वाद्य यंत्र।

तीनों मुहबोले भाई पराये तम्बू-घर में मौज उड़ाने लगे। उन्होंने जतुओं के छोड़े तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन खाये, आराम किया और फिर सोचने लगे कि आगे क्या किया जाये।

बकरी का बच्चा बोला,

"हमने बहुत अच्छा किया कि दुश्मनों को बुरी तरह डरा दिया, लेकिन होश सभालने पर वे लौट आये, तो बहुत बुरा होगा। फिर हमारी हड्डियां भी ढूंढे नहीं मिलेंगी। बेहतर होगा मुसीबत आने से पहले जल्दी से घर भाग चलें। अपने झुण्ड में हमें किसी खूंख्वार जानवर का खतरा नहीं होगा। अपने झुण्ड में गडरिये हमारा बाल भी बांका नहीं होने देंगे।"

बकरी के बच्चे को मित्रों को ज्यादा देर नहीं मनाना पड़ा।

"तुम सच कहते हो, भाई," मेमना बोला।

"तुम्हारा कहना सही है," बछड़ा बोला।

और एक मिनट बाद ही तीनों के तीनों सफेद तम्बू-घर से दूर और पहाड़ी से और भी दूर पहुंच चुके थे। आगे-आगे बकरी का बच्चा भागा जा रहा था, उसके पीछे – मेमना और बछड़ा – उनके पीछे।

शाम होते-होते वे घर पहुंच गये। गडरिये उन्हें देखकर इतने हर्षित हो उठे कि उन्होंने उन्हें डांटा तक नहीं। इस प्रकार सब कुछ अच्छा रहा।

बस एक ही बात बुरी हुई: तीनों मित्र किसी तरह पता नहीं लगा सके कि मुर्गा या रैन-बसेरा कहां है।

मेहमानों को देखा, उनकी आखे चमक उठी : इतना स्वादिष्ठ भोजन खुद ब खुद उनके
मे चला आ रहा है ! लोमड़ी ने चालाकी से जनुओं के गिरोह को आख मारी और
पर जबान फेरती हुई मीठी-मीठी बातें बनाने लगी.

"आइये, आइये, तशरीफ लाइये, मेहमानो। खुदा की इनायत से आप लोग
त्योहार की दावत मे आ पहुँचे। जरा चूल्हे के पास सरककर बैठिये, बच्चो। हम
आप लोगो की खातिरदारी करते हैं तब तक क्या आप लोग डफली बजाकर, गाना गा
हमारा मन नही बहलायेगे ?"

मेमने को काटो तो खून नही – वह मौन था। बछड़ा पीछे हट गया और चुप र
पर बकरी का बच्चा अपने घुघराले बाल झटकार बोला

"लाओ, लोमड़ी, दोम्ब्रा दो ! मैं आपको दोम्ब्रा बजाकर गाना सुनाता हूँ।

और उसने तार छेड दिये

दोम्ब्रा बजता है टुन-टुन शान से
दुश्मनो को मारेगे हम जान से
शेर का हम को नही है कोई डर
मोटे भालू का भी हम तोडेगे सर
भेडिए से डरनेवाले हम नही
लोमडी से दबनेवाले हम नही
बोल देगे चारो पर धावा अभी
जालिमो को करते हैं पसपा अभी !

जतु सुनते रहे यह कैसा धृष्टतापूर्ण गीत है !

"अरे, तुम लोग हो कौन ?" चित्तीदार बाह दहाड़ा।

"हम स्तेपी के शिकारी है," बकरी के बच्चे ने उत्तर दिया।

"और कहाँ जा रहे हो ?" भालू गुर्राया।

"माल लेकर बाजार जा रहे है।"

"माल कैसा है ?" भेडिया गुमगुमाया।

"जानवरो की खाले है।"

"तुम ये कहा से लाये ?" लोमडी चीखी।

"तुम्हारे भाई-बदो की उतारी है" बकरी के बच्चे ने कहा और थैले में से चार
जानवरो की खाले निकालकर रख दी।

दरिन्दे जतु डर के मारे सुन हो गये और फिर अपनी अपनी आवाज मे चीखते हुए
सिर पर पैर रखकर भाग गये।

कलावंत गधा

दुनिया मे भांति-भांति के लोग रहते है और इसमे कोई अचरज की बात नही कि किसी जमाने मे किसी गाव मे जाक्सीबाय नाम का एक बूढा बातूनी रहता था, जिसे कोई दुख नही था। इस आदमी के पास एक गधा था। देखने मे उसमे और दूसरे गधो मे कोई अन्तर नही था लेकिन उसने ऐसा गला पाया था कि जब वह अपने थान पर रेकना शुरू कर देता, तो आस-पास के गावो के लोग कानो मे उगली दे लेते थे।

एक बार जाक्सीबाय प्राचीन शहर तुर्किस्तान आया और उसने गधे को फौरन बाजार की ओर मोड दिया। वहा उसने अपने गधे को पेड से बाध दिया और खुद अपने चोगे के पल्ले उठाये चायखाने मे घुस गया। अच्छे चायखाने मे हमेशा भीड रहती है और जहा लोग होते है, वही बाते होती है, जहा बाते होती है, वही बहस छिड जाती है, जहा बहस हो रही हो, बाते हो रही हो, वहा कोई जाक्सीबाय को बतियाने मे, बहस करने मे कभी मात नही दे सकता। कहते है "बातूनी की जबान मे लगाम नही होती.."

गधा काफी देर तक अपने स्वामी की बाट जोहता रहा। सूरज तप रहा था, मक्खिया भिनभिना रही थी, कुकुरमाछिया बुरी तरह काट रही थी। गधा बहुत देर से भूखा था और उसे प्यास लग रही थी। आखिर वह क्या करता? और उसने वही किया, जो उसके स्थान पर उसकी जात का कोई भी प्राणी कर बैठता पूछ उठायी, कनौतिया आगे को खडी की, नथुने फुलाये, मुह खोला और लगा गला फाडकर रेकने।

बाजार मे काम से और बिना काम के जमा हुए लोग चौक उठे और सबने एक साथ उसकी ओर पलटकर देखा।

"वाह, क्या आवाज है!" सारा बाजार कह उठा। "ऐसी आवाज हमने तुर्किस्तान मे अभी तक नही सुनी थी!"

"वाह, क्या खुशखबरी है!" गधा खुश हो उठा। "रास्तो की खाक छानते-छानते इतने साल हो गये, पर अपनी वकअत का मुझे आज ही पता चला। सारे तुर्किस्तान मे मेरी धाक जम गयी!"

क्षण मे गधे को विश्वास हो गया कि वह जन्मजात महान गायक है। भले कभी-कभी न जाने कहा-कहा मुह मारना पडता है और मले गधे की खोपडी मे कैसी-कैसी बाते उपजती है!

सोचने लगा
ब मैं आगे से जाक्सीबाय के लिए काम नही करूगा। जल्दी ही मेरा नाम हो मुझे सम्मान मिलेगा। पर नाम और सम्मान पीठ पर लकडी ढोनेवाले का थोडे ही।"

सने जोश मे आकर पूरा जोर लगाकर रस्सी तुडा ली और सरपट शहर से बाहर कला। अलविदा, बूढे बातूनी जाक्सीबाय! अलविदा पुराना तबेलखान!

धा सुनसान रास्ते पर भटकने लगा — सूरज और जोर से तप रहा था और ज्यादा भिनभिन करके परेशान कर रही थी कुकुरमाछिया और ज्यादा जोर रही थी। भगोडा थक गया भूख और प्यास के मारे निढाल हो गया। और आस कही छाया थी, न घास की कोई पत्ती न ही कोई छोटा-मोटा डबरा।

"यश कमाना आसान नही होता" गधे ने एक ठण्डी सास ली पर अल्लाह चुनिदा बदे को बेमौत नही मरने देगा। और वह आगे चल दिया।

अचानक — न जाने यह शकुन था या अपशकुन — गधे को अपने सामने मिट्टी की दीवारी से घिरा एक विशाल बाग दिखाई दिया। दीवार एक जगह पर ढही हुई थी दरार मे से छायादार वृक्ष मुलायम दूब से ढके आकर्षक मैदान और निर्मल जल की तया देखी जा सकती थी। प्रलोभन अत्यन्त सम्मोहक था और गधा बदन सिकोडकर र मे से अनजाने बाग मे घुस गया। सारी दुनिया से बेखबर होकर वह मरभुक्खो की तरह ी-पानी पर टूट पडा। वह रास्तो का ध्यान रखे बिना लानो और फुलवारियो को रौदता तक घूमता रहा, जब तक कि उसका पेट न भर गया और उसे डकारे न आने लगी। उसने दम लेने के लिए रुककर सिर उठाया और अप्रत्याशित बात से चौक उठा। झाडियो के झुरमुट मे से जन्नत की परी जैसी सुन्दर एक जवान हिरनी सीधी उसी की ओर आ रही थी। वह हिरनी भी चोरी से बाग मे घुस आयी थी। वह सुबह से तेपो मे उछलती-कूदती रही थी और खेलती-कूदती चहारदीवारी तक पहुँची उस पार के शानदार घास चरने लगी थी। गधे को देखते ही वह भागने की तैयारी करने लगी रही।

गधा हिरनी पर पहली नजर पडते ही उसके प्यार मे पागल हो उठा। उसका दिल भयाकुल हिरन-मूसा की तरह कूद रहा था वह आखे निकाले सुन्दरी को देख रहा था और उमग मे सोच रहा था 'मेरा भाग्य वास्तव मे मुझ पर कृपालु है उसने मुझे स्वर प्रदान किया है, इस अद्भुत बाग मे पहुँचा दिया है और अब एक अतिसुन्दर दुलहन से मेरी भेट भी करा दी।"

कलावंत गधा

दुनिया में भांति-भांति के लोग रहते हैं और इसमें कोई अचरज की बात नहीं कि किसी ज़माने में किसी गांव में जाक्सीबाय नाम का एक बूढ़ा बातूनी रहता था, जिसे कोई दुख नहीं था। इस आदमी के पास एक गधा था। देखने में उसमें और दूसरे गधों में कोई अन्तर नहीं था लेकिन उसने ऐसा गला पाया था कि जब वह अपने थान पर रेंकना शुरू कर देता, तो आस-पास के गांवों के लोग कानों में उंगली दे लेते थे।

एक बार जाक्सीबाय प्राचीन शहर तुर्किस्तान आया और उसने गधे को फौरन बाज़ार की ओर मोड़ दिया। वहां उसने अपने गधे को पेड़ से बांध दिया और खुद अपने चोगे के पल्ले उठाये चायखाने में घुस गया। अच्छे चायखाने में हमेशा भीड़ रहती है और जहां लोग होते हैं, वहीं बातें होती हैं, जहां बातें होती हैं, वहीं बहस छिड़ जाती है, जहां बहस हो रही हो, बातें हो रही हों वहां कोई जाक्सीबाय को बतियाने में, बहस करने में कभी मात नहीं दे सकता। कहते हैं "बातूनी की ज़बान में लगाम नहीं होती"

गधा काफी देर तक अपने स्वामी की बाट जोहता रहा। सूरज तप रहा था, मक्खियां भिनभिना रही थीं, कुकुरमाछियां बुरी तरह काट रही थीं। गधा बहुत देर से भूखा था और उसे प्यास लग रही थी। आखिर वह क्या करता? और उसने वही किया, जो उसके स्थान पर उसकी जात का कोई भी प्राणी कर बैठता पूंछ उठायी, कनौतियां आगे को खड़ी कीं, नथुने फुलाये, मुंह खोला और लगा गला फाड़कर रेंकने।

बाज़ार में काम से और बिना काम के जमा हुए लोग चौंक उठे और सबने एक साथ उसकी ओर पलटकर देखा।

"वाह, क्या आवाज़ है!" सारा बाज़ार कह उठा। "ऐसी आवाज़ हमने तुर्किस्तान में अभी तक नहीं सुनी थी!"

"वाह, क्या खुशखबरी है!" गधा खुश हो उठा। "रास्तों की खाक छानते-छानते इतने साल हो गये, पर अपनी वकअत का मुझे आज ही पता चला। सारे तुर्किस्तान में मेरी धाक जम गयी!"

उसी क्षण से गधे को विश्वास हो गया कि वह जन्मजात महान गायक है। भूखे सियार को कभी-कभी न जाने कहा-कहा मुह मारना पड़ता है और मूर्ख गधे की खोपडी मे न जाने कैसी-कैसी बाते उपजती है!

गधा सोचने लगा:

"अब मै आगे से जाक्सीबाय के लिए काम नही करुगा! जल्दी ही मेरा नाम हो जायेगा, मुझे सम्मान मिलेगा। पर नाम और सम्मान पीठ पर लकडी ढोनेवाले को थोडे ही मिलते।"

उसने जोश मे आकर पूरा ज़ोर लगाकर रस्सी तुडा ली और सरपट शहर से बाहर भाग निकला। अलविदा, बूढ़े बातूनी, जाक्सीबाय! अलविदा, पुराना तुर्किस्तान!

गधा सुनसान रास्ते पर भटकने लगा, – सूरज और ज़ोर से तप रहा था मक्खिया और ज़्यादा भिनभिन करके परेशान कर रही थी, कुकुरमाछिया और ज़्यादा ज़ोर से काट रही थी। भगोडा थक गया, भूख और प्यास के मारे निढाल हो गया। और आस-पास न कही छाया थी, न घास की कोई पत्ती, न ही कोई छोटा-मोटा डबरा।

"यश कमाना आसान नही होता," गधे ने एक ठण्डी सास ली, "पर अल्लाह अपने चुनिदा बदे को बेमौत नही मरने देगा।" और वह आगे चल दिया।

अचानक – न जाने यह शकुन था या अपशकुन – गधे को अपने सामने मिट्टी की चहारदीवारी मे घिरा एक विशाल बाग दिखाई दिया। दीवार एक जगह पर ढही हुई थी और दरार मे से छायादार वृक्ष, मुलायम दूब से ढके आकर्षक मैदान और निर्मल जल की नालियाँ देखी जा सकती थी। प्रलोभन अत्यन्त सम्मोहक था और गधा बदन सिकोडकर दरार मे से अनजाने बाग मे घुस गया। सारी दुनिया से बेखबर होकर वह मरभुक्खे की तरह चारे-पानी पर टूट पडा। वह रास्तो का ध्यान रखे बिना लानो और फुलवारियो को रौदता तब तक घूमता रहा, जब तक कि उसका पेट न भर गया और उसे डकारे न आने लगी। तब उसने दम लेने के लिए रुककर सिर उठाया और अप्रत्याशित बात से चौक उठा।

झाडियो के झुरमुट मे से जन्नत की परी जैसी सुन्दर एक जवान हिरनी सीधी उसी की ओर आ रही थी। वह हिरनी भी चोरी से बाग मे घुस आयी थी। वह सुबह मे स्तेपी मे उछलती-कूदती रही थी और खेलती-खेलती चहारदीवारी तक पहुँची, उसे फादकर शानदार घास चरने लगी थी। गधे को देखते ही वह भागने की तैयारी करके जडवत् खडी रही।

गधा हिरनी पर पहली नज़र पडते ही उसके प्यार मे पागल हो उठा। उसका दिल भयाकुल हिरन-मूसा की तरह कूद रहा था, वह आखे निकाले सुन्दरी को देख रहा था और उमग मे सोच रहा था: "मेरा भाग्य वास्तव मे मुझ पर कृपालु है उसने मुझे विरला स्वर प्रदान किया है, इस अद्भुत बाग मे पहुँचा दिया है और अब एक अतिसुन्दर दुलहन मे मेरी भेट भी करा दी।"

और वह कनौतियाँ झुकाकर विनम्रतापूर्वक बोला

"सुनयना! आपने अपने स्वर्गिक सौन्दर्य से मेरा मन मोह लिया है। मुझे आपके लिए गाने की आज्ञा दीजिए। मेरा मधुर स्वर सुनकर आप महान गायक के प्रेम को अस्वीकार न कर सकेंगी।"

हिरनी ने अगल-बगल झांका और धीरे से बोली

"गधे, क्या आपका चुप रहना बेहतर नहीं होगा? देखिये, कहीं आपके उत्साह के कारण हम पर भी ग़मी न बीते, जैसी मार नासमझ चोरों पर बीती थी।"

और उसने यह नीति-कथा सुनाई

"एक बार रात को सात चोर एक धनवान के घर में घुस गये। वे तहखाने में पुरानी शराब के विशाल डोलों के बीच दुबककर बैठ गये और घर में सन्नाटा छाने की प्रतीक्षा करने लगे, जिससे कि अपनी सोची कर सकें। पर शराब की गंध से उनकी मति भ्रष्ट हो गयी और वे चुल्लू भर-भरके मूल्यवान पेय अपने गले के नीचे उतारने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि नशे में चोर भूल गये कि वे कहाँ हैं और गला फाड़-फाड़कर विनोदी गीत गाने लगे। घरवालों ने उनकी आवाजें सुन लीं, धनवान के पहरेदार तहखाने में जा पहुँचे और उन्होंने बिनबुलाये मेहमानों की मुश्कें कस दीं। आखिर मैं और आप भी तो, गधे, गृहस्वामी के बुलाये बिना इस बाग में पधारे हैं और उसकी आज्ञा के बिना स्वादिष्ट घास का रसास्वादन कर रहे हैं!"

"आप अतिसुन्दर हैं, हिरनी," गधे ने उसके प्रत्युत्तर में कहा, "लेकिन आप वीरान स्तेपी में बड़ी हुई हैं और शायद अच्छे गायन के बारे में बहुत कम जानती हैं। मैंने तो सारा जीवन लोगों के बीच बिताया है, तुर्किस्तान में रह चुका हूँ और दावे के साथ कह सकता हूँ कि मैं कला में दक्षता प्राप्त कर चुका हूँ। मेरे गीत गाना आरम्भ करने की देर है और फिर आप मुझसे यही विनती करेंगी कि मैं उसे कभी न रोकूँ।"

किन्तु हिरनी बोली

"क्या आपके लिए सावधान रहना और शोर न करना बेहतर नहीं रहेगा? जो कोई ज़रा-सा भी असावधान होता है, उस पर अवश्य विपत्ति टूट पड़ती है, जैसा कि एक मूर्ख लकड़हारे के साथ हुआ था।"

और हिरनी ने यह नीति-कथा सुनाई

"एक लकड़हारे को जंगल में देर हो गयी और रात में वह घने वन में भटक गया। उसे अचानक पास ही से ज़ोरदार आवाजें आती सुनाई दीं। लकड़हारा जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया और घनी शाखाओं में दुबक गया। तीन जिन आये। वे पेड़ के तले बैठकर अपने सामने एक मूल्यवान सुराही रखकर दावत उड़ाने लगे। जैसे ही कोई जिन सुराही को हाथ से छूता, वह ऐसी सुगंधित किमिज़ से लबालब भर जाती, जैसी शायद जिनों के अलावा और किसी ने कभी न पी होगी।

भोर हुआ। जिनो ने जादुई सुराही पेड़ के नीचे छिपा दी और भिन्न-भिन्न
दिशा में चले गये। लकड़हारा पलक झपकते नीचे उतरा और सुराही उठाकर जंगल से
भाग निकला। घर लौटकर उसने अपने सम्बन्धियों व पड़ोसियों को बताया और उनके
सामने अपने हाथ लगी दुर्लभ वस्तु की डींग हाँकने लगा। वह बार-बार सुराही को हाथ
से स्पर्श करता और सुगंधित किमिज की धार नीचे रखे प्यालों में गिरने लगती। लकड़
हारा खुशी के मारे इतना पागल हो उठा कि सुराही सिर पर रखकर मारे नृत्य पग में
हा-हा-ही-ही करता चक्कर काटने लगा। अचानक वह ठोकर खा गया और जादुई सुराही
गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी। कहीं हम भी गधे तुम्हारी मस्ती के कारण इस स्वादिष्ट
... से वंचित न रह जायें।

गधे ने एक ठण्डी साँस ली और निराशापूर्वक बोला

"ऐ हिरनी, प्रकृति ने आपको असीम सौन्दर्य प्रदान किया है पर उसने आपके
सीने में निष्ठुर हृदय रख दिया है। फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे गायन के मनमोहक
स्वर आपके कठोर स्वभाव को मृदु बना देंगे और आपके मन में उदात्त भाव जगा देंगे।

हिरनी गधे को शान्त करने का प्रयास करती रही

"मैं आप से विनती करती हूँ गधे कि समय रहते होश में आ जाइये और अपनी
आवाज़ तुर्किस्तान के बाजार के लिए बचाकर रखिये। क्योंकि मुँह से असमय निकला
कोई भी शब्द हमें असाध्य कष्ट पहुँचा सकता है। एक जवान सौदागर ने भी इसका ध्यान
नहीं रखा और उसे बाद में बहुत पछताना पड़ा था।

और उसने एक और नीति-कथा सुनाई

"एक नौजवान सौदागर दावत उड़ाने के बाद आधी रात को शहर की अंधेरी
गलियों में होकर घर लौट रहा था। उसकी जेबें अशर्फियों से भरी थीं। 'अगर मुझ पर
लुटेरे टूट पड़ें और मेरा धन छीन ले जायें तो?' सौदागर ने भय के मारे सोचा।
वह अपना हौसला बढ़ाने के लिए खुद से ज़ोर-ज़ोर से बातें करने लगा 'ज़रा नज़र
आयें लुटेरे! मैं उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। मैं खुद शैतान तक से नहीं डरता।'
...र गये घर लौटनेवाले राहगीरों की घात में पास की गली में गुण्डों का एक गिरोह
बाट रहा था। गुण्डों ने सौदागर की आवाज़ सुन ली और उन्होंने उस पर हमला
...न व कपड़े छीन लिये और उसे शहर में नंगा भटकने के लिए छोड़ गये। अब शायद
हमारा भी, मुसीबत को बुलावा न देकर थोथी बातें करना छोड़ घर
जाने का समय हो आया है।

इस पर गधा कह उठा

"ऐ निर्मम सुन्दरी, हिरनी! आप मुझसे चुप रहने को कैसे कह सकती हैं जब कि
प्रियतमा के सम्मान में गीत के बोल स्वयं मेरे हृदय में उमड़ मुँह से निकलने को
तड़प रहे हैं?।"

यह कहकर उसने आखे मूद ली, जैसा कि ख्यातिप्राप्त गायक करते हैं, मुह फाड़ा, जैसा कि सारे गधे एक निश्चित समय पर करते है और ज़ोर-ज़ोर से रेकने लगा। हिरनी चौककर एक ओर हट गयी और एक छलाग मे चहारदीवारी पार करके हवा मे बाते करती स्तेपी की ओर दौड पडी। जब कि गधा सारी दुनिया से बेपरवाह चीपों-चीपो का राग अलापता रहा।

बाग का स्वामी मोटा डण्डा लिये भागा आया और उसने गधे को ऐसी मार लगायी कि वह और ज़ोर से रेकने लगा और बडी मुश्किल से चहारदीवारी से ज़िन्दा बाहर निकल सका। गधा सिर झुकाये लडखडाता घिसटता आगे चल दिया।

रात आयी। आसमान पर पूनम का चाद निकल आया। तब स्तेपी के सारे भेडिये मुह ऊपर को करके अपने पूर्वजो की परम्परानुसार तरह-तरह के स्वरो मे हू-हू करने लगे।

गधे ने न तो कभी भेडियो को देखा था और न ही उसने कभी उनकी आवाज़ सुनी थी। रुककर उसने पारखी की तरह ध्यान से सुना और फिर कह उठा :

"ये भी कोई गायक है! मैं अकेला अपनी आवाज से इनके बेसुरे सहगान को दबा सकता हूँ।"

उसने इतने ज़ोर से सास खीची कि उसका सारा बदन चरमरा उठा और इतने ज़ोर से रेका कि उसका खुद का सिर भन्ना उठा। भेडिये आश्चर्यचकित हुए तत्क्षण मौन हो गये स्तेपी मे आधी रात को गधा कहाँ से आ सकता है? वे बिना आपस मे सलाह किये रास्ते की ओर लपके और शिकार उन्हे फौरन नजर आ गया गधे का किस्सा यही समाप्त हो गया। अगर आप किसी भी कीमत पर जाक्सीबाय के बारे मे भी सुनना चाहते है, तो सिर पर पैर रखकर प्राचीन शहर तुर्किस्तान दौडकर जाइये, बिना देर किये वहाँ का बड़ा बाज़ार और बाज़ार मे सबसे खचाखच भरा चायखाना ढूढ लीजिये और बेधड़क उसमें घुस जाइये। इस बात की पूरी सम्भावना है कि जाक्सीबाय अपने गधे के बारे में भूलकर अभी तक वहा गुदगुदे नमदे पर बैठा चाय की प्याली पर प्याली पिये जा रहा होगा और तरह-तरह के सच्चे-झूठे किस्से गढ़े जा रहा होगा। वह ज़रूर आपको अपने बारे में किस्से सुनायेगा – बस सुनते रहिये।

अबाबील की पूंछ फटी हुई क्यों होती है

ुराने ज़माने की बात है। उस ज़माने की जब दुनिया में भयानक
हर राज करता था। वह केवल खून से ही पेट भरता था और किसी पर दया
था। और नीच मच्छर उसकी चाकरी किया करता था।

बार ऐदाहर ने मच्छर को बुलाया और कहा

ाकर सारी दुनिया का चक्कर लगा और चुपचाप सारे प्राणियों के खून का स्वाद
। लौटते ही मुझे बताना कि किसका खून सबसे मीठा है। तू जिसका नाम
उसी का शिकार किया करूँगा।"

र उड़ चला। वह उसकी आज्ञा का पालन करके वापस लौट रहा था कि उसे
ल गयी।

ाँ गया था?"

अपने स्वामी की आज्ञानुसार सारी दुनिया का चक्कर काटने गया था जिससे
ा सकूँ कि किसका खून सबसे मीठा है।

्या पता लगा लिया?"

'मीठा खून मनुष्य का होता है।" मच्छर भिनभिनाया।

ल घबरा उठी।

च्छर, अजगर को सच्ची बात मत बताना। मनुष्य भला है तू उसका नाम
।"

बताऊँगा।"

ने फिर कहा

बिनती करती है न ... ुन ... वह मेरा मित्र है।'

ल

दिव्यदर्शी

बहुत दिन हुए दूर-दराज के एक गाँव में एक गरीब रहता था। माल असबाब के नाम पर उसके पास केवल लोमड़ी की खाल की एक टोपी थी और एक कद सवार घोड़ा। उसकी टोपी इतनी घिस चुकी थी कि उसमें छेद ही छेद रह गये थे। लेकिन उसका घोड़ा ऐसा था कि उसकी जोड़ का दुनिया भर में न मिलता। सूरज को उसकी खूबसूरती से ईर्ष्या होती थी और हवा को उसकी गति से।

एक अन्य गाँव में दो धनी – गरीब के बड़े भाई – रहते थे। उनके पास घोड़ों के तीस झुण्ड, भेड़ों के तीस रेवड़ और कालीनों, बरतनों तथा हथियारों से भरे तीस तम्बू पर थे।

पर इतना होने के बावजूद भी वे खुश नहीं थे। वे एक क्षण को भी नहीं भूल पाते थे कि उनके छोटे भाई के पास दुनिया का बेजोड़ घोड़ा है और वे किसी तरह उस घोड़े को मार डालने की तरकीबें ही सोचा करते थे।

एक बार गरीब अपनी फटी टोपी पहनकर उछलकर घोड़े पर सवार हुआ और उसे सरपट दौड़ाता भाइयों के पास गया।

उन्होंने उसे देखते ही मुंह फेर लिये और उनके चेहरे द्वेष के मारे काले स्याह हो गये। गरीब ने सिर झुकाकर उन्हें सलाम किया और बोला

"भाइयो, मुझे गरीबी ने कहीं का नहीं छोड़ा। मैं खुद भी मजदूरी करना चाहता हूँ, पर घोड़े के कारण मेरे हाथ बंधे हुए हैं। क्या आप इस पतझड़ तक के लिए इसे अपने घोड़ों के झुण्डों में मिला लेंगे? इसमें आपका कोई नुकसान नहीं होगा, और मेरी भी चिन्ता दूर हो जायेगी। पतझड़ में मैं आपको जितना भी आपका खर्च होगा, चुका दूंगा।"

धनवानों ने एक दूसरे की ओर देखकर आँख मारी और विनम्रता से मुस्कराकर गरीब से बोले

"भाई, तुम्हारी मदद करके हमें हमेशा खुशी होती है। तुम घोड़े को हमारे झुण्ड

मे छोड दो, मजे से पतभड तक चरता रहे। और इसके लिए हमें कुछ चुकाने की कोई जरूरत नही है।"

गरीब भाइयो का धन्यवाद कर घोडे को झुण्ड मे छोड आया और खुद सन्तुष्ट हो खुशी-खुशी घर लौट आया।

वसत बीता, ग्रीष्म ऋतु आ गयी। गरीब खेत-मजदूर का काम करता पूर्णत आश्वस्त रहा वह खुद का पेट भी भर रहा था और घोडे के बारे मे भी निश्चिन्त था।

लेकिन एक दिन एक अपरिचित उसके पास भागा आया और बोला कि वह उसे अकेले मे एक बहुत जरूरी बात बताना चाहता है।

गरीब उसके पीछे-पीछे गया और जब वे अकेले रह गये, उस व्यक्ति ने बताया कि वह उसके भाइयो का चरवाहा है और बोला

"सुनो, दोस्त, मुसीबत आ पडी है तुम्हारा कदमबाज दम तोड रहा है। तुम्हारे भाइयो ने उसे उसपर सवारी कर-करके अधमरा कर दिया—वह अब शायद तीन दिन भी जिन्दा नही रह पाये। मुझे तुम पर बहुत दया आयी, इसीलिए तुम्हे यह बताने आ गया। लेकिन तुम अपने भाइयो को मेरा नाम न बताना। अगर तुमसे पूछने लगे कि तुम्हे किसने बताया, तो कह देना 'मैं दिव्यदर्शी हूँ, मुझे दुनिया मे होनेवाली हर घटना मालूम हो जाती है।'"

इतना कहकर वह चला गया। गरीब फूट-फूटकर रोने लगा और अपने भाइयो के पास रवाना हो गया।

वे उसे रास्ते मे मिल गये और वह रोता हुआ उन्हे शर्मिन्दा करने लगा तथा उलाहने देने लगा

"भाइयो, मुझ असहाय गरीब को नुकसान पहुचाते आपको शर्म नही आयी? मैने आपका क्या बिगाडा है, जो आपने मेरे घोडे को मार डाला?"

धनी समझ गये कि गरीब को सारा मामला मालूम पड गया है और वे इससे इनकार करने लगे

"लगता है या तो तुम पागल हो गये या नशे मे हो! तुम यह क्या बकते हो? तुम्हारा घोडा सही-सलामत है और हमारे घोडो के साथ मजे मे चर रहा है।"

"नही भाइयो," गरीब बोला, "आप लोग मुझे धोखा मत दीजिये आपने मेरे घोडे को दौडा-दौडाकर अधमरा कर दिया और वह तीन दिन भी नही जियेगा।"

"यह किसने कहा तुमसे?" धनियो ने पूछा।

"मुझे किसी ने कुछ नही बताया। मै दिव्यदर्शी हो गया हूँ और मुझे दुनिया मे होनेवाली हर चीज दिखाई देती है" गरीब ने उत्तर दिया।

धीरे-धीरे भाइयो के गिर्द लोग जमा होने लगे, सभी जानना चाहते थे कि बात क्या है।

गरीब ने चरवाहे की कही सारी बात दोहरा दी और भीड इस बात की दाद

करने धनियों के घोड़ों के झुण्ड देखने चल पड़ी कि कहीं वह अपने भाइयों पर झूठा दोष तो नहीं मढ़ रहा है। लोग जब उस स्थान पर पहुंचे तो उन्होंने अपनी आंखों से देख लिया कि ग़रीब सच कह रहा था। उसका घोड़ा बेदम-सा बड़ी मुश्किल से सांस लेता ज़मीन पर पड़ा हुआ था और उसके दोनों बाज़ुओं पर फोड़े ही फोड़े थे।

तब भीड़ क्षुब्ध हो उठी और धमकी देकर धनियों से ग़रीब को बदमआश के बदले में उनके दस बढ़िया तेज़ घोड़े देने की मांग करने लगी।

धनियों के लिए उनकी बात मानने के सिवा कोई चारा न रहा। किन्तु तब से उन्हें अपने भाई से और भी घोर घृणा हो गयी और वे उसे तबाह करने की ताक में ही रहने लगे।

एक बार उस देश के ख़ान की, जिसमें भाई रहते थे, सोने की एक अमूल्य ईंट गायब हो गयी।

ख़ान ने सारे देश में मुनादी करवा दी कि जो कोई सोना छिपाने का स्थान बतायेगा उसे ख़ान के गल्ले में से एक हज़ार चुनिंदा भेड़ें और तीन सौ दुधारू घोड़ियां इनाम में दी जायेंगी।

जब यह बात धनियों के कानों में पड़ी, वे ख़ान के सामने हाज़िर हुए और बोले :

"जहांपनाह, हमारा एक छोटा भाई है, जो अपने को दिव्यदर्शी कहता है। हमने उसे अपने दोस्तों के सामने डींग मारते सुना था कि वह एक रात में चोर का पता लगा सकता है, पर बस आपको ख़ुश नहीं करना चाहता। आपके उस सोने की खबरी देने की देर है कि भोर होते होते सोने की ईंट आपके हाथों में पहुंच जायगी।"

ख़ान ने भाइयों की बात पर विश्वास कर लिया और ग़रीब को तत्क्षण हाज़िर करने का आदेश दिया।

जब ग़रीब हाज़िर हुआ, ख़ान बोला :

"सुना है, तुम अपने को दिव्यदर्शी कहते हो। मैं ख़ुद यक़ीन करना चाहता हूं कि क्या यह सच है। तुम भोर होने तक मेरी चोरी गयी सोने की ईंट हासिल करके मुझे दे दो, मैं तुम्हें घोषित इनाम के अलावा ऊपर से ऊंटों का एक काफ़िला भी दूंगा। अगर तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया, तो मैं तुम्हें पागल घोड़े की पूंछ से बांधकर उसे स्तेपी में छोड़ देने का हुक्म दे दूंगा।"

ग़रीब तुरन्त अपने भाइयों की चालबाज़ी समझ गया और उसने ख़ान को उत्तर दिया :

"जहांपनाह, आप अपने नौकरों को स्तेपी में मेरे लिए तम्बू-घर लगाने का हुक्म दे दीजिये। मैं मंत्र पढ़ता हुआ अकेला उसमें रात गुज़ारूंगा और शायद सुबह तक आपका सोना ढूंढ़ने में सफल हो जाऊंगा।"

पर मन-ही-मन वह सोच रहा था : 'स्तेपी में ये तम्बू-घर लगवा दें, फिर मैं रात में किसी न किसी तरह वहां से भाग जाऊंगा।'

हुआ, उसने उससे केवल उसके लिए फिर से स्तेपी में तम्बू-घर लगवाने की प्रार्थना की। खान ने उसकी इच्छा पूरी कर दी।

अकेला रहने पर गरीब किसी तरह मौत से बच निकलने की तरकीब सोचने लगा। आधी रात इसी में बीत गयी, फिर वह दबे पांव तम्बू-घर से निकला और सिर पर पैर रखकर भाग निकला।

वह भागता-भागता दो ऊंचे पहाड़ों के बीच की एक तंग घाटी में पहुंचा और पेड़ के तले गिरकर गहरी नीन्द में सो गया।

संयोगवश खान के घोड़े को सरपट दौड़ाता चोर भी उसी तंग घाटी में पहुँचा। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाकर सोचा कि वहाँ उसे किसी प्रकार का खतरा नहीं और सुबह तक वहीं रहने का फैसला किया।

उसने घोड़े को पेड़ से बांध दिया और खुद सोये हुए व्यक्ति को देखे बिना वहीं लेट गया और उसके खर्राटों से सारी घाटी गूंज उठी।

खर्राटों के शोर से गरीब की नीन्द खुल गयी और उसे काफी देर तक समझ में नहीं आया कि आवाज़ आ कहाँ से रही है। अन्त में उसे अपने करीब लेटा व्यक्ति और पेड़ से बंधा घोड़ा नज़र आ गये। अब कोई सन्देह न रहा — उसके सामने चोर और अरग़ामाक* थे। उसका दिल डर और खुशी के मारे धुकुर-पुकुर करने लगा।

उसने चुपचाप उठकर घोड़ा खोला और उछलकर काठी पर सवार हो, टिटकारी मार हवा से बातें करता खान के तम्बू-घर की ओर दौड़ पड़ा।

शोर हुए खान घोड़े की टापें सुन, जो पहने था उसी में, बाहर भाग निकला और अपने चहेते घोड़े को देखकर अपनी आंखों पर विश्वास न कर पाया। केवल जब वह घोड़े के पास पहुंचा और घोड़ा हिनहिनाने लगा, तभी जाकर उसे विश्वास हुआ कि वह उसी का घोड़ा है। खान ने खुशी से तुरन्त गरीब को वह सब देने की आज्ञा दे दी, जिसका वादा उसने किया था और उसपर विशेष अनुग्रह के प्रतीक स्वरूप उसे अपने साथ एक प्याला क़िमिज़ पीने का निमंत्रण दिया।

नौकरों ने खान के लिए तम्बू-घर में से रेशमी मसनदें निकालकर उसे सोने के प्याले में मादक ग्यूसमेन** दिया। गरीब खान से कुछ दूरी पर ज़मीन पर ही बैठ गया, नौकरों ने उसे लकड़ी के प्याले में आधा भेड़ का दूध पड़ी क़िमिज़ ढाल दी।

खान ने जब अपनी क़िमिज़ लगभग पूरी पी डाली, तो उसके प्याले में एक बड़ा-सा टिड्डा फुदककर घुस गया। खान ने उसे पकड़ना चाहा, पर वह फुदककर उसके हाथ पर से ज़मीन पर जा बैठा। खान ने उसपर हाथ रखकर पकड़ना चाहा, पर वह फिर

* अरग़ामाक — तेज व हल्के सवारी घोड़े की नस्ल।
** ग्यूसमेन — बढ़िया किस्म की क़िमिज़।

फुर्र से प्याले में जा बैठा। खान ने फुर्ती दिखायी, टिड्डे को पकड़ लिया और मुट्ठी में बंद कर लिया।

पर गरीब ने कुछ नहीं देखा।

"ऐ दिव्यदर्शी," खान गरीब से बोला, "मैं तुम्हारी अन्तिम बार परीक्षा लेना चाहता हूँ बताओ, मेरी मुट्ठी में क्या है?"

"बाप रे," गरीब ने सोचा, "अब तो मारा गया! अब खान मुझ पर दया नहीं करेगा!" उसने एक ठण्डी सांस लेकर जोर से कहा।

"एक बार बच गया, दूसरी बार भी बच गया, पर तीसरी बार, लगता है, मारा गया।"

लेकिन खान ने सोचा कि यह वह टिड्डे के बारे में कह रहा है।

"शाबाश, तुमने ठीक बताया!" खान ने कहा और टिड्डे का सिर काट दिया।

वह गरीब के उत्तर पर काफी देर तक हँसता रहा और फिर उसने उसे मूल्यवान भेंट देकर घर जाने की इजाजत दे दी।

तब से गरीब सुख-चैन से जीने लगा, जब कि उसके धनी भाई, उसकी सफलता की बात सुनकर दुख के मारे एक ही दिन मर गये।

तीन शिकारी

तीन शिकारी थे: दो दाढ़ीवाले, एक बेदाढ़ी।

एक बार वे चिड़ियों का शिकार करने स्तेपी में गये। वे दिन भर शिकार की खोज में भटकते रहे और केवल शाम होते होते एक द्रोफा* मार पाये।

फिर शिकारियों ने एक झोपड़ी बनायी, अलाव सुलगाया और शिकार को बांटने ही जा रहे थे कि दुविधा में पड़ गये द्रोफा तो केवल एक थी, जब कि वे तीन थे।

दाढ़ीवाले बोले:

"द्रोफा उसी को मिलेगी, जो सबसे ज्यादा देर तक चुप बैठा रहेगा, एक शब्द भी नहीं बोलेगा।"

"ठीक है," बेदाढ़ी ने मान लिया, "जैसी तुम्हारी इच्छा।"

तीनों अलाव के पास बैठ गये, ऐसे चुप्पी साध ली, मानो उनकी जबान पर ताले पड़े हों और केवल एक दूसरे की ओर देखते हुए इसी बात की प्रतीक्षा करने लगे कि पहले कौन बोलता है।

एक घंटा बीता, दो बीते, तीन घंटे बीत गये – पर किसी ने मुंह नहीं खोला।

तब बेदाढ़ी ने निःशब्द द्रोफा उठायी और उसके पर नोचने लगा।

दाढ़ीवाले उसकी ओर देखते रहे, पर उन्होंने चूं भी नहीं की।

बेदाढ़ी ने द्रोफा के पर नोचकर उसे चुपचाप देगची में डालकर आग पर चढ़ा दिया।

दाढ़ीवाले देखते रहे, पर उन्होंने चूं भी नहीं की।

द्रोफा पक गयी, बेदाढ़ी ने बिना कुछ बोले उसे देगची में से निकाला और जल्दी-जल्दी खाने लगा।

दाढ़ीवाले उसकी ओर देखते रहे, पर उन्होंने चूं भी नहीं की।

---

* द्रोफा – स्तेपी की एक बड़ी चिड़िया, जिसकी गर्दन लम्बी होती है और पैर काफ़ी मजबूत होते हैं।

9-297

और जब उसने आखिरी हड्डी चचोड़ डाली, तभी दाढ़ीवाले एक साथ चीख उठे "तुमने शर्त तोडकर द्रोफ़ा को खाने की हिम्मत कैसे की? यह तो लूटमार है!"

बेदाढ़ी हँसने लगा

"तुम लोग गुस्सा क्यो होते हो? क्या शर्त भूल गये? यही तो तय हुआ था कि जो सबसे ज्यादा देर चुप रहेगा, उसे ही द्रोफ़ा मिलेगी। है ना? तुम दोनो ही पहले गला फाड़कर चिल्लाये। है ना? यानी द्रोफ़ा मेरी हो गयी। फिर अब बहस करने की बात है क्या?"

दाढ़ीवाले दाढ़ी खुजलाने लगे। वे समझ गये कि वे बुद्धू बन गये। उन्हे खाली पेट ही सोना पड़ा।

अगले दिन शिकारियो ने दो कलहस और एक चहा मारे।

"हम शिकार का बटवारा कैसे करेगे?" दाढ़ीवालो ने पूछा।

बेदाढ़ी बोला

"तुम दो हो और मैं अकेला। कलहस भी दो है, पर चहा एक है। तुम चहा ले लो और मैं दो कलहस ले लेता हूँ। तब तुम भी तीन हो जाओगे और हम भी–तीन।"

"अरे, अरे," दाढ़ीवाले बोले, "लगता है, भई, तुम हमें बेवकूफ़ बनाना चाहते हो। हर कोई जानता है कि कलहस चहा से बेहतर होते हैं।"

बेदाढ़ी ने आख भी नहीं झपकाई।

"सच," वह बोला, "कलहस चहा से बेहतर होते है। पर तुम भी तो मुझसे बेहतर हो। इसीलिए तो मैं तुम्हे अपने बदले चहा लेने को कह रहा हूँ और खुद तुम्हारे बदले कलहस ले रहा हूँ।"

दाढ़ीवालो ने एक दूसरे से नजरे मिलायी–उन्हे लगा शायद बेदाढ़ी ठीक ही कह रहा है। उन्होंने अपनी दाढ़ी खुजलाई और एक ठण्डी सास लेकर चहा को खाने लगे।

जब कि बेदाढ़ी ने भरपेट कलहस का मास खाया।

तीसरे दिन शिकारियो ने एक हस मारा। उन्होंने उसके पर नोचकर उसे पकाया और देगची आग पर से उतार ली।

"अब हस का हम कैसे बांटेंगे?" एक दाढ़ीवाले ने पूछा।

"हम," दूसरा दाढ़ीवाला बोला। "हस को देगची मे पड़ा रहने देंगे और खुद सो जायेंगे। जिसे सबसे आश्चर्यजनक सपना दिखाई देगा, हस उसे ही मिलेगा।"

"ठीक है," बेदाढ़ी बोला, "जैसी तुम्हारी इच्छा।"

शिकारी लेट गये। बेदाढ़ी लेटते ही खर्राटे भरने लगा, जब कि दाढ़ीवाले आधी रात तक एक दूसरे से अधिक आश्चर्यजनक सपने गढ़ते हुए करवटे बदलते रहे।

सुबह बेदाढ़ी बोला

"अच्छा, अब सुनाओ अपने अपने सपने।"

पहला दाढ़ीवाला कहने लगा

"मुझे बहुत अद्भुत सपना दिखाई दिया। मुझे लगा जैसे मैं तुलपार* बन गया हूँ। मेरे कधो के नीचे पंख उग आये, पैरो की जगह चादी के खुर और कधो पर – सुनहरी अयाल। मैंने अयाल झटकारी, पंख फड़फड़ाये, खुर जमीन पर मारे और तीन छलांग मे एक छोर से दूसरे छोर तक सारी स्तेपी पार कर ली। तभी एक अतिसुन्दर अपरिचित शूरवीर मेरे सामने आ खड़ा हुआ। वह मेरी पीठ पर सवार हो गया और मैं अपनी पीठ पर बलवान सवार को बैठा महसूस कर इतना ऊँचा उड़ गया कि वहाँ से जमीन दिखाई देना बद हो गया। मेरा सिर चकरा गया और मेरी नींद खुल गयी।

दूसरा दाढ़ीवाला सुनाने लगा

"तुम्हारा सपना अच्छा है, दोस्त, पर मेरा – उससे भी अच्छा है। मैंने सपने में देखा कि मैं वही अतिसुन्दर अपरिचित शूरवीर हूँ। अचानक तुम तुलपार में बदलकर मेरे पास भागकर आये। मैं उछलकर तुम्हारी पीठ पर सवार हो गया, तुम्हारी अयाल पकड़ ली और आकाश में उड़ चला। हम आकाश में हवा से बातें करते हुए बहुत दूर पहुँच गये – आगे सूरज, पीछे चाद, पैरो तले तारे, बिजलियाँ, बादल। सिर पर चारों ओर शानदार कपड़े पहने परियाँ उड़ रही थीं। वे मुझ पर बहुमूल्य उपहार लुटा रही थीं, पर मैं उन्हें पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाता तो कोई भी हाथ नहीं आती थी और न ही मैं तुलपार को रोक पा रहा था। तभी मेरा सपना टूट गया। इसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ मालूम नहीं।

तब बेदाढ़ी बोला

"तुम्हारे सपने अच्छे हैं, दोस्तो, बहुत अच्छे। मैं [illegible] कर सकता हूँ। मुझे सपने में दिखा जैसे हम तीनों इस झोंपड़ी में [illegible] और अचानक तुम में से एक तुलपार बन गया और दूसरा अपरिचित अतिसुन्दर शूरवीर। तुलपार ने अयाल झटकारी, पंख फड़फड़ाये, खुर जमीन पर मारे और तीन छलांग में एक छोर से दूसरे छोर तक सारी स्तेपी पार कर गया। तभी न जाने कहाँ से उसके सामने एक अपरिचित शूरवीर आ पहुँचा, उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गया और आकाश में उड़ चला। मैं फूट-फूटकर रोने लगा। 'आह,' मैंने मन में कहा, 'अब मेरे दोस्त शायद जमीन पर लौटकर नहीं आयेंगे, और हम की उन्हें अब कोई जरूरत नहीं रह गयी है। कम से कम मैं कुछ खाकर उन्हें याद तो कर लूँ।' मैंने दुख के मारे पूरा हम खा डाला।

"तुम क्या कह रहे हो!" दोनों दाढ़ीवाले एक साथ चिल्ला उठे। "यह नहीं हो सकता!"

उन्होंने देगची में झांककर देखा, उसमें केवल हम की हड्डियाँ पड़ी थीं।

---

* तुलपार – परी-कथाओं का उड़नेवाला घोड़ा।

नेकी और बदी

बहुत दिन हुए दो आदमी थे – जक्मीलिक* और जमनदिक**।

एक बार जमनदिक लम्बे सफ़र पर रवाना हुआ। वह चलता रहा, चलता रहा और बहुत थक गया। एक बांका नौजवान घोड़े पर उसके पास पहुँचा। वह बांका नौजवान और कोई नहीं, जक्मीलिक था। मालूम पड़ा, उन दोनों का रास्ता एक ही है।

"मुझे अपने साथ ले चलो," जमनदिक ने विनती की, "तुम्हारा घोड़ा अच्छा है, वह हमें पहुँचा देगा। साथ रहने से सफ़र भी हंसी-खुशी कट जायेगा।"

"ठीक है, मुझे मंजूर है," जक्मीलिक बोला, "पर एक शर्त है हम बारी-बारी से सवारी करेंगे। तुम्हें वहां पेड़ दिखाई दे रहे हैं? तुम वहां घोड़ा छोड़कर आगे पैदल जाओगे और मैं घोड़े पर सवार होकर। फिर तुम्हारी सवारी करने की बारी आ जायेगी। तुम खुद ही सोचो, हम दोनों को घोड़ा एक साथ नहीं ढो सकेगा।"

जमनदिक मान गया। वह घोड़े पर सवार हो उसे सरपट दौड़ा ले चला।

जक्मीलिक काफ़ी देर तक पैदल चलता रहा। दिन ढलने लगा और रास्ते के दोनों ओर अंधेरा घना जंगल दिखाई देने लगा, पर न घोड़ा कहीं नज़र आया, न ही जमनदिक।

यानी वह आदमी जक्मीलिक को धोखा दे गया।

यही हुआ था। जमनदिक आंखों से ओझल होकर मज़े से वहां पहुँच गया, जहां उसे जाना था। 'पेट भरे के खोटे चाले," क्षमाशील जक्मीलिक ने सोचा।

उसे जंगल में एक उजड़ी पड़ी झोंपड़ी दिखाई दी और वह सुस्ताने के लिए उसमें घुस गया।

झोंपड़ी में सन्नाटा था, किसी का नाम-निशान न था। केवल बीचोंबीच सुलगते अलाव पर बड़ा-सा देग रखा था और देग में मांस पक रहा था। जक्मीलिक हैरान हो

---

* जक्मीलिक – नेकी।

** जमनदिक – बदी।

गया "सारी झोंपड़ी में इतनी सौंधी-सौंधी गंध फैली हुई है, पर मालिक का नाम नहीं। आखिर यहाँ कौन रहता है?"

"ज़रा चखकर देखूँ!" जस्मीलिक ने कहा।

उसने देग में उंगली डुबोकर चाटी और मन ही मन सोचा, बहुत स्वादिष्ट है! पर उसने खाना नहीं खाया – वह मालिक को नाराज़ नहीं करना चाहता था।

जस्मीलिक झोंपड़ी की छत पर आराम की जगह ढूंढकर लेट गया।

कुछ समय बाद झोंपड़ी में तीन प्राणी आये, भेड़िया, लोमड़ी और शेर। भेड़िये की आँखें मशाल की तरह जल रही थीं, शेर अपनी अयाल झटकार रहा था, गुस्से में दहाड़ रहा था, जब कि लोमड़ी चलती नहीं, तैरती-सी आ रही थी, बस हर कदम पर मुंह उठाकर सूंघती चल रही थी।

'हाय, हाय! किसी ने हमारा खाना चखा है!' लोमड़ी देग के पास पहुँचने से पहले ही परेशान हो उठी।

'तुम क्या कह रही हो, लोमड़ी, यहाँ कौन आ सकता है, हमारा खाना कौन खायेगा! तुम्हें बस ऐसा लगा है।'

लोमड़ी शान्त हो गयी। वे तीनों देग के इर्द-गिर्द बैठ गये और खाने लगे। खाना खाकर भेड़िया, लोमड़ी और शेर अपने दिन भर के जोखिमभरे कारनामे एक दूसरे को सुनाने लगे।

"तुम आज कहाँ-कहाँ गयीं, तुमने क्या-क्या देखा और कौन-कौन सी मज़ेदार बातें सुनीं?" भेड़िये और शेर ने लोमड़ी से पूछा।

लोमड़ी बोलने में कंजूस नहीं थी।

"पिछले कई दिनों से मैं जाड़े के पुराने पड़ाव के खण्डहरों में जा रही हूँ। वहाँ [illegible] के सिक्कों से भरा एक छोटा-सा घड़ा गड़ा हुआ है। मैं किसी भले आदमी के लिए उसकी रखवाली कर रही हूँ।"

भेड़िया भी अपनी भलमानसी के बारे में बताने लगा।

"ऐसा कोई दिन नहीं रहा, न ही रात, जब मैं बाय के भेड़ों के रेवड़ में न गया होऊँ," उसने सुनाना आरम्भ किया। "उनमें एक चितकबरी भेड़ खास तौर से अच्छी है, मैं उसी को नहीं छूता। उन भेड़ों के मालिक की एक सुन्दर बेटी है। वह कई बरसों से बीमार है और कोई उसका इलाज नहीं कर पा रहा है। बाय ने बेटी की शादी उस आदमी से करने का वादा किया है, जो उसका इलाज कर दे, पर कोई उसका रोग नहीं खोज पाता। हालांकि ऐसी दवाई है। अगर चितकबरी भेड़ का दिल निकालकर [illegible] और उस लड़की को खिलाया जाये, तो वह पहले जैसी स्वस्थ हो जायेगी। पर मैं मालिक पर नाराज़ हूँ, वह कई बार मेरे पीछे कमन्द लेकर भाग चुका है, और चितकबरी भेड़ के बारे में मैं किसी को नहीं बताऊँगा।"

शेर ने अपनी आप-बीती सुनाई :

"मैं रोज रात को दबे पाव बाय के घोडो के झुण्ड मे जाता हूँ, एक घोड़े को मारकर उठा ले जाता हूँ और खाकर घर लौट आता हूँ। घोड़ों के मालिक को मालूम नहीं है कि घोडे कौन ले जाता है। हाल ही मे उसने गाव के सारे लोगों को इकट्ठा करके उनके साथ देर तक बातचीत की और घोडो का सारा झुण्ड उस आदमी को देने का वादा किया, जो घोडो के चोर को पकड ले। पर मैं बिलकुल नही डरता। बाय का कोई भी घोडा मुझसे तेज नही भाग सकता। वैसे झुण्ड मे एक छोटा-सा बछेडा है। उसके माथे पर सफेद तारा है। सिर्फ वही मुझे दौड मे पछाड सकता है। लेकिन मालिक को इस बारे मे कुछ मालूम नही है।"

जी भरकर बात कर लेने के बाद वे ऊघने लगे, पर शीघ्र ही जाग गये और सब अपने-अपने काम करने चले गये।

जक्सीलिक छत पर लेटा-लेटा उनकी बाते ध्यानपूर्वक सुनता रहा और भेड़िये, लोमडी व शेर के झोपडी छोडकर जाते ही वह भी चला गया।

जक्सीलिक बख्सी की पोशाक पहनकर उस गाव मे से गुज़रने लगा, जिसमे बाय व उसकी बेटी रहते थे। बख्सी को देखते ही बाय उसकी मिन्नत करने लगा

"खुद अल्लाह ने तुम्हे हमारे गाव मे भेजा है! तुम पोशाक से भले ही गरीब हो, पर अक्ल के धनी हो! जरा आकर मेरी बेटी को देख लो।"

जक्सीलिक ने निःशब्द सहमति प्रकट की और रूपवती को देखकर पूछा

"तुमने इसका इलाज क्यो नही करवाया?"

"कराया था, प्यारे बख्सी, कराया था। लेकिन ऐसी कोई दवा अभी तक नहीं मिली, जो मेरी बेटी को इस रोग से छुटकारा दिलवा सके। शायद तुम्हारी दया मे मुझे ऐसी दवा मिल जाये।"

"मैं तुम्हारा दुख दूर करने मे तुम्हारी मदद कर सकता हूँ," जक्सीलिक ने कहा, "तुम्हारी बेटी का इलाज तो मैं कर दूँगा, पर तुम्हे इसकी शादी मुझसे करनी होगी।"

बाय ने स्वीकार कर लिया।

"लेकिन एक बात याद रखो," जक्सीलिक आगे बोला, "आज तुम्हारा मेहमान कोई ऐसा-वैसा आदमी नही, बडा आदमी है। तुम्हे उसके लिए चितकबरी भेड काटनी होगी।"

बाय ऐसे चौक उठा, जैसे किसी ने उसके सूई चुभो दी हो, चूंकि वह कंजूस था और चितकबरी भेड उसके रेवड़ की सबसे मोटी भेड थी। पर अब कुछ किया नहीं जा सकता था, उसने चितकबरी भेड काटने, उसका मास बचा रखने और आत आदि मेहमान के लिए पकाने का आदेश दिया।

जक्सीलिक बाय की चालबाजी भाप गया, पर उसे भेड के भीतरी अग ही तो चाहिए थे।

लड़की को दिल खिलाकर जक्सीलिक ने उसे ठीक कर दिया और उसे अपने साथ ले गया।

इसके बाद उसने जाड़े का वह पुराना पडाव खोज लिया, जिसका जिक्र लोमडी ने किया था, वहा जमीन खोदकर चादी के सिक्को से भरा घडा निकाल लिया और उस बाय के यहा चल दिया, जिसका रोजाना एक घोडा गायब हो रहा था।

"अगर मैं उस चोर को पकड लूँ, जो रोज रात को तुम्हारे झुण्ड मे एक-एक घोडा चुरा ले जाता है, तो मुझे क्या दोगे?" जक्सीलिक ने पूछा।

"अगर तुम चोर को पकड़ लोगे, तो मै घोडो का साड तुम्हे दे दूँगा।"

"ठीक है," जक्सीलिक ने कहा।

वह घोडो के झुण्ड मे गया और उसमे से माथे पर सफेद तारेवाला बछेडा लेकर इन्तज़ार करने लगा।

शेर ने जैसे ही घोडे को दबोचा, वैसे ही जक्सीलिक बछेडे पर उछलकर सवार हो उसका पीछा करने लगा। उसने शीघ्र ही शेर तक पहुँचकर उसे मार डाला।

अगले दिन साड-घोडा लेकर जक्सीलिक अपने घर चला गया।

जक्सीलिक को जगल की झोपडी मे गये काफी समय बीत गया। एक बार उसकी भेट फिर जमनदिक से हो गयी।

जमनदिक भिखारी जैसा दिख रहा था। वह फटा-पुराना चोगा और वैसी ही फटी हुई टोपी पहने हुआ था, जिसमे से हर दिशा मे गदी रूई के चिथडे निकले हुए थे।

"ओह जक्सीलिक, मैंने तब तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया।" जमनदिक ने कहा। "पर सब उल्टा हो हुआ, तुम खुद देख रहे हो। मुझे बताओ, जक्सीलिक, तुम इतने मालदार कैसे हो गये? क्या मैं भी ऐसा हो सकता हूँ?"

जक्सीलिक ने उसे सब सिलसिलेवार सुना दिया कैसे वह झोपडी मे पहुँचा, कैसे उसने लोमडी, भेड़िये और शेर की बातचीत सुनी और उसके बाद उसने क्या किया।

"ठीक है, अपनी किस्मत आजमाओ," अत मे जक्सीलिक ने कहा। "लेकिन मुझे चेतावनी दिये देता हूँ: झोपडी मे पहुँचकर बहुत होशियार रहना। अगर देग मे मा पक रहा हो, तो तुम उसे खाओ नही। केवल उगली डुबोकर चख लेना। फिर छत पर चढ़कर वहीं तब तक लेटे रहना, जब तक कि झोपडी के वासी आ न जाये और जब आपस मे बातचीत करने लगे, तुम ध्यानपूर्वक सुनकर याद कर लेना।"

जमनदिक ने बिना एक क्षण की देर किये जक्सीलिक से विदा ली और जगल चल दिया। उसने झोपड़ी जल्दी ही ढूढ ली, उसमे घुसा और उसने वहा सब वैसा पाया, जैसा कि जक्सीलिक ने बताया था।

झोपड़ी के बीचोंबीच जलते अलाव पर बड़ा-सा देग रखा था और देग में गोश्त पक रहा था। थका हुआ और भूखा जमनदिक यह देखकर बहुत खुश हुआ कि झोपड़ी में कोई नहीं है।

"झोपड़ी के मालिक आस-पास कहीं है ही नहीं, इसलिए उन्हें कुछ पता नहीं चलेगा," जमनदिक ने सोचा और देग के पास जमकर बैठ गया। उसने चर्बीदार मांस के कुछ कतले निकालकर जल्दी से खा लिये और गुस्लाने के लिए झोपड़ी की छत पर जा चढ़ा।

जमनदिक भरपेट खाने के बाद ऊघने भी न पाया था कि भेड़िया व लोमड़ी झोपड़ी में आ पहुँचे। लोमड़ी ने देग पर नज़र डाली और लगी चिल्लाने

"हाय, हाय, हमारा खाना कोई खा गया!"

भेड़िया लोमड़ी को सान्त्व करने लगा

"हमारा खाना कौन खा सकता है! खुद ही सोचो हमारी झोपड़ी ही इतने घने जगल में है कि हम खुद बड़ी मुश्किल से रास्ता ढूढ पाते हैं। तुम बेकार ऐसा सोचती हो।"

"नहीं, नहीं, इस बार मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता! तुम इधर देखो, इधर! देग में टखने की हड्डी है? नहीं है! छाती का गोश्त भी गायब है। मैं अभी सो जाती हूँ," चालाक लोमड़ी बोली, "और सपने में मुझे दिखाई दे जायेगा कि हमारी झोपड़ी में कौन आया था।"

लोमड़ी पापलर की डाल पर लेटकर धीरे-धीरे खर्राटे लेने लगी, जैसे सचमुच सो रही हो, जब कि जमनदिक छत पर मृतप्राय लेटा रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह अपने आपको खाने का लोभ सवरण न कर पाने के लिए कोस रहा था।

लोमड़ी जागकर बोली

"सुनो, दोस्त, हमारी छत पर कोई है। कहीं हमारा खाना उसी ने तो नहीं खाया है?"

लोमड़ी और भेड़िया लपककर छत पर चढ़ गये और वहा उन्होंने जमनदिक को देखा। वे उसे नीचे घसीट लाये और आधा-आधा बाटकर खा गये।

धनी और निर्धन

नीलम चिड़िया

बहुत दिन पहले दो भाई थे। छोटे भाई के कोई सन्तान नही थी, वह बड व्यापारी था और सुखी जीवन व्यतीत करता था। बडा भाई निर्धनता मे जीवन-यापन करता था, उसकी एकमात्र खुशी थे उसके दो बेटे – हसन और हुसैन।

गर्मियो मे जैसे ही जगली बेरिया पकने लगती, हसन और हुसैन उन्हे चुनने च पडते। मा बेरिया बाजार ले जाकर बेचती। सारा परिवार इसी से गुजर-बसर करता था

एक बार दोपहर मे, जब चारो ओर शान्ति छायी हुई थी, जब परछाईं सब छोटी पड़ रही थी और चिलचिलाती धूप की चकाचौंध के कारण यह देख पाना मुश्कि था कि नदी मे पानी बह रहा है या नही, हसन और हुसैन नदी के किनारे-किनारे भाडियो मे से होकर चल रहे थे। अचानक उनके पैरो के पास से एक अप्रत्याशित सुन्दर नील चिडिया निकलकर उड गयी। लडके उसे भली-भाति देख भी न पाये थे कि वह उडक काफी ऊचाई पर जा पहुँची और शीघ्र ही आखो से ओझल हो गयी। तब हसन औ हुसैन उसका घोसला खोजने लगे और उसे जल्दी ही ढूढ लिया। घोसले मे नीली धारियो वाले सफेद अण्डे पडे थे। लडको को बहुत तेज भूख लगी थी और वे अण्डे मिलने पर बहु खुश हुए। किंतु अण्डे इतने छोटे थे कि हसन और हुसैन ने फैसला किया "अगर ह इन्हे खा भी ले, तो फायदा कम ही होगा। इन्हे धनी चाचा के पास ले जाना बेहतर होगा।" वे बिना घर मे झाके चाचा के यहा गये और उससे पूछा कि क्या वह नीलम चिडिय के नीली धारियोवाले सफेद अण्डे खरीदेगा।

"तुम इन्हे कहा से लाये?" चाचा ने पूछा।

"मैदान से, जहा हम झड़-बेरी चुन रहे थे," भाइयो ने उत्तर दिया। चाचा ने अण्डे ले लिये और हसन व हुसैन को आश्चर्यचकित कर सौ रूबल दिये फिर बोला

"अगर तुम चिडिया को पकड लाओ, तो मैं तुम्हे दो सौ रूबल और दूँगा।"

चाचा को नीलम चिड़िया क्यों चाहिए थी हसन और हुसैन को मालूम न था, पर उन्होंने बिना कुछ सोचे जाल उठाया और उस स्थान के लिए रवाना हो गये जहां उन्होंने चिड़िया देखी थी। उन्होंने घोंसला ढूंढकर उस पर जाल फैलाया और दूर झाड़ियों में छिप गए।

कुछ समय बाद चिड़िया आयी। उसने अगल-बगल देखा और फुदककर घोंसले में बैठते ही जाल में फंस गयी। बच्चों को उस अद्भुत नीलम चिड़िया पर किसी तरह दया न आयी, पर फिर भी वे उसे चाचा के पास ले गये। साधारणतः कंजूस चाचा ने इस बार अपना वादा निभाया (शायद चिड़िया उसके लिए बहुत मूल्यवान थी!) और हसन व हुसैन को दो सौ रुपये लाकर तथा कपड़े दे दिये। भाई सारी चीजें घर ले आये।

पर [illegible] परिवार अधिक दिन सुखी न रह सका।

नीलम चिड़िया का चित्र

उसने सुबह पडोसी से घोडागाडी मागी, उसमे बच्चो को बिठाया और कहा:

"आज मैं तुम्हे ऐसी जगह छोड आता हूँ, जहां ढेर सारी बेरिया हैं। मैं शाम को आकर तुम्हे ले जाऊगा, इस बीच तुम्हें एक बोरी भड-बेरी इकट्ठी कर लेनी चाहिए।"

वे काफी देर तक स्तेपी मे चलते रहे और अन्त मे एक घने जगल के छोर पर पहुँच गये। पेडो के तनो के बीच भाडिया आपस मे गुथी हुई थी और लडको को वहा ढेरो बेरिया लगी दिखाई दी।

"लो, बेटो, तुम यहा रुककर भड-बेरिया इकट्ठी करो।"

पिता इसके आगे कुछ न कह सका और पलटकर रोता हुआ घोडागाडी के पास लौट गया। उसने लौटकर सोना अपने छोटे भाई को दे दिया और उसके कहे अनुसार इस प्रकार जिनो से पिण्ड छुडा लिया।

हसन और हुसैन काफी देर तक भड-बेरिया इकट्ठी करते रहे, उन्होंने पूरी बोरी भर ली। फिर वे बैठकर पिता की प्रतीक्षा करते हुए सुस्ताने लगे। पर पिता आया ही नही। भाइयो को रात जगल मे ही गुजारनी पडी।

सुबह उनकी नीन्द खुली, देखा – फिर उनके सिरो के नीचे एक-एक बोरी अशरफियो से भरी रखी है। भाइयो ने उसे छुआ भी नही और जगल मे भटकने लगे। उन्हे रास्ते मे घोडे पर सवार एक बूढा शिकारी मिला।

"सलाम, बाबा!" दोनो भाइयो ने एक साथ कहा।

"सलाम, बच्चो! तुम कहा से आ रहे हो और कहा जा रहे हो?"

"कहा से आ रहे हैं, नही जानते, जगल बहुत बडा है, पर पहला आदमी मिलने तक जा रहे हैं। जिसके कोई बेटी न हो – उसके लिए हम बेटियों की तरह रहेंगे, जिसके बेटा न हो – उसके लिए बेटे की तरह।"

"मेरे बच्चे नही हैं, तुम मेरे बेटे हो जाओ। मेरे यहा चलोगे?"

"चलेंगे," लडको ने सहमति व्यक्त की।

बूढा भाइयों को घोडे पर बिठाकर बोला

"तुम चलो, घोडा खुद तुम्हे मेरे घर पहुँचा देगा।"

भाइयों ने बूढे का धन्यवाद किया

"बाबा," वे बोले, "जहा हम सो रहे थे, वहा अशरफियो की दो बोरिया पडी हैं।"

हसन और हुसैन काफी समय तक बूढे शिकारी के पास रहे। वे जगल के जीवन के अभ्यस्त हो गये तीरदाजी मे दक्ष हो गये और अनुभवी व साहसी शिकारी बन गये। कभी का गरीब बूढा उस समय तक आस-पास के इलाको मे सबसे धनी आदमी हो गया।

भाई सब कुछ बडे हुए, उनके तकियो के नीचे सोना मिलना बद हो गया। एक बार व काफी देर तक आराम मे बातचीत करते रहे और उन्हे अपना सारा जीवन स्मरण हो आया।

"किसी ने ठीक ही कहा है, हुसैन, कि कुत्ता कही भी क्यो न भटक जाये हमेशा उसी जगह लौट आता है, जहा उसे मासवाली हड्डी मिली है, और इनसान हमेशा उसी जगह लौटने को तडपता है, जहा उसका जन्म हुआ था। चलो, हुसैन, अपने माँ-बाप को ढूढने चले!"

"जैसा मेरा भाई सोचता है, वैसा ही मैं। तुम जिधर–मैं भी उधर," हुसैन ने जवाब दिया। "चलो!"

वे बूढे से विदा लेने उसके पास गये। बूढे शिकारी को बाके नौजवानो पर दया आयी, वह बोला

"मैं तुम्हे पशुओ का झुण्ड दे सकता था, पर देखता हूँ, तुम्हे उसकी जरूरत नही है। तुम्हारी यात्रा शुभ हो और सफलता तुम्हारे कदम चूमे!"

बूढे ने हसन और हुसैन को एक-एक बढिया घोडा दिया और वे रवाना हो गये।

सात सिरवाला साप

भाई पूरे महीने यात्रा करते रहे और अन्त मे उन्होने देखा कि वे एक दोराहे पर पहुँच गये है।

"यहाँ हमारे रास्ते अलग-अलग हो जायेगे," हसन ने कहा, "तुम दायी ओर जाओ और मैं बायी ओर जाता हूँ।"

"ठीक है" हुसैन ने कहा। "हम कही भी क्यो न जाये, वापस लौटकर यही मिलेगे।"

उन्होने दोराहे के नुक्कड पर लकडी की मूठवाला छुरा जमीन मे गाड दिया।

"हम मे से कोई मर जाये या जिन्दा रहे, यह छुरा बता देगा," हसन ने कहा। "अगर हममे से कोई मर जाये, तो मूठ का उसके रास्ते की तरफ का आधा हिस्सा जल जायेगा।"

एक दूसरे से विदा लेकर भाई भिन्न-भिन्न दिशा मे चल पडे।

अब हुसैन को अपने रास्ते पर आगे बढने दीजिये और हसन का किस्सा सुनिये।

हसन जब कई गुल्म-वन पार करके खुली स्तेपी मे पहुँचा, उसे अपने सामने एक बडा शहर फैला हुआ मिला।

हसन ज्यो-ज्यो शहर के निकट पहुचता गया, त्यो-त्यो उसका आश्चर्य बढता गया उसे हर जगह काले झण्डे, घरो के चारो ओर लटकी बडी-बडी काली चादरे दिखाई दे रही थी।

"आपके शहर मे शोक क्यो मनाया जा रहा है?" हसन ने रास्ते मे मिली एक बुढिया से पूछा।

"लगता है तुम हमारे शहर के नहीं हो," बुढ़िया ने उत्तर दिया। "अगर जानना चाहते हो तो बताती हूँ। हमारे यहाँ सात सिरवाला एक मरभुक्खा साँप आन लगा है। वह रोज एक लड़की और एक खरगोश खा जाता है। आज साँप का खान की बेटी खिरामान की बारी है। खान ने सारे में मुनादी करवा दी है जो भी साँप को मार देगा और खानशाइम को बचा लेगा वह उसी से उसकी शादी कर देगा। लेकिन शहर में ऐसा कोई दिलेर अभी तक नहीं मिला है इसलिए खान ने सारे शहर में काले झण्डे लगाने का हुक्म दिया है।

हसन सीधा खान के पास गया। खान महल में नहीं मिला, पर हसन ने खान के शयनकक्ष से लगे कमरे में एक बंधा हुआ खरगोश और अभूतपूर्व सौन्दर्य की स्वामिनी युवती को देखा। उसकी काली-काली लटियाँ उजबेकी रेशम जैसी थीं और आँखें प्रखर रविरश्मियों की तरह चमक रही थीं। हसन को देखते ही खानशाइम चौंक उठी।

"डरो मत," हसन ने उसको शान्त किया। "मैं तुम्हें साँप से बचा लूंगा। लेकिन तुम इसके बदले में मुझे क्या इनाम दोगी?"

"यदि तुम मुझे मुक्त करा दोगे, तो मैं तुमसे शादी करूँगी।"

हसन थोड़ी देर सोच-विचार कर बोला

"मैं बहुत दूर से आया हूँ और थक गया हूँ। मैं लेटकर सुस्ता लेता हूँ, जब साँप आये, तुम मुझे फौरन जगा देना।"

हसन गहरी नीन्द में सोया हुआ था कि अचानक कुछ खट-खट, धड़-धड़ हुई और दरवाजा झट से खुल गया। खानशाइम देहलीज पर साँप का एक सिर, फिर दूसरा, तीसरा, पूरे सात सिर देखकर भय के मारे जड़वत् रह गयी।

पर हसन गहरी नीन्द में सो रहा था। उसकी नीन्द लड़की की चीखों से भी नहीं खुली। खानशाइम हसन के ऊपर झुककर फूट-फूटकर रोने लगी। आँसुओं की गरम-गरम मोटी-मोटी बूंदें हसन के चेहरे पर टपकने से उसकी नीन्द खुल गयी।

हसन ने जागते ही अपने सामने साँप को देखा। कमर पर बंधी भारी तलवार खींचकर उसने वार किया और साँप के सातों सिर एक ही वार में कटकर दूर जा गिरे।

खानशाइम ने अपनी सोने की अगूठी उतारकर हसन को दे दी और वह महल से चला गया।

उसी समय संयोगवश खान के वजीर ने दरवाजे से झाका। युवती को जीवित और साँप को मरा देखकर वजीर को आश्चर्य हुआ, किन्तु एक क्षण में वह समझ गया कि उसके खान की नजरों में चढ़ने का अवसर आ गया है। लड़की के सामने आये बिना ही वह वहाँ से निकलकर फौरन खान के सामने अप्रत्याशित शुभ समाचार देने हाजिर हो गया।

"मैंने खुद अपने हाथों से साँप को मारकर खानशाइम को बचा लिया है!" वजीर बोला। "अपना वादा पूरा करके, खान, खानशाइम की शादी मुझसे कीजिये!"

"ऐसा ही हो!" खान ने उत्तर दिया।

उसने सफेद झण्डे फहराने और घरो को सफेद चादरो से सजाने की आज्ञा दे दी, जिससे सारी प्रजा को मालूम हो जाये कि सात सिरवाला साप मारा गया और खान की पुत्री के प्राण बच गये। इसके बाद खान ने अपनी बेटी की निकाह की रस्म अदा करने के लिए सारे मुल्लाओ को मसजिद मे बुलवाया।

हसन ने भी वज़ीर को साप पर अपनी विजय के बारे मे डीग मारते हुए सुन लिया। उसने वज़ीर की ओर उगली उठाकर कहा

"यह झूठा और कायर है! यह अपनी बात की सच्चाई किस तरह साबित कर सकता है? साप को मैंने मारा है, न कि इसने!"

सारे लोग मुडकर हसन की ओर देखने लगे।

"तुम इसे कैसे साबित कर सकते हो?" वज़ीर ने घमड भरी आवाज मे पूछा।

"मेरे पास इसका सबूत है," हसन ने कहा और अपनी जेब से अगूठी निकालकर एकत्र लोगो को दिखा दी।

"उसने खानशाइम की यह अगूठी चुरा ली है!" वज़ीर गुर्राया।

"अगर साप को तुमने मारा है," हसन ने कहा, "तो इसका मतलब है, तुम उसकी लोथ उठाकर खिडकी से बाहर फेक सकते हो।"

वज़ीर ने मरे साप को उठाने की कितनी ही कोशिश क्यो न की, पर वह उसे टस से मस भी न कर सका। जबकि हसन ने उसे बडी आसानी से उठाकर खिडकी से बाहर नदी मे फेक दिया, तभी हसन को देखकर खानशाइम ने, जिसे खान ने बुलवा लिया था, कहा:

"मुझे इस बाके नौजवान ने बचाया है और अगूठी खुद मैंने इसे दी है।"

खान ने वज़ीर को महल से निकाल दिया और हसन से अपनी पुत्री का विवाह करके उसे अपना मुसाहिब बना लिया।

हसन कुछ ही दिनो मे खान के महल और उसके भव्य कक्षो मे रहते-रहते ऊब गया और शिकार पर अकसर अकेला जाने लगा। एक बार वह तपती दोपहर मे नदी के किनारे-किनारे घोडे पर जा रहा था। उसके साथ-साथ एक शिकारी कुत्ता भाग रहा था। हसन ने बेद के वृक्ष की एक टहनी तोड, उससे घोडे को हाकने लगा। अचानक तेज़ हवा चलने लगी। ठण्ड पडने लगी और तीव्र हिमपात होने लगा। हसन तेज़ हवा और बर्फ मे बचने और बदन गरम करने के लिए स्थान खोजने लगा और उसे एक अकेला स्प्रूस का ऊँचा वृक्ष दिखाई दे गया। हल्की बर्फ से ढका वह विशाल तम्बू-घर-सा लग रहा था। हसन ने घोडे व कुत्ते को उसके नीचे खडा कर दिया और खुद टहनिया तोड, अलाव जलाकर तापने लगा। तभी उसे पेड पर घनी शाखाओ के बीच एक बुढिया बैठी दिखाई दी – वह बैठी-बैठी फूट-फूटकर रो रही थी, लगा जैसे बर्फ का तूफान चीख रहा हो।

हुसैन ने बुढ़िया को देखा और अचानक उसका माथा ठनका। हुसैन ने बुढिया को जादुई छड़ी उठाने नहीं दिया, वह पत्थर से, जिस पर बैठा था, उतरा और बन्दूक उठाकर बोला

"चलो, नीचे उतरो, वरना गोली मार दूँगा।"

बुढिया डर के मारे थर-थर कापती नीचे उतर आयी।

"लगता है, तुम यह जानते हो कि मेरा भाई कहाँ है। बताओ, वरना मैं तुम्हे मार डालूंगा।"

"जिस पत्थर पर तुम बैठे थे, वही तुम्हारा भाई है," बुढिया ने उत्तर दिया। "वज़ीर ने मुझे उसे यहाँ लुभाकर लाने और मार डालने का हुक्म दिया था। मुझ पर दया करो, मैं तुम्हें तुम्हारा भाई लौटा दूगी। तुम स्प्रूस की टहनियो मे छिपायी छडी निकालकर उसे इन पर फेरो।"

हुसैन ने वैसा ही किया – और पलक झपकते उस पत्थर का स्थान, जिस पर वह बैठा था, उसके भाई ने ले लिया। यह वर्णन करना कठिन है कि लम्बे बिछोह के बाद मिलने पर भाई कितने खुश हुए।

माता-पिता से पुनर्मिलन

हुसैन हसन के यहाँ काफी दिनो तक रहा और एक दिन वह बोला

"अब, हसन, तुम्हे वह बात याद दिला दूँ, जो तुमने मुझसे बूढे शिकारी के घर मे कही थी: 'कुत्ता वह जगह ढूढता है, जहाँ उसे भरपेट खाने को मिलता है, जब कि इनसान – जहा उसका जन्म हुआ था'। तुम्हारा क्या विचार है, हमे अपने मा-बाप को ढूढने निकलने का समय तो नही आ गया है?"

"हालाकि तुमने वह कहावत ठीक से नही दोहराई, फिर भी मैं तुमसे सहमत हूँ। अगर हम अपने माता-पिता को जीवित देखना चाहते हैं, तो हमे उनकी तलाश अब टालनी नहीं चाहिए।"

उन्होंने जैसी ठानी, वैसा ही किया। हसन व हुसैन पहले व्यापारी काफिले के साथ यात्रा पर निकल पडे और त्योहार के दिन अपने शहर के हाट-बाजार मे पहुँच गये। वहाँ उन्हे उनका चाचा – धनी व्यापारी मिला। वह माल लेकर आये बडे कारवा से मिलने के लिए दुकानो के सामने से गुजर रहा था। चाचा ने भतीजो को नही पहचाना, पर जब उन्होंने अपने नाम बताये, वह तुरन्त उनकी चापलूसी, खुशामद करने लगा और उनके हाथ चूमने तक को तैयार हो गया।

"पर हमारे मा और बाप कहाँ हैं?" हसन और हुसैन ने एक साथ पूछा।

"यहीं, इसी शहर मे है। लेकिन तुम्हे बूढे-बुढिया की क्या जरूरत पडी है, जिन्हे देखना काफी दिन हुए बद हो चुका है? तुम लोग तो काफी धनी हो," चाचा ने कहा।

10-297

तेपेन कोफ

पहले एक गाव म एक कजूस बाय रहता था। उसके तीन व्यस्क बेटे
बेटों में से कोई भी शादीशुदा नहीं था।
की शादिया करने म मैं बिलकुल दिवालिया हो जाऊँगा बाय सोचा करता
हन के लिए मुझे महर की मोटी रकम देनी पड़ेगी मैं ऐसा नहीं कर सकता।
जिसे अपना घरबार त्याग है यही करता बाय अपने गाववालों के सामने
पेश किया करता था।
बार भाई मिलकर बैठे और अपनी जिन्दगी और दुर्भाग्य के बारे म बातचीत
बड़े और मझले भाइयों ने छोटे भाई से कहा
हम सब की किस्मत एक-सी है। दूसरे बायों के बेटों की काफी पहले शादिया
हैं। उनके अपने परिवार अपनी खेतीबारी है जब कि हम अभी तक कुंवारे
हैं। चुप्पी साधे रहने से अब्बा की कजूसी नहीं छूटेगी। तुम्हें छोटे को वह ज्यादा
ते हैं तुम्हारी बात जरूर सुनेंगे तुम उनके पास जाकर उन्हें हमारी मंशा बताओ।
टे भाई ने ऐसा ही किया। पिता ने थोड़ी देर सोचकर जवाब दिया
पतझड़ आने दो, घोड़ों के झुण्डों म नन्हे बछेड़े कुछ बड़े हो जायें अपनी माओं
पीना छोड़ दे, तब मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगा।
पतझड़ आ गयी। नन्हे बछेड़े बड़े हो गये और उन्होंने माओं का दूध पीना छोड़
छोटा भाई फिर पिता से विनती करने गया पर उसने उत्तर दिया
"जब गरम मौसम आ जायेगा, मैं तुम्हारी शादिया कर दूँगा।
किन्तु जाड़ा बहुत कड़ाके का पड़ा। ठण्डी हवाएं अनवरत बहती रहती थी बर्फ
तूफानों की चीखें गूंजती रहती थी। कड़ी ठण्ड और चारे के अभाव के कारण पशु तेजी
सूखने लगे। और सर्दी का स्थान गर्मी ले भी न पायी थी कि बाय के मारे जानवर मर
गये।

भाई केवल एक बछेड़े को भूखों मरने से बचा सके। वे खुद अधपेट खाकर ति से रोटी के टुकड़े छिपा-छिपाकर अपने चहेते को ले जाकर खिलाते रहे।

कंजूस बाप भी अपनी सारी सम्पत्ति गवाकर भूख से मर गया। बेटे गरीब हो गये पिता की सम्पत्ति उनके लिए एक साल भी न चल पायी। भाई काफी दिनों तक गाव-गा भटकते भीख मागते रहे। उन्होंने बहुत कष्ट भोगे, बहुत सकट उठाये।

इस बीच बछेड़ा बड़ा होता रहा। वह बिलकुल सफेदझक था। उसकी खाल धू में चादी की तरह झिलमिलाती थी, अयाल मुलायम और झबरी थी।

एक बार छोटे भाई ने दोनो बड़े भाइयों से कहा

' यह बछेड़ा मुझे दे दीजिये। मै गाव-गाव मे जाकर रोटी और पैसा इकट्ठा करूंगा और जमा हुई सारी चीजे आपके साथ बाट लिया करूंगा।"

वे मान गये। छोटे भाई ने सारे जाड़े और गरमियों मे उन्हे खिलाया-पिलाया

एक बार पड़ोस के एक गाव मे बड़ी घुड़दौड की तैयारिया होने लगी। घुड़दौड़ मे भाग लेने के लिए स्तेपी के पचास श्रेष्ठ कदमबाज घोड़े जमा हुए।

सयोगवश छोटा भाई अपने सफेद बछेड़े पर सवार हुआ उस गाव के पास से गुजर रहा था। उसने स्तेपी में लोगों की भीड़ देखी और समझ गया। घुड़दौड़ होने जा रही है "क्यो न हम भी घुड़दौड़ में भाग ले?" उसने सोचा। उसने एक शिकारी कुत्ते के साथ-साथ अपने बछेड़े को दौड़ाकर उसकी गति का अनुमान लगाने का निश्चय किया।

उसने लगाम हिलायी, घोड़ा चाल बदलकर दुलकी चलने लगा। कुत्ता उसके पीछे पीछे भागता रहा।

आरम्भ मे बाके नौजवान को कुत्ता साथ-साथ भागता नजर आया, पर बाद मे वह पीछे छूट गया। बछेड़े की झबरी अयाल पर झुककर बाका घुड़सवार बीच-बीच मे मुड़कर पीछे देखता रहा, खुशी के मारे उसका दिल उछला पड़ रहा था. घोड़ा इतनी सहजता से सरपट भाग रहा था मानो स्तेपी पर तैर रहा हो। कुत्ता पीछे छूट गया था।

घर लौटकर छोटे भाई ने सारी बात भाइयो को बतायी:

"हमारा बछेड़ा कमान से छूटे तीर की तरह उड़ता-सा भागता है। स्तेपी में मैंने उसे एक कुत्ते के पीछे दौड़ाया। बछेड़ा बहुत जल्दी उससे आगे निकल गया। मेरे ख्याल से बछेड़ा दौड़ मे किसी भी प्रकार के कदमबाजो और दुलकी चालवाले घोड़ों से मुकाबला कर सकता है।"

यह कहकर उसने भाइयो को बछेड़े को घुड़दौड़ मे ले जाने का सुझाव दिया। वे इसके लिए तैयार हो गये। बछेड़ा रात भर सुस्ता लिया और सुबह तीनों भाई एक साथ घुड़दौड़ के स्थान के लिए रवाना हो गये।

घुड़दौड़ में दो घोड़े सर्वोत्तम थे – ये खान बरक के घोड़े थे। कोई भी घुड़दौड़ उनके बिना नहीं होती थी, किसी भी घोड़े ने अपने मालिक की शान इतनी नहीं बढ़ायी जितनी

कि उन्होंने। भाइयों को इसका ज्ञान था, फिर भी उन्होंने अपनी किस्मत आजमाने का फैसला कर लिया।

भाइयों को घुड़दौड़-स्थल पर पहुँचने पर यह देखकर बहुत दुख हुआ कि उनके घोड़े का एक पैर थोड़ा लगड़ा रहा है।

वे बहुत दुखी हुए, किन्तु अपना निर्णय बदलने की इच्छा उन्हें नही हुई।

घुड़दौड़ आरम्भ हो गयी।

उसमें भाग लेनेवाले प्रत्येक आदमी ने घोड़े पर अपने बेटे को बिठाया किन्तु भाई विवाहित नही थे, उनके बेटे नही थे, इसलिए उन्होंने अपने बछेड़े पर एक गरीब लड़के को बिठा दिया, जिसे गाव में ताज़शा बाला* के नाम से चिढ़ाया जाता था।

बायों के बेटे श्रेष्ठ कदमबाज़ों तथा दुलकी चालवाले घोड़ों पर सवार होकर कारा-कोय की तलहटी की ओर चल दिये। घुड़दौड़ वहीं से शुरू होती थी।

उनके साथ ताज़शा बाला भी गया।

बायों के बेटे सारे रास्ते गरीब लड़के का मज़ाक उड़ाते रहे, उसे घोड़े से नीचे धकेलते रहे, उसके हाथों पर नोचते रहे और सिर से टोपी गिराते रहे। लड़के की आखो में आसू आ गये, मगर वह एक निश्चित समय तक सहता रहा।

जब सब कारा-कोय की तलहटी में पहुँचे, सारे घुड़सवार एक कतार में खड़े हो गये, जब कि ताज़शा बाला को सबके पीछे खड़ा कर दिया गया।

घुड़दौड़ आरम्भ हुई। शुरू में ताज़शा बाला पिछड़ने लगा पर शीघ्र ही उसका बछेड़ा तूफ़ान से भी तेज़ भागने लगा।

ताज़शा बाला ने पहले घुड़सवार से आगे निकलकर उसकी टोपी सिर से उतारकर अपने चोगे में छिपा ली। उसने सबके साथ ऐसा ही किया, जब तक कि सबको पीछे न छोड़ दिया। खान बरक के घोड़े भी पीछे छूट गये।

दौड़ का अन्त समीप आता जा रहा था। लोग सबसे आगे सफ़ेद बछेड़े पर ताज़शा बाला को सरपट आते देख आश्चर्यचकित रह गये।

गाव के निकट पहुँचते समय घुड़सवारों को अपने-अपने पिता का नाम चिल्लाकर लेना था। लेकिन गरीब लड़के की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। "दौड़ खतम होने ही वाली है," वह सोचने लगा। "मुझे घोड़े के मालिकों का नाम लेना चाहिए या अपने अब्बा का ?"

ऐसा सोचकर उसने हसते, खुश होते पुकारा

"तेपेन कोक!** तेपेन कोक!"

---

* ताज़शा बाला – यहाँ नटखट लड़का।

** तेपेन कोक – तेज़ सफ़ेद घोड़ा।

खान बरक बहुत चिन्तित होकर घुड़दौड़ पर नज़र रखे हुआ था, उसे अपने घोड़ों की सबसे आगे रहने की आशा थी। लेकिन सफ़ेद बछेड़े को सरपट सबसे आगे दौड़ते देख उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा।

"मेरी आंखें तो धोखा ना नहीं खा रही हैं?" उसने लोगों से पूछा। "क्या सचमुच ख़स्ताहाल सफ़ेद बछेड़ा सबसे आगे है?"

"सच है। सच है। यह सबसे तेज़ घोड़ा आगे चल रहा है।" लोगों ने उत्तर दिया।

तब गुस्से से पागल हो उठे खान बरक ने कहा

"यह कमीना छोकरा रास्ते से शामिल हुआ है। इसने घुड़दौड़ में बछेड़े को नहीं उतारा था। फ़ौरन निकालो इसे।"

खान के नौकर उसका हुक्म बजाने और बछेड़े को पकड़ने भागे। पर वह कहाँ उनके हाथ आनेवाला था। अब देर हो चुकी थी।

गरीब लड़के का स्वागत करने का साहस किसी को नहीं हुआ। केवल एक आज़ाद लड़की ने तेज़ सफ़ेद घोड़े की लगाम पकड़कर लड़के को घोड़े से नीचे कूदने में मदद की।

क्रुद्ध खान बरक चिल्लाने लगा

"इस घोड़े को जीता नहीं माना जायेगा। यह रास्ते से शामिल हुआ है।"

तब लड़का सफ़ेद टीले पर चढ़ गया और लोगों को सम्बोधित करता हुआ बोला

"मैंने शुरू से ही घुड़दौड़ में भाग लिया है।"

लड़के ने चोगे के पल्ले खोल दिये और सारे घुड़सवारों की टोपियां निकालकर ज़मीन पर टपका दीं।

"ये रहीं घुड़सवारों की टोपियां। पहचानते हैं? अगर मैंने घुड़दौड़ में भाग नहीं लिया तो ये मेरे पास कहां से आयीं? जहां से मेरा तेज़ घोड़ा गुज़रा, वहां से मैं कुछ उठाकर लाया हूं।"

लोगों ने हर्ष-नाद के साथ विजेता का अभिनन्दन किया।

लज्जित खान बरक मुड़ा और अपने कभी के नामी घोड़ों के गुस्से में घूंसे मारकर चला गया।

यों को इनाम में चालीस क़दमबाज़ घोड़े मिले। उन्होंने दस क़दमबाज़ बछेड़े पर के स्तेपी की बड़ी घुड़दौड़ में विजयी होनेवाले गरीब लड़के को दे दिये।

भाई इस घुड़दौड़ के बाद सुखी जीवन व्यतीत करने लगे और शीघ्र ही उनका हो गया।

को अपने इलाक़े के लोगों से बहुत ख्याति मिली और आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी लोक-कथा सुनाकर उसका यशोगान किया जाता है।

ेदादी विनोदी अलदार-कोसे के कारनामे

अलदार-कोसे का स्वावलम्बी जीवन कैसे आरम्भ हुआ

कहते है, एक समय था जब दुनिया भूरे बछडे के दायें सींग पर टिकी
थी, आकाश ऊट की भूख से ज्यादा बडा न था धरती घोड़े के सुम जितनी थी
घास खाते थे भरद्वाज भेडो की पीठ पर घोसला बनाते थे जब घास की एक
नले घोड़ो के हजारो झुण्ड शरण ले सकते थे पशु-पक्षियो की दुम बढ़कर निकलना
ी हुई थी, जब लोमडी न्यायप्रिय मानी जाती थी सब विवादो की काजी होती थी
न जाने उस जमाने मे या किसी और मे स्तेपी मे कोभिर नाम का एक सफेद दाढी
बुजुर्ग अपने जीवन के अन्तिम दिन काट रहा था। उसके तीन बेटे थे। एक बार
ने अपने बेटो से कहा
'मेरे बच्चो मै बिलकुल कमजोर हो गया हूँ मेरा आखिरी पडाव छोडकर जाने
आ गयी है। मेरा अन्तःकरण चश्मे के जल जैसा निर्मल है - मौत से मै नही
लेकिन मरने से पहले इतना जानना चाहता हूँ मेरे बेटो कि तुम सब न रहने
बीन का इरादा रखते हो और अपने लिए कैसा रास्ता चुनाए। याद रखो जवाब
इतना याद रखो कि भला आदमी हमेशा अपने पीछे अच्छा रास्ता छोडकर जाता है।
बेटा बोला
के बचपन से ही जमीन से प्यार रहा है। खेत जोतने और अनाज उगाने मे
गो को हमेशा भरपेट खाने को मिलता रहे बेहतर काम कोई नही है।
ने उसको आशीर्वाद दिया
किसान बनो, बेटा।'
बेटा बोला
तो चरवाहे का जीवन पसन्द है। मुझे घोड़ो ऊँटो भेडो गायो और बकरियो
मुझे सबसे अधिक आनन्द पशुओं की देखभाल मे मिलता है जिनसे कि मांस
ास, दूध, किमिज कपडे और तम्बू घरो के लिए नमदा मिलते रहते है।

कोभिर ने मझले बेटे को भी आशीर्वाद दिया:

"तुम चरवाहे बनो, बेटा!"

छोटा बेटा बोला

'मुझे तो गाने, हंसने और दूसरों को हंसाने का शौक है! बिना गीतों, चुटकुलों और चुभते मजाकों के जीवन भी कोई जीवन होता है! मैं सारी दुनिया की सैर करूंगा, वहां जाऊंगा, जहां कोई न गया होगा, गावों और चरागाहों की धूल छानूंगा, रास्तों पर घूमूंगा और कारवां-सरायों में जाऊंगा, बाजारों और मेलों का चक्कर लगाऊंगा, टूटी-फूटी झोपड़ियों में और शाही महलों में रहकर देखूंगा। मैं धोखेबाजों को धोखा दूंगा, और धोखा खानेवालों का साथ दूंगा, अत्याचारियों को दुख पहुंचाऊंगा, अभागों का दिल बहलाऊंगा, कामचोरों को बेवकूफ बनाऊंगा और मेहनतकशों का उत्साह बढ़ाऊंगा, बेधड़क बातों से घमण्डियों का घमण्ड चूर करूंगा और कमजोरों को सहारा देकर उठाऊंगा। सैकड़ों लोग मुझसे घृणा करेंगे, पर हजारों मेरे दोस्त बन जायेंगे। और लोग मेरा नाम—अलदार-कोसे*—शायद कभी न भूल पायें।

वृद्ध ने बेटे की बात सुनी और मुस्करा पड़ा.

"तुमने बहुत अच्छी बात कही, बेटा। प्रकृति ने तुम्हें हालांकि दाढ़ी नहीं दी है, पर तुम्हें तीक्ष्ण बुद्धि, विशाल हृदय, विनोदी स्वभाव और हाजिरजवाबी दी है। वही करो, जो तुमने सोची है! तुम्हारा नाम लेते ही दुष्ट भयभीत हो उठें, खीज उठें, सज्जन शान्त और हर्षित हो उठें, तुम्हारा नाम हर किसी की जबान पर रहे, पीढ़ी दर पीढ़ी, हर सदी में, हर कहानी में लिया जाता रहे। पिता के नाते मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं! सदा सुखी रहो, अल्दार-कोसे!"

---

* अलदार-कोसे—शब्दश: बेदाढ़ी ठग, बेदाढ़ी मसखरा। कजाखों में स्नेह व सम्मान-पूर्वक उसे 'अलदाकेन' के नाम से जाना जाता है।

अलदार-कोसे ने जिन भगाया

अलदार-कोसे ने जूतों पर चर्बी मली, कमरबंद कसा, चोगे के पल्ले उड़से और लम्बे सफ़र पर निकल पड़ा। वह कई दिन, कई रात, कई महीने, पूरे साल चलता रहा। अचानक एक गगनचुम्बी पहाड़ ने उसका रास्ता रोक लिया, लगा जैसे कोई दैत्याकार ऊंट सुनसान स्तेपी में बैठ गया हो।

अलदार-कोसे रुककर सोचने लगा, पर तुरन्त मन ही मन कह उठा:

"मनुष्य के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। सख्त से सख्त लोहा लोहार के घन से मोड़ा जा सकता है। दृढ़संकल्पी सुई से भी कुआं खोद सकता है। नहीं, मैं रास्ता नहीं बदलूंगा, इस चढ़ाई से पीछे नहीं हटूंगा..."

उसने रात वहीं गुज़ारी, सारा जाड़ा वहीं बिताया और वसन्त में काम में जुट गया। चट्टानें तोड़ीं, सीढ़ियां बनायीं, एक-एक क़दम करके ऊपर ही ऊपर चढ़ता गया।

वह चिरप्रतीक्षित घड़ी भी आ गयी — अलदार-कोसे ने पर्वत की चोटी पर क़दम रखा। उसे उज्ज्वल सूरज दिखाई दिया, वह खुशी से चीख़ उठा और पत्थरों पर गिरकर [illegible] सो गया। उसकी नींद खुली, तो देखा: बायगीज़ चिड़िया उसके सीने पर बैठी सिर घुमा रही है, पर साफ़ कर रही है। अलदार-कोसे ने चिड़िया को [illegible] लिया।

"यह हुआ मेरा पहला शिकार!" वह हंसने लगा। "तू डर नहीं, बायगीज़, मैं तुझे नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा। पर तुझे मेरे साथ सैर पर चलना पड़ेगा..." [illegible] के बारे में विचार, मीठी भावनाएं उमड़ रही थीं।

अलदार-कोसे नीचे घाटी में उतरने लगा और आश्चर्यचकित रह गया। [illegible] [illegible], [illegible] चरागाह, [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] था, और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहे थे।

कोभिर ने मझले बेटे को भी आशीर्वाद दिया:

"तुम चरवाहे बनो, बेटा!"

छोटा बेटा बोला

"मुझे तो गाने, हसने और दूसरो को हसाने का शौक़ है! बिना गीतो, चुटु और चुभते मज़ाक़ो के जीवन भी कोई जीवन होता है! मैं सारी दुनिया की सैर करू वहा जाऊँगा, जहाँ कोई न गया होगा, गावो और चरागाहो की धूल छानूगा, ग पर घूमूगा और कारवा-सरायो मे जाऊँगा, बाज़ारो और मेलो का चक्कर लगाऊ टूटी-फूटी झोपडियो मे और शाही महलो मे रहकर देखूँगा। मैं धोखेबाज़ो को धोखा दू और धोखा खानेवालो का साथ दूँगा, अत्याचारियो को दुख पहुँचाऊँगा, अनाथो का ि बहलाऊँगा, कामचोरो को बेवकूफ़ बनाऊँगा और मेहनतकशो का उत्साह बढ़ाऊँगा, बे बातो से घमण्डियो का घमण्ड चूर करूँगा और कमज़ोरो को सहारा देकर उठाऊँगा। लै लोग मुझसे घृणा करेगे, पर हज़ारो मेरे दोस्त बन जायेगे। और लोग मेरा नाम – अल कोसे* – शायद कभी न भूल पायें।

वृद्ध ने बेटे की बात सुनी और मुस्करा पड़ा:

"तुमने बहुत अच्छी बात कही, बेटा। प्रकृति ने तुम्हे हालाकि दाढ़ी नहीं दी पर तुम्हे तीक्ष्ण बुद्धि, विशाल हृदय, विनोदी स्वभाव और हाज़िरजवाबी दी है। व करो, जो तुमने सोची है! तुम्हारा नाम लेते ही दुष्ट भयभीत हो उठे, खीझ उठे, नन शान्त और हर्षित हो उठे, तुम्हारा नाम हर किसी की ज़बान पर रहे, पीढ़ी दर पी हर सदी मे, हर कहानी मे लिया जाता रहे। पिता के नाते मैं तुम्हे आशीर्वाद देता हू सदा सुखी रहो, अल्दार-कोसे!"

---

* अलदार-कोसे – शब्दशः बेदाढ़ी ठग, बेदाढ़ी मसखरा। कज़ाखों ने स्नेह व सम्म पूर्वक उसे 'अलदाकसे' के नाम से जाना जाता है।

अलदार-कोसे ने जिन भगाया

अलदार-कोसे ने जूतों पर चर्बी मली, कमरबंद कसा, चोगे के पल्ले उड़से और लम्बे सफ़र पर निकल पड़ा। वह कई दिन, कई रात, कई महीने, पूरे साल चलता रहा। अचानक एक गगनचुम्बी पहाड़ ने उसका रास्ता रोक लिया, लगा जैसे कोई दैत्याकार ऊँट सुनसान स्तेपी में बैठ गया हो।

अलदार-कोसे रुककर सोचने लगा, पर तुरन्त मन ही मन कह उठा

"मनुष्य के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। सख्त से सख्त लोहा लोहार के घन से मोड़ा जा सकता है। दृढ़संकल्पी सूई से भी कुआँ खोद सकता है। नहीं, मैं रास्ता नहीं बदलूँगा, खड़ी चढ़ाई से पीछे नहीं हटूँगा "

उसने रात वहीं गुज़ारी, सारा जाड़ा वहीं बिताया और वसन्त में काम में जुट गया, चट्टानें तोड़ीं, सीढ़ियाँ बनायीं, एक-एक कदम करके ऊपर ही ऊपर चढ़ता गया।

वह चिरप्रतीक्षित घड़ी भी आ गयी – अलदार-कोसे ने पर्वत की चोटी पर कदम रखा। उसे उज्ज्वल सूरज दिखाई दिया, वह खुशी से चीख उठा और पत्थरों पर गिरकर घोड़े बेचकर सो गया। उसकी नींद खुली, तो देखा बायगीज़ चिड़िया उसके सीने पर बैठी सिर घुमा रही है, पर साफ़ कर रही है। अलदार-कोसे ने चिड़िया को परों से पकड़ लिया।

"यह हुआ मेरा पहला शिकार!" वह हँसने लगा। "तू डर नहीं, बायगीज़, मैं तुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा। पर तुझे मेरे साथ सैर पर चलना पड़ेगा " उसके मस्तिष्क में सैकड़ों विचार, सैकड़ों योजनाएँ उपज रही थीं।

अलदार-कोसे नीचे घाटी में उतरने लगा और सम्मोहित-सा देखता रह गया हरे-भरे ढलान, पुष्पित चरागाह, वादी में कलकल करता बहता निर्मल चश्मा! चश्मे के किनारे एक नया, सफ़ेद-झक तम्बू-घर लगा था, और उसके ऊपर धुएँ के पारदर्शी छल्ले उठ रहे थे।

कोभिर ने मझले बेटे को भी आशीर्वाद दिया.

"तुम चरवाहे बनो, बेटा!"

छोटा बेटा बोला

"मुझे तो गाने, हमने और दूसरों को हंसाने का शौक है! बिना गीतो, चुट् और चुभते मजाको के जीवन भी कोई जीवन होता है! मैं सारी दुनिया की सैर करूँ वहा जाऊँगा, जहाँ कोई न गया होगा, गावों और चरागाहो की धूल छानूगा, रा पर घूमूगा और कारवा-सरायों मे जाऊँगा, बाजारों और मेलों का चक्कर लगाऊँ टूटी-फूटी झोपडियो मे और शाही महलो मे रहकर देखूंगा। मैं धोखेबाजो को धोखा दूँ और धोखा खानेवालो का साथ दूँगा, अत्याचारियो को दुःख पहुँचाऊँगा, अभागो का बहलाऊँगा, कामचोरो को बेवकूफ बनाऊँगा और मेहनतकशो का उत्साह बढ़ाऊँगा, बे बातो से घमण्डियो का घमण्ड चूर करूँगा और कमजोरो को सहारा देकर उठाऊँगा। सै लोग मुझसे घृणा करेगे, पर हजारो मेरे दोस्त बन जायेगे। और लोग मेरा नाम – अल्द कोसे* – शायद कभी न भूल पाये।

वृद्ध ने बेटे की बात सुनी और मुस्करा पडा·

"तुमने बहुत अच्छी बात कही, बेटा। प्रकृति ने तुम्हे हालाकि दाढ़ी नही दी पर तुम्हे तीक्ष्ण बुद्धि, विशाल हृदय, विनोदी स्वभाव और हाजिरजवाबी दी है। करो, जो तुमने सोची है! तुम्हारा नाम लेते ही दुष्ट भयभीत हो उठे, खीज उठे, स शान्त और हर्षित हो उठे, तुम्हारा नाम हर किसी की जबान पर रहे, पीढ़ी दर पी हर सदी मे, हर कहानी में लिया जाता रहे। पिता के नाते मैं तुम्हे आशीर्वाद देता सदा सुखी रहो, अल्दार-कोसे!"

---

* अलदार-कोसे – शब्दश बेदाढ़ी ठग, बेदाढ़ी मसखरा। कज़ाखो मे स्नेह व सम्मा पूर्वक उसे 'अलदाकेन' के नाम से जाना जाता है।

अलदार-कोसे ने जिन भगाया

अलदार-कोसे ने जूतो पर चर्बी मली, कमरबद कसा, चोगे के पल्ले उडसे और लम्बे सफ़र पर निकल पडा। वह कई दिन, कई रात, कई महीने, पूरे साल चलता रहा। अचानक एक गगनचुम्बी पहाड़ ने उसका रास्ता रोक लिया, लगा जैसे कोई दैत्याकार ऊट सुनसान स्तेपी मे बैठ गया हो।

अलदार-कोसे रुककर सोचने लगा, पर तुरन्त मन ही मन कह उठा

"मनुष्य के लिए कुछ भी असम्भव नही है। सख्त से सख्त लोहा लोहार के घन से मोड़ा जा सकता है। दृढसकल्पी सूई से भी कुआँ खोद सकता है। नही, मैं रास्ता नही बदलूगा, बड़ी चढाई से पीछे नहीं हटूगा . "

उसने रात वहीं गुज़ारी, सारा जाड़ा वही बिताया और वसन्त मे काम मे जुट गया चट्टानें तोडी, सीढ़िया बनायी, एक-एक क़दम करके ऊपर ही ऊपर चढता गया।

वह चिरप्रतीक्षित घडी भी आ गयी – अलदार-कोसे ने पर्वत की चोटी पर क़दम रखा। उसे उज्ज्वल सूरज दिखाई दिया, वह खुशी से चीख उठा और पत्थरो पर गिरकर पांवे फैलाकर सो गया। उसकी नीन्द खुली, तो देखा: बायगीज चिड़िया उसके सीने पर बैठी सिर घुमा रही है, पर साफ़ कर रही है। अलदार-कोसे ने चिड़िया को परो से पकड लिया।

"यह हुआ मेरा पहला शिकार!" वह हसने लगा। "तू डर नही, बायगीज, मैं तुझे कुछ नुकसान नही पहुँचाऊगा। पर तुझे मेरे साथ सैर पर चलना पडेगा .. " उसके मस्तिष्क मे सैकडो विचार, सैकड़ो योजनाएँ उपज रही थी।

अलदार-कोसे नीचे घाटी मे उतरने लगा और सम्मोहित-सा देखता रह गया: हरे-भरे ढलान, पुष्पित चरागाह, वादी मे कलकल करता बहता निर्मल चश्मा। चश्मे के किनारे एक नया, सफ़ेद-झक तम्बू-घर लगा था, और उसके ऊपर धुएँ के पारदर्शी छल्ले उठ रहे थे।

यह डाकू का घर है या दुश्मन का? यहाँ भाग रहा है या भाग्यक देखें? न
घर में घाई या ... पूछकर जाता रहूँ?' अलदार सोचने लगा।

उसने दो बार दरवाज़े के पास जाकर दरार में झाँका, देखा बेलबूटेदार नम-
दे पर दो जने, एक मर्द और एक औरत बैठे किमिज पी रहे हैं, तश्तरियों में से गो-
श्त खा रहे हैं, ठहाके लगाकर बातें कर रहे हैं और एक दूसरे को आँख मार रहे हैं।

'अरे, लगता है यहाँ दावत उड़ाई जा रही है! और जहाँ दावत हो, वहाँ मेहमा-
नों की ज़रूरत होती है। अन्दर जाता हूँ!'

'आ ... रुको!' अलदार ने टोक दिया।

'अरे बाप रे!' स्त्री ने हाथ पर हाथ मला। 'यह तो मेरा घिनौना पति आ
पहुँचा है। जल्दी से छिप जाओ!'

बाँका नौजवान, जो उसके साथ दावत उड़ा रहा था, मारे डर के घर में इधर-उधर
भागा और चादर के नीचे सन्दूक देखकर पलक झपकते उसमें घुस गया और उसका ढक्कन
बंद कर लिया।

समझ गया, सोचकर अलदार ने सिर हिलाया और देहलीज लाँघी।

'सलाम, मालकिन! मेहरबानी करके थके राही को अपने चूल्हे के आगे सुस्ता लेने दो।'

स्त्री ने वितृष्णा से उसकी ओर देखा।

'तुम्हें शैतान यहाँ लाया है, बिनबुलाये मेहमान! तुमने मुझे कितना डरा दिया!'

पर अलदार-कोसे तब तक सम्मानित स्थान पर आलथी-पालथी मारकर बैठ चुका
था और उसका पूरा चेहरा खिल रहा था।

'मुस्करा क्यों रहे हो?' गृहणी ने खीजकर पूछा, पर मन ही-मन कहा "इस
बदमाश के दिमाग़ में कोई चाल है"

"मैं तो किमिज के इस बरतन और गोश्त की उस रकाबी को देखकर मुस्करा रहा
हूँ।" अलदार-कोसे ने मधुर स्वर में कहा।

"तो खा-पी लो और जल्दी से दफ़ा हो जाओ!"

"खा-पी लो" दबी ज़बान में कहिये, तो भी अलदार सुन लेता था, लेकिन
"दफ़ा हो जाओ" चाहे चीख-चीखकर कहिये, पर वह बहरा बना रहता था। अलदार
सरककर दस्तरख़ान के पास आ गया और उस पर रखा सारा खाना साफ़ करने लगा।
ख़ूब छककर खा-पीकर वह वहीं बेलबूटेदार नमदे पर पसरकर लेट गया।

औरत ने जब देखा कि राही खिसकने का नाम भी नहीं ले रहा, तो उसने एक
सिक्का निकाला और बोली

"यह लो एक तंगा, आवारा! उठाओ और यहाँ से दफ़ा हो जाओ!"

अलदार-कोसे बख़्शिश के लिए पूरे एक घंटे या शायद उससे भी ज़्यादा देर तक धन्य-
वाद देता रहा और फिर बोला

अलदार-कोमे उत्तरोत्तर तेज़ी से चक्कर काटने लगा, फिर आगे को गरदन निकाले रुक गया और डरावनी आवाज़ में फुसफुसाया :

"ओ बाय, हालत बहुत खराब है।"

बाय का चेहरा उतर गया।

"क्या हुआ?"

अलदार बोला

"चिड़िया कहती है 'पीले सन्दूक में मुसीबत रेशमी गद्दे पर लेटी है।' इसका मतलब है कि जिन, बाय, तुम्हारे घर के अन्दर छिपा बैठा है। उसे भगाना चाहिए।"

बाय कापने लगा, पर फिर भी सन्देहपूर्वक अलदार को बार-बार देखता रहा "यह बक्सी कही ठग तो नही है? जिन की बात बताकर यह मुझे बेवकूफ तो नही बना रहा है? फिर भी देखता हूँ आगे क्या होता है।"

किन्तु प्रकट मे बोला

"निकाल भगाओ उसे, प्यारे, निकाल भगाओ!"

अलदार-कोमे जानता था कि उसे क्या करना होगा। उसने डोलची उठाकर चूल्हे पर चढे गरम पानी के देग मे डुबोयी, दबे पाव सन्दूक के पास पहुँचा और ढक्कन थोड़ा-सा [illegible] मे गरम पानी के छीटे मार दिये। तत्क्षण सन्दूक का ढक्कन कब्जो [illegible] उखड़कर दूर जा [illegible] और खौलते पानी से जला बाका नौजवान निकलकर एक [illegible] मे तम्[illegible] से बाहर भाग गया।

भौचक रह गये बाय की ऊपर की सास ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी। युवा [illegible] के नीचे [illegible] गयी। और अलदाकेन का हसी के मारे दम उखड़ा जा रहा था।

बाय को होश आया और वह लपककर अलदार को गले लगाने लगा

"हजार-बार शुक्रिया तुम्हारा, मेरे प्यारे! तुमने बला को घर से बाहर भगा दिया! तुम न होते, तो बुरा जिन मुझे मार डालता। तुम्हे मैं तुम्हारी मेहनत का इनाम दूँगा। मेरे झुण्ड मे एक घोडा है, घोडा नही, उसे भानू कहना चाहिए। उसे ले लो।"

अलदार खुशी मे उछल पडा, पर बाय थोडी देर चुप रहकर आगे बोला

"जिन मेरे घर मे दुबारा न आ बसे, – सब हो सकता है, प्यारे दोस्त! – इसलिए तुम पेशीनगो चिड़िया मुझे बेच दो। बहुत अच्छी कीमत दूँगा।"

अलदार ने हाथ हिला दिये

"तुम क्या कहते हो, बाय, इसके बारे मे तो सोचो भी मत! बिना पेशीनगो चिड़िया के तो मेरी सारी जिन्दगी मे पूर अधेरी रात से भी ज्यादा अंधेरा छा जायेगा!"

बाय पीछा नही छोड रहा था, और अलदार मान ही नही रहा था। बहुत रात [तक बहस] चलती रही, अन्त मे अलदार तैयार हो गया

"जैसी तुम्हारी मर्जी – मै चिड़िया तुम्हारे पास छोड रहा हूँ, बाय! मै झूठ नही

"ऐ दोस्त," अलदार-कोसे ने उसे आवाज दी, "तुम पैदल क्यों जा रहे हो? तुम्हारा घोड़ा कहाँ गया?"

"घोड़ा था, पर नहीं रहा," नौजवान ने दुखी स्वर में उत्तर दिया। "काराकूर्त* ने उसे काट लिया। घोड़ा मर गया।"

"यह बात है!" अलदार बोला। "तो फिर मेरे झुण्ड में से कोई घोड़ा अपने लिए चुन लो। कोई भी ले सकते हो! तुम्हें एक तेज घोड़ा भेंट करता हूँ।"

अगले दिन अलदार-कोसे को फिर एक पथिक मिला, वह एक अधेड़ आदमी था।

"ऐ चचा, पैदल क्यों जा रहे हो? क्या घोड़ा नहीं है?"

"कल तक मेरे पास एक बढ़िया घोड़ा था, लेकिन आज बायों के बेटों ने घोड़ा रास्ते में मुझसे छीन लिया। मैं बाल-बाल बच पाया हूँ," आदमी ने उत्तर दिया।

"गरीबों को लूटनेवाले उन डाकुओं को कभी अपना बाप और रिश्तेदार देखना नसीब न हो!" अलदार ने गुस्से में सोचा और प्रकट में कहा। "पर तुम दिल छोटा मत करो! मेरे झुण्ड में से एक घोड़ा ले लो, और जहाँ तुम्हें जाना है, चले जाओ।"

तीसरे दिन अलदार-कोसे को एक बहुत बूढ़ा आदमी मिला। वृद्ध लाठी टेकता बड़ी मुश्किल से पैर घिसटता चल रहा था।

"बाबा," अलदार-कोसे ने कहा, "बुढ़ापे में स्तेपी पैदल पार करना आसान नहीं होता। क्या आपके पास घोड़ा नहीं है?"

"मैं सारी ज़िन्दगी, जब तक मेरी ताकत जवाब न दे गयी, बाय के घोड़े चराता रहा। पर अपना घोड़ा कभी न खरीद सका। यही बात है, बेटा।"

"ठहरिये, बाबा," अलदार ने उसे रोका, "जल्दी मत करिये! मेरे झुण्ड में से एक घोड़ा ले लीजिये। जो भी पसन्द आये, वही आपका। मना मत करिये! इजाज़त दें, तो मैं आपको बिठा दूँ।"

ज्यों-ज्यों अलदार-कोसे आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों उसके ढोर के घोड़े कम होते गये। इकतालीसवें दिन उसके पास आखिरी घोड़ा बचा, वही, जिस पर वह सवार था।

तभी अलदार ने देखा स्तेपी में चिड़ियों को भयभीत करती एक युवती भागी जा रही है।

"क्या हुआ? तुम किस से बचकर भाग रही हो, सुन्दरी?"

"मौत से!" लड़की ने झर-झर आंसू बहाते हुए कहा। "मेरे अब्बा ने मुझे एक अमीर को बेच दिया जब कि मैं एक दिलेर नौजवान चरवाहे को प्यार करती हूँ। वह भी मुझे प्यार करता है उसी के पास भागकर जा रही हूँ। पीछा करनेवालों से बच गयी – तो गरीबी में भी सुखी रहेंगे। पकड़ी गयी, तो दोनों जान से मारे जायेंगे!"

* काराकूर्त – जहरीली मकड़ी।

अलदार-कोसे और शैतान

न जाने सच था या झूठ, पर शैतान स्तेपी में मंडरा रहा था। वह लोगों के मा बहुत बुरा करता था। जहाँ वह पहुँचता, वहीं मुसीबत आ जाती। फिर भी लोग सह करते आ रहे थे। वे सब उस दुष्ट से डरते थे और सोचते थे दुनिया में शैतान से बढ़क ताकतवर और चालाक कोई नहीं है। जब खुद अल्लाह ही उसे काबू में नहीं रख सकता तो फिर बन्दे की तो बिसात ही क्या?

और शैतान इसी का पूरा लाभ उठाता था "दबते को सब दबाते हैं।" शैतान क्या बूढ़े, क्या बच्चे, क्या घुड़सवार, क्या पैदल, सभी का जैसे चाहता, मजाक उड़ात रहता। पर उसके भी काले दिन आये।

लेकिन शैतान को मुह की किसने खिलाई? सुनिये, तो जान जायेंगे।

शैतान स्तेपी में मंडरा रहा था। उसने देखा नदी किनारे, ऐन कगार पर को बेदाढ़ी लेटा हुआ है। वह कमीज़ और पाजामा पहने है, उसके पैर नंगे हैं और उस सिरहाना हाथों का लगा रखा है। कोई सोच सकता था कि मुरदा है, पर कैसे सोच सकत था, जब बेदाढ़ी के खर्राटों से किनारे की झाड़ियाँ ऐसे झुकी जा रही हों, जैसे तेज़ हव चल रही हो।

"ठीक है, जिन्दा है, तो क्या हुआ," शैतान ने खीसें निपोड़कर हाथ से हाथ मला, "अभी मुरदा हो जायेगा।"

वह दबे पाँव निद्रामग्न व्यक्ति के पास पहुँचा और उसने उसे कगार से नीचे धकेल दिया। पर तभी अचानक दो फुर्तीले हाथ शैतान की गरदन के इर्द-गिर्द फंदे से भी ज्यादा मजबूती से लिपटकर जकड़ने लगे, और वह भी उस आदमी के साथ नीचे पानी में गिर गया।

"छोड़ दो," शैतान ने चिरौरी की, "वरना दोनों मारे जायेंगे।"

"छोड़ूँगा तब, जब मुझे पानी से निकालोगे," आदमी ने कहा।

वे दोनों पानी मे काफी देर तक गोते खाते रहे। शैतान की समझ मे बात आ गयी वह मजबूत हाथों की पकड से नही छूट सकेगा। उसे आदमी के आगे झुकना पडा वह बेदाढ़ी को निकालकर किनारे पर ले आया।

दोनों ने थोडी देर बैठकर दम लिया, थोडा बदन सुखाया। फिर शैतान बोला

"इस बार तो तुमने मुझे बेवकूफ बना दिया, पर फिर कभी नही बना सकोगे। मेरे साथ दुनिया घूमने चलोगे, देखते है कौन ज्यादा अक्लमद है?"

"बड़ी खुशी से," बेदाढ़ी ने उत्तर दिया।

शैतान को ऐसे उत्तर की आशा न थी।

"क्या सचमुच तुम यही सोचते हो कि तुम चालाकी मे मुझे मात दे सकते हो? तुमने मुझे पहचाना या नही? अरे, मैं शैतान हूँ। और तुम कौन हो?"

बेदाढ़ी ने शैतान पर नजर डालकर खीसे निपोडी और गाने लगा

> लोमड़ी से भी ज्यादा हो चतुर शैतान तुम,
> और मैं सब लोगो का जैसा हूँ, आज इनसान हूँ।
> मुझ को सब कहते है अलदार-कोसे, तुम भी जान लो
> मैं नही शैतान, बाय, खान या सुलतान हूँ!

अलदार-कोसे और शैतान स्तेपी मे जा रहे थे। उन्होंने छः घाटियां और छः दर्रे पार किये, छः कुओं का पानी पीया। उन्हें कारवां के रास्ते मे सातवें कुएँ की जगह पर एक बटुआ मिला।

शैतान कहने लगा:

"मुझे मिला है!"

अलदार ने कहा,

"नही, मुझे मिला है!"

दोनों मे बहस छिड गयी। शैतान बोला

"बटुआ उसी को मिलेगा, जो हम दोनों मे उम्र मे बड़ा होगा।

"ठीक है," अलदार-कोसे मान गया।

शैतान खुश होने लगा: "अलविदा कहो इन पैसों को, अलदारकोसे।" पर [illegible] बोला

"मैं तब पैदा हुआ था, दुनिया बने केवल सात साल हुए थे।

अलदार-कोसे ने हाथ पर हाथ मारा और फूट-फूटकर रोने लगा

अलदाकेन भट से उछलकर शैतान की पीठ पर सवार हो आराम म जम गया और
अपने गाने मे सारी स्तेपी गुजाने लगा
"होय-होय-होय-होय-होय-होय ! "
समय बीतता रहा, सूरज दोपहर बाद ढलने लगा शैतान दुलकी चाल म आग
आगे भागता रहा, पर अलदार-कोसे का गाना खतम होने को न था।
"होय-होय-होय-होय "
शैतान पस्त हो गया।
"तुम्हारी 'होय-होय'," शैतान हाफता हुआ बोला कब खतम होगी अलदार-कोसे?
अलदार बोला
' ढोओ मुझे, शैतान, ढोओ। मेरा गीत बहुत लम्बा है। होय-होय तो सिर्फ
है। फिर 'होय-होय' के बाद दोय-दोय शुरू होगी
फिर वह और भी जोर से गला फाडकर गाने लगा
दोय-दोय-दोय-दोय-दोय ! '
तरह अलदाकेन ने शैतान से उतरे बिना सारी विशाल स्तेपी एक छोर से दूसरे
पार कर डाली।

के छोर पर एक खेत था खेत के बीच एक पुराना हल पड़ा था। अलदार
तान से कहा
, देखते है, कौन ज्यादा ताकतवर है – तुम या मै '
है। लेकिन कैसे ?"
हल देख रहे हो ? तुम उसे आगे खीचोगे और मै – पीछे। जो पहले थकेगा
ना जायेगा।"
ने शैतान को जोत दिया। शैतान हल खीचने लगा जीनोर जोर लगाने
जबान बाहर निकली पडने लगी वह अपने झबरे हाथो से पसीना पोछता
व कि अलदार-कोसे हल के पीछे-पीछे चलता उसके दस्ते को दबा दबाकर
जा रहा था। चाहे जोताई अच्छी हुई हो या खराब लेकिन अलदाकेन
जोत डाला।
तान थककर चूर हो गया मुँह के बल जमीन पर गिर पडा सास भी
रही थी।
उसकी जोत खोलकर उस पर हसने लगा
पड गया कि तुम कैसे पहलवान हो। मै तो नाम का भी नहीं ...
शैतानो से मुकाबला कर ... है"...
गेहूँ बोया।
का एक ;

बालकर गाह लिया
बाध ही

"ओह, शैतान, माफ कर दो, ओह, दया करो!".
पर शैतान कहने लगा
"विनती मत करो, तुम पर दया नही की जायेगी!"
और वह अलदार पर बाउरसक पर बाउरसक फेककर मारने लगा:
"यह ले! यह ले! यह ले! "

पर अलदाकेन भाडी के पीछे छिपा हुआ बाउरसक लपक-लपककर मुंह मे र
लगा वह वैसे ही कभी किसी काम मे नही चूकता था, फिर खाने की तो बात
छोडिये।

शैतान की बोरी खाली हो गयी। दुष्ट ने चैन की सास ली और भाडी के पी
यह देखने लपका कि दुश्मन का क्या हुआ। उसने देखा – और उसके पैर लडखडा ग
अलदार भाडी के पीछे घास पर आल्थी-पालथी मारे बैठा मुंह मे बची-खुची बाउरस
ठूसे जा रहा था, और न जाने चर्बी के कारण या आनन्द के कारण वह बिलकुल मं
की सिल्ली के जैसे चमक रहा था।

"धन्यवाद, शैतान, तुमने मेरी बहुत अच्छी खातिरदारी की!" अलदार ने बू
के मोजो पर हाथ पोछते हुए कहा। "मैंने अरसे से इस तरह का नाश्ता नही किया था
किसी ने सच ही कहा है 'दोस्त हो भला, मिले तर माल, बुरा हो, तो हो जावे ना
लाल' "

और वह खूब जोर-जोर से ठहाके लगाने लगा।

शैतान लाचारी और खीज के मारे रो पडा और सिर पर पैर रखकर अलदार-को
से दूर भाग गया। वह छलागे लगाता हुआ जितनी दूर होता गया, अलदाकेन उतने ह
जोरदार ठहाके लगाता गया। वैसे उसकी जगह कोई और भी क्या हसे बिना रह सकता था

तब से स्तेपी मे शैतानो का नाम-निशान तक नही रहा, सदा के लिए नही रहा
धूर्त प्राणी समझ गये कि इनसान सबसे अधिक चालाक, सबसे अधिक साहसी और सबसे
अधिक बुद्धिमान है। अब शैतान का नाम केवल परीकथाओ मे ही मिलता है।

अलदार-कोसे की दावत

एक बार अलदार-कोसे को बाय के खेत मे मजदूरी करनी पडी।

"कैसी कट रही है?" उसने अन्य कमेरो से पूछा।

"बुरा हाल है," उन्होंने उत्तर दिया, "गोश्त की खुशबू तक बिलकुल भूल गये।"

"दिल छोटा मत करो, मैं तुम्हे बाय के खर्चे पर गोश्त खिलाऊँगा।"

कमेरो ने केवल सिर हिला दिया.

"कभी उस घर का दरवाजा मत खटखटाओ, जिसमे कभी मेहमान नही आते हो, अलदाकोसे, लोगो का यही कहना है।"

"मैं उससे मागने का इरादा नही रखता। वह खुद देगा।"

"मन मे क्या ठान ली, बेधड़क?"

"आधी के आगे अच्छे-अच्छे झुक जाते हैं," अलदार-कोसे ने टाल-मटूल का उत्तर दिया।

उसी दिन न जाने कैसे और क्यो – बाय के रेवड का सबसे अच्छा मेढा गड्ढे मे गिर गया और उसकी टाग टूट गयी। बाय ने माथा पकड लिया

"ओह, अलदार-कोसे, मेरा मेढा मर जायेगा! क्या करूँ?"

"इसे जल्दी से जिबह कर दो!" कमेरे ने सलाह दी।

"पर दिल दुखता है: एक मेढा कम हो जायेगा" बाय बिसूरने लगा।

"अगर काटते दिल दुखता है, तो मरने दो अपनी मौत," अलदार-कोसे ने शान्तिपूर्वक कहा।

बाय के पास दूसरा चारा न रहा, उसने मेढे को काट डाला और हुक्म दिया

"इसे बाजार ले जाकर महगे दामो पर बेच दो।"

अलदार-कोसे ने कटी भेड को पीठ पर लादा और बाजार चल पडा। वहाँ चक्कर काटता वह आवाज लगाने लगा

अलदार-कोसे की दावत

एक बार अलदार-कोसे को बाय के खेत में मजदूरी करनी पड़ी।

"कैसी कट रही है?" उसने अन्य कमेरों से पूछा।

"बुरा हाल है," उन्होंने उत्तर दिया, "गोश्त की खुशबू तक बिलकुल भूल गये।"

"दिल छोटा मत करो, मैं तुम्हें बाय के खर्चे पर गोश्त खिलाऊँगा।"

कमेरों ने केवल सिर हिला दिया

"कभी उस घर का दरवाजा मत खटखटाओ, जिसमें कभी मेहमान नहीं आते हों लेकिन, लोगों का यही कहना है।"

"मैं उससे मांगने का इरादा नहीं रखता। वह खुद देगा।"

"मन में क्या ठान ली, बेधड़क?"

"आंधी के आगे अच्छे-अच्छे झुक जाते हैं," अलदार-कोसे ने टाल-मटूल का उत्तर दिया।

उसी दिन न जाने कैसे और क्यों – बाय के रेवड़ का सबसे अच्छा मेढ़ा गड्ढे में गिर गया और उसकी टांग टूट गयी। बाय ने माथा पकड़ लिया

"ओह, अलदार-कोसे, मेरा मेढ़ा मर जायेगा! क्या करूँ?"

"इसे जल्दी से ज़िबह कर दो!" कमेरे ने सलाह दी।

"पर दिल दुखता है। एक मेढ़ा कम हो जायेगा" बाय बिसूरने लगा।

"अगर काटते दिल दुखता है, तो मरने दो अपनी मौत," अलदार-कोसे ने शान्तिपूर्वक कहा।

बाय के पास दूसरा चारा न रहा, उसने मेढ़े को काट डाला और हुक्म दिया

"इसे बाज़ार ले जाकर महंगे दामों पर बेच दो।"

अलदार-कोसे ने कटी भेड़ को पीठ पर लादा और बाज़ार चल पड़ा। वहां चक्कर काटता वह आवाज़ लगाने लगा

"ऐ नेक लोगो! मरा नापाक मेढ़ा एक अशरफी में! जल्दी खरीदिये!"

लोग हसने लगे

"नही, अलदार-कोसे, इस बार तुम किसी को भी बेवकूफ नही बना सकोगे। हमें तुम्हारे नापाक मेढे का गोश्त नही चाहिए। इसे वही ले जाओ, जहाँ से लाये हो।"

अलदार-कोसे यही तो सुनना चाहता था।

वह बाय के पास लौट आया और आस्तीन से पसीना पोछता हुआ बोला·

"गोश्त हमे, बाय, खुद को ही खाना पडेगा। मेढ़े को कोई नही खरीदना चाहता। मैंने बेकार मेहनत की। कहते हैं, किसी को इसकी जरूरत नही है "

बाय ने अपने नौकर पर विश्वास नही किया

"जरूरत क्यो नही होगी! इतना अच्छा मेढा है! इतना मोटा-ताजा मेढा है! तुम झूठ बोलते हो, अलदार-कोसे! कल साथ बेचने जायेंगे।"

वे दोनो पौ फटते ही साथ बाजार रवाना हुए।

बाय आवाज लगाने लगा

"ऐ भले लोगो! मेढा खरीदिये! मेढा किसे चाहिए?"

और अलदार-कोसे पीछे से आवाज लगाता

"कलवाला मेढा खरीदिये! वह वही मेढा है! कलवाला मेढा एक अशरफी लीजिये!"

लोगों से अब और सहन न हो सका

"भागो यहा से, निखट्टुओ! तुम्हे फूटी कौडी भी नही देंगे! अपने मेढ़े का गोश्त खुद ही खाओ!"

फेरीवालो को बाजार छोडकर जाना पड गया।

"अब क्या करें?" अलदार ने पूछा। "गोश्त खा ले या भेडियो के लिए बद में फेंक दें।"

"सोचने दो, भाई, थोडा सोचने दो," बाय ने दुखी मन से जवाब दिया।

बाद में बाय ने सारे मजदूरों को अपने तम्बू-घर मे जमा किया और भाषण देने लगा

"चरवाहो, मेरे बारे मे अफवाहे उडाई जाती है कि मैं बुरा आदमी हूँ, लालची हूँ। मुझ पर तोहमत लगानेवाले उन बातूनियों को अल्लाह सजा देगा। आज तुम लोगों को मालूम पड जायेगा कि तुम्हारा मालिक कैसा है। मैं तुम्हारी बहुत अच्छी खातिरदारी करना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारी खातिर अपने सबसे अच्छे, सबसे मोटे-ताजे मेढ़े का ग़म भी गम नही है। पकाओ, अलदार-कोसे, मेढ़े को। बस एक शर्त है देग मे सारा ठोस-ठोस मेरा, बाकी – तुम्हारा।"

कमेरो ने एक दूसरे से नजरे मिलाईं, हाथ हिलाये, पर जवाब मे कुछ नही कहा। वही सही अगर गोश्त मिलने की आशा नही रही तो क्या, यखनी भी तो बुरा नही होता।

अलदार-कोमे एक तरफ़ दौड़-धूप करने लगा· अलाव सुलग गया, देग में पानी
उबलने लगा, भेड़ा पकाया जाने लगा। अलदार ने गोश्त इतनी देर तक उबाला कि बाय
...ंगान हो उठा:

"खाना तैयार होने में और कितनी देर है, अलदार-कोमे?"

"अभी तैयार हुआ जाता है, अभी, थोड़ा सब्र करो, बाय।"

...ब गोश्त इतना पक गया कि हड्डियों से भी उतर गया, अलदार ने मालिक से

"ज़रा दुबारा कहना, बाय, तुम्हारे देग में कौन-सा हिस्सा होना चाहिए?"

"टोम-टोम! टोम-टोम!" बाय ने हड़बड़ी मचाई।

"यह रहा सारा टोम-टोम!" अलदार-कोमे ने बाय के आगे निरी हड्डियां परोस

"और बाक़ी हमारा।"

...मेरे देग के चारों ओर बैठ गये और खाना खाने लगे। बाय गुस्से में लाल हुआ जा
... और मज़दूर हंसे जा रहे थे। उन्होंने छककर भेड़ का गोश्त खाकर मूंछों पर
...ा और सब समवेत् स्वर में कह उठे
...दावत के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया, अलदाकेन!"

अलदार-कोसे और घमण्डी बाय

एक घमण्डी बाय अपने गाववालों के सामने डींग हाकने लगा।

"सारी स्तेपी रट लगाये हुए है अलदार-कोसे! अलदार-कोसे! मैं उसकी अक्लमंदी और चालाकी के किस्सों पर विश्वास नहीं करता। एक बार मुझे ज़रा नज़र आ जाये वह छिछोरा! मैं उसको ही पलक झपकते बेवकूफ बना दूँगा!"

जवान हस पड़े, बूढ़े सिर हिलाने लगे।

"डींग मत हाको, बाय, कहीं मुँह की न खानी पड़े। अभी तक दुनिया भर में कोई भी अलदाकेन को बेवकूफ नहीं बना पाया है।"

"पर मैं उसे बेवकूफ बना दूँगा!" बाय जोश मे आ गया। "मैं एक घोड़ी काटकर सारे गाव को दावत खिलाने का वादा करता हूँ, अगर मैं मौका मिलते ही उस चालाक को बेवकूफ न बना पाऊँ तो। मुझे वह बस मिल जाये!"

एक बार–न जाने किसी काम से या यूँ ही–वह बाय अपने ऊँट पर स्तेपी में गया। उसने देखा रास्ते से थोड़ी दूरी पर कोई आदमी बराबर चक्कर काटता सचमुच कुछ खोज रहा है।

"ऐ दोस्त," बाय ने आवाज़ दी, "क्या कुछ खो गया है?"

अपरिचित रुक गया और चिन्तापूर्ण स्वर में बोला

"कुछ खोया नहीं है, पर फिर भी ढूँढ़ रहा हूँ।"

"आखिर क्या ढूँढ़ रहे हो?"

"धरती का नुक्कड़ ढूँढ़ रहा हूँ। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि वह यहीं कहीं है, पर किसी तरह मिल ही नहीं रहा है। अगर मैं स्तेपी को ऊंचाई से देख पाता, तो फौरन मिल जाता। लेकिन मुसीबत यह है कि आस-पास न कोई टेकरी है, न ही कोई टीला। लेकिन मैं अपनी ठानी करके रहूँगा। जो धरती का नुक्कड़ ढूँढ़ निकालेगा, उसे बहुत यश और सम्मान मिलेगा।"

बाय ने साश्चर्य अपरिचित की बात सुनी और फिर पूछा

"बताओ, दोस्त, क्या ऊँट पर से धरती का नुक्कड़ तुम्हें नजर आ सकता है?"

"वाह, भई, वाह! क्यों नही नजर आयेगा ऊँट पर से! जरूर नजर आयेगा। लेकिन मेरे पास ऊट तो क्या खरसैला गधा भी नही है।"

बाय काठी पर कुलबुलाने लगा।

"तुम मेरे ऊट पर चढ़ जाओ," उसने सुझाव दिया। "मगर एक शर्त है तुम्हें सारे में यही कहना होगा कि हमने धरती का नुक्कड मिलकर ढूँढा था। हम दोनो यश और सम्मान बाट लेंगे। मजूर है?"

"सही सही, मजूर है!"

बाय ऊट से उतरकर, उस पर अजनबी को बिठा, मुंह ऊपर को उठाये बड़ी बेसब्री से उसका कुछ कहने का इन्तजार करने लगा।

"क्यों, नजर आया धरती का नुक्कड़?"

"नही," अपरिचित ने आराम से बैठते और नकेल सभालते हुए एक ठण्डी सास ली, "नजर नही आया। बस इतना मालूम पड गया, बाय कि तुम महामूर्ख हो। पर दिल छोटा मत करो, लेकिन आज से तुम सबके सामने डीग मारकर कह सकते हो कि तुमने अलदार-कोसे के साथ मिलकर धरती का नुक्कड ढूढने की कोशिश की थी!"

"अलदार-कोसे! क्या तुम्ही हो?" बाय जोर से चिल्लाया और ऊटसवार के पीछे भागा। "मेरा ऊट लौटा दे, लुटेरे!"

"लौटा दूँगा, अगर मुझे पकड़ लोगे!" अलदार-कोसे ने चिल्लाकर कहा और ऊट को सीधा दौड़ाने लगा, वह भी ऐसे कि घास की गड्डिया की गड्डिया उड़ने लगी। और बाय मुँह बाये जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया।

वह सूरज डूबते-डूबते किसी तरह घिसटता हुआ अपने गाव तक पहुँच पाया। सामने से उसकी पत्नी आ रही थी।

"पैदल क्या हुए आ रहे हो? ऊट कहाँ गया?"

"ऊट नही है। अलदार-कोसे ने छीन लिया," बाय गुर्राया।

बाय की बीवी रोने-चीखने लगी। लोग जमा हो गये। सबको किस्सा मालूम पड गया।

"कैसे छीना," लोगो ने पूछा, "जबरदस्ती या चालाकी से?"

"चालाकी से," बाय ने स्वीकार किया।

गाव में हल्ला मच गया। जवान ठहाके लगाने लगे, बूढ़े मजाक उड़ाने लगे।

"तुम्हें ऐसा ही सबक मिलना चाहिए था, शेखीबाज! अब सारी बस्ती वालों को बुलाओ और दावत दो। तुम बाजी हार गये।"

बाय बेचारा कहाँ जा सकता था? जनसाधारण की इच्छा का विरोध नहीं किया

मुल्ला लगाम पकड़कर हाँफता हुआ कुएँ में उतरा और पानी के ऊपर लटका रहा।
"मुझे धीरे-धीरे नीचे उतारो, देखो, बहुत होशियारी से!" भीतर से उसकी आवाज गूंजी। "अरे, इतनी देर क्यों कर रहे हो?"

"अरे, हमें जल्दी कहाँ की पड़ी है, मेरे बाप?" उसे ऊपर से आवाज सुनाई दी। "उतावला सो बावला, धीरा सो गम्भीरा। मैं देर इसलिए लगा रहा हूँ, क्योंकि सोच रहा हूं। और मैं सोच यह रहा हूं; क्या आपको फौरन बता दूँ कि कुएँ में कोई अशरफी-वशरफी नहीं है?"

"क्या?!" मुल्ला चीखा। "कुएँ में अशरफियां नहीं हैं? ठग! यानी तुमने झूठ बोला कि अलदार-कोसे ने तुम्हारे साथ बहुत बुरा मजाक किया था?"

"हाँ, झूठ बोला, झूठ बोला, कबूल करता हूँ, मोहतरम मौलाना! अलदार-कोसे ने सचमुच मजाक उड़ाया, पर मेरा नहीं, आपका। क्योंकि अलदार-कोसे तो मैं खुद हूँ।"

"हाय मेरा सिर!" मुल्ला चीखा, उसके हाथ से लगाम छूट गयी और वह छप्प से पानी में गिर पड़ा।

कुआं वास्तव में अधिक गहरा नहीं था। मुल्ला कमर तक पानी में खड़ा गालियाँ देता रहा, लानतें भेजता रहा, धमकियाँ देता रहा, पर शीघ्र ही उसकी समझ में आ गया कि वह इस तरह अलदार का कुछ न बिगाड़ सकेगा। तब मुल्ला दूसरी तरह बोलने लगा:

"अलदाकेन, मेरे प्यारे दोस्त, मैं तुम्हारी शरारत के लिए तुम से अब नाराज नहीं हूँ। तुम भी मुझ से नाराज मत होओ। तुमने मजाक किया – बस। जल्दी से लगाम का छोर मेरे पास डाल दो, मेरी कुए से निकलने में मदद करो, प्यारे दोस्त!"

किन्तु अलदार ने मुल्ला के ही स्वर में उत्तर दिया।

"दिल से परवरदिगार की इबादत करो, मोहतरम मौलाना। अल्लाह सर्वशक्तिमान है और खुदापरस्तों पर रहम करता है। अगर आपने कोई गुनाह नहीं किया है, तो वह आप पर जरूर इनायत फरमायेगा!"

इतना कहकर बेदाढ़ी गधे पर सवार हो, जहाँ उसे जाना था, चला गया, पर मुल्ला के कपड़े अच्छी तरह छुपाना नहीं भूला। और मुल्ला न जाने कितने घंटों तक कुए में स्नान करता रहा, जब तक कि वहाँ से गुजरते सौदागरों ने उसे निकाल न लिया।

अलदार-कोसे और ग़रीब विधवा

एक गरीब विधवा का बेटा बीमार पड गया। लडके का बदन जल रहा था, वह छटपटा रहा था और बेसुधी मे बडबडा रहा था

"मा, प्यारी मा, एक घूट किमिज़ दे दो।"

मा रो रही थी उसके जन्म से ही उसकी झोपडी मे किमिज़ कभी नही रही थी। वह किनारे झडा हुआ प्याला लेकर बाय के पास गयी।

"दया कीजिये, बाय, दम तोडते बच्चे के लिए कम-से-कम आधा प्याला किमिज़ दिलवा दीजिये। मेरे पति ने बर्फ के तूफान मे आपके रेवड की रक्षा करते हुए ठिठुरकर जान गँवा दी, उसने आपकी खातिर अपने प्राण की बाज़ी लगा दी, भले काम के लिए आप भी थोडा-सा स्तेपी की जडी-बूटियो का रस* देने मे कजूसी मत करिये "

बाय उस पर केवल हस दिया

"किमिज़ चाहती है? पर डण्डा नही चाहती? कैसा जमाना आ गया! भिखमगो को भले लोगो को परेशान करते शर्म नही आती! भाग यहा से, बेशर्म भिखमगी!" और उसने स्त्री को दरवाजे से बाहर धकेल दिया।

वह झर-झर आसू बहाती धीरे-धीरे घर लौट चली। आधे रास्ते मे उसे पीछे से घोडे की टाप सुनाई दी। उसने डरकर पीछे देखा अलदर-कोसे चितकबरे सफेद घोडे पर आ रहा था।

"अपको किसी ने बुरा कहा, खातून? आप रो क्यो रही है?" अलदार ने पूछा।

विधवा ने उसे अपने कष्ट के बारे मे बताया।

"दिल छोटा मत करिये," अलदार ने कहा। "मेरा खयाल है सिर सलामत रहे, पगडी मिल ही जायेगी।"

---

* कज़ाख लोग किमिज़ व दूध को "जडी-बूटियो का रस" कहते हैं।

"मजूर!" बाय ने दिल थाम लिया। "ऊट तुम्हारा हुआ।"

"बहुत ही अच्छी बात है। पर मुझे मजूर नही है।"

"क्यो मजूर नही है?" बाय बौखला उठा। "यह उल्टा काम क्यों करना चाहते हो? मर्दों का एक कौल होता है।"

"मुझे मजूर इसलिए नही," अलदार ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैं जरूरत से ज्यादा नही लेना चाहता! मेरे लिए घोडी ही काफी है। तुम्हारा ऊट तुम्हारे पास रहे, और घोडा – मेरे पास। मजूर है?"

"मेरी किस्मत फिर अच्छी रही," परेशान बाय मन-ही-मन खुश होने लगा, "ऊट कैसा भी क्यो न हो, उसकी कीमत घोडे से तो ज्यादा ही होती है।"

"मजूर है! मजूर है! ले जाओ अपना घोडा!" और खुशी के मारे बाय अलदाकोसे को काठी पर बिठाने लगा। जब कि अलदाकोसे ने बाय की घोडी के गले में रस्सी बाधी और वहा से चपत हो गया।

"ऐ, नौजवान!" बाय ने उसे पीछे से पुकारा, "अगर कुछ और अदला-बदला करनी हो, तो फिर आ जाना।"

"आऊगा जरूर!" घोडी सरपट दौडाते हुए अलदार-कोसे ने उत्तर दिया। "इतजार करते रहना, बाय!"

अलदार-कोसे रास्ते मे विधवा के यहा गया।

"बाय ने आपको एक चमचा किमिज देने मे कजूसी दिखाई, इसलिए मैं उसकी दुधारू घोडी आपके लिए ले आया हूँ। अब आप अपनी किमिज तैयार कर सकेगी।"

विधवा प्रसन्न हो गयी उसने घोडी को दुहा और किमिज बनाकर बेटे को पिला दी। लड़का शीघ्र ही स्वस्थ हो गया। निर्धन स्त्री अलदार-कोसे को जीवन भर याद करती रही।

बाय भी उसे नही भूल पाया। सौदेबाजी के बाद उसका जोश ठण्डा पडा, तब उसे ध्यान आया कि उसने घोडी तो बिलकुल फोकट मे दे दी, पर अब पछताये का होते है, जब चिडिया चुग गयी खेत।

तो वैसा उसके बारे मे बताओ। अफवाहें झूठी होती है, मै उनपर विश्वास नही करता," शिगायबाय बोला।

"और वैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा," अलदार ने कहा। "अच्छा तो सुनो। मै तुम्हारे यहाँ आ रहा था कि रास्ते मे मैने साँप देखा, बहुत लम्बा मोटा रेंगता हुआ साँप, जो उस कालीन से छोटा नही था जिस पर तुम बैठे हुए हो। उसका सिर उस भेड़ के सिर जैसा काला और इतना बड़ा था जिसे नौकरानी ने अपने नीचे छिपा रखा है। उसे देखकर मै दंग रह गया। पर मुझे फौरन होश आ गया और मैंने पत्थर से उसका सिर कूट डाला। उसका दम भुरता बनकर रह गया वैसा ही जिस पर तुम्हारी बीबी बैठी है। तो यह गुजरी मेरे साथ! और अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न आये, तो मेरा हाल वही हो जैसा कि उस मांस का जिसे अभी-अभी तुम्हारी बेटी साफ कर रही थी।"

इतना कहकर कोसे चुप हो गया और बाय समझ गया कि उससे कुछ भी छिपा पाना असम्भव है। तब उसने अलदार को तम्बू-घर से चलता करने के लिए देग मे चमचा डालकर हिलाते हुए कहा

"उबल, मेरे देग, पूरे तीन महीने तक उबल!"

अलदारकोसे फौरन समझ गया कि बाय की क्या मंशा है। उसने जूते उतारकर अपने पास रख लिये और ऐसे बोला मानो उन्हे ही सम्बोधित कर रहा हो

"आराम करो, मेरे जूतो, अगले बरस तक!"

फिर वह कमर के बल लेट गया और हाथ का सिरहाना लगाकर जोर-जोर से खर्राटे भरने लगा। कोसे ने आधी रात को जागकर इधर-उधर नजर दौड़ायी।

उसने चुपचाप उठकर देग मे से गोश्त निकाला और भरपेट खाकर गोश्त की जगह देग मे बाय का चमड़े का पाजामा डाल दिया। फिर वह लेट गया और गहरी नींद मे सोये होने का ढोंग रचने लगा।

भोर से पहले शिगायबाय ने पत्नी, पुत्री और नौकरानी को झझोड़कर जगा दिया और उनसे फुसफुसाकर बोला

"जल्दी से उठो! चलो, जब तक कोसे सोया हुआ है, हम गोश्त खा डालते हैं।"

नौकरानी ने "गोश्त" लगन मे डालकर उसे दस्तरखान पर रख दिया। सब लोग गोला बनाकर बैठ गये और "गोश्त" के टुकड़े काटने की कोशिश करने लगे, पर चाकू उसपर चल ही नही रहा था।

"यह क्या हुआ? कही गोश्त इतनी देर तक उबलने से सख्त तो नही हो गया है?" शिगायबाय बोला।

अन्त मे वह किसी तरह अपने लिए एक टुकड़ा काटने मे सफल हो गया। उसने चमड़ा मुह मे डाला, चबाता रहा, चबाता रहा, उसके दात टूटते-टूटते बचे, पर किसी तरह चबा ही नही पाया।

तब बाय बोला :

"नहीं, बीबी, यह गोश्त खाना टेढ़ी खीर है। इसे कल के लिए छिपा दो, और थोड़ी यखनी डाल दो।"

रात ऐसे ही बीत गयी, पर सिग्रायबाय को अलदार-कोसे की कारिस्तानी की हवा न लगी।

सुबह सिगायबाय खेत जाने को तैयार हुआ, उसने पत्नी को बुलाकर कहा

"बीवी, मेरे लिए तूबे में ऐरान* भर दो। पर देखो, कोसे को दिखाई नहीं पड़े।"

"ठीक है," पत्नी बोली," मैं ऐरान ऐसे भरूंगी कि कोसे को कुछ नज़र नहीं आयेगा।"

बाय तूबे को बग़ल में दबाकर जाने ही लगा था कि अलदार ने उसकी फूली हुई त देख ली और लपककर उसके गले के इर्द-गिर्द हाथ डाल उसे ऐसे भींचने लगा, नो उससे बिछुड़ने जा रहा हो।

"अरे, आज मैं तुम्हे छोड़कर जा रहा हूँ, बाय। अलविदा, दोस्त, अलविदा!"

इस दौरान वह बाय को पूरी ताक़त से झकझोरता रहा, उसे इधर-उधर हिलाता रहा। ऐरान बाय के पैरों पर ढुलने लगी, पर वह सहता रहा, कुछ नहीं बोला। फिर ससे न रहा गया, उसने तूबा जमीन पर पटक दिया और चिल्लाया

"ले, शैतान, ले, पी ले मेरी ऐरान!"

बाय उस सुबह वैसे ही खाली पेट घर से चला गया।

अगले दिन सिग्रायबाय फिर खेत जाने को तैयार होकर पत्नी के कान में फुसफुसाया

"बीवी, ओ बीवी, मुझे गरम-गरम रोटी सेक दे, लेकिन इस तरह कि अलदार को कुछ नज़र न आये।"

"ठीक है," पत्नी ने उससे कहा, "पकाये देती हूँ।"

उसने कोने में छिपकर रोटियां सेक ली और सोचने लगी "इस बार शायद कोसे कुछ नहीं देख पाया होगा। अब ये मन भरके रोटी खा सकेंगे।"

पर कोसे सब देख रहा था, केवल सोने का ढोंग रच रहा था।

बाय ने गरम-गरम रोटियां काख में दबायी ही थी कि वह उचककर बिस्तर से उठा और बहुत प्रेम व सहृदयता से बोला

"अच्छा, बाय, मैं तुम्हारे यहाँ कुछ दिन रह लिया – बहुत हो गया। मैंने आज शहर जाने का फ़ैसला कर लिया है। आओ, जाने से पहले तुम्हें कसकर गले लगा लू।"

सिग्रायबाय मुह भी न खोलने पाया कि अलदार-कोसे ने उसको बांहों में कसकर भींचना और दबाना शुरू कर दिया। बाय का पेट गरम रोटियों के मारे जलने लगा। आख़िर बाय से नहीं सहा गया और वह अचानक चिल्ला उठा

---

* ऐरान – मट्ठा।

"हाय रे, हाय रे, मेरा पेट जल गया!"

कोसे ने उसे छोड़ दिया, और शिगायबाय सारी रोटियां जमीन पर फेंकते हुए बोला

"ले, बेशर्म कोसे, ले, खा मेरी रोटियां!"

कोसे ने रोटियां खा ली और फिर बगल के बल लेट गया, बाय फिर भूखा चला गया।

इस तरह कई दिन बीत गये, पर शिगायबाय किसी तरह अलदार-कोसे से पिंड नहीं छुड़ा पाया। इसलिए बाय किसी न किसी तरह बिनबुलाये मेहमान को परेशान करने की सोचने लगा।

अलदार-कोसे के पास माथे पर सफेद दागवाला मुश्की घोड़ा था। वह शिगायबाय के निजी घोड़ों के साथ उसके अस्तबल में बंधा हुआ था। बाय ने उस घोड़े को काट डालने की ठानी।

पर अलदाकोस शिगायबाय का इरादा भांप गया और सोचने लगा "ठहरो, बाय, तुम्हें अपनी करतूत पर पछताना पड़ जायेगा!"

उसने अपने घोड़े की राज पर लीद मल दी, और शिगायबाय के एक घोड़े के माथे पर खड़िया से सफेद दाग बना दिया।

शिगायबाय आधी रात को बिस्तर से उठा, अस्तबल में गया और कोसे को धोखा देने के लिए वहां से भयभीत स्वर में चिल्लाने लगा

"कोसे, कोसे! तुम्हारा घोड़ा लगाम में फंस गया, आखिरी सांसें गिन रहा है!"

कोसे जवाब में चिल्लाया

"मरने दो उसे बस उसे काट डालो, जिससे गोश्त बेकार न जाये।"

बाय ने तत्क्षण राज के सफेद धब्बेवाला घोड़ा काट डाला। सुबह जब वह अस्तबल में गया, तो देखा उसने अपना ही घोड़ा काट डाला था। बाय दुख के मारे रो पड़ा।

इस बीच अलदाकोस एक ही जगह रहते-रहते ऊब उठा और जाने की तैयारी करने लगा।

एक बार वह शिगायबाय से बोला

"प्यारे बाय, मुझे बीज* दे दो। मैं जाना चाहता हूं, मेरे जूते बिलकुल फट गये हैं।"

"मेरी बीवी से मांग लो वह तुम्हें बीज दे देगी," बाय ने जवाब दिया और जानवरों को संभालने स्तेप चला गया।

अलदार-कोसे बाय की पत्नी के पास जाकर बोला

"बाइबिशे** शिगायबाय ने फरमाया है कि अपनी बेटी बीज-बेकेश को मेरी बीवी बनाकर मेरे साथ भेज दो।

---

* बीज – बड़ी सुई सुआ।

** बाइबिशे – बाय की पत्नी।

"तुम्हारा क्या दिमाग खराब हो गया है?" बाय की पत्नी चिल्लायी। "वे क्या कभी बीज-बेकेश की शादी तुम्हारे साथ कर सकते है?"

तब अलदाकेन उसे तम्बू-घर मे बाहर लाया और उसके सामने उसने बाय को आवाज दी.

"बाय, ओ बाय, तुमने मुझे बीज देने का वादा किया था, पर तुम्हारी बीवी मुझे बीज को नही दे रही है!"

सिग़ायबाय खेत से जवाब मे चिल्लाया

"दे दो, बीवी, इसे बीज दे दो, बस किसी तरह इससे पिण्ड तो छूटे!"

बुढिया क्या करती, उसे अपनी सुन्दर बेटी चलते पुर्जे अलदार-कोसे को देनी पड गयी। वह बेटी को विदा करती हुई रो पडी और कहने लगी

"तुमने हमारा जीना हराम कर दिया, मुए कोसे, तुम्हे कभी नही भूलेगे! भाग जाओ यहा से, दूर हो जा मेरी नजरो से, फिर कभी लौटकर हमारे पास मत आना।"

अलदार-कोसे ने घोडे पर काठी कसी, अपने आगे बीज-बेकेश को बिठाया, लगाम फटकारकर घोडा हाका और – फिर कभी वहा नजर नही आया।

अलदार-कोसे, बाय और सधाया हुआ खरगोश

अलदार-कोसे को एक दिन उसका पुराना मित्र मिल गया।

"तुम इतने दुःखी कैसे हो रहे हो?" अलदार ने उसे गले लगा लिया। "उदास क्यों हो? सुनाओ, क्या हाल है?"

"बस जी रहा हूँ," मित्र ने गहरी ठण्डी सास ली, "न कुछ तन ढकने को है, न कुछ पकाने को। भूख घर से बाहर भागने को मजबूर करती है, तो नंगापन—घर में भागने को। मेरा घर उजड़ा जा रहा है, अलदाकेन।"

"लेकिन, तुम्हारे पास भेड़े तो थी!"

"थी। दसियो थी। लेकिन अब एक भी नही रही है।"

"सब मर गयीं क्या?"

"मरी नही, बाय कारीनबाय ने छीन ली। सारी की सारी। मैंने पूछा: 'क्यो मुझे तबाह कर रहे हो, बाय?' वह हसने लगा 'इस लिए, क्योंकि तुम्हारे दादा ने मेरे दादा को गीत मे सूदखोर कहा था।'"

अलदार की भौहे फड़क उठी।

"बात यह है, दोस्त लड्डू कहे मुह मीठा नही होता। तुम्हे बातो की जरूरत है। और कसम खाकर कहता हूँ, भेडे तुम्हे मिलेगी! जरा बस पूनम तक सबर करो।"

एक दूसरे से विदा लेकर वे अपनी-अपनी राह चले गये।

अलदार-कोसे स्तेपी मे डग भरता, नाचता चला जा रहा था, मानो अपनी हाल की बातचीत के बारे मे बिलकुल भूल गया हो। अचानक उसके पैरो के बीच से खरगोश के दो बच्चे निकलकर अगल-बगल भागे।

खरगोश फुरतीले तो थे, पर अलदाकेन से अधिक नही: वह बायी ओर मुड़ा, फिर दायी ओर दोनो के कान पकड़कर उठा लिया।

वह उन्हे घर ले आया। पत्नी बहुत प्रसन्न हुई:

"खरगोश के बच्चे थोडी देर को मुझे दीजिये! आपने इन्हे कहाँ पकड़ा?"

ब बता दूँगा। तब तक सुनो मैं क्या कहता हूँ। जल्दी जाओ, खूब
ना बनाओ। आज हमारे यहाँ मरभुक्खा कारीनबाय आयेगा। उसका
रना है और भरपेट खिलाना है। और जब वह पूछे कि तुम्हें खबर किसने
ना 'खरगोश ने'। और उसे लंबकर्ण दिखा देना। मेरी बात याद रहेगी
: है।'

ने आश्चर्यचकित पत्नी के हाथों में एक खरगोश थमा दिया और दूसरे
पने साथ लेकर घर से बाहर लपका। पलक झपकते वह गाव कारीनबाय
चुका था।

बाय ने अलदार पर और उसके सीने से सटा रखे खरगोश पर तिरछी नजर
जहरीली हुंकार के साथ बोला
हारी चालबाजियों से क्या भरपेट खाने को नहीं मिल पाता, बेदाढ़ी? यानी
र पाता तो खरगोश के गोश्त का धंधा शुरू कर दिया?'

दर-कोसे ने शान से जवाब दिया
ानी से पहले पुल मत बाधो, बाय। मुह चलाने से पहले ज़रा पूछ तो लेते कि
खरगोश कैसा है। यह कोई ऐसा-वैसा खरगोश नहीं है – सधाया हुआ है। इसे
क्यों न भेजो, कैसा भी काम क्यों न दो, सब जैसा कहो वैसा ही करता है।
फुरतीला नौकर तो किसी बादशाह के पास भी नहीं होगा।'

बाय भौंचक रह गया।

"बेशर्म गपोड़िया! तुम किसकी आँखों में धूल झोंक रहे हो? क्या तुम्हें मेरे मिजाज
ता नहीं है? धोखेबाज के लिए मैं तुम्हें ऐसी मार लगाऊँगा कि छठी का दूध याद
जायेगा!"

"अरे, अरे, गाली देना अच्छा नहीं होता, बाय," अलदार कोसे ने उलाहना
या। "लेकिन तुमसे और उम्मीद भी क्या की जा सकती है। जैसी तेरी तूमड़ी वैसा राग
तेन। मैं बुरा नहीं मानता – कुत्ता भौंके – काफिला सिधारे। पर खरगोश के लिए दिल
दुखता है। तुम इस पर भरोसा क्यों नहीं करते? कहो तो दिखाऊँ इसका कमाल?"

"दिखाओ!" बाय ने एक ठण्डी सास लेकर कहा।

अलदार-कोसे ने खरगोश को अपने चेहरे तक उठाया और उसके कान में कहा

"ऐ, तेज़रफ्तार! पूरे ज़ोर से घर भागकर जा और घरवाली को बता दे कि मैं
मोहतरम कारीनबाय को घर खाने पर ला रहा हूँ। हमारे आने से पहले घर की सफाई
कर ले और खाना तैयार कर ले।" और उसने खरगोश को घास पर छोड़ दिया।

खरगोश थोड़ी देर बैठा, फिर उसने कान हिलाये, एक-दो छलांग लगायी और
अपने को आज़ाद महसूस कर स्तेपी में ऐसे भागा जैसे कोई शिकारी कुत्ता उसका पीछा
कर रहा हो।

अलदार-कोसे की हिकमत

एक बार अलदार-कोसे किसी पहाड़ी चरागाह से गुज़र रहा था, अगल-बगल झांकता जा रहा था, खाने की जगह तलाश रहा था। अचानक उसने देखा दो टेकरियों के बीच कोई एक हज़ार भेड़ों का रेवड़ चर रहा है, और उनका गड़रिया केवल एक है—गंदे चिथड़े पहने एक बुढ़ऊ।

अलदार ढलान से नीचे उतरा।

"किसकी भेड़ें चरा रहे हो, चचा?"

"किसी की भी हों, तुम्हें इससे क्या," गड़रिया रुखाई से गुर्राया।

"बेकार नाराज़ हो रहे हो, मोहतरम, मैंने तो तुमसे सच्चे दिल से पूछा है। मुझे तुम्हारे बुढ़ापे पर रहम आ गया था। आखिर इतने बड़े रेवड़ की रखवाली करना कोई मज़ाक तो है नहीं। तुम्हारा बाय बड़ा बेरहम है, खुदा करे उसका घर उजड़ जाये।"

बूढ़ा और ज़्यादा खीज उठा।

"खाक पड़े तुम्हारे मुंह को! कौन है ऐसा बाय? नहीं चाहिए मुझे कोई बाय-वाय। मैं खुद बाय हूं।"

"तो यह बात है!" अलदार ने सीटी बजायी। "कोई बात नहीं, ज़िन्दगी में सब होता है। लालची कुत्ता भी भूखे कुत्ते से हड्डी छीन लेता है। पर फिर भी मेरी समझ में नहीं आता कि इतना माल-मता होते हुए भी तुम कुछ नौकर क्यों नहीं रखते हो।"

"नौकरों को खाना खिलाना पड़ता है, क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है?"

"तुम कहते हो तो ज़रूर सच होगा," अलदार ने स्वीकार किया। [illegible] [illegible] चला, [illegible] [illegible]. फिर भी नौकर के होने पर तुम ज़्यादा चैन से [illegible]। तुम्हारी उम्र में भेड़ों के पीछे दौड़-भाग करके बीमार पड़ते देर नहीं लगती।"

"बीमार पड़ते देर नहीं लगती, कहते हो..." बाय ने [illegible] कहा। "[illegible] [illegible] से बीमार हूं।"

"क्या बीमारी है, तुम्हे चचा?" अलदार-कोसे ने काठी से नीचे झुककर पूछा।

बूढे ने टिमाक – लोमड़ी की खाल की टोपी उतार दी।

"देखा? सारी टाट पर फोडे हो रहे हैं। खुजली के मारे नाक मे दम रहता है। जितनी जोर से खुजाता हू, उतनी ही ज्यादा खुजली चलती है"

अलदार ने सहानुभूतिपूर्वक सिर हिलाया।

"ओफ, कितनी तकलीफ होती है, बाय! तुम्हे इलाज कराना चाहिए।"

कष्ट के मारे बूढे का चेहरा विकृत हो उठा।

"इलाज कराने के लिए पैसे खर्च करने पड़ते हैं। ठग हकीम मुफ्त मे तो तिनका भी नही देते। कुछ चालाक मेरे पास आते रहे हैं। एक इलाज के बदले मे ऊट मागता है, दूसरा – तेज घोडा, तीसरा – घोडो का पूरा झुण्ड मैंने सबको भगा दिया। इतना नुकसान भुगतने से तो बेहतर है कि मेरा सिर सड़ता रहे।"

"प्यारे बाय!" अलदाकोस ने अचानक हाथ उठाये। "अल्लाह का शुक्रिया अदा करो, – तुम्हारी किस्मत खुल गयी!"

"चीखते क्यो हो, फिट्टे मुह! भेडो को डरा दिया! कैसे खुल गयी मेरी किस्मत, बताओ?"

"इसलिए, बाय, क्योकि मैं भी हकीम हूँ। लेकिन मैं वैसा हकीम नहीं हूँ, जैसे कि सब होते हैं। मैं लोगो की किसी लालच से नही, अपने सकल्प के कारण मदद करता हूँ। किसी भी रोग का इलाज कर सकता हूँ"

बाय की आश्चर्य से आखे फटी की फटी रह गयी।

"फिर भी क्या यह नही बताओगे, नौजवान, कि इलाज करने का तुम क्या लोगे?" उसने अन्त मे पूछ ही लिया। जब कि मन मे वह सोच रहा था, "बेकार मुझे बनाने की कोशिश कर रहे हो, प्यारे। छोटे मुह बडी बात!"

"क्यो नही बताऊगा," अलदार-कोसे ने सहर्ष उत्तर दिया। "परवरदिगार से सिर्फ लम्बी उम्र और चैन की मौत मागूगा, मुझे और कुछ नही चाहिए।"

बाय को लगा जैसे उसके कानो को धोखा हुआ है।

"सच?"

"मैं तुम्हे धोखा क्यो दूगा?" अलदार ने कधे उचकाये। "लोग फायदे की खातिर झूठ बोलते है, अपना नुकसान कराने की खातिर झूठ बोलने मे क्या फायदा।"

"यह हकीम जरूर पागल है," बाय ने सोचा, "लेकिन बेवकूफ की बेवकूफी से ही तो अक्लमद का खजाना भरता है। अल्लाह मुझे सचमुच छप्पर फाडकर दे रहा है। यही तो मौका है अपना उल्लू सीधा [illegible] का। जब [illegible] से कुछ जा ही नही रहा है, तो क्यो न इलाज करा लू?" [illegible] भी अच्छा है, और न भी हो, तो क्या, अपना [illegible]

और बूढ़ऊ तुरन्त बदल गया।

"ओ मेरे मेहरबान," वह चापलूसी करने लगा, "तुम्हारी सारी उम्मीदे और ख्वाहिशे पूरी हो! मुह फेरकर मत जाओ, बूढ़े का इलाज कर दो, उसे तकलीफो से छुटकारा दिला दो, अपनी दवा का जादुई असर दिखा दो! "

"मिन्नत मत करो," अलदार-कोसे कूदकर घोडे से उतरा, "मैं बिना कहे तुम्हारी मदद करूगा। एक मेढ़ा काटो!"

बाय चौंक उठा और पीछे हटने लगा।

"मेढ़ा काटू? अभी-अभी तो तुम कह रहे थे कि तुम मुफ्त मे इलाज करोगे!"

"मैं अपनी बात हज़ार बार दोहराने को तैयार हू! लेकिन मेढा मैं अपने नही तुम्हारे फायदे के लिए माग रहा हूँ। खुजली का इलाज करने के लिए भेड के मेदे की जरूरत है। और इलाज शुरू करने से पहले मरीज़ को भरपेट भेड का गोश्त खाना भी जरूरी है। वरना कोई फायदा नही होगा।"

बाय सोच मे पड गया। किन्तु उसी समय उसकी टाट मे इतनी तेज़ खुजली चली कि वह ऐसे सिर झटकने लगा, जैसे कुकुरमखियो का सताया बछेडा। अलदार ने यह देख लिया।

"हाँ तो, बाय, इलाज कराओगे? क्या तुम्हे अपनी बदबूदार टोपी अपनी जान से ज्यादा प्यारी है?"

बाय नाक सुडकता रेवड की ओर बढा। उसने थोडा कम मोटा मेमना चुना, उसे काटकर साफ किया, टोपी अलदार-कोसे को थमा दी और लोथ को देग मे डाल दिया। गोश्त पक गया।

"खाओ, बाय!" अलदार-कोसे ने हुक्म दिया। "खाओ, खाओ, मेरी तरफ मत देखो: मैं गोश्त मुह मे नही डालूगा।"

बाय ने सन्देहपूर्वक अलदार की ओर तिरछी नजरो से देखते हुए गोश्त का टुकडा काटा और लालच के मारे उसे पूरा का पूरा निगल गया।

"खाओ, और खाओ!" अलदार ज़ोर देने लगा।

"बस!" बाय ने आस्तीन से मुह पोछा। "कल और परसो भी तो सूरज निकलेगा। अगर मैं गोश्त थोडा-थोडा करके खाऊ, तो यह कई दिनो के लिए काफी होगा "

अलदार खिलखिलाकर हस पडा।

"ओफ, कितने लालची हो तुम, बाय! एक भेड को साल भर खाने की आस मे हो? नही, भई, डेढ़ पाव आटे की पुल पर रसोई नही बनायी जाती। खैर, यह तुम्हारी मर्जी है, मुझे तुम्हे समझाने की फुरसत नही है। गढ्ढे मे उकडूँ बैठ जाओ, टोपी उतार फेंको और हिलो नही!"

बाय ने वैसा ही किया। अलदार ने भेड का पेट चाकू से चीरा और उसे बाय के सिर पर टोपी की तरह ओढ़ाने लगा।

"तुम क्या कर रहे हो?" बाय पिनपिनाया। "ऐसे तो मेरा दम घुट जायेगा! ."

"सबर रखो, सबर, मोहतरम," अलदार चिल्लाया, "सबर रखो और बार-बार जोर से मतर दोहराओ "हवा जो साथ लायी, साथ उडा ले गयी! सात हजार बार यह दोहराओगे और बिलकुल ठीक हो जाओगे। देखो, गिनती मे चूकना नही!"

बाय सहमा गड्ढे मे से निकलने लगा।

"पर मेरी भेडे? उन्हे कौन चरायेगा?"

"फिक्र मत करो, मैं थोडी देर चरा लूगा।"

"तुम पर भरोसा कैसे करू! तुम उन्हे भगा ले जाओगे! क्योकि मुझे तो कुछ नजर ही नही आ रहा है "

"नजर नही आ रहा है, तो क्या, सुनाई तो दे रहा है। जब तक भेडे आस-पास चरती रहेंगी, शोर सुनाई देता रहेगा। और शोर बद हुआ, तो क्या तुम्हे मालूम नही पडेगा?"

बाय चुप हो गया हकीम ठीक कहता है, हालाकि वह है कुछ अजीब आदमी। और वह तग गड्ढे मे सिर पर भेड का पेट ओढे दोहराने लगा

"हवा जो साथ लायी, साथ उडा ले गयी! हवा जो साथ लायी, साथ उडा ले गयी! "

तब अलदाकेन ने भेडो को पुकारते हुए देग मे से गोश्त निकालकर छककर खाया, बचा-खुचा गोश्त और भेड की आते सारी चरागाह मे बिखेर दी। फिर उसने रेवड को एक जगह इकट्ठा किया और अपने घोडे पर बैठ उसे हाकता हुआ पहाड और घाटियां पार करके न जाने कहा चम्पत हो गया। केवल इतना ही मालूम हुआ कि उस दिन के बाद मे कई गरीबो के यहा, जिनके पास कभी अपने जानवर नही रहे थे, भेडे हो गयी – किसी के पास पाच, किसी के पास दस और कई बच्चोवाले परिवारो के यहा तो उससे भी ज्यादा।

रेवड जैसे ही चरागाह से सरका, चारा देखकर भेड के बचे-खुचे गोश्त पर चारो ओर से हजारो चिडिया आकर टूट पडी, पख फडफडाती शिकार की खातिर आपस मे जूझने लगी। बाय को लगा जैसे उसकी भेडे आस-पास चर रही हैं। वह ध्यान से सुनता, फिर अपना मतर जपने लगता फिर सुनता, फिर जपता।

'हवा जो साथ उडा ले गयी! "

. शाम होने पर बाय से औरते भेडो को ढूढने वहा आयी। उन्होने इधर देखा, उधर देखा – भेडो का कही नाम-निशान नही था, स्तेपी के ऊपर केवल चिडियो के झुण्ड मडरा रहे थे, और कही जमीन के नीचे से बाय की आवाज आती सुनाई दे रही थी। उन्होने गड्ढे मे झाककर देखा और सब एक साथ जोर से चिल्ला उठी

तुम यहा क्यो बैठे हो? मरने जा रहे हो या किसी से छिपकर बैठे हो? तुम्हारे सिर पर यह क्या है? हवा के बारे मे यह क्या रट लगा रखी है? भेडे कहा गायब हो गयी? कोई मुसीबत तो नही आ गयी है?"

अलदार-कोसे ने ग़रीब नौजवान की शादी करवायी

एक बाय था। था तो वह बिलकुल उल्लू का पट्ठा, पर अपने को महान कलावन्त समझता था। जब वह गाल फुलाकर और आँखें निकालकर सबिज़्ग़ी* बजाना शुरू करता, लोग स्तेपी में भागने लगते, कुत्ते इतने ज़ोर से भौंकने लगते, मानो उन्हें आस-पास भेड़िये की गंध आ गयी हो। पर बाय का ख़याल था कि उससे अच्छी सबिज़्ग़ी दुनिया में और कोई नहीं बजा सकता।

उस बाय की एक रूपसी बेटी थी। मलिक नाम के एक दिलेर नौजवान को उससे प्रगाढ़ प्रेम हो गया। किन्तु मलिक के पास कुछ नहीं था – न ढोर, न धन, जबकि बाय बेटी के लिए महर की बहुत मोटी रक़म मांगता था। एक बार उस नौजवान को अपनी बेटी के आस-पास जमा भीड़ में देखकर बाय उस पर चिल्लाने लगा:

"दफ़ा हो जा, छिछोरे, गांव से और फिर कभी मुझे नज़र मत आना! भिखमंगे और बड़े आदमी की बेटी का क्या मेल! मैं उससे तेरी शादी उसी सूरत में करूंगा, जब मैं मर रहा होऊंगा, और तू मेरी जान बचा लेगा!"

दुख और विरह के मारे नौजवान स्तेपी में चला गया, और वहां उसकी मुलाक़ात अलदार-कोसे से हो गयी।

"मुंह क्यों लटका रखा है, दोस्त?" अलदार-कोसे ने पूछा। "सूरज ने धरती को गरमाना बंद कर दिया है या धरती ने जानवरों का पेट भरना बंद कर दिया है?"

मलिक ने ईमानदारी से सारा क़िस्सा उसे बता दिया।

"दिल छोटा मत करो," अलदार-कोसे बोला, "रूपवती तुम्हारी ही होगी। मुझपर भरोसा रखो। मुलायम दूब पर शाम तक लेटे रहो, तब तक मैं बाय की मिज़ाजपुरसी कर आता हूं।"

बाय को ऐसे मेहमान के आने की ज़रा भी आशा नहीं थी।

---

* सबिज़्ग़ी – क़ज़ाख़ों की बांसुरी।

फटे चोगे के बदले में पोस्तीन

ठण्ड और हवा, बर्फ की आंधी और तूफान यानी हूत – फरवरी का भयानक महीना आ पहुंचा। लोग सदियों से कहते आये हैं "हूत आया, चारे का अकाल – जूत पड़ा।" ठण्ड में ढोरों की भी मुसीबत: खराब मौसम में जाड़े के पड़ाव के छप्पर तले हालत खराब हो जाती है, और खुली स्तेपी में तो उससे भी बुरी।

बर्फ़ की तेज़ आंधी में – काठी पर बैठे सवार को घोड़े की अयाल भी नज़र नहीं आ रही थी – अलदार-कोसे मरियल घोड़े पर बैठा धसान बर्फ़ पर घिसटता चला जा रहा था। घोड़ा क़दम-क़दम पर बर्फ के ढेरों में फंसकर घुटनों के बल गिर रहा था, वह उसे कितना ही हांकता, पर उसमें तेज़ वह नहीं चल पा रहा था।

अलदार के सिर पर फटी टोपी थी, कंधों पर फटा चोगा और पैरों में – नमदे के फटे-पुराने मोज़े। बेचारा बुरी तरह ठिठुर गया था, सिकुड़ रहा था, हथेलियों पर फूंक मार रहा था, ठण्ड और रास्ते को कोसता जा रहा था, पर फिर भी हिम्मत नहीं हार रहा था।

"केवल मुरदे को ही अच्छा मौका मिलने की आस नहीं रहती है," अलदाकेन सोचने लगा।

उसने यह सोचा ही था कि हवा ने उसके सामने फैली कोहरे की चादर चीर दी, देखा स्तेपी में उसका रास्ता काटता कोई घुड़सवार चला आ रहा है। उसका घोड़ा बर्फ़ानी ढलानों पर फुरती से चला आ रहा था। यानी घोड़ा बढ़िया था। और ऐसा घोड़ा बाय के सिवा और किसके पास हो सकता है। अलदाकेन खुश हो गया

"यही है अच्छा मौका! शिकार बिना हांके जाल में फंसने चला आ रहा है!"

उसने झटके से टोपी गुद्दी पर खिसकायी, चोगे का सीना खोल दिया और लगाम ऐसे ढीली छोड़कर, मानो उसे ज़रा भी जल्दी न हो, पूरी ऊंची आवाज़ में गाना गाना शुरू कर दिया।

घुड़सवार एक दूसरे के बराबर पहुंचे। अलदार तत्क्षण समझ गया कि उसका अनुमान गलत नहीं था: समझदार मोटे-ताजे अरगामाक* पर शानदार पोस्तीन पहने तोंदल-तुंदवाला धनवान बाय इठलाता जा रहा था।

"क्या अकड़ रहा है?" बाय ने घोड़ा रोका। "ठण्ड से हालत खराब हो रही है क्या?"

"मुझे तो बिलकुल भी ठण्ड नहीं लग रही है," अलदार-कोसे ने खुशी-खुशी जवाब दिया। "सच कहूं तो मुझे ताजा हवा से बहुत अच्छा लग रहा है। इसके बिना तो मेरा गर्मी के मारे दम ही निकल गया होता।"

"बकवास बंद कर!" बाय ने उसे डांट दिया। "मैंने इतना बढ़िया पोस्तीन पहन रखा है, फिर भी मेरी हड्डियां तक ठिठुर रही हैं। क्या सचमुच तुम्हारा चिथड़ा लोमड़ी की खाल से भी ज्यादा गरम है?"

"मेहरबान," अलदार कृपापूर्वक मुस्कराया, "तुम जन्म से तो मूर्ख नहीं हो, पर तुम्हें अनुभव जरूर कम ही है। क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि मेरा चोगा कैसा है?"

"फौरन यह बताने के लिए कि तुम्हारे चोगे में चाहे जब एक सौ पैबंद लगाये जायें उसमें दो सौ छेद होंगे, और कितने अनुभव की जरूरत है?" बाय गुर्राया।

"ओफ, कैसी नासमझी की बातें करते हो, मेरे बाय!" अलदार ने उलाहना देते हुए भौंहें सिकोड़ीं। "भला क्या जाने बसन्त की बहार! तुमने मेरे चोगे में बहुत-से छेद तो देख लिये, पर इतना नहीं समझ पाये कि इन छेदों में चमत्कारी शक्ति छिपी है। मेरा चोगा कोई मामूली चोगा नहीं, जादुई है। मुझ पर हवा और ठण्ड का कोई असर नहीं होता, वे एक छेद से घुसती हैं और फौरन दूसरे से बाहर निकल जाती हैं। मुझे तो अपने बहुमूल्य चोगे में वैसे भी कड़ाके के जाड़े में गर्मी के दिन जैसा मजा महसूस होता है।"

बाय सुन रहा था और बराबर मुंह फाड़े जा रहा था।

"वाह, कितना बढ़िया चोगा है!" उसे ईर्ष्या हो रही थी। "इस बुद्धू ने इसे कैसे हथियाया?"

"तुम्हारा पोस्तीन बहुत बढ़िया है, बाय," अलदार-कोसे उस समय सोच रहा था, "पर तुम्हारे कंधों पर वह वैसे ही नहीं टिका रह सकेगा, जैसे फूटी सुराही में पानी।"

बाय कुछ देर सोचता रहा, नीली पड़ी नाक से सू-सू करता रहा और एकाएक कह उठा:

"अदला-बदला करना चाहते हो? मैं तुम्हें लोमड़ी की खाल का पोस्तीन देता हूं, और तुम मुझे—जादुई चोगा।"

"चोगा दे दूं?" अलदार ने व्यंग्यपूर्वक बाय पर नजर डाली और टोपी उतारकर उससे झलने लगा। "नहीं, प्यारे बाय, बेकार की बातों में समय व्यर्थ गंवाने से तो बेहतर होगा कि तुम अपने पोस्तीन में पूरी तरह जमने से पहले अपने घर चले जाओ।"

---

* अरगामाक—घोड़े की बढ़िया नसल।

बाय और ज्यादा जोश में आ गया :

"अगर तुम्हे पोस्तीन कम कीमत का लगता है, तो मैं ऊपर से रकम दूगा। स्तेपी में अकाल पडा हुआ है। पैसा हर जगह काम आ जायेगा।"

"मुझे पैसों की क्या ज़रूरत है? फक्कड तो हवा-पानी पर ही गुजर कर लेता है।"

"ज़िद मत करो," बाय उसे मनाने लगा। "ऊपर से घोडा और देता हूँ। देखो, कितना बढ़िया घोड़ा है : मेरे सारे घोड़ों म सबसे अच्छा है। चोगा उतारो, पोस्तीन पहनो, मरियल घोडे से उतरो और अरगामाक पर सवार हो जाओ। चलो, देर मत करो।"

"अक्लमद जब तक अक्ल लडाता है, बेधडक अपना काम कर जाता है। और हमारे अलदाकोसे से ज्यादा बेधड़क दुनिया मे कोई हो सकता है? पाच मिनट बीतते-बीतते वह बाय के तेज घोड़े पर सवार होकर बाय के पोस्तीन मे बदन गरमाता बर्फीले रेगिस्तान मे सरपट दूर जा चुका था।

"तुमने यह पोस्तीन कहाँ से ख़रीदा? यह घोडा कहा खरीदा?" अलदार-कोसे के मित्र उससे बाद मे पूछने लगे।

अलदाकोसे ने केवल शरारती ढग से आख मारी

"इस बारे मे तुम्हे वही बाय बतायेगा, जो मेरे फटे चोगे के लालच मे आ गया था। मैं तो बस इतना जानता हूँ : डील-डौल से ऊट होने से तो थोडी-सी अक्ल होना बेहतर है।"

घुड़सवार एक दूसरे के बराबर पहुचे। अलदार पलक झपकते समझ गया कि उसका अनुमान ग़लत नही था नसलदार, मोटे-ताज़े अरगामाक* पर शानदार पोस्तीन पहने तोंदलतुंदाला थलथल बाय हचकोले खा रहा था।

"क्या अर्रा रहा है?" बाय ने घोड़ा रोका। "ठण्ड मे हालत ख़राब हो रही है क्या?"

"मुझे तो बिलकुल भी ठण्ड नही लग रही है," अलदार-कोसे ने खुशी-खुशी जवाब दिया। "सच कहूँ, तो मुझे ताज़ा हवा मे बहुत अच्छा लग रहा है। इसके बिना तो मेरा गर्मी के मारे दम ही निकल गया होता।"

"बकवास बद कर!" बाय ने उसे डपट दिया। "मैंने इतना बढ़िया पोस्तीन पहन रखा है, फिर भी मेरी हड्डिया तक ठिठुर रही है। क्या सचमुच तुम्हारा चिथड़ा लोमड़ी की खाल से भी ज़्यादा गरम है?"

"मेहरबान," अलदार कृपापूर्वक मुस्कराया, "तुम जन्म से तो मूर्ख नही हो, पर तुम्हे अनुभव ज़रूर कम ही है। क्या तुम्हे मालूम नही है कि मेरा चोगा कैसा है?"

"फ़ौरन यह बताने के लिए कि तुम्हारे चोगे मे चाहे जब एक सौ पैबद लगाये जायें उसमे दो सौ छेद होगे, और कितने अनुभव की ज़रूरत है?" बाय गुर्राया।

"ओफ, कैसी नासमझी की बाते करते हो, मेरे बाय!" अलदार ने उलाहना देते हुए-से भौहे सिकोड़ी। "अधा क्या जाने वसन्त की बहार! तुमने मेरे चोगे मे बहुत-से छेद तो देख लिये, पर इतना नही समझ पाये कि इन छेदो मे चमत्कारी शक्ति छिपी है। मेरा चोगा कोई मामूली चोगा नही, जादूई है। मुझ पर हवा और ठण्ड का कोई असर नही होता। वे एक छेद मे घुसती है और फ़ौरन दूसरे से बाहर निकल जाती है। मुझे तो अपने बहुमूल्य चोगे मे कैसे भी कड़ाके के जाड़े मे गरमी के दिन जैसा गरम महसूस होता है।"

बाय सुन रहा था और बराबर मुँह फाड़े जा रहा था।

"वाह, कितना बढ़िया चोगा है!" उसे ईर्ष्या हो रही थी। "इस बुद्धू से इसे कैसे हथियाऊ ?"

"तुम्हारा पोस्तीन बहुत बढ़िया है, बाय," अलदार ... — ... सोच रहा था, ... पाती।"

"पर तुम्हारे कधो पर वह वैसे ही नही टिका

बाय कुछ देर सोचता रहा, नीली पड़ी न...

"अदला-बदला करना चाहते हो?" मैं ... और तुम मुझे—जादूई चोगा।"

"चोगा दे दूँ?" अलदार ने ... उसमे झलने लगा। "नही, प्यारे बाय ... होगा कि तुम अपने पोस्तीन में पूरी

---

* अरगामाक—घोड़े की ...

बाय और ज्यादा जोश मे आ गया.

"अगर तुम्हें पोस्तीन कम कीमत का लगता है, तो मैं ऊपर से रकम दूगा। स्तेपी में अकाल पड़ा हुआ है। पैसा हर जगह काम आ जायेगा।"

"मुझे पैसों की क्या ज़रूरत है? फक्कड तो हवा-पानी पर ही गुज़र कर लेता है।"

"ज़िद मत करो," बाय उसे मनाने लगा। "ऊपर से घोड़ा और देता हूँ। देखो कितना बढ़िया घोड़ा है मेरे सारे घोड़ों में सबसे अच्छा है। चोगा उतारो, पोस्तीन पहनो, मरियल घोड़े से उतरो और अरगामाक पर सवार हो जाओ! चलो, देर मत करो!"

"अक्लमद जब तक अक्ल लडाता है, बेधड़क अपना काम कर जाता है। और हमारे अलदाकोन से ज्यादा बेधडक दुनिया मे कोई हो सकता है? पाच मिनट बीतते-बीतते वह बाय के तेज़ घोड़े पर सवार होकर बाय के पोस्तीन मे बदन गरमाता बर्फीले रेगिस्तान मे सरपट दूर जा चुका था।

"तुमने यह पोस्तीन कहा से खरीदा? यह घोड़ा कहा खरीदा?" अलदार-कोसे के मित्र उससे बाद मे पूछने लगे।

अलदाकोसे ने केवल शरारती ढग से आख मारी

"इस बारे मे तुम्हें वही बाय बतायेगा, जो मेरे फटे चोगे के लालच में आ गया था। मैं तो बस इतना जानता हूँ: डील-डौल से ऊट होने से तो थोड़ी-सी अक्ल होना बेहतर है।"

अलदार-कोसे और तीन देव

उस वर्ष गर्मियों में स्तेपी में शांति थी न दुश्मनों ने छापे मारे, न परस्पर-संहारक युद्ध हुए और न ही पशुओं की चोरी। किन्तु अचानक वहा विपत्ति का पहाड टूट पडा हिमाच्छादित पर्वत पार के किसी अज्ञात देश से तीन देव वहा आ धमके। उन्होंने आकर पहाड के तले अपना विशाल तम्बू-घर लगाया और अपने लिए खाना ढूढने लगे।

लेकिन जब खाना आस-पास ही हो, तो उसे ढूढने की जरूरत ही क्या·

चर रहे हैं घाटी में घोडे, है कितनी अच्छी बात!
चरते है वहा भेडो के गल्ले, है कितनी अच्छी बात!
है उछलते-कूदते बकरे, है कितनी अच्छी बात!
सर झुकाये ऊँट हैं चरते, है कितनी अच्छी बात!

देव पशुओ के झुण्डो पर टूट पडने लगे और उन्हे चट करने लगे। जानवर चिल्लाने लगे, चरवाहे उन्हे छुडाने लपके, पर दैत्यो से भला वे पार पा सकते थे! देवो ने मरभुक्खों की तरह ठूस-ठूसकर खा लिया और पेट भरने पर उन्हे खेलने की सूझी लगे हजारो साल पुरानी। हजारो मनो की चट्टाने उखाड-उखाडकर इधर से उधर फेंकने।

उनके इस खेल के कारण पृथ्वी कराह उठी, सागरो मे प्रचण्ड लहरे उठने लगी, पशु बिलो और मादो से भाग निकले, पक्षी अपने घोसले छोडकर उडने लगे, हरी-भरी चरागाहे तपती स्तेपी बनने लगी।

बुजुर्ग, परिवारो व गावो के मुखिया एकत्र होकर इस मुसीबत से छुटकारा पाने, देवो को शान्त करने के उपाय सोचने लगे। वे अपनी-अपनी दाढियो पर नजरे जमाये दिन भर सोचते रहे, दूसरे दिन भी, तीसरे दिन भी .

पर जब तक वे सोचते रहे, अलदार-कोसे अपने काम में जुट गया। उसने अपने जूतों के तले बदले, कमीज़ बदली, एक छड़ी तराशी, सफर के लिए एक थैली में ताज़ा छेना भरा और सीधा पहाड़ की तलहटी में देवों के पड़ाव की ओर चल पड़ा।

रास्ते में मिले लोग उसे मनाने लगे:

"लौट जाओ, अलदार-कोसे, बेकार मारे जाओगे हमारे साथ इस विपत्ति में दूर भाग चलो, अपनी जान बचाओ!"

जवाब में अलदार-कोसे ने ठहाका लगाया

"गीदड़ ज़रा-सी आहट होते ही दुम दबाकर भागता है, और शेर आखिरी सास तक लड़कर मरता है!"

"तुम जब देवों को देखोगे, मसखरे, तो कुछ और ही तरह से बोलोगे। फौरन दोस्त, कंपिया जाओगे।"

पर अलदार अपनी बात पर अड़ा रहा

"अगर दब्बू को बहुत देर तक सताया जाये, तो वह बहादुर हो जाता है अगर कमज़ोर को बहुत खिजाये, तो वह भी पहलवान बन जाता है।"

"देवों को सिर्फ बहादुरों से नहीं मिलने का।"

"पत्थर से आदमी का सिर फूट सकता है, पर वह अपने हाथों से उसके टुकड़े-टुकड़े भी कर सकता है। कभी सुना यह किस्सा? देव मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकेंगे क्योंकि हर बहादुर में कोई न कोई खूबी ज़रूर होती है।"

अलदार-कोसे चलता रहा, चलता रहा। हिमाच्छादित पहाड़ नज़र आने लगे। पहाड़ की ओर से एक चलते-फिरते पहाड़-सा देव उसकी तरफ आ रहा था।

दानव को देखते ही अलदाकेन की ऊपर की सास ऊपर और नीचे की नीची रह गयी। लेकिन उसने मन-ही-मन कहा,

"कायर हज़ार बार मरता है, साहसी – केवल एक बार। मेरा क्या बिगड़ना है? ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डरना"

देव ने रुककर कमर पर हाथ रखे और झुककर आदमी को देखने लगा। अलदार भी रुक गया और वह भी – केवल नीचे से ऊपर की ओर – देव को ताकने लगा। ताकता रहा ताकता रहा और एकाएक ठहाका मारा

"हा-हा-हा! हा-हा-हा!"

देव ने जन्म से ही कभी मनुष्य की हँसी नहीं सुनी थी।

"तुम क्या कह रहे हो?" वह दहाड़ा।

"कुछ नहीं। तुम पर हँस रहा हूँ।"

"मेरी हँसी उड़ा रहे हो? मुझमें हँसी उड़ाने की क्या बात है?"

"तुम मुझे बहुत दुबले-पतले लग रहे हो, देव।"

"तो तुम क्या मुझसे ताकतवर हो?"

"तुमसे ताकतवर होऊं या न होऊं, पर मैं पत्थर को हाथों से दबाकर पानी निकाल सकता हूं।"

यह कहकर अलदार-कोसे झुका, मानो कोई पत्थर उठा रहा हो, जब कि अपनी मुट्ठी में छेने का काफी बड़ा टुकड़ा उसने पहले से छिपा रखा था। उसने छेने को ज़ोर से दबाया। उसकी उंगलियों से छाछ की बूंदें रिसने लगीं।

"अब तुम भी ऐसा करके दिखाओ, देव!"

देव ने एक पत्थर ढूंढ़ा और उसे एक मुट्ठी में भींचने लगा, फिर दोनों हाथों से, देर तक जूझता रहा। वह पसीना-पसीना हो गया, पर पत्थर से पानी निकला ही नहीं। उसने पत्थर दूर फेंक दिया और बोला:

"मैंने देख लिया, तुम बहुत ताकतवर हो। हमें लड़ने की क्या ज़रूरत है, बहादुर? चलो, मेरे साथ चलते हैं। तुम मेरे प्यारे मेहमान बनोगे।"

दोनों देव के तम्बू-घर पहुंचे। कितना बड़ा तम्बू-घर था! बैलगाड़ी में बैठकर भी तीन दिन में उसका चक्कर नहीं काटा जा सकता था और सरपट घोड़ा दौड़ाकर दिन भर में भी नहीं।

दोनों अन्दर गए। अलदार-कोसे ने नम्रतापूर्वक दुआ-सलाम की, जब कि देव अपने सम्बन्धियों के सामने उसकी ताकत और दिलेरी की तारीफ़ के पुल बांधने लगा।

देवों ने अलदार को सम्मानित स्थान पर बिठा दिया और उन्होंने टेकरी जैसे ढेर में से [illegible] अतिथि का सत्कार करने लगे।

अलदार-कोसे ने खाने से इनकार कर दिया।

"धन्यवाद, मैं सुबह ही छककर खा चुका हूं। सौ गायें, हज़ार भेड़ें चटकर चुका हूं। [illegible]"

[illegible] विशाल [illegible] का निमन्त्रण दिया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सुनाई दिया। "हालाकि मुझे, बेदाढ़ी को इतनी सम्मानपूर्ण सभा मे आना शोभा नही देता पर ऐसा भी तो होता है कि आदमी ज़रूरत पडने पर, जूते पहने-पहने ही पानी मे घुस जाता है। बहुत सोच चुके आप लोग! मिठाई खिलाइये! भयानक देव अब हमारे देश मे नही रहे!"

बुजुर्गों ने गुस्से मे दाढ़ियाँ हिलायी।

"झूठ कहते हो, गप्पी! क्या यही वक्त मिला है मज़ाक करने का!"

अलदार-कोसे हसने लगा

"गरीब कुछ भी क्यो न कहे, सब उसे झूठ ही बताते हैं! आप अपने कानो पर विश्वास नही कर सकते, तो कम-से-कम आखो पर तो कर लीजिये।"

बुजुर्ग तम्बू-घर से बाहर निकले, देखा हर तरफ हर्ष और उल्लास व्याप्त है चरवाहे जानवरो के झुण्ड हाकते, गाते, बजाते पहाडी चरागाहो को चले जा रहे है। स्तेपी मे फिर शान्ति स्थापित हो गयी।

चर रहे हैं घाटी मे घोडे, है कितनी अच्छी बात!
चरते हैं वहाँ भेडो के गल्ले, है कितनी अच्छी बात!
हैं उछलते-कूदते बकरे, है कितनी अच्छी बात!
सर झुकाये ऊँट हैं चरते, है कितनी अच्छी बात!
चैन से हैं लोग अब सारे, है कितनी अच्छी बात!

"मैं चालीस का हो चला हूं," वह बोला, "मुझे मालूम है कि बसे हुए लोग कपास और गेहूं मोटे अनाज और जौ वगैरह बोते है। लेकिन गधों की भी खेती की जा सकती है यह मैंने पहली बार ही सुना है।"

"इसमें अचरज की क्या बात है बाय, हर बात जानना असम्भव होता है। यह कहना कि 'मैं सब जानता हूं,' 'मैं मर रहा हूं' कहने के बराबर है। सच कहूं, तो मुझे भी गधों के बीजों के बारे में कुछ मालूम नहीं था जब तक कि खुदा की मेहरबानी से मेरी मुलाकात एक भले आदमी से नहीं हुई। उसका नाम कमाल है। वह बगदाद से अपने वतन लौट रहा है और वहां से जादुई बीजों की पूरी बोरी लेकर आ रहा है। उसने बहुत सख्त मेहनत करके सस्ते मोल लेकर उन्हें हासिल किया है। मैं कल इसी जगह कमाल से मिला था, उसके साथ बातचीत हुई थी और उसने मुझे अपने बीज दिखाये थे। तुम्हें बता दूं कि आकार में वे बड़े अजीब-से है बिलकुल खरगोश की मेंगनियों जैसे। लेकिन घोड़े की कीमत भी तो उसके रंग में नहीं बल्कि उसकी फुर्ती से आकी जाती है। मैंने कमाल से एक मुट्ठी भर बीज माग लिये और उन्हें कीचड़ में फेंक दिया। मैंने सोचा था कि वह बेकार होगा, पर देखो, एक ही रात में कितने बड़े अंकुर निकल आये हैं! एक हफ्ते में मेरे पास गधों का झुण्ड हो जायेगा। चाहूंगा तो बेच दूंगा न चाहूंगा तो अपने लिए रख लूंगा। मुझे दुख बस इसी बात का है कि मेरे पास पैसे होते तो उसकी सारी बुरजी खरीद लेता। कमाल उसके बदले में सौ अशरफियां माग रहा था। कौड़ियों के मोल दे रहा था। एक सौ अशरफियों से बड़े मज़े से एक हजार बनाई जा सकती थी "

"इस बेदाढ़ी की किस्मत बड़ी अच्छी निकली, इस पर पड़े खुदा की मार," बाय सोचने लगा, "पर यह एक बार से अपनी किस्मत नहीं बना सका। काश मुझे मिल जाये कमाल!"

फिर वह बोला

"अलदाकोसे, प्यारे दोस्त, मैं भी तुम्हारी तरह गधों की खेती करना चाहता हूं। लेकिन गधों के बीज कहा से लाऊं? बताओ, कमाल किस तरफ गया है? और क्या उसका घोड़ा बढ़िया है?"

"कमाल का घोड़ा बुरा नहीं है पर तुम्हारा बेहतर है," अलदार-कोसे बोला। "फौरन सरपट दौड़ाओ दोपहर तक कमाल के पास पहुंच जाओगे। उसे मेरा सलाम कहना और यह भी कि मैं ठीक-ठाक हूं और अपने वादे के मुताबिक उसकी दावत में जरूर आऊंगा। सुन रहो, बाय!"

बाय ने घोड़े को पिछली टागों पर खड़ा किया और उसे सरपट दौड़ा ले चला। अलदाकोसे उसपर पीछे से हसने लगा

"मुसीबत तेरा वैसे ही पीछा करे, लालची, जैसे तू खरगोश की मेंगनियों के पीछे भाग रहा है!"

ऐन दोपहर में बाय खुरजीवाले घुड़सवार के पास पहुंच गया।
"तुम्ही हो कमाल?" वह उससे आगे घोड़ा निकालते हुए चिल्लाया।
"हाँ, मैं," कमाल सकपका गया।
"सुनो, कमाल, मुझे तुम्हारे और तुम्हारी खुरजी के बारे में सब मालूम पड़ गया है
कमाल को काटो तो खून नहीं। "लो," उसने सोचा, "एक नयी मुसीबत और
ा गयी! आसमान से गिरा, खजूर पर अटका "
"मैं तुम्हारी खुरजी खरीद रहा हूँ।" बाय आगे बोला। मैंने सुना है, तुम, उसके
दले म सौ अशरफियां मांगते हो? चलो, मोल-भाव नहीं करेंगे। ये लो कीमत। खुरजी
झे दो।"
कमाल होश सभाल पाता उससे पहले अशरफियो की थैली उसके हाथो में आ चुकी
ी, और खुरजी बाय के कदमबाज़ की पीठ पर पड़ी थी।
"अलविदा, कमाल!" हर्षोन्मत्त बाय ने घोड़ा मोड़ते हुए चाबुक हिलाया। "और
ब अलदार से मिलो, तो उससे कह देना कि मैंने वह हासिल कर लिया जो मैं चाहता
ा। ज़रा खोजे कि खुरजी उसे नहीं मिल सकी।"
इतना कहकर वह वहाँ से चला गया।
कुछ दिन बाद कमाल के नये, साफ़-सुथरे, बड़े-से तम्बू-घर में दावत हो रही थी।
ल के ग़रीब के पास आज अपने दोस्तों की आवभगत के लिए काफ़ी कुछ था।
सारा तम्बू-घर मेहमानो से भरा था और उसके बाहर भी उनके लिए सफ़ेद बेलबूटे-
ार नमदे बिछा दिये गये थे।
अलदार-कोसे भी दावत में पहुंचा। कमाल उससे लम्बे अरसे में बिछुड़े बड़े भाई
ी तरह मिला।
"तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करूँ, दोस्त अलदाकेन?" वह आंखों में आंसू भरे बोला।
तुमने मेरी जान बचायी और मेरे परिवार को सुखी बना दिया।"
"मेरा शुक्रिया किस लिए अदा करना है, कमाल?" अलदार-कोसे मुस्कराया।
तुम्हारी जेब में मेरे पैसे थोड़े ही पहुंचे है? हाँ, बाय को थोड़ी बहुत ज़रूर अपनी जेब
ीली करनी पड़ी, पर उस पर क्या रहम करना, वह तो सागर में एक बूंद के बराबर था।
याद रखेगा बेवकूफ़, जो आधी छोड़ पूरी को धावे, वह अपनी आधी भी खोवे।
फिर अलदार-कोसे ने ज़ोरदार ठहाको के बीच कमाल के मेहमानो को बाय को बेवकूफ़
बनाने का पूरा क़िस्सा सुना दिया।
अगले दिन सारी स्तेपी में यही किस्सा दोहराया जा रहा था। इसकी भनक केवल
"गधा के बीज" खरीदनेवाले बाय को ही नहीं पड़ी। बाय उस समय सबसे छिपकर दलदल
के किनारे बैठा कीचड़ में से गधों के अंकुर फूटने का इन्तज़ार कर रहा था।

"मैं चालीस का हो चला हूँ," वह बोला, "मुझे मालूम है कि बसे हुए लोग कपास और गेहूँ, मोटे अनाज और जौ वगैरह बोते हैं। लेकिन गधों की भी खेती की जा सकती है यह मैंने पहली बार ही सुना है।"

"इसमें अचरज की क्या बात है, बाय, हर बात जानना असम्भव होता है। यह कहना कि 'मैं सब जानता हूँ,' 'मैं मर रहा हूँ' कहने के बराबर है। सच कहूँ, तो मुझे भी गधों के बीजों के बारे में कुछ मालूम नहीं था, जब तक कि खुदा की मेहरबानी से मेरी मुलाकात एक भले आदमी से नहीं हुई। उसका नाम कमाल है। वह बगदाद से अपने वतन लौट रहा है और वहाँ से जादुई बीजों की पूरी बोरी लेकर आ रहा है। उसने बहुत सख्त मेहनत करके, सस्ते मोल लेकर उन्हें हासिल किया है। मैं कल इसी जगह कमाल से मिला था उसके साथ बातचीत हुई थी, और उसने मुझे अपने बीज दिखाये थे। तुम्हें बता दूँ कि आकार में वे बड़े अजीब-से हैं बिलकुल खरगोश की मेंगनियों जैसे। लेकिन घोड़े की कीमत भी तो उसके रंग से नहीं, बल्कि उसकी फुरती से आंकी जाती है। मैंने कमाल से एक मुट्ठी भर बीज माँग लिये और उन्हें कीचड़ में फेंक दिया। मैंने सोचा था कि यह बेकार होगा, पर देखो एक ही रात में कितने बड़े अंकुर निकल आये हैं! एक हफ्ते में मेरे पास गधों का झुण्ड हो जायेगा। चाहूँगा तो बेच दूँगा, न चाहूँगा तो अपने लिए रख लूँगा। मुझे दुख बस इसी बात का है कि मेरे पास पैसे होते, तो उसकी सारी बोरी खरीद लेता। कमाल उसके बदले में सौ अशरफियाँ माँग रहा था। कौड़ियों के मोल दे रहा था। एक सौ अशरफियों में बड़े मजे में एक हजार बनाई जा सकती थीं "

इस बदाही की किस्मत बड़ी अच्छी निकली, इस पर पड़े खुदा की मार," बाय सोचने लगा पर यह एक बार में अपनी किस्मत नहीं बना सका। काश, मुझे मिल जाय कमाल!'

फिर वह बोला

अलदारकोसे प्यारे दोस्त मैं भी तुम्हारी तरह गधों की खेती करना चाहता हूँ। लेकिन गधों के बीज कहाँ से लाऊँ? बताओ, कमाल किस तरफ गया है? और क्या उसका घोड़ा बढ़िया है?

कमाल का घोड़ा बुरा नहीं है, पर तुम्हारा बेहतर है," अलदार कोसे बोला। फौरन सरपट दौड़ाओ दोपहर तक कमाल के पास पहुँच जाओगे। उसे मेरा सलाम कहना और कहना कि मैं ठीक-ठाक हूँ और अपने वादे के मुताबिक उसकी दावत में जरूर आऊँगा। भूल न जाना बाय!

बाय ने घोड़े को पिछली टाँगों पर खड़ा किया और उसे सरपट दौड़ा ले गया।

अलदारकोसे उसकी पीठ पर हँसने लगा

"मुसीबत तेरा ऐसे ही पीछा करे लालची, जैसे तू खरगोश की मेंगनियों के पीछे भाग रहा है!"

एक दोपहर में बाय खुरजीवाले घुडसवार के पास पहुच गया।

"तुम्ही हो कमाल?" वह उससे आगे घोड़ा निकालते हुए चिल्लाया।

"हां, मैं," कमाल सकपका गया।

"सुनो, कमाल, मुझे तुम्हारे और तुम्हारी खुरजी के बारे में सब मालूम पड गया है"

कमाल को काटो तो खून नही। "लो," उसने सोचा "एक नयी मुसीबत और आ गयी। आसमान से गिरा, खजूर पर अटका"

"मैं तुम्हारी खुरजी खरीद रहा हूँ!" बाय आगे बोला। "मैंने सुना है तुम उसके बदले में सौ अशरफियां मांगते हो? चलो, मोल-भाव नही करेंगे। ये लो कीमत। खुरजी मुझे दो!"

कमाल होश संभाल पाता उससे पहले अशरफियो की थैली उसके हाथो में आ चुकी थी, और खुरजी बाय के कदमबाज की पीठ पर पडी थी।

"अलविदा, कमाल!" हर्षोन्मत्त बाय ने घोडा मोडते हुए चाबुक हिलाया। "और जब सरदार से मिलो, तो उससे कह देना कि मैंने वह हासिल कर लिया जो मैं चाहता था। इस बीजे कि खुरजी उसे नही मिल सकी!"

इतना कहकर वह वहां से चला गया।

कुछ दिन बाद कमाल के नये, साफ-सुथरे, बडे-से तम्बू-घर में दावत हो रही थी। कमाल के गरीब के पास आज अपने दोस्तो की आवभगत के लिए काफी कुछ था।

सारा तम्बू-घर मेहमानो से भरा था और उसके बाहर भी उनके लिए सफेद बेलबूटे दार नमदे बिछा दिये गये थे।

सरदार-बोर्से भी दावत में पहुचा। कमाल उससे लम्बे अरसे से बिछुड़े बड़े भाई की तरह मिला।

"तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करूँ, दोस्त अलदाकोस?" वह आंखों में आंसू भरे बोला। "तुमने मेरी जान बचायी और मेरे परिवार को सुखी बना दिया।"

"मेरा शुक्रिया किस लिए अदा करना है, कमाल?" अलदार-कोसे मुस्कराया। "तुम्हारी जेब में मेरे पैसे थोड़े ही पहुचे हैं? हां, बाय को थोड़ी बहुत जरूर अपनी जेब ढीली करनी पडी, पर उस पर क्या रहम करना वह तो सागर में एक बूद के बराबर था। और ऐसा बेवकूफ, जो आधी छोड पूरी को धावे, वह अपनी आधी भी खोवे।"

फिर अलदार-कोसे ने जोरदार ठहाकों के बीच कमाल के मेहमानो को बाय के बेवकूफ बनने का पूरा किस्सा सुना दिया।

अगले दिन सारी बस्ती में यही किस्सा दोहराया जा रहा था। इसकी भनक भला "गधों के बीज" खरीदनेवाले बाय को ही नही पडी। बाय उस समय सबसे छिपकर [illegible] [illegible] किनारे बैठा कीचड में से गधों के अंकुर फूटने का इन्तजार कर रहा था।

अलदार-कोसे की दाढ़ी क्यों नहीं थी

एक बार एक दावत मे किसी ने अलदार-कोसे से पूछ बैठा

"ऐ-अलदाकेन, तुम्हारे दाढी क्यो नही आयी?"

अलदार-कोसे जैसे इसी प्रश्न की प्रतीक्षा कर रहा था, उसने तत्क्षण उत्तर दिया:

"मेरे इस दुनिया में आने से पहले मेरे नेक मा-बाप मे इस बात पर बहस छिड गयी कि उनके भाग्य मे क्या बदा है—बेटा या बेटी। अब्बा कहते: 'बेटा होगा!' माँ जोर देकर कहती। 'नही, बेटी होगी!' आपको इतना बता दूँ कि मैं जन्म से पहले से ही अपने माँ-बाप को बहुत प्यार करता था और उनकी इज्जत करता था। इसी लिए अब्बा को खुश करने के इरादे से मैं बेटा बनकर पैदा हुआ और मा दुखी न हो, इसलिए हमेशा के लिए बिन दाढी-मूछ का रह गया। जिन्दगी, दोस्तो, हमे अकसर बड़ी उलझनो मे डाल देनी, पर हमे कभी हिम्मत नही हारनी चाहिए· जब तक पहिया लुढके, लुढकाए जाओ!"

सब हस पड़े, अलदार-कोसे ने आग मे और सूखी टहनियां डाल दी।

"फिर आप ही फैसला कीजिये, दाढी और मूछो से फायदा क्या होता है? ऊपर को थूकना चाहो, तो मूछे आडी आ जाती हैं। नीचे थूकना चाहो, तो दाढी। मुझे देखिये, मजे मे जैसे मन मे आये, वैसे थूकता हूँ, कोई अड़चन नही होती। क्या यह फायदे की बात नही है? लेकिन सबसे मुख्य लाभ तो दूसरा ही है। ऐसा कौन है, जो उम्र के साथ और मुसीबतों के मारे नही बुढाता? मुझे देखिये, मुझपर न दुख का कोई असर होता है और न ही उम्र का। किसी ने ठीक ही कहा है: 'ताकतवर ऊँट थकान नाम की कोई चीज नही जानता, और बेदाढ़ी—बुढ़ापा नाम की। कुछ भी कहिये, सदाबहार जवानी दाढ़ी में बहुत ज्यादा कीमती होती है। है न?"

"तुम्हारा जवाब नही, अलदाकेन!" प्रफुल्लित स्वर गूँज उठे। "किमिज़ पियो, बातूनी, छककर पियो! खुदा करे, तुम्हे राह मे अकसर ऐसे लोग मिलते रहे, जिनकी अक्ल तो मोटी हो, पर जिनके पास माल खूब हो।"

अलदार-कोसे और लालची क़ाज़ी

एक बी* ऐसा था कि उसके पास दोषी यदि महंगा तोहफ़ा लेकर आता तो वह खुशी के मारे नाचता वापस लौटता, निर्दोष खाली हाथ आता, तो आँसू बहाता लौट जाता। यही कारण था कि बी उसकी अक्लमंदी के लिए उसकी तारीफ़ किया करते थे, जब कि ग़रीब उसे पानी पी-पीकर कोसते थे।

"ज़रा ठहर, लुटेरे," अलदार-कोसे ने क़ाज़ी को मन-ही-मन धमकी दी, "तेरी दाढ़ी भले ही लम्बी सही, पर तुझे सबक़ मुझ बेदाढ़ी को ही सिखाना पड़ेगा।"

और वह क़ाज़ी के तम्बू-घर के सामने पहुंचकर घोड़े से उतरा।

अलदाकेन को भला कौन पहचान पाता! उसने चोग़ा ऐसा पहना हुआ था कि ख़ान तक उसे पहनने का लोभ संवरण न कर पाता। अतलस भोर के तारे की तरह झिलमिला रही थी, उसके रंग-बिरंगे बेल-बूटे पुष्पित बाग़ की तरह महक रहे थे। पर सदियों से यही होता आया है: मालदार अगर बन-ठनकर निकले, तो लोग उसकी नयी पोशाक के लिए उसे बधाई देते हैं, लेकिन ग़रीब टाटदार कपड़े पहने, तो लोग उससे खोद-खोदकर पूछने लगते हैं, "कहाँ से मारा?"

"वल्लाह, कितना शानदार चोग़ा है!" क़ाज़ी ने अलदार को देखकर हाथ फैलाये। "यह तू किसका चोग़ा उतार लाया, उठाईगीरे? ऐसी चीज़ तुझे थोड़े ही मिलनी चाहिए, तुझ पर बिलकुल नहीं फबता। इसे तो कोई मुझ जैसा इज़्ज़तदार आदमी पहन सकता है, वह भी रोज़ नहीं, बल्कि बड़े-बड़े त्योहारों पर..."

अलदार-कोसे ने बिना चूं किये चोग़ा उतारकर क़ाज़ी के कंधों पर डाल दिया।

क़ाज़ी फ़ौरन पिघल गया, मुस्कराने लगा और हड़बड़ी में उसे पहनने की कोशिश करते हुए अपने हाथ किसी तरह आस्तीनों में नहीं डाल पाया।

---

* बी – क़ाज़ी

अलदार-कोसे और गुण्डा बाय

एक उजड्ड और झगडालू बाय से उसका सारा गाव तथा उसके आस-पास का इलाका थर-थर कापता था। उसमे ताक्त तो ऊट जैसी थी, किन्तु लोगो के प्रति दया का भाव वनैले जीव से भी कम था। उसके मारे न बूढो को चैन था, न ही बच्चो को किसी को धक्का दे देता, किसी को पीट देता, तो किसी को अपग बना देता। ऐसा कोई दिलेर नही मिलता था, जो उस गुण्डे की बोलती बद कर पाता। केवल एक ही रास्ता रह गया था खान से उसके लगाम कसवाने का तरीका खोजना। लेकिन ऐसा कौन है, जो नही जानता हो कि लडे जब साड, तो बारी का भुरकस निकल जाता है। ऐसा भी तो होता है कि ताकतवर के पैरो मे गिरने पर अपना ही सिर फूट जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है गयी बेसीग बकरी शेर से सीग मागने और बूची होकर लौटी।

इसी लिए मालदार लमटगा अपनी काली करतूतो के बावजूद हर बार साफ छूट जाता था। उसके धनी यार-दोस्त उसे ऊपर से बढावा भी देते रहते थे। वे सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे।

एक बार लडाका बाय के कानो मे भनक पडी कि वहा से कुछ दूरी पर अलदार-कोसे चरवाहो के यहा आया हुआ है, और वह हाथ हिला-हिलाकर कहने लगा

"उस बेदाढी खरसैले के मेरे पडाव के पास फटकने की हिम्मत कैसे हुई! इतना ढीठ हो गया है! उसे थोडी-सी ढील दो तो वह उगली पकडते पहुचा पकड लेगा लेकिन मै हरगिज ऐसा नही होने दूंगा! घोडे पर काठी कसो! मै अलदार-कोसे की खबर लेने जा रहा हूँ। उसके पाजामा और कमीज़ के साथ उसकी चमडी भी उधेड लूं! सबके सामने उसे नगा हाकूगा! परनुचे उल्लू* की तरह स्तेपी मे भटकने छोड़ दूंगा!"

---

* कभी उल्लू के परो से बच्चो व लडकियो की टोपियो को सजाया जाता था। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि निर्दयी "मसखरे" जीवित पक्षी के पर नोचकर उसे स्तेपी मे छोडकर मजे लूटते थे।

नौकर बाय के लिए घोडा ले आया। चाबुक सरसराया, और बाय सरपट घोडा दौडा ले चला।

समय बीतता जा रहा था, पर गाँव मे भीड तितर-बितर ही नही हो रही थी, लोग इन्तज़ार कर रहे थे कि अन्त मे क्या होता है। गरीब दुखी हुआ ठण्डी सासे ले रहे थे उन्हें विनोदप्रिय अलदाकेन पर दया आ रही थी। जब कि बाय के जीहुजूरिया खुश हो रहे थे

"अब खैर नही बेदाढी की! अब उसकी कब्र तैयार समझो!"

उस समय तक बाय चरवाहो के पड़ाव तक पहुँच चुका था।

"अलदार-कोसे कहाँ है?"

"आया था, पर चला गया।"

"किधर गया?"

"कौन जाने किधर गया। बटेर कभी अपना रास्ता चुनता है? जिस जगह चलता है, वहीं चहकता है..."

"जा पकड़गा नीच को!" बाय ने दात पीसे। "ज़मीन के नीचे भी नही छिप पायेगा। मैं उसे हर हालत मे स्तेपी के बीच नगा नचवा कर रहूगा।"

और वह घोड़ा आगे दौडा ले चला।

उसके रास्ते मे एक नदी पड़ी। किनारे पर एक बुढिया, जिसकी कमर झुकी हुई थी, बैठी सूत कात रही थी। आस-पास कोई नही था।

"ऐ झक्की बुढिया!" बाय घोडे पर बैठे-बैठे चिल्लाया। "यहाँ से थोडी देर पहले कोई बेदाढी गुज़रा था?"

बुढिया खासी, कराही और सिर हिलाती हुए फुसफुसायी

"मैं ऊचा सुनती हूँ, प्यारे बेटे, उफ, बहुत ऊचा सुनती हूं, मैने सुना नही, क्या कह रहे हो। बेटा, घोडे से उतरकर अपनी बात मेरे कान मे जोर से दोहराओ।"

बाय झल्लाहट के कारण काठी से कूदकर बुढिया के पास आया और झुककर जोर से चिल्लाया,

"कोई गुज़रा तो नही यहाँ से! " उसने पूरा सवाल नही दोहराया।

बुढिया ने अप्रत्याशित फुर्ती से उसे गिरा दिया और उसके सिर पर अपना झाउलिक* उढा दिया। उसी क्षण बुरी तरह डरे हुए बाय को जोरदार ठहाके घोडे की टापे और पानी की छपछपाहट सुनाई दी।

"बचाओ!" बाय चीख उठा। "चुडैल मेरा गला घोट रही है!"

अन्त मे उसने कापते हाथो से किसी तरह चदरा उतार फेका, पर बेहतर होता वह यह सब न देखता, जो उसने देखा!

---

* झाउलिक – विवाहित स्त्रियो का शिरोवस्त्र।

15*

उसका मूल्यवान तेज घोड़ा दूसरे किनारे पर खड़ा था, और उसपर ठहाकों के मारे गिरते-गिरते बचता अलदार-कोसे बैठा था।

"देखा, गुग्मा, मैंने तुम्हें बिना लड़े हरा दिया। मुझे जीता मानते हो या नहीं?" अलदार-कोसे हंसी से दोहरा होता हुआ बोला।

"मानता हूँ," 'गुग्मा' गुस्से से भूत होता हुआ मिमियाया। "बस मेरा घोड़ा लौटा दो, अलदार-कोसे।"

"तुम्हारा घोड़ा मुझे नहीं चाहिए। जैसे आ सको, तैरकर या चलकर, इस किनारे पर आओ और अपना घोड़ा ले जाओ।"

बाय क्या करता? उसने जूते और सारे कपड़े उतारे और बेचारा गदली नदी में उतर गया। रेती पहुँचते-पहुँचते वह पेट भर पानी पी गया।

अलदार ने बाय के किनारे पर कदम रखते ही जिन की तरह चीख मारी और घोड़े को पिछली टांगों पर खड़ा करके नदी में कुदा दिया।

छींटों के मारे बाय को कुछ दिखाई नहीं दिया, और जब उसने आंखें मलीं, तो हताश होकर रेती पर गिर पड़ा अलदार-कोसे नदी पार करके घोड़े से उतरा, उसके कपड़े उठाकर उनकी गांठ बांधी और काठी पर बैठ हाथ हिलाकर उससे विदा लेकर स्तेपी की धुंध में गायब हो गया

यह सब सुबह हुआ, जब कि बाय का घोड़ा झागदार पसीने से तर-बतर, काठी पर बंधी पोटली के साथ, फुफकारता हुआ सरपट गांव में पहुँचा। वहां खलबली मच गयी। बाय के यार-दोस्त, जो हथियार मिला, लेकर अपने लापता हुए मालिक को खोजने सरपट घोड़े भगा ले चले। उन्हें शीघ्र ही स्तेपी में एक आदमी दिखाई दिया। वह पूर्णतया नग्नावस्था में, नंगे पैर, हर कदम पर कांटे चुभने से उचकता गांव की ओर घिसट रहा था। घुड़सवार उसके कद और मोटापे के कारण अपने मित्र को पहचान गये। उन्होंने उसे घेर लिया और उसपर सवालों की बौछार कर दी

"क्या हुआ? तुम्हारी ऐसी बेइज्जती किसने की? क्या अलदार-कोसे ने?"

पर बाय ज़मीन में आंखें गड़ाये चुप रहा।

उस दिन से लड़ाका बाय जैसे बिलकुल बदल गया। वह गऊ-सा सीधा और नमदे-सा नरम हो गया। और अगर कभी वह लोगों पर धौंस जमाना भी चाहता, तो केवल इतना कहना काफी होता "अलदार-कोसे," और वह फौरन दुबक कर चुप हो जाता।

अलदार-कोसे और घमण्डी शाहज़ादा

सफेद ऊटनी पर रंगबिरंगे चदोवा तने महमिल पर बैठा और नौकरो व अंगरक्षकों से घिरा मुलतान का बेटा हज से अपने पिता की सलतनत लौट रहा था।

कारवां को रास्ते में फटे-पुराने कपड़े पहने बेदाढ़ी घुड़सवार मिला। वह मजे से मुस्कराता, आसमान की ओर देखता घोड़े पर चला जा रहा था।

"ऐ," शाहज़ादे ने उसे आवाज दी, "तुम्हीं अलदार-कोसे हो?"

"आपका अन्दाज सही है, हुजूर, मैं ही अलदार-कोसे हूँ, साहबे-आलम का गुलाम।"

शाहज़ादे ने हाथ उठाया – कारवां रुक गया।

"मुझे बताओ, अलदार-कोसे, क्या यह सच है कि तुम सब लोगों को बेवकूफ बना देते हो?"

अलदार ने विनम्रतापूर्वक सिर झुका दिया।

"मेरे हुजूर, कभी-कभी झूठ भी सच-सा होता है और सच भी झूठ-सा। लेकिन आप खुद ही सोचिये: क्या सब लोगों को धोखा देना, भले ही वह विद्वान से विद्वान क्यों न हो, किसी एक आदमी के बस का काम है? सब लोगों से मतलब सारी प्रजा ही होना है न?"

"टाल-मटोल क्यों कर रहे हो?" शाहज़ादे ने अलदार को टोक दिया। "इसमें प्रजा को क्यों घसीटते हो? मुझे इस शब्द से घृणा है।"

"आपको पसंद हो या न हो, पर लोगों का कहना है 'रिआया पर मत थूको – मुंह सूख जायेगा; अगर रिआया ने तुम पर थूका, तो थूक में डूब जाओगे'।"

शाहज़ादे की भौंहें तन गयीं।

"खबरदार! तुम जरूरत से ज्यादा जबान चला रहे हो। बिना अक्लमंदी जताये जवाब दो, मिसाल के तौर पर बताओ, क्या तुम मुझे बेवकूफ बना सकते हो?"

"आपको, मेरे हुजूर?" अलदार सोचने लगा। "नहीं, आपको मैं शायद बेवकूफ नहीं बना सकूगा। वैसे सही-सही बताने के लिए मुझे आपकी नगी एड़िया देखनी होगी "

"उहूँ, यह बात है?" शाहजादे ने गुस्से मे मुह बनाया। "तो लो देखो "

उसने नौकरो को ऊटनी को बिठाने का आदेश दिया, जमीन पर बैठ गया और हाफता हुआ ऊचे जूते उतारने लगा।

"हूँ, ये रही मेरी एड़िया!"

"जरा पैर और ऊपर उठाइये, मेहरबानी करके, हुजूर!"

शाहजादा ने हाथ जमीन पर टिकाकर पैर और ऊचे उठा दिये।

अलदार काफी देर तक सिर हिलाता, कुछ बुदबुदाता उसकी एडियो को देखता रहा, फिर गद्गद कठ मे कहने लगा

"नही, हुजूर! नही, हरगिज नही! आप अभागे अलदार-कोसे का जो चाहे कीजिये, चाहे खाल उधेडवा दीजिये, चाहे दहकते अगारो पर बिठवा दीजिये, पर साहबे-आलम को बेवकूफ बनाना मेरे बस का काम नही है "

शाहजादा सन्तुष्ट होकर हस पडा

"यही तो कहता था मैं! अभी दुनिया मे ऐसा कोई पैदा नही हुआ है, जो मुझे बेवकूफ बना सके। किस्मत अच्छी समझो, खुराफाती, कि तुमने मुझसे झूठ बोलने की हिमाकत नही की!"

कारवाँ शीघ्र ही अपने गतव्य पर पहुच गया, और सुलतान ने अपने बेटे के लौटने की खुशी मे बहुत सारे लोगो की दावत की। दावत मे बेटे ने उन सब चीजो के किस्से सुनाये, जो उसने रास्ते मे देखी थी और अन्त मे यह भी बताया कि चालाक अलदार-कोसे उसके सामने कैसा बुद्धू बना था।

"क्या कहा, क्या कहा!" सुलतान चिल्ला उठा। "लेकिन बेदाढी के कहने पर तुम ऊट से उतरे थे! उसी के कहने पर तुमने बीच स्तेपी मे जूते उतारे थे! तुमने मूर्ख की तरह पैर अपने सिर से ऊपर उठाकर उससे और अपने नौकरो से हसी उड़वाई थी! इसका मतलब है कि अलदार-कोसे ने तुम्हे तीन बार बेवकूफ बनाया है!"

सुलतान ने गुस्से से भूत होकर लोगो की ओर से मुह फेर लिया, जब कि बेटा आखे मिचमिचाता, कुछ बुदबुदाता ऐसा बैठा रह गया, जैसे किसी ने उसकी टाट पर धौल जमाकर बहरा कर दिया हो।

दावत मे आये मेहमान यह नजारा देख-देखकर एक दूसरे को बगलो मे टहोके मारने लगे, खुलकर हसने के लिए तडपने लगे, क्योकि उन्हे जोर से हसने का साहस नही हो रहा था। पर उनमे से हरेक यही सोच रहा था

अपने पिता का यश बढ़ाता है, कुपुत्र अपने पिता को लज्जित करवाता है।"

अलदार-कोसे और सोने की खेती

सिर दिया ओखली मे तो मूसलो से क्या डरना," अलदार-कोसे ने सोचा और खान के पड़ाव की तरफ चल दिया।

उस समय स्तेपी पर धूर्त और स्वेच्छाचारी शासक अलादा खान का राज था। कोई कभी भी नही जान पाता था कि उस पर क्या खब्त सवार होगी, उसकी दया का क्या परिणाम होगा और क्रोध का क्या।

जिस समय खान अपने अगरक्षको के साथ स्तेपी मे गुजरता लोग जिसको जहाँ जगह दिखाई देती, छिप जाता। उसकी नजरो मे पड़ना दुर्भाग्य समझा जाता था। किन्तु खान के कानूनो से क्या कोई बच सकता था? लोग यूँ ही तो नही कहने लगे थे "खान के हाथ की मार स्तेपी के छोर तक होती है।"

खान ने हुक्म जारी किया: "जिसके पास एक भी भेड़ है, वह शाही खजाने मे [illegible] खान से पहले एक अशरफी जमा करवाये। अवज्ञाकारियों को गुलाम बना दिया जायगा।"

स्तेपी मे खलबली मच गयी। लोग बड़बड़ाने लगे। भूखा और कगाल अशर्फी कहाँ से लाये, जब उसने जन्म से ही कभी घिसा हुआ तगा भी हाथ मे न लिया हो।

अलदार-कोसे सोच मे पड़ गया.

"लोगो को इस मुसीबत से बचाने के लिए ढेरो सोना चाहिए! इतना धन किस के पास है? केवल खान के पास। मै जरा चलकर उससे बात तो करूँ। उससे [illegible] [illegible] अशर्फियाँ उधार मागने मे सफलता मिलेगी या नही? अब जो हो सो हो - 'हिम्मते मर्दां मददे खुदा है..'

बसन्त आ चुका था। स्तेपी म गुर्म [illegible] व [illegible] मे [illegible] [illegible] हुई थी। अलदार का [illegible] मे बड़ा आनन्द आया।

खान का पड़ाव झील के पास टेकरी के नीचे था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मे [illegible] हुए थे, लेकिन उनके बीचोबीच एक तम्बू पर सबसे बड़ा और [illegible] था। [illegible]

दरवाजे पर पहरा लगा था, गुम्बद पर बुंचुक-वाली* लगी हुई थी। वह खान का तम्बू-घर था।

अलदार-कोसे ने तुरन्त तम्बू-घर के पास जाने का फैसला नहीं किया, बल्कि उससे थोड़ी दूरी पर सीटी बजाता हुआ चहलकदमी करने लगा।

शाही अंगरक्षक लपककर उसके पास आ पहुंचे

"क्यों मटरगश्ती कर रहा है? कौन है? क्यों आया है?"

"मैं अलदार-कोसे हूं। मैं खान को एक बहुत अहम राज़ बताना चाहता हूं।"

उसे खान के सामने पेश किया गया।

"अच्छा तो तुम देखने में ऐसे हो, बेशर्म ठग!" अलाशा-खान ने कहा। "मैंने तुम्हारी काली करतूतों के बारे में बहुत सुना है बहुत से नामी और बड़े आदमियों ने मुझसे तुम्हारी शिकायत की है। किस इरादे से आया है?"

"जहांपनाह" अलदार धम्म से घुटनों के बल गिर पड़ा, "आप झूठी अफ़वाहों पर विश्वास मत कीजिये। लोगों को कौन मुंह बन्द रख सकता है। कुछ कहता हूं, तो मुझे बातूनी बताते हैं चुप रहता हूं, तो बुद्धू बताते हैं। आपको खुद ही मेरी लगन और निस्वार्थता पर विश्वास हो जायेगा, मुझे केवल वह कहने की आज्ञा दीजिये, जो मेरे मन में है।"

खान ने सिर हिलाया यानी कहो मैं सुन रहा हूं।

"जहांपनाह," अलदार-कोसे ने उत्साहपूर्वक कहना जारी रखा, "मैंने आपका खज़ाना देखा नहीं है पर मुझे पूरा विश्वास है कि उसकी गिनती करना असम्भव होगा। फिर भी दुनिया में ऐसा कोई खान नहीं होगा, जिसे थोड़ा और सोना मिलने में फायदा न हो। मुझे दौलत कई गुना बढ़ाने की तरकीब मालूम है। इस समय बसन्त है – बोवाई का मौसम। अगर मुझे एक बतमन* सोना दीजिये, मैं उसे अपने खेत में बो दूंगा और पतझड़ में सारी फसल काटकर आपके पास ले आऊंगा। मुझे मालूम है कि अच्छी सर्दियों में एक अशर्फी से एक हजार अशर्फियां पैदा हो सकती हैं।"

"और अगर अशर्फियां बेकार गयीं तो?" खान ने सख्ती से पूछा।

अलदार ने नम्रतापूर्वक हाथ फैला दिये।

"हुजूर आलम, तब धोखे के लिए मुझे मौत की सज़ा देना आपके हाथ में है।"

बातचीत के समय उपस्थित सारे वज़ीर खान के उत्तर की प्रतीक्षा में सांस रोके खड़े

* बुंचुक – घोड़े के बालों से बना अलंकरण, खान की सत्ता का प्रतीक।

* बतमन – वज़नों का पुराना पैमाना जो [illegible] से १० किलोग्राम तक का बाट।

रह गये। किन्तु ख़ान मौन था, केवल अलदाकेन को ऐसे घूर रहा था, जैसे नज़रो से उसके टुकडे-टुकड़े कर देना चाहता हो। अन्त मे उसने मुह खोला

"इसे एक बतमन अशरफ़ियाँ दे दो! बोने दो," और वज़ीरो को हैरान देखकर आगे व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ बोला: "यह हमसे बचकर कही नही जा सकेगा।"

ख़ान की आज्ञा का तत्काल पालन किया गया, और अलदार-कोसे पीठ पर बोरी लादे, लम्बे-लम्बे डग भरता, हसी-खुशी घर रवाना हो गया। उसके पीछे-पीछे ख़ान के जासूस घास और घाटियो मे दुबकते, रेगते यह देखने चल पडे कि वह आख़िर सोने का क्या करता है।

कुछ समय बाद जासूसो ने लौटकर ख़ान को सूचित किया घर पहुँचकर बेदाढी ने बैलो की एक जोडी जोती और खेत पहुँच गया, वहाँ उसने ज़मीन का एक टुकडा जोता और उस पर यह पुकारते हुए कुछ बिखेरने लगा "एक के हज़ार हो! एक के हज़ार हो!" फिर उसने जोत के पास एक छप्पर लगाया और फसल की चिडियो से रक्षा करने के लिए उसके नीचे बैठ गया, इसलिए हमे यह पता न लगा सके कि उसने सोना ही बोया या कुछ और..

पतझड़ आ गया। झीलो से कलहसो की कतारे दक्षिण की ओर उड चली, चरागाहो मे घास मुरझा गयी, चरवाहे अपने पशुओ के साथ जाडे के पडावो की ओर चल पडे। लेकिन अलदार का कुछ अता-पता न था।

अलाशा-ख़ान ने उसे पकडने के लिए सिपाहियो का एक दस्ता भेजा

"ठग को पकड़कर मेरे पास लाओ! अब उसे अपनी सारी चालबाज़ियो का जवाब देने का वक्त आ गया है।"

सिपाही हुकारते और एक दूसरे से आगे निकलते स्तेपी मे घोडे दौडा ले चले, पर शीघ्र ही वे ख़ाली हाथ लौट आये।

"जहाँपनाह," उन्होने सूचित किया, "तम्बू-घर मे घुसने पर हमे उसमे मालिक नज़र नही आया। बुझे हुए चूल्हे के आगे केवल एक सुन्दर लडकी बैठी हुई थी, जो अपने को अलदार की बहन बताती है। वह फूट-फूटकर रो रही थी। 'तुम्हारा भाई कहाँ है', हमने पूछा। 'वह घर पर नही है, शायद इस दुनिया मे भी नही है ' उसने हाथ मलते हुए जवाब दिया। ऐसी ग़मी देखकर किसी का भी दिल बैठ सकता है! 'क्या हुआ?' हमने पूछताछ जारी रखी। उसने कहा: 'इस साल हमारे यहाँ वसन्त मे ही बारिश नही हुई। ख़ान की दी हुई अशरफ़ियो मे, जिन्हे मेरे बदनसीब भाई ने बोया था, अकुर फूटे ही नही। और वह ख़ान के गुस्से के डर के मारे पैसा कमाने चला गया है, जिससे कि ख़ान का पूरा कर्ज चुका सके। अगर वह ख़ान का कर्ज अदा नही कर सका, तो आत्महत्या कर लेगा..?' हम इसे इतना ही मालूम कर सके है। आगे क्या करने का हुक्म है, हुज़ूर?"

ख़ान ने सोच-विचार कर कहा:

"मुझे लगता है कि अलदार-कोसे की बहन अपने भाई से मिली हुई है। तुम लोगों बेकार उस ढोंगी की बातों पर विश्वास किया। उसके भाई के बदले में उसे मेरे पास आओ, – वह उसके बदले में बंधक रहेगी।"

किन्तु युवती को जब लाया गया, तो वह अपने रूप-रंग और व्यवहार के कारण सबको इतनी अच्छी लगी, उसके आंसू इतने मन्ने जान पड़े कि स्वयं खान भी द्रवित हो उठा। उसने उसे एक खास तम्बूघर में ठहराया और उसके पास बढ़िया खाना, मिठाइयां व तोहफे भिजवाये।

संयोगवश उसी समय एक युवा सुलतान ने खान की बेटियों में से एक का हाथ मांगा। खान किसी भी तरह उस व्यक्ति से रिश्तेदारी नहीं करना चाहता था, और उसके दिमाग में अलदार-कोसे की बहिन का निकाह उससे करने का विचार आया। बिना समय गँवाये दुलहन के सिर पर ऊंचा साउकोले* पहना दिया गया, शादी के कीमती जोड़े में सजा दिया गया, बधाई के गीत गाये गये और उसे घोड़े पर बिठाकर पति के घर रवाना किया गया।

"सुनते हैं," रास्ते में दुलहन ने सुलतान से पूछा, "आपकी खुरजियों में क्या भरा है?"

"अशरफियाँ भरी हैं, जो खान ने तुम्हारे दहेज में दी हैं।"

रास्ते में रात बिताने के लिए पड़ाव डाला गया। नवविवाहितों के लिए तम्बू-घर तान दिया गया। सुलतान भरपेट खा-पीकर घोड़े बेचकर सो गया। दुलहन ने उसका चोगा व टोपी उतार लिये और जल्दी से मर्दाने वस्त्र पहनकर अचानक . अलदार-कोसे बन बैठी। क्योंकि शुरू से ही यह सब शैतान अलदार-कोसे की ही कारिस्तानी थीं!

अलदाकेन ने सुलतान के घोड़े पर जीन कसी, उससे कसकर अशरफियों की थैलियाँ बांधी, बिना रकाबों को छुए काठी पर सवार हुआ और अंधेरे में गायब हो गया।

वह पौ फटते ही खान के पड़ाव पर जा पहुँचा और घोड़े पर बैठे-बैठे ही खान को पुकारने लगा

"रहम, जहाँपनाह, रहम! आपकी अशरफियों से फसल पैदा न होने में कसूर मेरा नहीं है सूखे से बीज तबाह हो गये। हालांकि आपके लिए यह कोई बहुत भारी नुकसान नहीं है, पर क्या मैं आपकी नजरों में झूठा रह सकता था? नहीं, इज्जत जिन्दगी से ज्यादा कीमती है। सोना आखिर क्या होता है, मैं आपसे पूछता हूँ? पत्थर। लेकिन गरीब के लिए ऐसा पत्थर हासिल करना आसान नहीं होता। फिर भी खुदा ने मेरी मदद की, और अब मैं आपसे उधार ली हुई रकम लौटाने के काबिल हो गया हूँ। आज से आपकी नजरों में मेरी नीयत थन तले के दूध जैसी साफ है। लेकिन, मेरे हुजूर, जिस देश में सत्य नहीं है, उसमें मामूली आदमी का तिरस्कार करना, अपमान करना कितना आसान होता है! मेरे जाने के बाद मेरे घर पर आपके नौकरों ने छापा मारा। मेरी असहाय बहन को

* साउकोले दुलहन का शिरोवस्त्र।

उड़ा लिया गया और उसकी शादी करा कर पराये देश भेज दिया गया। और मुझे, उस बेचारी के इकलौते भाई को उसकी कोई खबर नहीं है। कितना अन्याय है! कितनी शर्म की बात है!" और अलदार-कोसे ज़ोर-ज़ोर से सुबकियां भरने लगा।

घबराया हुआ खान उसे शान्त कराने लगा।

"ऐसे रो-रोकर जान मत दो, अलदार-कोसे! तुम्हारी बहन की अच्छा दहेज देकर सुलतान से शादी की गयी है। क्या तुम्हारे खयाल से सुलतान उसके लिए अच्छा दूल्हा नहीं होगा? तुम्हारे लिए शिकायत करना गुनाह होगा। और जहाँ तक सोने का सवाल है, तो यही सही: तुम जो साथ लाये हो, उसे अपनी बहन की महर की रकम के तौर पर अपने पास रख लो।"

खान ने इतना कहा ही था कि उसी समय पसीने से तर-बतर घोड़े पर सुलतान का संदेशवाहक खबर लेकर आया कि दुलहन रास्ते में भाग गयी और उसके साथ-साथ दूल्हे का अरग़ामाक़ नस्ल का घोड़ा और सोना भी गायब हो गया।

"मैं मर गया, मेरे हुज़ूर!" खान को सभलने का अवसर दिये बिना अलदार धड़ से ज़मीन पर गिर गया। "मैं मर गया मेरे हुज़ूर, बहुत बुरा हुआ! ज़रूर सुलतान ने मेरी बहन को मार डाला है, और कासिद को अपने भयानक अपराध को छिपाने के लिए भेज दिया है। मुझे बचाइये, हुज़ूरे आलम!"

भ्रम में पड़ा अलाशा-खान पूर्णतया किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। अंत में वह अपने तख्ते से उठा और उसने मूर्च्छित अलदार को उठाया।

"खान वादा करता है, अलदार-कोसे अगर तीन दिन के अन्दर तुम्हारी बहन नहीं मिली, तो मैं सुलतान को तुम्हें उसके ऐसी रकम देने को मजबूर करूँगा, जैसी आज तक किसी को नहीं मिली होगी। तब तक तुम मेरी खिदमत में रहो।"

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि दुलहन न तो तीन दिन में मिली और न ही तीन महीने में। अलदार-कोसे को हत्या-राशि मिल गयी और पूर्णतया अप्रत्याशित ढंग से खान का दरबारी भी बन गया।

कुछ दिनों बाद ही कड़ाके का जाड़ा पड़ने लगा, खान को अपने हुक्म की याद हो आयी। लगान उगाहनेवालों की पूरी फौज स्तेपी में हर पड़ाव पर जाकर सोना वसूल करने और कर्ज़दारों को कमचों में पकड़ने रवाना हो गयी।

किन्तु खान के सिपाहियों से पहले अलदार-कोसे सारे पड़ावों में होकर आ चुका था। चमत्कार हो गया: खान को लगान की पूरी रकम मिल गयी! एक भी आदमी गुलाम नहीं बना, क्योंकि ग़रीब से ग़रीब की झोंपड़ी में भी खान को चुकाने के लिए अशरफी बचाकर रखी हुई थी।

खान सन्तुष्ट हो गया। ग़रीब प्रजा भी सन्तुष्ट थी। और अलदार भी सन्तुष्ट था।

"मुझे लगता है कि अलदार-कोसे की बहन अपने भाई से मिली हुई है। तुम लोगों
बेकार उस ढोंगी की बातों पर विश्वास किया। उसके भाई के बदले में उसे मेरे पास
आओ, – वह उसके बदले में बंधक रहेगी।"

किन्तु युवती को जब लाया गया, तो वह अपने रूप-रंग और व्यवहार के का
सबको इतनी अच्छी लगी, उसके आंसू इतने सच्चे जान पड़े कि स्वयं ख़ान भी द्रवित
उठा। उसने उसे एक ख़ास तम्बूघर में ठहराया और उसके पास बढ़िया खाना, मिठाइ
व तोहफ़े भिजवाये।

संयोगवश उसी समय एक युवा सुलतान ने ख़ान की बेटियों में से एक का हाथ मांगा
ख़ान किसी भी तरह उस व्यक्ति से रिश्तेदारी नहीं करना चाहता था, और उसके दिमा
में अलदार-कोसे की बहिन का निकाह उससे करने का विचार आया। बिना समय गँवा
दुलहन के सिर पर ऊंचा साउकोले* पहना दिया गया, शादी के क़ीमती जोड़े में सजा दिय
गया, बधाई के गीत गाये गये और उसे घोड़े पर बिठाकर पति के घर रवाना किया गया

"सुनते हैं," रास्ते में दुलहन ने सुलतान से पूछा, "आपकी ख़ुरजियों में क्या भरा है?"

"अशर्फ़ियां भरी हैं, जो ख़ान ने तुम्हारे दहेज में दी हैं।"

रास्ते में रात बिताने के लिए पड़ाव डाला गया। नवविवाहितों के लिए तम्बू घर
तान दिया गया। सुलतान भरपेट खा-पीकर घोड़े बेचकर सो गया। दुलहन ने उसका चोगा
व टोपी उतार लिये और जल्दी से मर्दाने वस्त्र पहनकर अचानक अलदार-कोसे बन बैठी।
क्योंकि शुरू से ही यह सब शैतान अलदार-कोसे की ही कारिस्तानी थी!

अलदार-कोसे ने सुलतान के घोड़े पर ज़ीन कसी, उससे कसकर अशर्फ़ियों की थैलियां
बांधीं, बिना रकाबों को छुए काठी पर सवार हुआ और अंधेरे में ग़ायब हो गया।

वह पौ फटते ही ख़ान के पड़ाव पर जा पहुँचा और घोड़े पर बैठे-बैठे ही ख़ान को
पुकारने लगा:

"रहम, जहांपनाह, रहम! आपकी अशर्फ़ियों से फ़सल पैदा न होने में कसूर मेरा
नहीं है। भूमि में बीज तबाह हो गये। हालांकि आपके लिए यह कोई बहुत भारी नुक़सान
नहीं है, पर क्या मैं आपकी नज़रों में झूठा रह सकता था? नहीं, इज़्ज़त ज़िन्दगी से
ज़्यादा क़ीमती है। सोना आख़िर क्या होता है, मैं आपसे पूछता हूँ? पत्थर। लेकिन ग़रीब
के लिए ऐसा पत्थर हासिल करना आसान नहीं होता। फिर भी ख़ुदा ने मेरी मदद की
और अब मैं आपसे उधार ली हुई रक़म लौटाने के क़ाबिल हो गया हूँ। आज से आपकी
नज़रों में मेरी नीयत [illegible] के दूध जैसी साफ़ है। लेकिन, मेरे हुज़ूर, [illegible]
नहीं है, उसमें मामूली आदमी का तिरस्कार करना, अपमान करना कितना आसान होता
है! [illegible] के बाद मेरे घर पर आपके नौकरों ने छापा मारा। मेरी असहाय बहन को

---

* साउकोले – दुलहन का शिरस्त्राण।

बिल्ली के ख्वाब में चूहे कूदें

एक बार अलाशा-खान ने अलदार-कोसे को अपने पास बुलवाकर कहा

"मै ऊब रहा हूँ, अलदार-कोसे। बात तुम्हारी समझ में आयी?"

"समझ गया, हुजूरे आलम। जब खान को खुशी होती है, प्रजा के आंसू बहते हैं, जब खान को ऊब महसूस होती है, प्रजा का खून बहता है। आपका मन मैं किस तरह बहलाऊँ? चाहें तो कोबिज* बजाकर सुनाऊँ, या कोई चुराया गीत सुनाऊँ, या फिर कोई मजेदार कहानी सुनाऊँ?"

"नही," खान ने अधीरतापूर्वक हाथ हिला दिया, "गीत और सगीत से मै ऊब चुका हूँ, कहानियों और हसी-ठिठोली की बातों से नफरत हो चुकी है। इससे अच्छा होगा कि एक खेल खेलें, जिसे खुद मैंने सोचा है।"

"कैसा खेल है, जहापनाह?" दाल में कुछ काला महसूस करते हुए अलदार-कोसे ने पूछा।

"खेल ऐसा है। हम आमने-सामने बैठ जायेंगे, अपने बीच में मेरे चहैते बिल्ले को बिठा लेंगे, उसकी पूछ पर जलती मोमबत्ती रख देंगे और दोनों बिल्ले को ललचाकर अपने-अपने पास बुलायेंगे। बिल्ला जिसकी गोद में कूदेगा, वह जीतेगा, और जिसकी तरफ मोमबत्ती गिरेगी, वह हारेगा। मैं शुरू में सौ अशरफिया दाव पर लगाता हूँ।"

"हालत बुरी है," अलदार-कोसे ने सोचा, "बिल्ला बेशक अपने स्वामी की आवाज की तरफ कूदेगा कही ऐसा न हो कि मुर्गी अपनी जान से जाये, खानेवाले को मजा न आये।"

लेकिन खान की अवज्ञा कभी की जा सकती है!

"बहुत बढ़िया खेल है!" अलदार-कोसे ने प्रसन्नतापूर्वक कहा। "लेकिन एक बात

---

* कोबिज कमानी से बजाया जानेवाला एक प्रकार का तारवाला वाद्य।

ी – आपको मेरे हुजूर मेरे साथ खेलने से क्या फायदा होगा ? मेरी
ौड़ी भी नही है।

है, तो सोना मसा दो दाव पर।" खान ने हुक्म दिया।

से ने बिल्ले को खान के सम्मुख पर व बीचोबीच कालीन पर बिठा दिया
म पर जलती हुई मोमबत्ती रख दी। फिर खान के सामने आलथी पालथी
ा – और खेल शुरू हो गया।

।" खान ने आवाज दी।

।" अलदार-कोसे ने आवाज दी।

सिर मोड़ा, कान हिलाये और धीरे से खान की गोदी में बैठ गया। मोमबत्ती
अलदार की तरफ गिर पड़ी।

ता!" खान ने ताली बजायी।

तीसरी और चौथी बार भी बिल्ला खान के पास ही गया। चाल के बाद
टोपी, कमरबंद और जूते भी हार गया वह नीचे पहनने की कमीज में
र रह गया था। पर खान का मन ही नहीं भर रहा था।
क्या होगा? यह जाहिर है कि खान ने मुझे कहीं का न छोड़ने की ठान ली
ाकेन ने कमीज उतारते हुए सोचा।

पाँच सौ अशर्फियाँ दाव पर लगाता हूँ!" खान उन्माद में चिल्लाया। "खेल
म नहीं हुआ है! अगर तुम्हारे पास कुछ नहीं रहा तो अपना सिर दाव पर
।"

ठीक है," अलदार-कोसे ने शान्तिपूर्वक कहा "सिर दाव पर लगाता हूँ। मैं
जानता हूँ कि उसकी अब खैर नहीं है। लेकिन जहाँपनाह, मेरी एक विनती
जिये, मुझे आखिरी बार अपनी स्तेपी पर नजर डालने की इजाजत दे दीजिये।"

"मंजूर है" खान ने होंठ बिचकाये "जाओ उसे देख आओ। लेकिन देर मत लगाना।"

अलदार-कोसे ने बाहर निकलकर अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया। और एक मिनट
ही वह फिर देहलीज पर खड़ा था।

"मैं तैयार हूँ," बेदाढ़ी ने मुस्कराते हुए कहा "खेल जारी रखते हैं जहाँपनाह।"

बिल्ले को दुबारा कालीन पर बिठाया गया मोमबत्ती जलायी गयी और खान ने
दार से पहले ही प्यार से आवाज दी

"ले-ले-ले!"

लेकिन तभी एक ऐसी बात हुई जिसकी खान ने कभी आशा नहीं की थी। बिल्ला
ाखो से चिनगारियाँ छोड़ता मारे बाल खड़े किये पागल की तरह अलदार के सीने पर
दा, और मोमबत्ती खान की तरफ लुढ़क गयी।

"मैं जीता!" अलदार-कोसे शान्तिपूर्वक कह उठा।

खान गुस्से के मारे भूत हो उठा।

"मैं एक हजार अशर्फियाँ लगाता हूँ! तीन हजार! पाँच हजार!" वह पागल की तरह चिल्लाता हुआ दाँव लगाता रहा। उसका चेहरा तमतमा उठा, टोपी गिर गिर गयी। "चालीस हजार लगाता हूँ!"

लेकिन बिल्ला अब हर बार अलदार की तरफ कूद रहा था, मानो उसने उस पर जादू कर दिया हो।

अन्त में अलदार-कोसे बोला

"आज के लिए काफी हो गया न, जहाँपनाह? मैं देख रहा हूँ, आपकी तबीयत कुछ खराब है और आपका चहेता बिल्ला भी थक कर निढाल हो चुका है। खेल कल जारी रखेंगे, अगर आपको इस बात का डर न हो कि आपके सिर तक की नौबत आ सकती है।"

पसीने से तरबतर खान भर्राई आवाज में बोला

"मैं अन्दर से फुका जा रहा हूँ! तुम्हारे साथ खेलना शुरू करके मैंने खुद अपनी बरबादी कर ली, बदमाश। तुम जीते, अलदार-कोसे! जीत का माल उठाओ, पर राज खोल दो कि तुमने कौन-से जादू की मदद से मुझे हराया?"

"मैंने आपको हुजूर, किसी जादू से नहीं, सूझ-बूझ से हराया है। स्तेपी को अलविदा कहने की छुट्टी मांगकर मैंने घास में एक ऐसा जानवर पकड़ लिया, जो बिल्ले को दुनिया के सारे खानों से ज्यादा प्यारा है। खेल के दौरान मैं बिल्ले को मुट्ठी में दबा जानवर दिखा देता था – बस यही मेरा जादू था, दानिशमंद खान।"

अलदार ने मुट्ठी खोलकर दिखायी। उसकी हथेली पर थरथर कांपता चूहे का बच्चा बैठा था।

"चूहा!" खान चीख मारकर एक तरफ भागा। वह चूहों से बहुत बुरी तरह डरता था।

चीख सुन कर चूहे का बच्चा कालीन पर गिर पड़ा। बिल्ला मोमबत्तीदान उलटकर उसके पीछे भागा।

अलदारकोसे को सही-सलामत निकल भागने का उपयुक्त अवसर मिल गया। उसने झट से कालीन से अपने कपड़े उठाये और दबे पाँव दरवाजे से बाहर खिसक गया।

मौत का चकमा

ख़ान ने अलदार-कोसे को पकड़ने का हुक्म दे दिया और उसे निर्ममतापूर्वक मौत के घाट उतारने का एलान कर दिया।

"हठधर्मी मूर्ख को कोड़ों से सीधा करना चाहिए, जब कि हठधर्मी बुद्धिमान को – तलवार से! मैं इस विद्रोही की हरकतें काफ़ी देर तक सह चुका हूँ। अब देखते हैं कि कैसे घुटने मुलाकर जल्लाद से पीछा छुड़ाता है, कैसी चालबाज़ियों से मौत के पंजों से बचता है" और उसने तुरन्त आज्ञा दी: – "लोगों को मौत की सज़ा का नज़ारा देखने के लिए बुलाओ!"

मुनादी करनेवाले घोड़ों को सुस्ताने का मौक़ा दिये बिना उन्हें चारों ओर दौड़ाने लगे। शीघ्र ही बाय लोग खुशियाँ मनाते, ग़रीब लोग शोक मनाते अलदार-कोसे का सिर क़लम किया जाना देखने ख़ान के पड़ाव की ओर उमड़ पड़े।

इस बीच बेचारा अलदारकेन ख़ाली तम्बू-घर में बैठा अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रहा था।

तम्बू-घर के इर्द-गिर्द एक दूसरे से समान दूरी पर तलवारों व बर्छियों से लैस बारह पहरेदार तैनात थे। उन्हें हुक्म दिया गया था कि न तो वे बात करें न अगल-बगल झाँकें न ही हिलें-डुलें, बल्कि अपने आँख व कान खुले रखकर तम्बू-घर पर नज़र रखें कि अपराधी मौत से पहले क्या करता है।

लेकिन अलदार-कोसे आलथी-पालथी मारे तम्बू-घर के बीचों-बीच नंगे फ़र्श पर मौन बैठा था। चुप बैठा सोच रहा था।

"काश, मैं चिड़िया होता," वह सोच रहा था, "इस यदद्याय शनराक* से निकलकर आज़ाद हो जाता। छछूंदर होता, तो ज़मीन में नीचे सुरंग खोदकर भागता

---

* शनराक – कज़ाखों के निवासस्थान ओताव का गुम्बदनुमा दोरदार ऊपरी हिस्सा।

लदार की आवाज फिर सुनाई दी

मालूम है, मालूम है कि मुझे अगूठी का क्या करना चाहिए। अल्लाह न सुझा दी। मै अगूठी को शतराक मे स्तेपी म फक दूँगा। न ना वह अमीन ी और न ही खूनी खान को मिलेगी। कोई गरीब उसे उठायगा और उसकी जायेगी।"

म शब्द मुँह से निकलते ही तम्बू-घर के ऊपर बिजली सी कौंधी और काट माती, चाप बनाती अफसन्तीन की झाडियो मे गिरी।

निकट खडे दो पहरेदार खान का आदेश भूलकर झाडियो की ओर लपक।

ह मेरा है।" एक गुर्राया।

ह मेरा है।" दूसरा गुर्राया।

ी बचे दस पहरेदार भी तत्क्षण अपनी-अपनी जगह से भागकर एक दूसरे स वस्तु छीनने की कोशिश करते झुण्ड मे जा घुस। अन्त म वह उनमे से सबस के हाथ लग गयी।

बेवकूफ कही के!" लमटगे ने दबी आवाज म गाली दी। ठहरो! अलदार-कास बुद्ध बना दिया यह अगूठी नही ताबे का बटन है! इससे पहले कि बेदाढी तम्बू-घर गये, अपनी-अपनी जगह पर भागो बुद्धओ!

पहरेदार भागकर अपने-अपने स्थान पर पहुँचकर निश्चल खडे हो गये जैसे कुछ ी न हो।

सुबह तक खान के पडाव के सामने अनगिनत लोगो की भीड जमा हो गयी — तिल को भी जगह न रही।

नौकरो ने सफेद नमदे बिछा दिये। खान और उसके वजीर शान से उस पर बैठ खान ने इशारा किया, और जल्लाद अपराधी के तम्बू-घर की ओर चल पड जिसके ओर एक दूसरे से समान दूरी पर तलवारो व बर्छियो से लैस बारह पहरेदार मूर्तिवत थे।

भीड शान्त हो गयी। जल्लादो ने तम्बू-घर के दरवाजे पर लटका पर्दा हटाया और ककर पीछे हट गये।

क्या हुआ वहाँ?' खान झल्लाकर चीखा। निकालकर लाओ मुजरिम को।

महापनाह," जल्लादो ने उत्तर दिया मुजरिम तम्बू-घर म नही है! यहा सर्फ उसका फटा-पुराना चोगा पडा है।

खान ने हाथ झटकारे और नमदे पर गिर पडा।

अलदार-कोसे किसी के हाथ न आया

ख़ान ने कहा

"मेरे घोड़ों के झुण्ड से पचास तेज़ से तेज़ घोड़े लो, उनपर अनुभवी से अनुभवी सिपाहियों को बिठाओ और अलदार-कोसे की तलाश करने रवाना हो जाओ। चाहे ज़िन्दा हो, चाहे मरा, घसीटकर मेरे पास लाओ!"

बड़े वज़ीर ने खान के सामने नम्रतापूर्वक घुटने टिका दिये।

सात और उसके बाद भी सात पूर्णिमाओं तक वज़ीर का दस्ता स्तेपी में भटकता रहा और अन्त मे उन्हे अलदार का सुराग लग ही गया।

अलदाकेन कही भागकर, तो कही रेंगकर, घाटियो में, झुरमुटो में दुबकता पीछा करनेवालो से दूर भाग रहा था। उसका चेहरा काला पड़ गया, शरीर सूख गया, कपड़े तार-तार हो गये, जूते घिस गये। वह उसी हालत मे सरकंडो से भरी झील के किनारे बनी पुरानी, लोगों की भुलाई हुई कारवाँ-सराय के सामने ऐसे आ पहुँचा, जैसे आसमान से टपका हो।

उस कारवा-सराय मे कोई भूला-भटका ही आता था, इसलिए उसका मालिक आदमी के कदमों की आहट सुनकर लपककर दरवाज़े से बाहर निकल आया: "अल्लाह ने कोई किरायेदार तो नही भेजा है?" किन्तु चिथड़ो मे एक अजनबी को देखकर उसने निराश हो गुस्से से मुह फेर लिया।

"नौजवान, अगर तुम," उसने कहा "भीख मिलने की उम्मीद मे भागकर आये हो या फोकट मे रात गुज़ारने, तो मेरी सलाह सुनो. भाग जाओ, प्यारे यहाँ से दूर भाग जाओ।"

अलदार ने उलाहना देते हुए सिर हिलाया:

"नहीं, नही, मोहतरम बाय, मुझे आपसे कुछ नही चाहिए। मै अपने फ़ायदे के लिए नही, बल्कि तुम्हे बचाने के लिए अपनी सेहत की परवाह न करके भागा आया हूँ। आप मुझे बिना कुछ छिपाये सच-सच बताइये कि आपने ख़ान के ख़िलाफ़ ऐसा क्या कसूर किया है, जिससे वह आप पर नाराज़ हो रहा है?"

और उसने जल्दी से उसके लिए छोटा चोगा पहना, पैरों में फटे कपड़े को माथे पर लपेटा और गाल पर हाथ रख कराहता और लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

"तशरीफ़ लाइये, मेरे अनमोल मेहमानो, चलिये मेरी कारवाँ-सराय में! आइये, आइये!"

वज़ीर ने अपने दौड़ते घोड़े को ऐन उसकी नाक के सामने पिछली टांगों पर खड़ा कर दिया।

"ऐ, इराबे, तूने अपनी ठोठ खोपड़ी पर यह कैसा साफ़ा लपेट रखा है? तुझे तो कारवाँ-सराय का मालिक होने के बजाय मेमनों पर हमला करने भेड़ियों को डराकर भगाने का काम सौंपना चाहिए। लेकिन जब अपन को मालिक बताता है, तो जवाब दे तेरे यहाँ वह आदमी तो नही छिपा हुआ है, जिसकी हम तलाश कर रहे हैं? वह खतरनाक मुजरिम और खान का जानी दुश्मन है। बेदाढ़ी और दुबला-पतला है वह यहाँ से गुज़रा तो नही?"

अलदार जवाब देने के बजाय लड़खड़ाता हुआ दर्दभरी आवाज़ में कराह उठा.

"अरे, शैतानो! अरे, ज़ालिमो! अरे, खूनियो! तुम से लोगों को दुख के सिवा कुछ नही मिलता तुम सबको आग में फेंक देना चाहिए, मरदूदो!

गुस्से के मारे वज़ीर की आंखों में खून उतर आया।

"चुप कर, बदमाश! खान के नौकरों की बेइज़्ज़ती करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई? क्या देख नही रहा, तेरे सामने कौन है? या तेरी भी अलदार-कोसे से साठ-गाठ है?"

"खता माफ हो, हुज़ूर, गलती हो गयी " अलदार बिसूरने लगा, "दर्द के मारे मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गये कौन-सा अलदार-कोसे? मैं किसी को नही जानता.. हाय, मेरे दांत! उफ, ये दांत मेरी जान ले लेंगे! नाक में दम कर दिया इन्होंने मेरी, भाड़ में जायें, लगता है, सुबह तक भी नही जी सकूंगा ."

"तू रात तक भी जिन्दा नही रह सकेगा, अगर तूने रोना-धोना बंद नहीं किया और जवाब देने में टाल-मटोल की तो!" वज़ीर ने तलवार घुमायी। "आखिरी बार पूछ रहा हूँ: तूने बेदाढ़ी आदमी को देखा था या नही?"

"देखा था, देखा था, हुज़ूरे आलम ... लेकिन आप गुस्सा क्यों करते हैं? गुस्से से जिगर सूख जाता है पर वेदाढ़ी क्यों नही . कुछ देर पहले वह यहीं था। लेकिन मैंने उसे रात गुज़ारने नही ठहराया। वह मेरे यहाँ नही है, चाहे मेरी सारी कारवाँ-सराय छान मारियें।"

"कहाँ है वह? कहाँ है?" वज़ीर ने अलदार को घोड़े की छाती से धक्का मारा। "जल्दी बता!"

"सरकंडों में दलदल में भाग गया, बदमाश! (हाय, मेरे दांत!) पर वहाँ तो दलदल है, उसमें न कोई जा सकता है, न ही निकल सकता है... आप उसे अंधेरे

मत सोचिये। खुदा बचाये! सब मारे जायेंगे! खुद भी मारे जायग और घोडो
ी देंगे! रात को मेरे यहाँ सो जाइये – ज्यादा पैसे नही लूगा। फी आदमी एक
उफ़, खूनखोरो!) भोर होने तक रुक जाइये लोग भी मुस्ता लेंगे और घोड
फटने से पहले आपको जगा दूँगा सुबह भगोडे को बहुत आसानी म पकड
ह कहाँ जायेगा? चूजे की तरह उसे दबोच लेंगे (उफ बेशर्म जाहिलो!) और
तोसे ने फिर गाल पर हाथ रख लिया।
घोडो से उतरो!" वजीर ने सिपाहियों को आदेश दिया। यह गावदी ठाय
कहता है। कभी-कभी बेवकूफ के मुह से भी अक्ल की बात निकल जाती है। यहाँ
किये लेते हैं। उस चालबाज अलदार-कोसे को एक रात दलदल की नमी सोखन
रुम तडके ही उसे कोडे मार-मारकर मुखा देंगे। जाकर आराम करो! और उसन
भाडे के लिए पैसो की थैली मालिक की ओर फेंक दी।
अलदाकोसे ने थैली वैसे ही पकड ली जैसे उकाब चिडिया को पकडता है और किराये
के लिए नमदे बिछाने लपका।
"शब-बखैर, प्यारे मेहमानो! गहरी नीन्द सोइये!
सिपाहियो ने घोडो की काठियाँ खोलकर उन्हें खूंटो से बांध दिया उन्हें चारा डाला
नमदो पर लुढक गये, फिर पचास नाके एक साथ बज उठी। सबसे ज्यादा देर तक
र खास बिस्तर पर करवटे बदलता रहा। सोते सोते उसने बडबडाकर मस्ती म कहा
"देख, मालिक, हमे पौ फटने से पहले जगा देना। अगर अलदार कोसे हाथ म
ल गया, तो तेरा सिर काट देंगे!"
और वह भी खर्राटे भरने लगा।
जितनी देर किरायेदार सोने की तैयारी करते रहे अलदाकोसे एक तरफ आलथी
लथी मारे बैठा, कराहता और कोसता रहा – न जाने अपने दुश्मन दाता को या खान
सिपाहियो को। आखिरकार सब शान्त हो गये।
"शुरू की नीन्द गहरी होती है, अलदार-कोसे ने मन मे कहा। यही समय है
ाम करने का "
और उसने तुरन्त वेश बदल लिया। उसने सबसे पहले बिना आवाज और हडबडाहट
के मालिक की चीजो में से कैंची ढूढ निकाली जिससे भेडो का मूडा जाता था। उसकी
धार को उसने उगली पर आजमाया अरे यह तो मेरे उस्तरे स भी तेज है! फिर अलदा
केन वह कैंची हाथ मे लिये दबे पाव परछाई की तरह एक साथ हुए आदमी के पास स
दूसरे के पास रेंगने लगा। जिसके पास रेंगकर पहुचता उसी की ठोडी सफाचट हो जाती।
सबसे पहले वजीर की भबरी दाढी कटकर गिरी उसके बाद बाकी सब की उसने अपने
सारे शत्रुओ की दाढियाँ बिलकुल साफ कर दी। कैसी कैसी दाढियाँ थी। लम्बी और छोटी
भबरी और चिकनी घनी और छीदी सफेद काली भूरी! और यह काम इतनी
सफाई से किया गया था कि सिपाहियो में से कोई भी नीन्द म हिला तक भी नहीं।

दाढ़ियों का काम तमाम करके अलदार-कोसे ने घोड़ों का साज़ – काठियाँ और उन नीचे के पतले कम्बल, लगाम और बद – सबको काट-काटकर छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले उसने केवल एक, सबसे महंगा साज़ छोड़ दिया। उसे उसने सबसे बढ़िया घोड़े पर बांधा पैर रकाब में रखा और मानो ऊषा पूर्व के धुंधलके में लुप्त हो गया।

भोर में वजीर को झुरझुरी हो आयी और वह जाग गया। उसने अगल-बगल देखा उजाला हो चला था।

"मालिक!" उसने घबराकर आवाज दी। "तूने हमें सही वक्त पर क्यों नहीं जगाया? ऐ, मालिक! कहाँ गायब हो गया, मनहूस?"

किसी ने जवाब नहीं दिया।

वजीर की कंपकंपी छूटने लगी।

"इस कमीने ने हमें कहीं धोखा तो नहीं दिया?" उसके दिमाग में कौंधा। "इन्हें को फ़ौरन होशियार करना चाहिए!"

लेकिन सिपाही इतनी गहरी नीन्द में सोये थे कि उन्हें चाहे जितने डण्डे मारे जाते – कभी न उठते। अन्त में वजीर एक को हिलाकर जगाने में सफल हो गया।

वह झट से उठ खड़ा हुआ और वजीर को घूर-घूरकर देखने लगा।

वजीर भी चौंककर उससे दूर हट गया।

"यह बेदाढ़ी थोबड़ा किस का है? अरे, यह तो अलदार-कोसे है! तूने, नीच, सिपाही की वर्दी पहन ली है"

सिपाही ने भी एक दो बार आंखें मलीं और फिर वजीर को एकटक देखने लगा।

"क्या मैं अभी भी सो रहा हूँ? नहीं, यह तो वही – अलदार-कोसे है! वजीर का वेश धर लिया, बदमाश ने"

उन्होंने एक दूसरे का गला पकड़ लिया।

"मदद करो! अलदार-कोसे हमारे पड़ाव में घुस आया है! मैंने अलदार-कोसे को पकड़ रखा है!" वे दोनों एक साथ चिल्लाने लगे।

ऐसी चीखें सुनकर, तो मुरदा भी कब्र से बाहर भाग आये। सिपाही उठ-उठकर लपके

"कौन चिल्ला रहा था? अलदार-कोसे कहाँ है?"

लेकिन उन्होंने एक दूसरे पर नज़र डाली कि हाथापाई शुरू हो गयी. हरेक को अपने सामने बेदाढ़ी नज़र आ रहा था।

"यह रहा, अलदार-कोसे?"

"तू खुद अलदार-कोसे है!"

"पकड़ो इसे! मारो!"

"अच्छा, लड़ना चाहता है! तो यह ले, यह ले!.."

सब के सब एक दूसरे से उलझ पडे, जमीन पर लुढकने लगे सब चिल्ला रहे थे
र जो हाथ मे आता, उससे एक दूसरे को पीट रहे थे। शोर सारी स्तेपी मे गूंज रहा
जैसे युद्ध छिडा हुआ हो और यदि दूरस्थ पहाडियो की ओट से सूरज न निकल
होता, तो न जाने उस झगडे का क्या अन्त होता।
सूरज की रोशनी मे सिपाहियो को होश आया और वे समझ गये कि वे सब एक
चाल मे आ गये है, जिससे बुरी और शर्मनाक चाल स्वयं शैतान ने भी कभी नहीं
होगी।

"मालिक को ढूंढो!"

उन्होने सारी कारवां-सराय छान मारी पर मालिक कहीं नहीं मिला।

"घोडे गिनो!"

वे घोडे गिनने लगे – एक घोडा – वजीर का घोडा कम निकला।

"पीछा करो! पिटा-पिटाया वजीर चिल्लाया। जो आदमी अपने को मालिक
ता रहा था, वही अलदार-कोसे था! उसी बागी और काफिर ने हमारी बन्धुजनों का
हमे तबाह किया है। उसका पीछा करो!

सिपाही साज उठाने दौडे – पर जहां वे पडे थे वहां केवल चमडे के टुकडो का ढेर
लगा हुआ था। कौन पीछा कर सकता था ऐसी हालत मे!

खरोचे और चोट खाये हुए बदहाल सिपाही बिना काठियो के घोडो पर किसी तरह
चढे और उनकी अयाल पकडकर एक कतार मे खान के सामने अपना दोष स्वीकार करने
चल दिये। सबसे पीछे बेदाढी वजीर घिसटता चल रहा था। उसे घोडा किसी ने भी नहीं
दिया, क्योंकि अब उससे कोई भी नहीं डरता था। बेचारा वजीर अब कहीं का नहीं रहा
था!

उधर अलदार-कोसे उस समय उनसे दूर, बहुत दूर सरपट घोडा दौडाता चला जा
रहा था। विद्वान से विद्वान भी नहीं कह सकता कि वह कहां से गुजर रहा था और उसने
घोडा कहां रोका। क्योंकि अलदार-कोसे तो हवा के साथ स्तेपी के एक छोर से दूसरे छोर पर
लुढकती रहनेवाली हल्की-सी गोल सूखी झाडी की तरह है। वह किधर लुढकेगा – केवल
हवा ही बता सकती है, लेकिन कहां रुकेगा – इसका पता हवा को भी नहीं।

कज़ाख़ लोक-कथाएँ

Перевод сделан с русского языка по книге
„Чудесный сад. Казахские народные сказки." М.
Изд-во „Детская литература", 1970